॥ एक ॐ सद्गुरु प्रसाद ॥

श्रीस्वामी अभिलाखदासउदासीकृत

अभिलाखसागर।



उक्त स्वामीजीके शिष्य रामदास उदासी
अयोध्यावासीसे शुद्ध कराय

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास-
अध्यक्ष "लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" छापेखानेमें
मैनेजर पं० शिवदुलारेजी वाजपेयीने मालिकके लिये
चतुर्थावृत्ति
छापकर प्रकाशित किया.

शके १८३९, संवत् १९७४.

कल्याण-मुंबई.

निवेदन.

विदित हो कि, आजकल इस दुनियामें लोक और तरहके हुए हैं कि, कोई स्त्रीपर ध्यान देते हैं, कोई द्रव्यपर ध्यान देते हैं, कोई व्यापार करते हैं, कोई चाकरी करते हैं, कोई इस दुष्ट पेटके वास्ते लोगोंको फंसातेभी हैं तथा चोरीभी करते हैं; परंतु मैं कहांसे आया, फिर कहां जानेवाला, मेरा कर्तव्य क्या है इस बातपर कोईभी ध्यान नहीं देता अर्थात् माया-जालमें बद्ध हो गये हैं। ऐसे लोगोंपर उपकार करनेके वास्ते मेरे गुरु श्रीस्वामी " अभिलाखदासजी " उदासी अयोध्यावासीने यह ग्रंथ अपने अनुभवसे बनाया और शहर एलचपूर अमीनाथ महादेवपर संवत् १९४९ अश्विन पूर्णिमाके दिन हँसते बोलते शरीर छोड दिया औरभी इनके बनाये ज्योतिष, वैद्यक, रसायन, रमल आदि विषयोंमें बहुत ग्रंथ हैं. मेरे गुरु महात्मा साधु सिद्ध थे. इन्होंने चार धाम, सातों पुरी, हिंदुस्थान, तुर्कस्थान, चीन, कोष्ठा आदि सब देशोंमें जहां आदमीकी गति हो सकती है, तहांतक यात्रा की है और बहुत लोगोंपर प्रत्यक्ष उपकार किये हैं. कितनेक कोढियोंका शरीर अच्छा किया, अंधोंको आँखें दिये, इंदोरमें एक मालीका मरा हुआ लडका जिला दिया, खंडुवामें कुछ कारण होनेसे रेलगड्डीपर बडा चमत्कार दिखाके बहुत लोगोंको प्रतीत दिखाई. ऐसे कितनेही चमत्कार इनके जगत्में प्रसिद्ध हैं. मैंभी यात्रासमय उन्नीस वर्षतक इनके साथ यात्रा करता रहा अस्तु, प्रकृत " अभिलाखसागर " ग्रंथमें ग्यारह तरंग हैं. प्रत्येक तरंगमें एक चार आठ कई लहरियां हैं. इस ग्रंथका ऐसा ख्याल है कि, इस ग्रंथकारने आपही शिष्य होकर सैंतालीस महात्मा गुरुओंके पास जा ' ब्रह्म क्या चीज है और इसका अनुभव कैसा मैं पाऊंगा ' ऐसा ब्रह्मके विषय प्रश्न किया है. फिर महात्मा गुरुओंने अपने २ भिन्न २ मतसे उत्तर दिये परंतु, ब्रह्मका अनुभव नहीं हुआ और उनके कहनेमें बहुत असंगतिभी थी. इसीसे उन सब मतोंका खंडन किया. फिर आखिर एक महात्मा गुरुसे ' नाम ब्रह्म है ' ऐसा उपदेश पाया और इस प्रकार अनुभवभी हुआ. इसीसे ' नाम ब्रह्म है ' ऐसा अंतमें सिद्धांत किया है. ऐसा यह ग्रंथ मेरे गुरुजीके हाथका लिखा हुआ मेरे पास था. वह गुरु-सेवा तथा लोकोपकारके वास्ते कल्याणस्थ 'लक्ष्मीवेंकटेश्वर' छापेखानेके अधिकारी श्रीयुत गंगाविष्णु श्रीकृष्णदासको सब रजिष्टरी हक्क मुद्रण-सह दे दिया है. इसमें कुछ मेरी भूल चूक होय तो साधु महाशय क्षमा करें.

द:—रामदास उदासी अयोध्यावासी.

अभिलाखसागरकी विषयानुक्रमणिका ।

इति विषयानुक्रमणिका समाप्त ।

यंत्र पंची करण स्वरूपतत्व.

नंबर	नाम	पृथ्वि (पृष्ठ २०)	जल (पृष्ठ ३३)	अग्नि (पृष्ठ २५)	वायु (पृष्ठ २७)	आकाश (पृष्ठ २९)
१	देहशरीर	स्थूल	सूक्ष्म	कारण	महाकारण	केवळ
२	स्वरूप	ताडक	डंडक	कुंडल	अर्धचंद्र	बिन्दू
३	प्रमाण	उलटपलट	अंगुष्ठप्रमाण	अर्धप्रमाण	मसूरप्रमाण	अनुप्रमाण
४	अवस्था	जाग्रत	स्वप्न	सुषुप्ति	तुरिया	उन्मनी
५	विषय	गंध	रस	रूप	स्पर्श	शब्द:
६	अंत: इन्द्रि	अहंकार	बुद्धि	चित्त	मन	अंत:करण
७	कर्मेंद्रियें	गुदा	लिंग	पांव	हाथ	मुंह
८	ज्ञानेंद्रियें	नाक	जिव्हा	नेत्र	त्वचा	कान
९	आकाशप्रकृति	रोम	लार	नीद	फैलनो	काम
१०	वायुप्रकृति	चिरम	चरबी	तृषा	दौडनौ	क्रोध
११	अग्निप्रकृति	नाडी	पसीना	क्षुधा	कूदनो	लोभ
१२	जलप्रकृति	मास	बीज	तेज	चलनो	मोह
१३	पृथ्वीप्रकृति	अस्थि	रुधिर	आलस्य	सुकडनो	मद
१४	वाक्	वैखरी	मध्यामा	पश्यंती	परा	परमपरा
१५	गुण	रजोगुण	सत्वगुण	तमोगुण	सगुण	निर्गुण
१६	अभिमान	शरीर	बीज	ज्ञान	आत्मा	निरभिमान
१७	अहंकार	हम	कोहम	सोहम्	शिवोहं	निरोहं
१८	प्राण	अपान	उदान	प्राण	समान	व्यान
१९	वायु	धनंजय	देवदत्त	किरकिल	कूर्म	नाग
२०	कोश	अन्नमय	प्राणामय	मनोमय	विज्ञानमय	आनंदमय
२१	प्रतिमा	गणेश	सूर्य	लिंग	शक्ति	ओंकार
२२	इष्ट	ब्रह्मा	विष्णु	रुद्र	ईश्वर	सदाशिव
२३	देव	इंद्र	वरुण	यम	कुबेर	विष्णु
२४	प्रधान	वेद	दशअवतार	द्वादशलिंग	मंत्र	समाधी
२५	वर्ण	पीत	रक्त	कृष्ण	नील	श्वेत
२६	रस	मधुर	लोन	चरपरा	खाटा	फिका
२७	क्रिया	उत्पत्ति	पालन	परलय	सर्वसाक्षी	सर्वत्याग
२८	योन	भोचर	जलचर	नभचर	चराचर	अचर
२९	खान	पिंडज	अंडज	उरदमज	स्थावर	मेघ
३०	अवस्थागुण	नेत्र	कंठ	हृदय	मूर्धा	शिखा
३१	अवस्थानिर्गुण	त्रिपुटी	श्रीहाट	गुल्हाट	भ्रमरगुंफा	ब्रह्मरन्ध्र
३२	रूप	विराट	हिरण्यगर्भ	सूर्यज्योति	महत्तत्व	कर्ता
३३	आसन	कलेजा	फिफडा	तिल्ही	बुक्का	पित्ता
३४	आवन	मुख	जिव्हा	वामचक्षु	वामनासिका	वामकान

नंबर	नाम	पृष्ठ २०	पृष्ठ २३	पृष्ठ २५	पृष्ठ २७	पृष्ठ २९
३५	जीवन	गुदा	लिंग	दक्षचक्षु	दक्षनाशिका	दक्षकान
३६	ज्ञान	अनरीति	अनिच्छा	अविचार	अविवेक	अद्वैत
३७	भोग	स्थूल	परविगत	आनंद	अपरमेय	निरामय
३८	निरन्य	क्षर	अक्षर	कूटस्थ	आत्मप्रिया	उत्तमपुरुष
३९	मार्ग	पपील	विहंगम	कपी	मीन	शेष
४०	दिशा	पूर्व	पश्चिम	उत्तर	दक्षिण	ऊर्ध्वदीशा
४१	कोन	नैर्ऋत्य	ईशान	आग्नेय	वायव्य	अर्धकोन
४२	आकाश	घट	मठ	मध्य	चदा	शून्य
४३	मात्रा	आकार	इकार	उकार	मकार	पूर्ण ओंकार
४४	मात्रा दूसरी	हर्ष	दीर्घ	पुलित	अर्ध	अनुराग
४५	शून्य	अर्धशून्य	ऊर्ध्वशून्य	मध्यशून्य	अर्धशून्य	महाशून्य
४६	मुद्रासमाधि	खेचरी	भोचरी	चाचरी	अगोचरी	उन्मनी
४७	मुद्राज्ञान	संमुखि	उन्मनी	शांभवी	आत्मभासिनी	पूर्वबोधनी
४८	वेद	ऋग्वेद	यजुर्वेद	सामवेद	अथर्वणवेद,	आकाशवाणी
४९	गायत्री	प्रथमपदा	द्वितीयपदा	तृतियपदा	चतुर्थपदा	पंचपदा.
५०	वादवंत	तंत	वितंत	मृदंग	सुस्वर	अनहद
५१	लोक	मृत्युलोक	वैकुंठलोक	कैलासलोक	सत्यलोक	लोकलोक
५२	अग्नि	वडवा	मंद	उदर	शोक	कपरा
५३	दूसरी अग्नि	ऊहा	काम	दग्न	संभिता	ब्रह्म
५४	आनंद	विषयानंद	योगानंद	अद्वैतानंद	परमानंद	ब्रह्मानंद
५५	मुक्ति	सालोक	सामीप्य	सारुप्य	सायुज्य	स्वयंभू
५६	शक्ति	क्रिया	ज्ञान	इच्छा	आदिविज्ञान	मूलप्रकृति
५७	लिंग	आचार्य	गुरु	शिव	प्रासाद	ब्रह्मलिंग
५८	मुख	सद्यजात	वामदेव	तत्वपुरुष	ईशानमुख	अर्धमुख
५९	कला	उरमय	धुमरा	जोती	जोत्माला	कलातीत
६०	भूमिका	पास्तिपा	गताजाता	सलोकता	सुलीनता	साक्षात्कार
६१	पुरुषार्थ	धर्म	अर्थ	काम	मोक्ष	निर्विकल्प
६२	भक्ति	श्रवण	मनन	निजध्यास	साक्षात्	पुरणकोहा
६३	प्रकृति	भय	मैथुन	क्षुधा	हर्ष	निद्रा
६४	सुर	उदात्त	अनुदात	स्वरित	सोहम्	अनहद
६५	दूसरा सुर	जडेसुर	मनजलेसुर	ओतकेसुर	सुसुर	नभसुर
६६	शस्त्र	फरसा	अंकुश	भाला	खांडा	बाण
६७	स्वरूप	चौकोर	लंबा	त्रिकोन	गोल	शून्य
६८	अहार	अन्नजल	मैथुन	मोह	गंध	शब्द
६९	रोग	रक्त	कफ	पित्त	वात	सन्निपात
७०	प्रमाणअंगुल	बारह १२	सोला १६	चार ४	आठ ८	शून्य
७१	आश्रम	ब्रह्मचारी	गृहस्थ	वानप्रस्थ	संन्यास	परमहंस
७२	पंचमुख	संतान	धन	रूप	बल	बुद्धिज्ञान

७	६	५	४	३	२	१	नंबर.		
देवता	योनतत्वब्रह्म	पंचआधारब्रह्म	तत्व तत्वमें	ससंध प्रकृति	सूक्ष्म प्रकृति	स्थूल प्रकृति	नाम.		
गणेश	मनुष्य	पात्र	मद	अहंकार	शब्द	रोम	१	१	पृथ्वीस्थूल
दिग्पाल	पशु	मल	सुकडनो	अपान	स्पर्श	चरम	२	२	
शेष	पक्षी	रूप	आलस	नाक	रूप	नाडी	३	३	
कुमार	किडी	स्थूल	रुधिर	गुदा	रस	मास	४	४	
प्रजापत	पिंडज	विषय	अस्थि	गंध	गंध	अस्थि	५	५	
वरूण	सुगंध	कमल	मोह	बुद्धि	मुख	लार	६	१	यंत्र प्रकृति पंच तत्व ब्रह्म पुरुष ३२ — जलसूक्ष्म
स्वामि कार्तिक	मनुष्य धारी	मुत्र	चलनो	प्राण	हात	चरबी	७	२	
ब्रह्मा	पशुपक्षी धारी	रुधीर	तेज	जिव्हा	पाव	पसीना	८	३	
इंद्र	दुर्गंध	सूक्ष्म	विज	लिंग	लिंग	बीज	९	४	
चंद्र	स्थावर	कर्मेंद्रिय	मांस	रस	गुदा	रुधिर	१०	५	
शिव	पंची	पेट	लोभ	चित्त	कान	निंद	११	१	अग्निकारण
सूर्य	जलचर	प्रकाश	कुदनो	उदान	त्वचा	तृषा	१२	२	
वासूदेव	किडी	ज्ञान	क्षुधा	आंख	आंख	क्षुधा	१३	३	
यमराज	नाग	कारण	पसीना	पाव	जिव्हा	तेज	१४	४	
काल	अंडज	ज्ञानेंद्रिय	नाडी	रूप	नाक	आलस	१५	५	
शक्ति	अतप काल	हात	क्रोध	मन	व्यान	फैलनो	१६	१	वायुमहाकारण
हनुमान	शरद काल	स्वासा	दोडनो	समान	समान	दोडनो	१७	२	
कुबेर	वर्षकाल	शक्ति	तृषा	त्वचा	उदान	कूदनो	१८	३	
भैरव	सदाकाल	महा कारण	चरबी	हात	प्राण	चलनो	१९	४	
सुराचनि	उखमज	प्राण	चरम	स्पर्श	अपान	सुकडनो	२०	५	
विष्णु	भूल	शरीर	काम	अंतः करण	अंतः करण	काम	२१	१	आकाशकेवल.
ओंकार	अमर	रूप	फैलनो	वखाण	मन	क्रोध	२२	२	
नारायण	सिद्ध	स्थान	निंद	कान	चित्त	लोभ	२३	३	
लक्ष्मी	देव	केवल	लार	मुख	बुद्धि	मोह	२४	४	
ब्रह्म	मेघ	अंतः करण	रोम	शब्द	अहंकार	मद	२५	५	

यंत्र विराटरूप ब्रह्म निराकार पृष्ठ ३५

नंबर	विराट	सूक्ष्म	बोध
१	ब्रह्म	अंतःकरण	अंतस इंद्रिय १
२	शक्ति	मन	२
३	विष्णु	चित्त	३
४	ब्रह्मा	बुद्धि	४
५	शिव	अहंकार	५
६	कुबेर	कान	ज्ञान इंद्रिय १
७	गणेश	त्वचा	२
८	सूर्य	आंख	३
९	सरस्वती	जिव्हा	४
१०	अश्विनीकुमार	नाक	५
११	वरूण	मुख	कर्म इंद्रिय १
१२	इंद्र	हाथ	२
१३	दिग्पाल	पांव	३
१४	प्रजापति	लिंग	४
१५	यमराज	गुदा	५
१६	आकाश	शिर	आकाश प्रकृति १
१७	कैलास	कंठ	२
१८	वैकुंठ	हृदय	३
१९	क्षीरसागर	पेट	४
२०	मध्यलोक	कमर	५
२१	विराट	फेलना	वायु प्रकृति १
२२	वायु	दोडना	२
२३	आवागवन	कूदना	३
२४	स्वासा	चलना	४
२५	आदृष्ट	सकुडना	५
२६	मोत	नीर	अग्नि प्रकृति १
२७	प्यास	तृषा	२
२८	तृष्णा	क्षुधा	३
२९	अग्नि	तेज	४

यंत्र विराटरूपब्रह्मनिराकार पृष्ठ ३५

नंबर	विराट	सूक्ष्म	बोध.
३०	नीद	आलस	५
३१	तेल	लार	जलप्रकृति १
३२	दूध	चरबी	२
३३	ओस	पसीना	३
३४	बरफ	बीज	४
३५	जल	रुधिर	५
३६	वनस्पति	रोम	पृथ्वी प्रकृति १
३७	दशोदिशा	चर्म	२
३८	नदी	नाडी	३
३९	मिट्टी	मास	४
४०	पहाड	अस्थि	५
४१	ब्रह्मलोक	ब्रह्मांड	सर्व शरीर १
४२	बादल	चोटी	२
४३	चंद्र	मस्तक	३
४४	वर्षाऋतु	भों	४
४५	तारा	वरोनी	५
४६	रात	पलक बंदहोना	६
४७	दिन	पलक खुलना	७
४८	ग्रहण	नेत्रदुखना	८
४९	संध्या	पलक	९
५०	सुगंध	इंगला	१०
५१	दुरगंध	पिंगला	११
५२	लज्जा	ऊपरका होठ	१२
५३	प्रीत	नीचेका होठ	१३
५४	वैर	दंत	१४
५५	अरुणमेघ	हसना	१५
५६	बिजली	छींक	१६
५७	कोहरा	मुखधूम	१७
५८	अक्षर	बोलना	१८

यंत्रविराटरूपब्रह्मनिराकार पृष्ठ ३५			
५९	जिन्नलोक	गरदन	१९
६०	उदयात्रस्ताचल	कंधा	२०
६१	देवता	अंगुली हात	२१
६२	भाग	रेषा	२२
६३	धनुष्य	नारवुन	२३
६४	कल्पवृक्ष	छाती	२४
६५	कामधेनु	चुन्दी	२५
६६	नरक	पीठ	२६
६७	शून्यलोक	नाभी	२७
६८	मैथुन	अंड	२८
६९	जीव	मल	२९
७०	शरीर	मूत्र	३०
७१	अतलवितललोक	चूतड	३१
७२	सुतल लोक	जंघा	३२
७३	रसातल लोक	घुटना	३३
७४	महीतल लोक	पिंडली	३४
७५	पाताल लोक	पांव	३५
७६	तलातललोक	तलवा	३६
७७	दैत्यलोक	अंगुलीपाव	३७
७८	भोर	कपोल	३८
७९	चारोंयुग	अवस्था	३९
८०	खटरस	जिंव्हा	४०
८१	उत्पति	जागना	४१
८२	भूकंप	करवट बदलना	४२
८३	चौरासीलाखयोन	अहार	४३
८४	शिशुमारचक्र	धुमना	४४
८५	माया	इच्छा	४५
८६	काम	भग	४६
८७	वर्षाकाल	बालअवस्था	४७
८८	सर्दकाल	तरूण अवस्था	४८
८९	आतषकाल	वृद्ध अवस्था	४९

यंत्र अक्षर पृष्ठ ४२

नंबर	स्वरअक्षर	ह्रस्वदीर्घ	गरुड़ १				मारजारी २					सिंह ३					स्वान ४					सर्प ५					मोरा ६				
			अ	इ	उ	ए	क	ख	ग	घ	ङ	च	छ	ज	झ	ञ	ट	ठ	ड	ढ	ण	त	थ	द	ध	न	प	फ	ब	भ	म
			१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
१	अ	अ	अ	इ	उ	ए	क	ख	ग	घ	ङ	च	छ	ज	झ	ञ	ट	ठ	ड	ढ	ण	त	थ	द	ध	न	प	फ	ब	भ	म
		आ	आ	ई	ऊ	एा	का	खा	गा	घा	ङा	चा	छा	जा	झा	ञा	टा	ठा	डा	ढा	णा	ता	था	दा	धा	ना	पा	फा	बा	भा	मा
२	इ	इ	अि	इि	उि	एि	कि	खि	गि	घि	ङि	चि	छि	जि	झि	ञि	टि	ठि	डि	ढि	णि	ति	थि	दि	धि	नि	पि	फि	बि	भि	मि
		ई	अी	ईी	उी	एी	की	खी	गी	घी	ङी	ची	छी	जी	झी	ञी	टी	ठी	डी	ढी	णी	ती	थी	दी	धी	नी	पी	फी	बी	भी	मी
३	उ	उ	अु	इु	उु	एु	कु	खु	गु	घु	ङु	चु	छु	जु	झु	ञु	टु	ठु	डु	ढु	णु	तु	थु	दु	धु	नु	पु	फु	बु	भु	मु
		ऊ	अू	इू	उू	एू	कू	खू	गू	घू	ङू	चू	छू	जू	झू	ञू	टू	ठू	डू	ढू	णू	तू	थू	दू	धू	नू	पू	फू	बू	भू	मू
४	ए	ए	अे	इे	उे	ऐ	के	खे	गे	घे	ङे	चे	छे	जे	झे	ञे	टे	ठे	डे	ढे	णे	ते	थे	दे	धे	ने	पे	फे	बे	भे	मे
		ऐ	अै	इै	उै	एै	कै	खै	गै	घै	ङै	चै	छै	जै	झै	ञै	टै	ठै	डै	ढै	णै	तै	थै	दै	धै	नै	पै	फै	बै	भै	मै
५	ओ	ओ	ओ	इो	उो	एो	को	खो	गो	घो	ङो	चो	छो	जो	झो	ञो	टो	ठो	डो	ढो	णो	तो	थो	दो	धो	नो	पो	फो	बो	भो	मो
		औ	औ	इौ	उौ	एौ	कौ	खौ	गौ	घौ	ङौ	चौ	छौ	जौ	झौ	ञौ	टौ	ठौ	डौ	ढौ	णौ	तौ	थौ	दौ	धौ	नौ	पौ	फौ	बौ	भौ	मौ
		अं	अं	इं	उं	एं	कं	खं	गं	घं	ङं	चं	छं	जं	झं	ञं	टं	ठं	डं	ढं	णं	तं	थं	दं	धं	नं	पं	फं	बं	भं	मं
		अः	आः	इः	उः	एः	कः	खः	गः	घः	ङः	चः	छः	जः	झः	ञः	तः	ठः	डः	ढः	णाः	तः	थः	दः	धः	नः	नः	फः	बः	भः	मः

सिद्धांत गुप्त अर्थ रामायण पृष्ठ ६२

नंबर	प्रगट	गुप्त	खुलासा	नंबर	प्रगट	गुप्त	खुलासा
१	हिमावल	आकाश	कैलास ब्रंह्मांड	१२	राम	मन	चैत्र सुदी नौमी कौ जन्म हुवा.
२	मइना	वायु		१३	लक्ष्मण	चित्त	
३	शिव	अग्नि		१४	भरत	बुद्धि	
४	पार्वती	शक्ति		१५	शत्रुघ्न	अहंकार	
५	स्वामि कार्तिक	जल		१६	सुमंत	स्वभाव	
६	गणेश	पृथ्वी		१७	विश्वामित्र	विद्या	कुवार वदी १२ को रामचंद्र गये
७	अवद	देह	बालकांड प्रारंभ	१८	ताटिका	अविद्या	कुवार सुदी १ को मारा
८	वशिष्ठ	आत्मा		१९	गंगानदी	निश्चय	
९	दशरथ	दश इंद्रिय		२०	अहिल्या	प्रीत	
१०	तीनोराणी	त्रिगुणी माया	रजोगुण सत्वगुणा तमोगुण सुमित्रा कैकई कौसल्या	२१	जनकपूर	सत्यदेश	
११	श्रृंगऋषी	संजोग		२२	राजा जनक	भरम	

सिद्धांत गुप्त अर्थ रामायण पृष्ठ ६२

नंबर	प्रगट	गुप्त	खुलासा	नंबर	प्रगट	गुप्त	खुलासा
२३	सुनेना राणी	स्पर्धा		३४	वनयात्रा	भ्रमणा	विवाह पीछे बारावर्ष अवधमें रहे
२४	धनुष्य	बंधन		३५	निरवादु खेवट	धीरज	
२५	परशुराम संवादु	परीक्षा		३६	गंगा उतारा	भव सागर	
२६	विवाह	विश्वास	पंद्रावर्षपीछेहुवा	३७	प्रयाग राज	गुरु	
२७	जानकी	शक्ति	चैत्र सुदी २ को प्रगट हुई चौदावर्षमें विवाह हुवा	३८	भरद्वाज	विवेक	
२८	नारदु	भुल	अयोध्या कांड प्रारंभ	३९	वाल्मीक	विचार	
२९	राज तिलक	भोग		४०	चित्रकोट	एकांत	बारावर्ष रहे
३०	सरस्वती	होवंत		४१	दशरथ मरण	प्राणायाम	
३१	मंथरा चेरी	कारण		४२	भरत मिलाप	ममता	
३२	दशरथ कैकई तमोगुण संवाद	अकर्म		४३	पादुका	वैराग्य	
३३	वर्दानदो	फल शुभ अशुभ		४४	जेता इंद्रसुत	चिंता	अरण्य काण्ड प्रारंभ

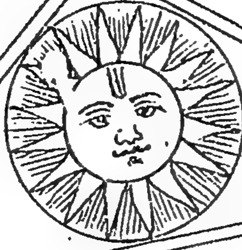
सिद्धांत गुप्त अर्थ रामायण पृष्ठ ६२

नंबर	प्रगट	गुप्त	खुलासा	नंबर	प्रगट	गुप्त	खुलासा
४५	अत्री ऋषी	योग		५६	लंका		असत्यदेश
४६	अनुसूया	सिद्धि		५७	सिवरी भिलुणी	भक्ति	
४७	विराध दैत्य	वृद्ध		५८	हनुमान बंदर	दीनता	सुन्दरकाण्ड प्रारंभ
४८	शरभंग ऋषी	शुद्धता		५९	सुग्रीव बंदर	ज्ञान	
४९	सुतीक्ष्ण ऋषी	प्रेम		६०	तारा राणी	असंग	
५०	अगस्ती ऋषी	आनंद		६१	बालिजो धाबंदर	अज्ञान	
५१	गिद्ध जटायू	दृढता		६२	अंगद बंदर	अभ्यास	
५२	शूर्पण खा राक्षसी	लोभ		६३	जामवंत रीछ	पुरुषार्थ	
५३	खर दूषण राक्षस	काम क्रोध		६४	संपाति गिद्ध	प्रकाश	अगहनसुदीनोमी को हनुमानसेपता पाया.
५४	रावण मारीच	मोह मद		६५	सुर्षा नागनी	आशा	किष्किंधा काण्ड प्रारंभ
५५	जानकी हरण	शक्ति	फाल्गुनवदी अष्टमीको हरण हुवा.	६६	निश्चरी राक्षसी	तृष्णा	

सिद्धांतगुप्त अर्थ रामायण पृष्ठ ६२

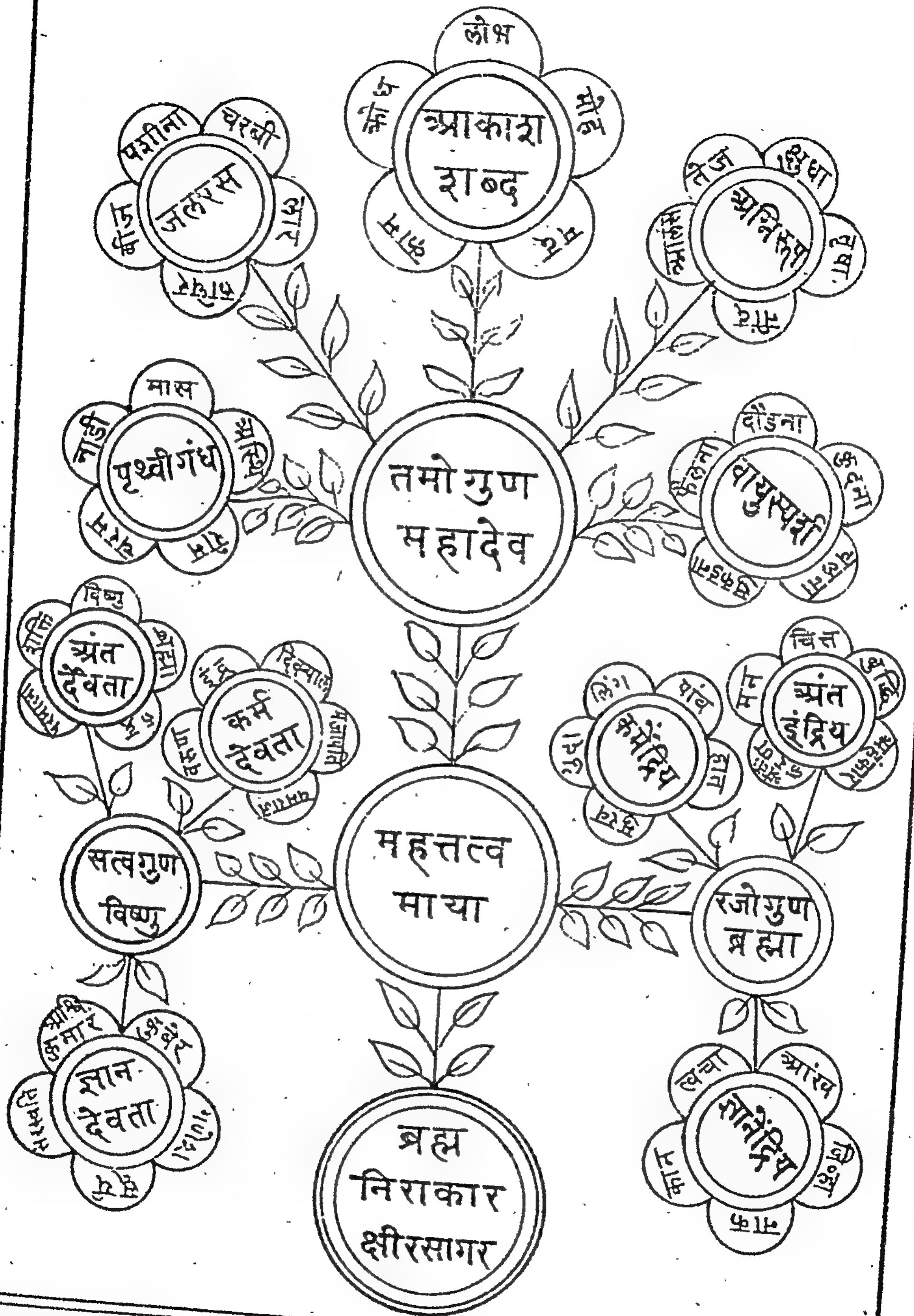
नंबर	प्रगट	गुप्त	खुलासा	नंबर	प्रगट	गुप्त	खुलासा
६७	लंकिनी राक्षसी	वासना	अगहनसुदी १२ को हनुमान सीता के पास गये	७८	कुंभकर्ण	गर्भ	
६८	नलनील बंदर	मार्ग	पौष्यवदी पको लंका जलाया पोसवदी ७ को रामचंद्रको	७९	मकर ध्वज	ताप	
६९	समुद्र	हृदय	खबरदी वदी ८ अष्टमी को फौज रवाना हुई	८०	महीरावण	परसंताप	वैशाख सुदी २ को राज्य विभीषण को मिला. सुदी ३ को जानकी सेमिला पहुवा ४ को तैयारी अयोध्याकी हुई. ५मी को भारद्वाज की कुटी पर गये.
७०	शेत	सत्संग	—				
७१	रामेश्वर	सतगुरु	पौससुदी १० को सुरु हुवा १३ को तैयार पुल होगया.				
७२	विभीषण	निर्मल बुद्धि	पौससुदी १४ को मिला पहुवा				वैशाख सुदी ६ को भरत मिला पहुवा.
७३	अश्विनी कुमार	अविचार	लंकाकांड प्रारंभ	८१	त्रिजटा	कीर्ति	
७४	कालनेम	दुंभ		८२	मंदोदरी	शांति	
७५	मेघनाद	भ्रम	माघवदी २ लंका पहुंचे माघसुदी २ से वैशाख वदी १४ तक लडाई रही	८३	सर्व सैन्य परिवार	माया परवार	
७६	सुलोचना	ईर्षा		८४	राजगद्दी	निष्काम	उत्तरकांड प्रारंभ वैशाख सुदी ७ को राज्य पाया
७७	रावण	मोह	वैशाखवदी ३० को जलाया	८५	अंतरध्यान	निर्गुण मुक्ति	

१२



उत्तरायण						दक्षिणायन					
शरदकाल				वर्षाकाल				आतपकाल			
शिशिरऋतु		हेमंतऋतु		शरदऋतु		वर्षाऋतु		ग्रीष्मऋतु		वसंतऋतु	
फाल्गुन	माघ	पौष	मार्गशीर्ष	कार्तिक	आश्विन	भाद्रपद	श्रावण	आषाढ	ज्येष्ठ	वैशाख	चैत्र

ब्रह्मांड . पृष्ठ ७५



आकाश में एक गुण शब्द ॥ वायुमें दोगुण शब्द, स्पर्श ॥ अग्निमें तीन गुण शब्द, स्पर्श, रूप ॥ जलमें चारगुण शब्द, स्पर्श, रूप, रस ॥ पृथ्वीमें ५ गुणशब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध ॥

यंत्रपंचदेव. पृष्ठ ९०

नंबर	नामदेव	विष्णु	शक्ति	रुद्र	ब्रह्मा	गणेश
१	तत्व	आकाश	वायु	अग्नि	जल	पृथ्वी
२	वर्ण	श्वेत	नील	कृष्ण	रक्त	पीत
३	स्वाद	फीका	खाटा	चर्परा	खारा	मधुर
४	क्रिया	त्याग	साक्षी	प्रलय	पालन	उत्पत्ति
५	अहंकार	निराहम	स्वाहंम्	सोहंम्	कोहंम्	अहम्
६	मुक्ति	निर्गुणमुक्ति	सायुज्यमुक्ति	सारूपमुक्ति	सामीपमुक्ति	सालोकमुक्ति
७	आनंद	ब्रह्मानंद	परमानंद	अद्वैतानंद	योगानंद	विषयानंद
८	शरीर	केवल	महाकारण	कारण	सूक्ष्म	स्थूल
९	गुण	निर्गुण	सगुण	तमोगुण	सत्वगुण	रजोगुण
१०	अवस्था	उन्मनी	तुर्या	सुषुप्ति	स्वप्न	जाग्रत
११	स्थान	ब्रह्मरन्ध्र	भ्रमरगुंफा	गुल्हाट	श्रीहाट	त्रिकूट
१२	स्वरूप	कर्ता	महतत्व	स्वयंजोती	हिरण्यगर्भ	वैराट
१३	वाहन	गरुड	सिंह	वृषभ	हंस	हस्त
१४	चाल	शेष	मीन	कप	विहंगम	पिपिल
१५	लोक	लोकालोक	सत्यलोक	कैलासलोक	वैकुंठलोक	मृत्युलोक
१६	प्रमाण	बिन्दु	अर्धचन्द्र	कुंडल	दंडक	ताडक

यंत्रलोकद्विप. पृष्ठ १४

नंबर	नाम	पृथ्वी	जल	अग्नि	वायु	आकाश	विज	शक्ति
१	आकाश लोक	सत्य लोक	तपलोक	जिन्न लोक	निज लोक	इन्द्र लोक	भवर लोक	म्हर लोक
२	पाताल लोक	अतल लोक	वितल लोक	सुतल लोक	मीमानल लोक	तलातल लोक	ससातल लोक	पाताल लोक
३	ऊपर लोक	ब्रह्म लोक	वैकुंठ लोक	शिव लोक	सूरज लोक	देव लोक	पितृं लोक	सिद्ध लोक
४	नीचे लोक	माया लोक	यम लोक	गंधर्व लोक	यक्ष लोक	किन्नर लोक	नाग लोक	दैत्य लोक
५	शरीरमेंनिराकारलोक	सत्रावी कला	भ्रमर गुफा	ब्रह्मरंघ्र	उलट पलट	गुह्लाट	श्रीहाट	त्रिकूट
६	शरीरमेंसाकारलो.ऊ.	ब्रह्मांड	नेत्र	कान	नाक	मुंह	कंठ	हृदय
७	शरीरमें नीचलोक	हात	पेट	पीठ	पांव	लिंग	गुदा	नाभी
८	सप्त समुद्र	नीर समुद्र	क्षीर समुद्र	दधि समुद्र	क्षार समुद्र	रत्नाकर समुद्र	मधु समुद्र	घृत समुद्र
९	दीप लोक	जंबु दीप	शंकर दीप	कुशा दीप	करोंज दीप	शालमल दीप	श्वेत दीप	पुष्कर दीप
१०	शरीर दीपलोक	मेदा	अस्थ	सुरा	रक्त	मास	त्वचा	रोम
११	तारा लोक	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनिश्चर
१२	सप्त ऋषी	पुलाह	पुलीस्त	भारद्वाज	वशिष्ट	अंगिरा	भृगू	मरीच
१३	सप्त पुरी	अयोध्या	मथुरा	काशि	हरिद्वार तथा माया	नासक तथा कांची	उज्जैन तथा अवंति	द्वारका
१४	सप्तदेश	रूष	चीन	रूम	तुर्कस्थान	हिंदुस्थान	लवलख	खुराशान
१५	सप्त रवान	सुना	चांदी	लोहा	जस्त	कलई	तांबा	शीसा
१६	नौखंड	१ भारतखंड पूर्व मनिरखंड ईशान्य ८	२ परबखंड आग्नेय सुवर्ण खंड मध्य ९	३ निराकार रामरवं.द काशी खंड १०	४ दक्षापालन खंड नैर्ऋत्य	५ केतमाल खंड पश्चिम	६ हरिखंड वायव्य	७ पृथुखंड उत्तर

यंत्र मनरूपी ब्रह्मके दो स्त्री हैं उसका परिवार पृष्ठ १२४

१	२	३	४	५	६	७	८	नाम
मोह	काम	क्रोध	लोभ	दंभ	गर्व	मद	अधर्म	ये आठ लडके.
मिथ्या	रति	हिंसा	तृष्णा	आशा	निंदा	ईर्षा	अशुद्धता	ये आठ स्त्री
अहंकार	लालच	अविचार	ताप	पाखंड	अपयश	विरुद्ध	अकर्म	ये आठ पोते
ममता	कल्पना	भूल	चिंता	अविद्या	अपकीर्ति	अश्रधा	अशक्त	ये आठ स्त्री

वासना लडकी अज्ञानकी अदया पुत्रसे विवाह हुवा सोला लडका सोला लडकी हुई.

								नाम
संशय	आलस्य	अनित्य	भय	रज	तम	कपट	कर्म	ये सोला लडके
असनजम	जंत्र	मंत्र	नाटक	प्रपंच	नियम	विक्षेप	भगर	ये सोला लडके.
कलह	चाह	कुटिलता	विषता	दाह	कृपणता	व्याकुलता	कूमत	
कामना	कुचेष्टा	दुष्ट	क्रूर	अर्जु	सरोना	क्रिया	भ्रष्टता	

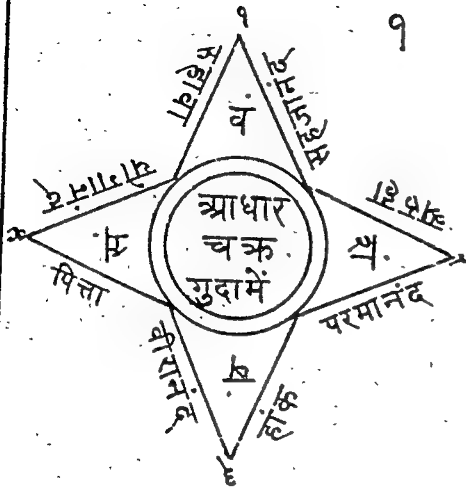
निवृत्ति.

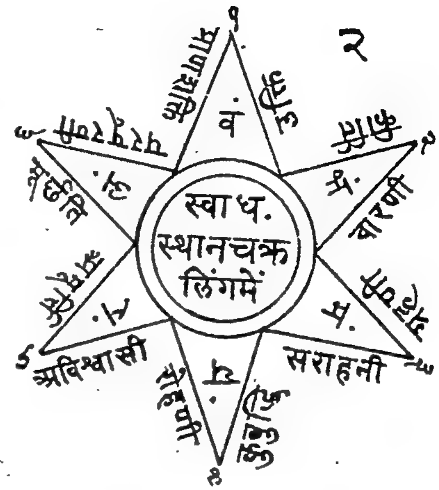
								नाम
विवेक	विचार	धैर्य	संतोष	भजन	शील	धर्म	वैराग्य	ये आठ लडके.
विद्या	निश्चय	क्षमा	तृप्त	सिद्धि	लज्जा	श्रद्धा	उदासीन	ये आठ स्त्री
ज्ञान	प्रीत	दीनता	आनंद	निष्कपट	सुजस	प्रकाश	अभ्यास	ये आठ पोते
मोक्ष	प्राप्ति	मुदता	करुणा	पूजा	कीर्ति	शुद्धता	दृढता	ये आठ स्त्री.
संजम	नेम	आसन	प्राणायाम	प्रत्याहार	ध्यान	धारणा	समाधी	ये आठ लडके अभ्यास दृढतासे हुवे
अनुमा	मनुमा	लघुमा	कर्मा	प्रास	पराकामी	वस्तु	वस्तु	ये आठ स्त्री हैं.

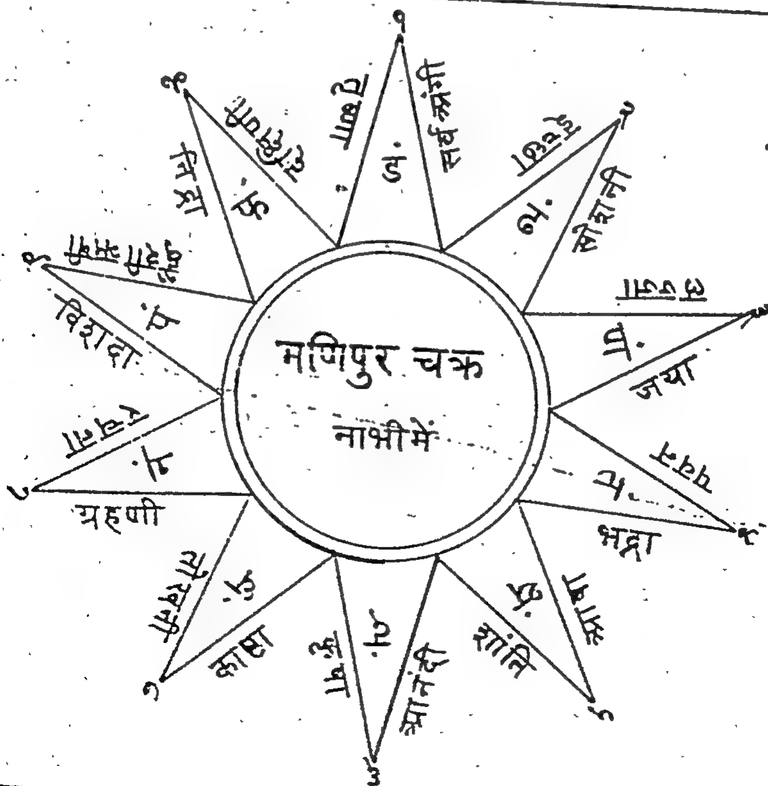
भक्ति लडकी प्रेमकी दयापुत्रसे विवाह हुवा नौ लडके पैदा हुवे.

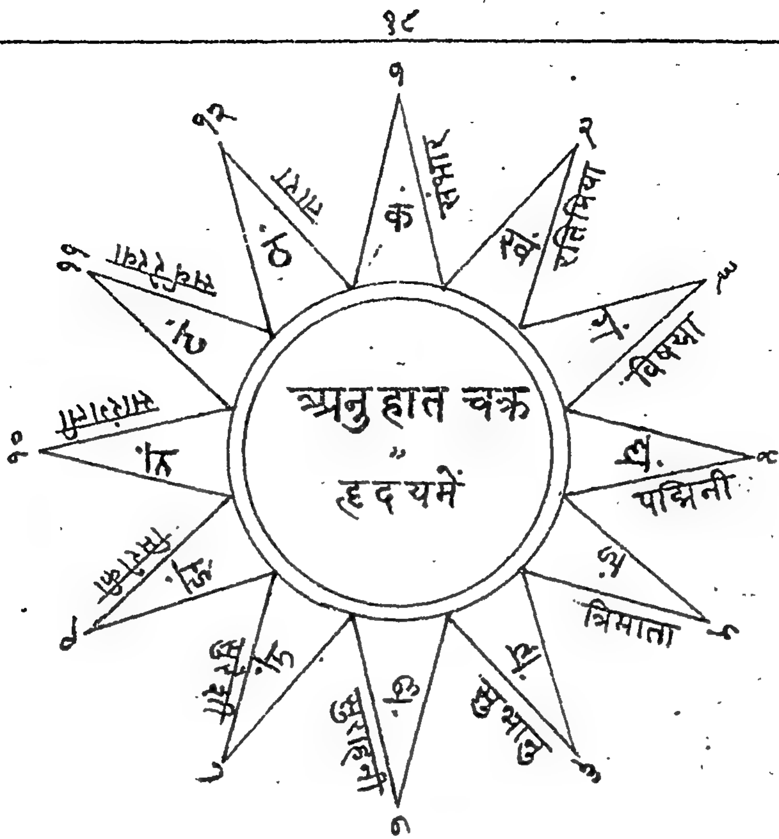
श्रवण	कीर्तन	स्मरण	उदार	अर्चन	वंदन	दास्य	हर्ष	उदास
जससुन्मा	जसगाना	हृदयमें स्मर्णकरना	पांवदाबना	मानसीपूजा	तनमनसेपाव पडे	हुकममाने.	येकजान्ना	आपमेंजान्ना.

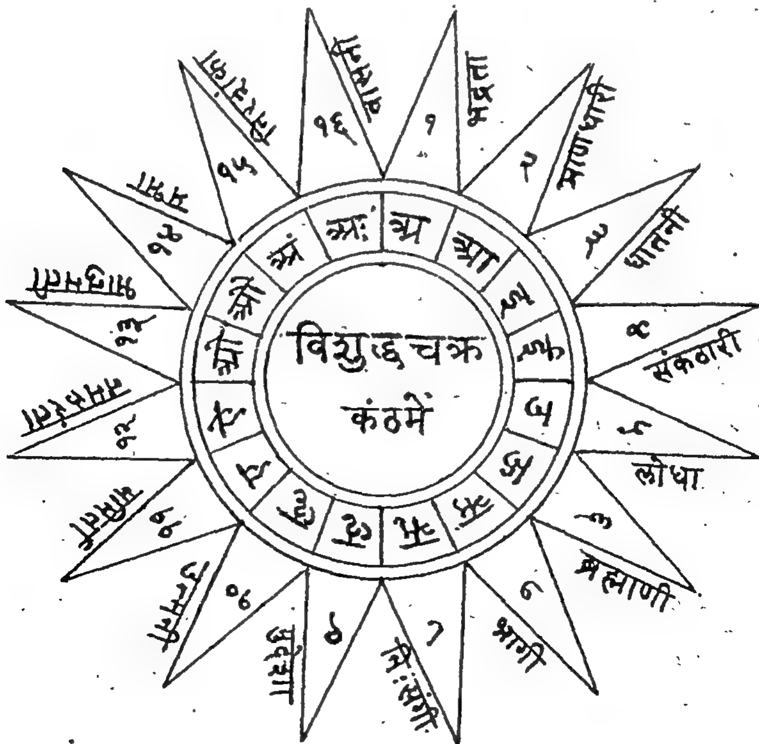
यंत्रषटचक्रशरीरमें पृष्ठ १२६








अनुहात चक्र
हृदयमें
कं
खं
गं
घं
पद्मिनी
विषया
रतिप्रिया
त्रिमाता


विशुद्ध चक्र
कंठमें
भवता
प्राणधारी
धातनी
संकठारी
लोधा
ब्रह्माणी
भोगी

सूर्यकला.

३२
ह

अग्न चक्र
नेत्रमें

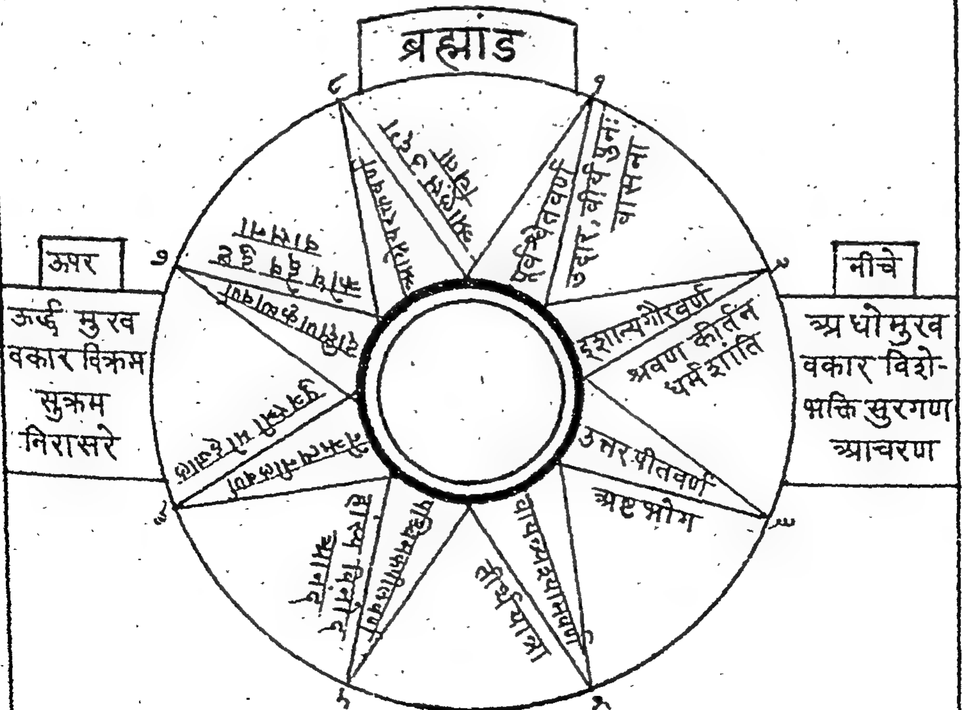
शां
३४

चंद्रकला.

किरनी १ ह्वालिनी २ दहनी ३ दीपनी ४ जोतनी ५ तेजनी ६ इंदपतिजंती ७ शशिप्रभा ८ सोसनी ९ तापनी १० लोहकी ११ दाहकी १२

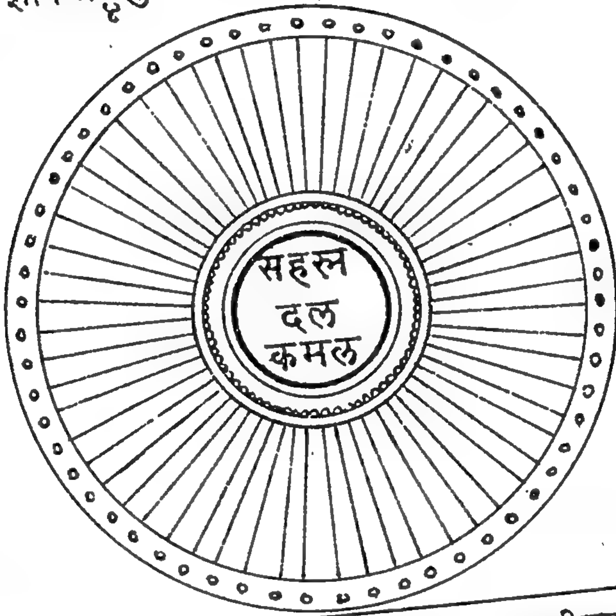
पूर्वनी १ भद्रा २ अलहादी ३ सुनेखी ४ कमोदनी ५ असोदनी ६ मोहनी ७ करसुदनी ८ चिदा ९ कामनी १० लक्ष्मी ११ व्यापनी १२ पद्मिनी १३ मतनी १४ बकारी १५ उदाकी १६

धारणा लक्षणा पांच तत्वके जुदाजुदा ॥ पृथ्वी धारना चौकोर वः अक्षर पीत वरण जल मंडल तेजकरे प्राणको वह स्तंभन करे ॥ जल धारणा बकार अक्षर चंद्र खंड कंठमें तेजकरे वहा स्तंभन करे ॥ अग्न धारणा त्रकोण फा· अक्षर पद्मराग आभाश इंद्रगूण तालुका मध्य रुद्र निवास तेजकरे ॥



ब्रह्मांड स्थान

तेज वरण सोमनाथ देवता आदिशक्ति नारदऋषी आदिकला रकार: मात्रा हरण गर्भ शरीर अजपाजाप अधोमुखगति ॥ वायु धारणा भैरु मधजा अक्षर षटकोण मेघवरण ईश्वर निवास खेचरी मुद्रा धारण करी सिद्धिपावे ॥ आकाश धारणा ब्रह्मरंध्र अकार विष्णु निवास हा अक्षर परम मुक्तिदाता ॥ धारनाकानाम ॥ वहतनी पृथ्वी ॥ दाउनी जल ॥ दहनी अग्न ॥ शोषनीवायु ॥ भ्रामनी आकाश ॥

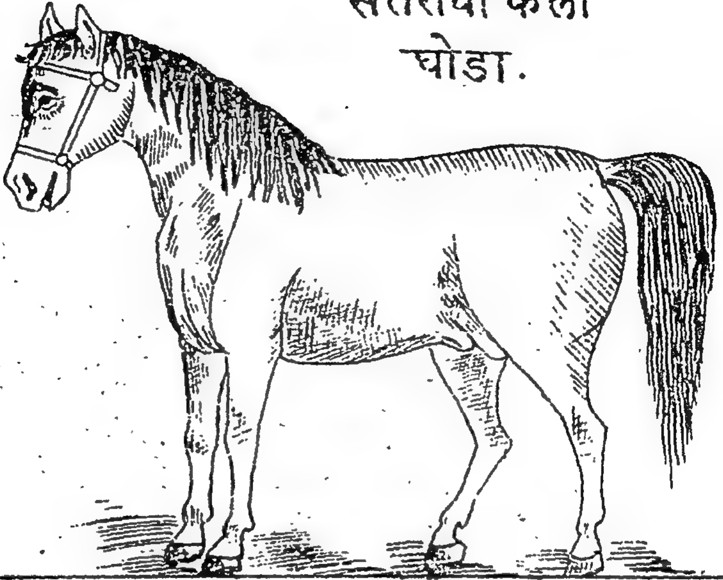


तालुस्थान सहस्त्रदल कमल नानावरण सद्गुरु देवता कलातीत प्रकार मात्रा माया शरीर यथार्थ वेद निरामय अभिमान अजपाजप १०० ॥ ध्यानवर्णन ॥ पदरक्षा कुंभकमें मंत्रजपै अक्षरका ध्यानकरे ॥१॥ पिंडरक्षा षट्चक्रको और सद्गुरुका ध्यानकरे ॥२॥ रूपरक्षा त्रिकुटी मध्यमें सूक्ष्म लिंगको ध्यानकरे पहले दीपजोत पीछे दीप मालिका उसके पीछे नक्षत्र मालिका उसके उपरांत बीजलीकी परकाश अंतमें अंनतकोट चंद्र सूर्यकी प्रकाश देखै दशो दिशा झलामल ज्योत प्रगट हो जाती हैं ॥३॥ रूपातीत शुन्य ध्यान रूपरेखनहीं, नीचेकीगति ग. जानेकी आपी आपकुछ द्वैत नहीं ॥४॥ समाधीलक्षण ॥ शीत ॥१॥ उष्ण ॥२॥ वर्षा ॥३॥ क्षुधा ॥४॥ मूर्छा ॥५॥ भ्रम ॥६॥ आलस ॥७॥ जागृत ॥८॥ स्वप्न ॥९॥ सुषुप्ति ॥१०॥ कुछ रहे नहीं जैसे नमक-

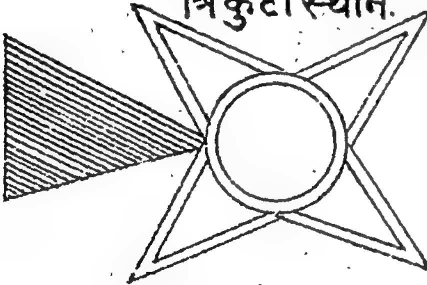
दूध पानीमें मिल जाता है. उसीप्रमाण भिन्नभाव रहे नहीं. हर्ष शोक १२६
दुःख सुख मान अपमान ज्ञान अज्ञान जात कुल वरण आश्रम जीव ब्र
ह्मका भेद जाता रहे अखंड अद्वैत एक हो जाता है.

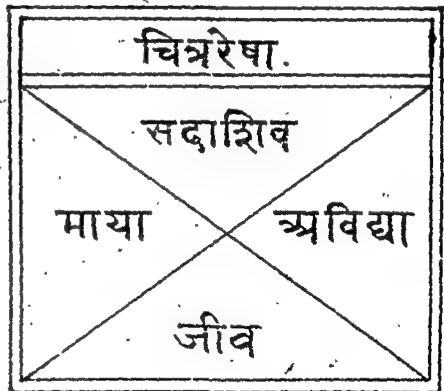
सतरावी कला
घोडा.

भंवरगुंज १ संख धुन २ मर्दंग ३ ताल ४
चटका ५ मुरली ६ बीन ७ दुंदभी ८
सिंघगर्ज ९ धुधक १०

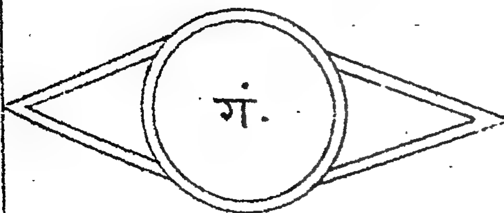


त्रिकुटीस्थान.





गोल्लाट

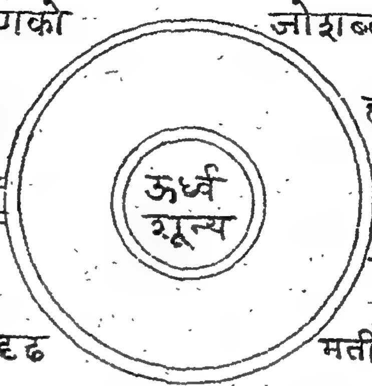


श्रीहाट

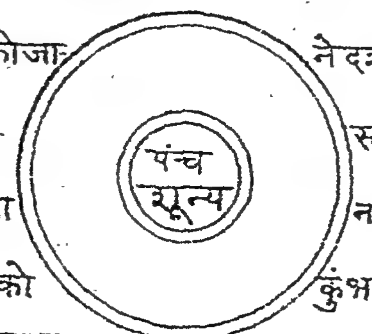


॥ यमदस प्रकार ॥ १ ॥ नेमदस प्रकार ॥ २॥ आसनदो प्रकार ॥ ३॥ व्रतपत्या आहार ॥ ४॥ प्राणायाम ॥ ५॥ धारणा ॥ ६॥ ध्यान ॥ ७॥ समाधी ॥ ८ ॥ ॥ यमके लक्षण दस है ॥ प्रथम अहिंसा मन बचन कर्मसे दुःख न करे ॥ १॥ दूसरा लक्षण सत्य वाक्य दो प्रकारका सत्य बोले ब्रह्म निराकारको सत्य जाने ॥ २॥ तीसरा लक्षण असत्य तनमनसे चोरी न करे ॥ ३॥ चोथा लक्षण ब्रह्मचर्य आठ प्रकारका काम रोके ॥ ४ ॥ पांचमा मैथुन आठ प्रकारका ॥ सुमरण १ श्रवण २ दृष्टि ३ भाषण ४ प्रेम ५ स्पर्श ६ हास ७ रत ८ को त्याग करे ॥ ५॥ छटवा लक्षण क्षमाको दुष्टकी मारगारी कटुक बचन सहे ॥ ६॥ सातवां धृतकोलक्षण कालसे न डरे सदां काल धैर्य रारवै ॥ ७॥ आठवा दयाको लक्षण सब जीवोको अपने समान जाने ॥ ८॥ नवां अरजूको लक्षण कोमल रहे मधुर बोले ॥ ९ ॥ दसवां लक्षण मिता आहार सात्विक अन्न सुद्ध पावे राग दोष त्यागे ॥ १०॥ नेमको लक्षण दस प्रकार ॥ प्रथम तपको लक्षण शब्द स्पर्श रूप रस गंधको त्यागे ॥ १॥ दूसरा संतोषको लक्षण जो प्रालब्ध प्रमाण प्राप्ति है उसपर संतोष रखै ॥ २॥ तीसरा आस्तिक लक्षण वेद गुरु

शास्त्रबचनकोमाने ॥ ३॥ चौथा दानको लक्षण दो प्रकारका. अन्न वस्त्र जलसे पोषण करे ॥ १॥ ज्ञानउपदेशकरे ॥ २॥ पांचवां लक्षण पूजा सोला प्रकारके पूजन करे प्रीत निष्काम रहे ॥ ५॥ छटवां लक्षण श्रवणको जोशब्द अपने कानमे आवे उसको सुने हंसके प्रमाणयानी छोडकर दूध पीवै ॥ ६॥ सातवां लाजको लक्षण गुरुसंत घटकीलज्जा रख्यै ॥ ७॥ आठवां दृढ मती लक्षण मान अपमान को समान जाने ॥ ८॥ नवां लक्षण जापको पवन पकडके मौन होकरके जापकरे ॥ ९॥ दशवां लक्षण होमको ब्रह्म अग्नियोग अग्नि को प्रगट करके मोहको जलावे ॥ १०॥ आसन लक्षण दो प्रकारका सिद्ध आसन ॥ १॥ पद्मासन ॥ २॥ बांये पाऊकी एडी गुदाके फूल पर दबावे और दहना पांव लिंगके ऊपर दबावै वो सिद्ध आसन है ॥ बाये पाउ पर दहना पाउ रखे और हाथभी उलटा करके रखै पद्मासन है ॥ प्राणायाम लक्षण तीनो नाडी कोजाने दशवायुको जाने षट् चक्रको जाने ये विस्तार संपूरण देख्ये पीछे प्राणायाम करे इंडा नाडी वामसे पुरककरे स्वासाको रोकै उसको कुंभक कहते हैं पिंगला







नाडी दक्षिणसे रेचक करे बीजमंत्र संयुक्त खोडस पूरक
१२६ करे ॥ चोसट कुंभक करे द्वात्रिंशत् ३२ रेचक करे पीछे विपरजे करे
तथा पिंगलासें पूरक करे इडासे रेचक करे यह ऋषियोंका
मतहैं गोरख मत छ चोपाइमे ऐसा है. सोहं सोहं सोहं
हंसो ॥ सोहं सोहं अंसो १ स्वासा स्वासा सोहं -
जापं ॥ सोहं सोहं आपै आपं ॥ २ ॥ द्वादशमात्रा
पूरक भरना ॥ द्वादशमात्रा कुंभक करना ॥ ३ ॥ द्वादश
मात्रा रेचक जानं ॥ पूरण अपूर विपरजे ठानं ॥ ४ ॥
अधम मात्रा द्वादश जुगतं ॥ मध्यम मात्रा दोगुण युगतं
॥ ५ ॥ उत्तम मात्रा त्रिगुण कहिये ॥ प्राणायामसा
विरती लहीये ॥ ६ ॥ कुंभक आठ प्रकारका ॥ सूर
ज भेदन १ उजाई २ सीतकार ३ सीतली ४ भद्रका
५ भ्रामरी ६ मोरछा ७ केवल ८ यह आठ पवन औ-
रोधन है ॥ कुंभक नाम मुद्रा दस प्रकारकी है ॥
शुन्यमहामुद्रा ॥ १ ॥ महावेधक २ महावेधक खेचरी ३
बड्यानवेदक ४ मूलवेदक ५ बन्धजालिंदर ६ विप्रीत
७ क्षीणीपण ८ जनोली ९ शक्ति १० ॥ ॥



यंत्र षट्चक्र योग समाधी. पृष्ठ १२६

नंबर	नाम	आधारचक्र	स्वाधिष्ठान चक्र.	मनीपुरचक्र	अनुहात चक्र	विसुद्ध चक्र	अग्निचक्र
१	अस्थान	गुदा	लिंग	नाभी	हृदय	कंठ	नेत्र
२	प्रमाणदल कमल	४	६	१०	१२	१६	२
३	वरण	पीत	रक्त	नील	कृष्ण	श्वेत	श्याम
४	देवता	गणेश	ब्रह्मा	विष्णु	रुद्र	जीव	परमहंस
५	शक्ति	सुद्धिबुद्धि	सावित्री	कमला	उमा	विद्या	ईंगलापिंगला सुसमना
६	ऋषी	ईश्वर	सूर्य	पवन	इंद्र	अग्नि	हंस
७	कला	कुरंम	उरमे	जोती	घुमरा	ज्वाला	सतरावी
८	मात्रा	आकार	हरिष	दीर्घ	पुलना	अर्ध	अनुराच
९	शरीर	विराट तथा अस्थूल	लिंगतथा सूक्ष्म	कारन	महाकारन	केवळ	ज्ञान
१०	वाक्य	वैरवरीजि व्हामें	मध्यमा कंठमें	पश्यत हृदयमें	परा नाभीमें	परमपरा लिंगमें	अनुराच
११	वेद	रघुवेद	यजुर्वेद	श्यामवेद	अथर्वणवेद	सुक्षवेद	आकाश वाणी
१२	तत्वधारणा	पृथ्वी	जल	अग्नि	वायु	आकाश	शुन्य
१३	लिंग	आचार्य	गुरु	शिव	जंगम	जोति	सिध्द
१४	मुद्रा	खेचरी	चाचरी	भोचरी	अगोचरी	उन्मनी	श्यामभवी
१५	पवन	अपान	समान	प्राण	उदान	वयान	मन
१६	मुक्ति	सालोक	सामीप	सारूप	सायुज्य	स्वयंभू	निर्गुण
१७	जाप	६००	६०००	६०००	६०००	१००	२०००
१८	अवस्था	जागृत	स्वप्न	त्रिषोप्त	तुर्या	उन्मनी	उतत्ति इस्थिती प्रलय
१९	अभिमान	विश्व	शरीर	राजस	आत्मा	ज्ञान	नीर अभिमान
२०	आनंद	विश्यानंद	योगानंद	अद्वैतानंद	परमानंद	ब्रह्मानंद	नित्यानंद
२१	आसन	पद्मासन	सिध्द आसन	वज्रासन	कुरम आसन	धनुष आसन	सिंहासन

यंत्रषट्चक्र अक्षर नामगुण सहित.

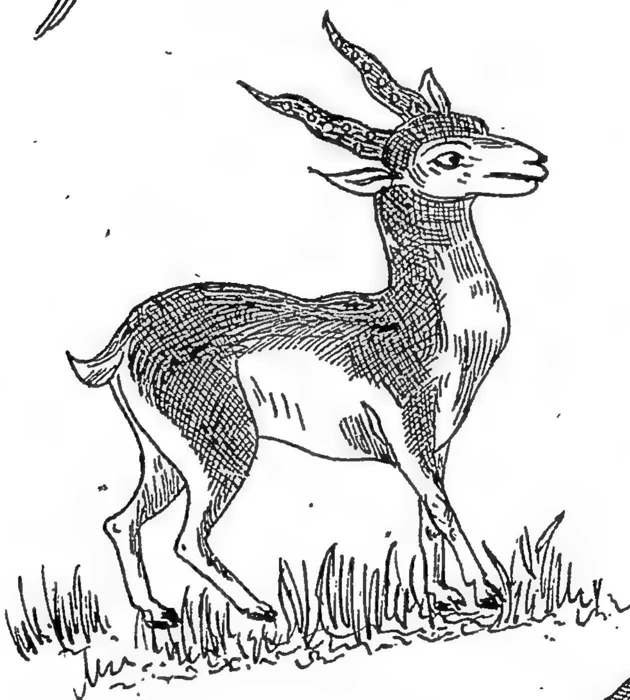
पृष्ठ १२६

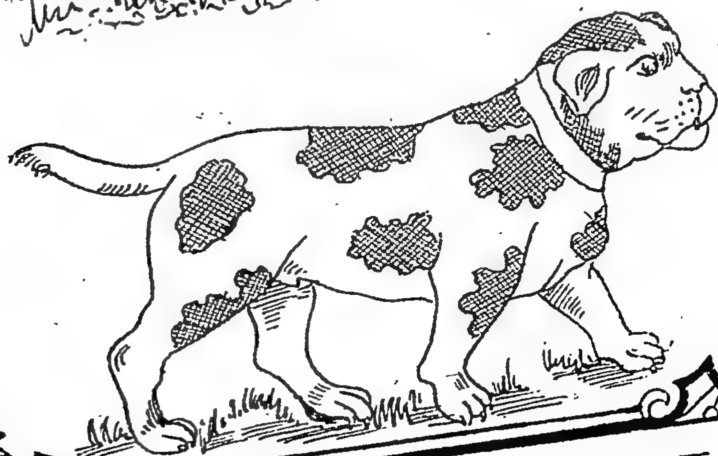
अक्षर	नाम	गुण	अक्षर	नाम	गुण
आधार चक्र गुदामें. १			जं ८	सुरेशी	०
वं १	सहजानंद	रुहावा	झं ९	गिरोकी	०
शं २	परमानंद	अरुहा	ञं १०	सारंगणी	०
षं ३	वीरानंद	हांक	टं ११	सर्वरेषा	०
सं ४	जोगानंद	पित्ता	ठं १२	तारा	०
स्वाधिष्ठान चक्र लिंगमें २			विसुध चक्र कंठमें ५		
बं १	उगती	प्राणशक्ति	अ १	भद्रता	०
भं २	वारणी	कीर्ति	आ २	प्राणधारी	०
मं ३	सराहणी	गर्भति	इ ३	घातनी	०
यं ४	रोहणी	कुबुद्धि	ई ४	संकटारी	०
रं ५	अमुर्ती	अविश्वासी	उ ५	लोथा	०
लं ६	परमूर्ती	मुरछती	ऊ ६	ब्रह्माणी	०
मनीपुर चक्र नाभीमें ३			ऋ ७	भागी	०
डं १	सर्वअंगी	तृषा	ॠ ८	निसंगी	०
ढं २	शोषणी	इच्छा	ऌ ९	मुदसा	०
णं ३	जया	लज्जा	ॡ १०	उन्मनी	०
तं ४	भद्रा	पवन	ए ११	निमर्ता	०
थं ५	शांति	आशा	ऐ १२	नमरूरंता	०
दं ६	कृषया	अनादि	ओ १३	भानुमती	०
धं ७	तोखनी	काष्टा	औ १४	मरभा	०
नं ८	रुचना	ग्रहणी	अं १५	निरसंका	०
पं ९	दुईशीऋषी	विषदा	अः १६	वासनी	०
फं १०	दक्षिणी	निद्रा	अघिचक्र नेत्रमें. ६		
अनुहात चक्र हृदयमें. ४			क्षं १	सूर्यकला	१२
कं १	संभार	०		किरनी १ ह्लालनी २ दहनी ३ दीपनी ४	
खं २	रतिप्रिया	०		जोतनी ५ तेजनी ६ इदयतजंनी ७	
गं ३	विशिया	०		शशिप्रभा ८ सोसनी ९ तापनी १०	
घं ४	पदमनी	०		लोहकी ११ दाहकी १२	
ङं ५	अमाता	०	हं २	चंद्रकला	१६
चं ६	सुभानु	०	पूर्वनी १ भद्रा २ अल्हादि ३ सुनेरवी ४ कमोदिनी ५ असुदनी ६ मोहनी ७ कृतदनी ८ चिदा ९ कामनी १० लक्ष्मी ११ विषापनी १२ पद्मी १३ मतनी १४ बकाशी १५ उदाकी १६		
छं ७	सुराहणी	०			

यंत्रमुद्रा. पृष्ठ १२६

नंबर	नाम	खेचरी	भोचरी	चाचरी	अगोचरी	उन्मनी
१	मुकाम	जिव्हा	नाक	आख	कान	काम
२	स्वाद	खटरस	गंध	रूप	पाद	इंद्रिय
३	चाल	मीन	भ्रमर	वेग	मृग	गज
४	मुक्ति	सालोक	सामीप	सारूप	सायूज	स्वयंभू
५	शून्य	उर्ध	मध्य	अधो	क्षुधा	निरालंब
६	गुण	रजोगुण	सतोगुण	तमोगुण	शुद्ध सत्वगूण	परब्रह्म गूण
७	कला	८	२	१२	१४	१६
८	वायु	अपान	समान	प्राण	उदान	व्यान
९	संयुक्त	बुध	मन	चित्त	नाद	अनहद







[illegible] प्रिंटिंग प्रेस, खेतवाडी मेनरोड मुंबई नं.४ प्रिंटर :-कृ.स.

श्रीगणेशाय नमः ।

अथ

अभिलाखसागर ।

प्रथम तरंग प्रारंभ ।

प्रथम—वारंवार श्रीगुरु महाराजके चरणकमलकी धूरको आदि मध्य अन्त तीनों कालमें पैरीपैर और मत्था टेकता हूं. जो भवसागररूपी संसार महाघोर पार होनेके निमित्त सहज जहाज है और अज्ञानरूपी अन्धकार नाश होनेके कारण अखण्ड सूर्य है ।

दूसरे—निर्गुण निराकार निरंजन अविनाशी अलखनामको मन कर्म वचनसे कोटचनुकोटि निहोरा और वन्दना करता हूं । जो सर्वव्यापक और सर्वकर्त्ता और सर्वज्ञ होकर आज-तक किसीके निश्चयमें नहीं आया और ब्रह्मा विष्णु महेश शेष गणेश आदिक देवताओंने भी उसका भेद नहीं पाया ।

तीसरे—उस निराकारकी इच्छा माया महामोहनीको जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति तीनों अवस्थामें महापक्ष जुहार और नमस्कार करता हूं । जो अद्वैत अखण्ड परब्रह्म परमात्माका ज्ञान नष्ट करके आवागमन जन्ममरण युत उपाधि संसारमें सर्वज्ञ चैतन्य साक्षीको मोहित और बंधन किया और कनक कामिनीरूपी विषय होकर चारों प्रकारके जीवको कीट मर्कटके समान अज्ञान और अशक्त किया ।

चौथे—आहार निद्रा मैथुन तीनों प्रकृतिको स्थूल सूक्ष्म

कारण तीनों शरीरसे हजारों निछावर और अरदास करता हूं।
जो चौरासी लाख योनिमें प्रधान होकर कोई जीव चराचरको
क्षणमात्र शान्त नहीं किया और जीवनपर्यन्त हर्ष भय तथा
दुःख सुखसे कोई निवृत्त नहीं होता।

पांचवें—तमोगुणी अहंकार हमको प्रातः मध्याह्न सायंकाल
त्रिकालमें अर्व खर्व पालागन और प्रणाम करता हूं। जो इन्द्र
दवी प्राप्त होनेपरभी आशा व तृष्णा और वासनासे रहित
हीं होता और अज्ञानरूपी शरीरका तदाकार होकर अपने
निराकार रूपको भूलकर शरीरके दुःख सुखको अपना दुःख
सुख जानता है।

छठवें—अपनी माता पिताको भूत भविष्यत् वर्त्तमान
तीनों कालमें लाखों विनती और करुणा करता हूं। जिसने
मल और मूत्रसे इस देहको विमल करके अज्ञान समयमें पालन
किया और नाना प्रकारका प्रपंच समान ज्ञान, संसारी मार्गका
उपदेश किया।

सातवें—भेष और बानेको बाल तरुण वृद्ध तीनों अव-
स्थामें साष्टांग अनन्त दंडवत् और धोक देता हूं। जिसके
धनानेमें यह शरीर प्रपंची पंच धातु जडकी कुधातुसे सुधातु
हो जाती है और पाषाणरूपी जड बुद्धि विमल होकर पारस-
रूप हो जाती है।

इति आभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद इष्टदेव आदिक
वन्दनाविचार नाम प्रथम तरंग सम्पूर्ण ॥ १ ॥

दूसरा तरंग प्रारंभ ।

अथ श्रीगुरुदेवाय नमः । अब कुधातु जन्मकी कथा अथवा गृहस्थाश्रमकी अवस्थाकी व्यवस्था वर्णन करना इस ग्रन्थमें निरर्थक और विस्तार है । केवल सुधातु जन्मकी कथा सूक्ष्म सिद्धान्त ब्रह्मज्ञानका जो सन्त और महात्माओंके सत्संगमें प्राप्त हुआ अभिलाखसागर ग्रन्थ नाम धरके गुरु-शिष्यका संवाद जो तरंग और लहरीके समान है वर्णन करता हूं । जिसके पढने और सुननेसे श्रोता वक्ता अधिकारी जन सिद्धान्त पदार्थको जानकर आत्मज्ञान और ब्रह्मज्ञानके सुखको प्राप्त होवेंगे और अनेक प्रकारकी भर्मना जो ब्रह्म निराकारकी विचारमें ब्रह्मज्ञानी जगत्‌ज्ञानी वादविवाद करते हैं नाश होकर निश्चय तत्वपद जो अनेक महात्माओंके सत्संगसे सिद्धान्त हुआ जानेंगे और दासको इस परिश्रमके बदले भूल चूक माफ करके आशीर्वाद देवेंगे । यह मूर्ख अज्ञान सर्व भेषका सेवक अभिलाखदास उदासी जब संचित प्रारब्धके संयोगसे संसारी व्यवहारके योग्य नहीं रहा । अथवा, इस प्रपंचके संयोग अपनेमें सामर्थ्य नहीं देखा तब जगत्‌के व्यवहार और सम्पदासे हानि ग्लानि मानकर भगवच्छरण जानेकी इच्छा की, और अच्छे २ सन्त महात्मा सिद्धोंके शरणमें जाकर भगव-च्छरण जानेकी राहका विचार किया और बहुत काल सातों पुरी चारों धाम चारों दिशामें ऐसे गुरुकी खोजनामें जो भगवच्छरण जानेकी राह शुद्ध निर्मल उपदेश करे भ्रमता रहा

बडे २ सिद्ध महात्मा श्रीमन्त सन्त महन्त स्थानधारी जमातधारी जिनके अखाडेमें हजारों चेला नौकर चाकर हाथी घोडा राजेश्वरी स्थान मकान माफी जागीर वर्षासनवाले मिले परन्तु अपना मनोरथ सिद्ध नहीं हुआ । वे लोग भगवच्छरण जानेकी राह क्या जानें ? तब लाचार होकर जंगल उत्तराखण्डको जहां सुमेरुगिरि और हिमालय पहाड और सन्त महात्माओंका मूलस्थान और खान है तहां चला गया । वहांभी अनेक महात्माओंके सत्संगमें कुछ काल रहकर उनका ज्ञान ध्यान देखता रहा । जो सन्त महात्मा अपने विचारमें अच्छा आता रहा उसकी सेवा करके प्रसन्न हुए । उपरान्त भगवच्छरण जानेकी राह पूंछता रहा और वे लोगभी अपने २ ज्ञान बुद्धि प्रमाण जैसा जिसको अनुभव था, तैसा तिसको भगवच्छरण जानेकी राह उपदेश करते रहे । वही संवाद यथार्थ जैसाका तैसा गुरुशिष्यका प्रश्नोत्तर केवल ब्रह्मज्ञानका सूक्ष्म सिद्धान्त कहता हूं । श्रोता वक्ता अधिकारी सम्बन्धी जन ब्रह्मज्ञान मेरी वन्दना और निहोरेपर कृपा करके अच्छी तरह ध्यान रक्खें, कि इस ग्रन्थमें महात्मा गुरुशब्द अनेक हैं उनका विस्तार आगे ग्रन्थ देखनेमें प्रकट होगा । नाम और पता उनका अच्छी तरह ध्यानमें नहीं है । इस कारण नहीं लिखता । और मैं शब्द एक केवल ग्रन्थका कर्त्ता मूर्खता अज्ञानताकी सम्पूर्ण सत्ता अभिलाखदास उदासी

आत्मज्ञानी अयोध्यावासी हूं। ग्रन्थका यह कारण (उत्पत्ति) जानना चाहिये।

इति अभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद कारणोत्पत्ति ग्रन्थविचार नाम दूसरा तरंग सम्पूर्ण ॥ २ ॥

तीसरा तरंग प्रारंभ।

प्रथम लहरी।

भगवच्छरण जानेकी राह भगवान् जाने।

अथ श्रीइष्टदेवाय नमः। प्रगट हो कि जंगल उत्तराखंडमें अनेक पहाडोंके बीचमें एक बडा पर्वत है। उसका आदि और अन्त किसीने नहीं जाना। उसको छोटा सुमेरु गिरि नाम पर्वत कहते हैं। उसपर अच्छे २ महात्मा सिद्ध इच्छारूपी ज्ञानस्वरूपी वास करते हैं। उनका हाल सम्पूर्ण देवसमान है। आकाशगंगाका जल, कन्द, मूल भोजन अष्ट प्रहर परब्रह्मका ज्ञान, ध्यान, वैराग्यमें दृढ, इस रहनी और वृत्तिसे सदा आनन्दमें रहते हैं। उस मंडलीमें एक महात्मा सम्पूर्ण ज्ञान और भक्तिके रूप जो दर्शाते थे तब मैं उनके पास गया और सब हाल अपना कहकर भगवच्छरण जानेकी राह पूंछी। तब महात्मा गुरु बोले कि मेरेको ४ युग अथवा ४८ वर्ष हो गये, राहका पता नहीं मिला। मेरे ज्ञानमें जिसको वह अपनी शरणमें बुलावे वह जा सक्ता है और रस्ताभी उसीको प्राप्त होगा। दूसरा कोई जा नहीं सक्ता और मार्गभी प्राप्त नहीं हो सक्ता। मैंने

हाथ जोडकर कहा कि भगवान्के बुलानेका क्या कारण है? उसके दरबारमें अपने विना कौन बडा कार्य है? जो बुलावेंगे। इस ज्ञानमें संसारी प्रपंच छोडनेवाले धोबीके कुत्ते हुए। न घरके न घाटके और मैंभी सर्पकी तरह अज्ञान होकर छछूंदर पकड लिया। अब छोडता हूं तो अंधा होता हूं और खानेमें प्राण जाता है और तुमने पहले अपने गुरुसे राहका विचार क्यों नहीं किया? और जब गुरुने राह नहीं बताया तो तुमने क्या उपदेश पाया? और चार युग विना विचारे क्यों परिश्रम किया? आखिर ऊंटका पाद हुआ और आगेभी जो परिश्रम होगा निरर्थक जावेगा। मेरे ज्ञानमें भगवान्के बुलानेपर आसरा रखना निश्चय आकाशफलफूलकी आशा करना है। यह सुनकर महात्मा गुरु चुप हो रहे। मुझको जवाब दिया कि मेरेको भगवच्छरण जानेकी राह नहीं दर्शाती और तुमभी जब खोजना करके हार जाओगे, तब हमारा ज्ञान याद होकर प्रमाण होगा।

इति अभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद तीसरे तरंगमें मार्ग विचार भगवच्छरण नाम प्रथम लहरी सम्पूर्ण।



दूसरी लहरी।

हठयोग आदि भगवच्छरण जानेकी राह बहुत हैं।

अथ श्रीसरस्वत्यै नमः। मैं दूसरे महात्माके पास गया और सब हाल अपना कहा। तब महात्मा गुरु बोले कि भगवच्छरण जानेकी राह अनेक हैं। इस उपायके वास्ते चार वेद

छः शास्त्र अठारह पुराण व्यास भगवान्‌ने बनाये और लाखों ग्रन्थ दूसरे आचार्योंके बनाये हुए मौजूद हैं और योगशास्त्र प्रमाण अनेक राह भगवच्छरण जानेकी प्रगट हैं। उन राहोंमेंसे किसी राहपर जाना चाहिये। मैंने हाथ जोडकर कहा कि मेरे जानेके योग्य जो राह निर्मल और शुद्ध हो उसका कृपा करके उपदेश कीजिये मैं जाऊंगा। तब महात्मा गुरु बोले कि प्रथम राह भगवच्छरण जानेकी श्रवण मनन निदिध्यास है। भगवत्‌की कथा अष्ट प्रहर प्रेमसे श्रवण करना और उसका एकान्तमें मनन करना अथवा विचार करना। पीछे उसका निदिध्यास करना अर्थात् दृढ होना। उस प्रमाण चलना। अनेक भक्तोंको इसी राहसे भगवत्‌की प्राप्ति हुई, अथवा मुक्ति हुई। मैंने हाथ जोडकर कहा कि मुझको कथामें प्रीति नहीं होती और अर्थ समझमें नहीं आता और सुनी हुई वार्त्ता भूल जाता हूं और कथा आरंभके पहलेही निद्रामें नाकसे शब्द आरंभ होती है और पुराणोंकी कथापर निश्चय नहीं आता। जैसे कुंभजऋषिने सातों समुद्रको हाथकी गद्दीपर रखकर पान कर लिया और पीछे मूत दिया। इस राहसे मेरा जाना किस प्रकारसे होवे? तब महात्मा गुरु बोले कि दूसरी राह भगवच्छरण जानेकी देवप्रतिमा पूजन है। विष्णु शिव शक्ति किसी देवताकी मूर्ति पाषाण तथा धातुकी स्थापित करके नवधा भक्तिसे विधिपूर्वक आचार्यके उपदेश प्रमाण पूजन करेगा और उस मूर्तिके स्वामीको प्रसन्न करेगा तो उसका

भगवत्‌की प्राप्ति होगी। मैंने हाथ जोडकर कहा कि मैं वादीके रोगसे अशक्त हूं नित्य स्नान नहीं करता जल सांपस्वरूपी दर्शाता है। दो प्रहरतक नींदमें पडा रहता हूं। कीर्त्तन भजन मूर्तिमें कुछ प्रीति होती नहीं। इस राहसे मेरा जाना क्योंकर होवे? तब महात्मा गुरु बोले कि भगवच्छरण जानेकी तीसरी राह आत्माकी सेवा भक्ति और उपकार है। यथाशक्ति दूसरेकी आत्माको अपनी आत्माके समान जाने। बहुत भक्तोंको इस राहसे भगवत्‌की प्राप्ति हुई, तुमकोभी होगी। मैंने हाथ जोडकर कहा कि जब अपने भोजन वस्त्रका ठिकाना नहीं है और अपना काम अपनेसे नहीं होता तब दूसरेका उपकार तथा सेवा होना कठिन है। मुझको नित्यका कर्म सुमेरुगिरि (पहाड) समान दर्शाता है। इस राहपर मेरा जाना नहीं हो सक्ता। विचार करो, तब महात्मा गुरु बोले कि चौथी राह भगवच्छरण जानेकी तीर्थयात्रा है। कोई सातों पुरी चारों धाम और सर्व तीर्थकी परिक्रमा और दर्शन और स्नान करेगा वह निश्चय करके भगवच्छरणको जावेगा। मैंने हाथ जोड करके कहा कि मुझसे एक कोसभी चला नहीं जाता। चारों अवस्थामें एकभी तीर्थ होना दुर्लभ है। नित्य कर्मको थोडी दूर जाना पहाड हो जाता है। यह राह मेरे जाने योग्य नहीं है। तब महात्मा गुरु बोले कि पाँचवीं राह भगवच्छरण जानेकी समाधि है। जो कोई अष्टांग योग सम्पूर्ण सिद्ध करेगा सो भगवत्‌को प्राप्त हो जावेगा। मैंने हाथ जोडकर कहा कि मुझसे

जप तप क्रिया नहीं पूरी होती। तब अष्टांग योग कैसे सिद्ध होगा? आसन लगाना, श्वास चढाना बहुत कठिन है; मैं नहीं कर सक्ता। तब महात्मा गुरुने छठवीं राह जलशयन जलधाराकी बताई। मुझसे ठंढका कष्ट सहन नहीं हो सक्ता। सातवीं राह चौरासी धूनी पंचधूनीको बताया, वही भी मुझसे अग्निका तेज सही नहीं जाता। आठवीं राह शूलशय्या बताया, उसमें कांटा चुभता है। नौवीं राह झूला बताया, उसमें चक्कर आता है। दशवीं राह ऊर्ध्वबाहु होना बताया, उसमें क्षणमात्र हाथ उठाया नहीं जाता। ग्यारहवीं राह मौन होनेका बताया, मुझसे एक पल चुप रहा नहीं जाता। बारहवीं राह ठाढेश्वरी होना बताया, मेरेसे चार घडी खडा नहीं हुआ जाता। कमरमें बडा दर्द होता है।

इस प्रमाण महात्मा गुरुने अनेक राह बताया परन्तु मेरे जाने योग्य कोई राह नहीं पाया तब जवाब दिया कि, इसके सिवाय और कोई राह भगवच्छरण जानेकी मेरे ज्ञानमें नहीं है। जो कोई आजतक गया सो इसी मार्गपर गया। तुम्हारा जाना भगवच्छरणमें नहीं हो सक्ता और कदाचित् दूसरा मार्ग तुम्हारे योग्य होवे तो विचार करो। मेरेको ज्ञान कुछ नहीं है।

इति अभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद तीसरे तरंगमें मार्गविचार नाम दूसरी लहरी संपूर्ण।



भगवत्की प्राप्ति होगी । मैंने हाथ जोडकर कहा कि मैं बादीके रोगसे अशक्त हूं नित्य स्नान नहीं करता जल सांपस्वरूपी दर्शाता है । दो प्रहरतक नींदमें पडा रहता हूं । कीर्त्तन भजन मूर्तिमें कुछ प्रीति होती नहीं । इस राहसे मेरा जाना क्योंकर होवे ? तब महात्मा गुरु बोले कि भगवच्छरण जानेकी तीसरी राह आत्माकी सेवा भक्ति और उपकार है । यथाशक्ति दूसरेकी आत्माको अपनी आत्माके समान जाने । बहुत भक्तोंको इस राहसे भगवत्की प्राप्ति हुई, तुमकोभी होगी । मैंने हाथ जोडकर कहा कि जब अपने भोजन वस्त्रका ठिकाना नहीं है और अपना काम अपनेसे नहीं होता तब दूसरेका उपकार तथा सेवा होना कठिन है । मुझको नित्यका कर्म सुमेरुगिरि (पहाड) समान दर्शाता है । इस राहपर मेरा जाना नहीं हो सक्ता । विचार करो, तब महात्मा गुरु बोले कि चौथी राह भगवच्छरण जानेकी तीर्थयात्रा है । कोई सातों पुरी चारों धाम और सर्व तीर्थकी परिक्रमा और दर्शन और स्नान करेगा वह निश्चय करके भगवच्छरणको जावेगा । मैंने हाथ जोड करके कहा कि मुझसे एक कोसभी चला नहीं जाता । चारों अवस्थामें एकभी तीर्थ होना दुर्लभ है । नित्य कर्मको थोडी दूर जाना पहाड हो जाता है । यह राह मेरे जाने योग्य नहीं है । तब महात्मा गुरु बोले कि पाँचवीं राह भगवच्छरण जानेकी समाधि है । जो कोई अष्टांग योग सम्पूर्ण सिद्ध करेगा सो भगवत्को प्राप्त हो जावेगा । मैंने हाथ जोडकर कहा कि मुझसे

जप तप क्रिया नहीं पूरी होती। तब अष्टांग योग कैसे सिद्ध होगा? आसन लगाना, श्वास चढाना बहुत कठिन है; मैं नहीं कर सक्ता। तब महात्मा गुरुने छठवीं राह जलशयन जलधाराकी बताई। मुझसे ठंढका कष्ट सहन नहीं हो सक्ता। सातवीं राह चौरासी धूनी पंचधूनीको बताया, वही भी मुझसे अग्निका तेज सही नहीं जाता। आठवीं राह शूलशय्या बताया, उसमें कांटा चुभता है। नौवीं राह झूला बताया, उसमें चक्कर आता है। दशवीं राह ऊर्ध्वबाहु होना बताया, उसमें क्षणमात्र हाथ उठाया नहीं जाता। ग्यारहवीं राह मौन होनेका बताया, मुझसे एक पल चुप रहा नहीं जाता। बारहवीं राह ठाढेश्वरी होना बताया, मेरेसे चार घडी खडा नहीं हुआ जाता। कमरमें बडा दर्द होता है।

इस प्रमाण महात्मा गुरुने अनेक राह बताया परन्तु मेरे जाने योग्य कोई राह नहीं पाया तब जवाब दिया कि, इसके सिवाय और कोई राह भगवच्छरण जानेकी मेरे ज्ञानमें नहीं है। जो कोई आजतक गया सो इसी मार्गपर गया। तुम्हारा जाना भगवच्छरणमें नहीं हो सक्ता और कदाचित् दूसरा मार्ग तुम्हारे योग्य होवे तो विचार करो। मेरेको ज्ञान कुछ नहीं है।

इति अभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद तीसरे तरंगमें मार्गविचार नाम दूसरी लहरी संपूर्ण।



तीसरी लहरी।

नामकी महिमासे भगवच्छरणको सब जाते हैं।

अथ श्रीशारदायै नमः। मैं दूसरे महात्मा गुरुके पास गया और सब हाल अपना कहा। तब महात्मा गुरु बोले कि, ध्यानसे आकाशमार्गमें देखो और मेरी आंखोंपर अपना हाथ फेर दिया। उस राहकी लीला जो देखता हूं तो बडे २ आलसी अकर्मी अज्ञानी अजात विमानोंपर चढकर आनन्दसमेत भगवच्छरणको चले जाते हैं। मुझको यह राह बहुत पसन्द आई और महात्मा गुरुसे उस राहपर जानेका उपाय पूँछा। तब महात्मा गुरु बोले, जो लोग उस राहपर जाते हैं उनसे उपाय पूंछ लो। मैं उस राहके निकट जाकर एक जानेवालेसे तीन प्रश्न किये कि महाराज! आप कौन हैं और कहां जाते हैं, और क्योंकर जानेकी सामर्थ्य प्राप्त हुई? तब उस जानेवालेने बडी बेपरवाहीसे मुझे जवाब दिया कि, मेरा नाम कवीरदास जुलाहा है और भगवच्छरणको जाता हूं। एक समय श्रीमहाराज रामानुजस्वामीने काशीके मणिकर्णिकाघाटपर रातको अनदेखे मेरे ऊपर पांव रख दिया। जब उनको आदमी मालूम हुआ तब दयावान् होकरके भगवत्का नाम मुखसे उच्चारण किया। उस नामको याद करके मैंने मगधा देशमें प्राण छोडा। जहां जीवको मरने उपरान्त गधा योनि प्राप्त होती है। परन्तु उसी भगवत्के नामके आधारसे मैं भगवच्छरणको जाता हूं। यह सुनकर मैं चुप हो रहा और दूसरे जानेवालेसेभी वही तीन

प्रश्न किये। उसनेभी ऐसा जवाब दिया कि मैं गणिका (वेश्या) हूं भगवच्छरणको जाती हूं। एक तोतेको नाम पढाती थी, उस आधारसे भगवच्छरणको जाती हूं। इसी तरह स्त्री पुरुष जो कोई मिला, उससे उस राहके जानेकी सामर्थ्य नामकी महिमा मालूम हुई यह सुनकर महात्मा गुरुकी शरणमें जाकर सब कथा विस्तारसहित कह दिया तब महात्मा गुरु बोले कि अब तुझको क्या सन्देह है? नामकी रटन करके तूभी चलाजा। मैंने हाथ जोडकर कहा कि भवत्के नाम अनन्त हैं, किस नामकी महिमा ऐसी है जिसके आधारसे मैं भगवच्छरणको जाऊं? यह शंका सुनकर महात्मा गुरु बोले कि यह शंका मुझसे समाधान नहीं होगी। मेरे ज्ञानमें भगवत्का सब नाम बराबर है। जिस नामकी रटन करेगा वही मुक्तिदाता है कम सिवाय कोई नहीं है।

इति अभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद तीसरे तरंगमें मार्गविचार नाम तीसरी लहरी संपूर्ण।

चौथी लहरी।

रामनाम प्रधान होकर बारह वर्ष भजन हुआ।

अथ श्रीजानकीवल्लभाय नमः। मैं दूसरे महात्माके पास गया और सब हालअपना कहा तब महात्मा गुरु बोले कि यहांसे थोडी दूरपर एक विचारनगरकी हाट है वहां भगवत्की दशों अवतारकी मूर्ति एक२ रुपयेपर बिकती हैं सो मोल लेकर आओ।

तब तुम्हारा बोध कर दिया जावे। मैं तुरत उस हाटमें गया और दुकानदारको दश रुपैया देकर दशों मूर्ति भगवत्‌की मांगीं तब उसने नौ मूर्ति नौ अवतारकी मुझको दी और एक रुपैया फेरकर कहा कि राम अवतारकी मूर्ति मेरे यहां जितनी बनती हैं उतनी सब महादेवजीके यहां चली जाती हैं और एक मूर्तिका दाम लाख रुपैया मिलता है। मैं चुपचाप वह नौ मूर्ति और एक रुपैया फेर लाकर महात्मा गुरुके आगे रख दिया और हाथ जोडकर कहा गुरु महाराज! इस मूर्तिके ज्ञानसे मुझको बोध हो गया कि सब नामोंमें रामनाम बडा है परन्तु यह संदेह उत्पन्न हुआ कि, इसका कारण क्या है? तब महात्मा गुरु बोले कि रामावतार सब अवतारोंमें राजा होकर ग्यारह हजार वर्ष राज्य किया और परशुराम अवतारको जनकपुरमें गुप्तज्ञान दिया और वाल्मीकि ऋषि इस नामको उलटा मरा मरा जाप करके सिद्ध हुए, जो पहले व्याधाके समान थे। रामनाम उलटा सीधा बराबर है। सबमें रमा होनेसे रामनाम हुआ और जो सदा काल अमर रहे उसको राम कहते हैं। और रमापतिभी रामको कहते हैं और शिवजी अपना इष्टदेव जानते हैं। और सर्व उपासनावाले अन्तसमय राम राम सत्य कहते हैं इस उपदेशको सुनकर मुझको रामनामका बडा बोध हुआ और भजनमें बडी प्रीति उत्पन्न हुई और महात्मा गुरुसे भजनकी रीति विचार किया। तब महात्मा गुरु बोले कि जंगलमें पहाडके ऊपर एकान्तमें रहना, कन्द मूल फल भोजन करना, प्रहर रात्रि

बाकी रहे नित्य उठना ! स्नान करके नित्य कर्म गायत्री गुरु-मंत्र आदिक पढनेके पीछे जल अग्नि सन्मुख रखकरके तुलसीकी माला लेकर बैठना । एक लाख रामनामका अजपा कंठसे जाप करना । पांच प्रहरमें पूरा हो जाता है । सांझको तारा देखकर फलाहार करना । पीछे एक प्रहर रात्रिको रामायणका पाठ करना । एक प्रहर पीछे मध्य रात्रिमें शयन करना । अष्ट प्रहर रामका ध्यान करना । कोई दिन इस साधनमें तेरा मनोरथ सिद्ध होगा और प्रत्यक्ष दर्शन रामका होगा । मैंने महात्मा गुरुकी आज्ञानुसार बडे प्रेमसे बारह वर्ष जंगल उत्तराखंडमें उसी सुमेरुगिरि (पहाड) के ऊपर वनस्पति कंदमूलका भोजन करके एक लाख नाम नित्य अजपा जाप किया । और जैसा आहार व्यवहार महात्मा गुरुने बताया था उसी प्रमाण सब सम्पूर्ण वर्त्ताव किया और तुलसीकृत रामायणकेभी तीन पाठ पूरे हो गये सर्व व्यवहार महात्मा गुरुकी आज्ञानुसार पूरा हुआ । परन्तु कुछ चमत्कार प्रत्यक्ष देखनेमें नहीं आया ।

इति अभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद तीसरे तरंगमें मार्गविचार नाम चौथी लहरी एवं तीसरा तरंग समाप्त ॥ ३ ॥

चौथा तरंग प्रारंभ ।

प्रथम लहरी ।

अनेक जन्मके भजनमेंभी प्राप्त होना उसका दुर्लभ है ।

अथ श्रीराधावल्लभाय नमः । जब बारह वर्ष रटन करते

हो गये और रामका दर्शन प्रत्यक्ष नहीं हुआ अनेक अनुभव भयानक मनोहर शान्त जो हुआ वह भ्रमरूपी यथार्थ नहीं हुआ कदाचित् सम्पूर्ण उस अनुभवका विस्तार इस ग्रन्थमें किया जावे तो महाभारत हो जावे। इस वास्ते कुछ वर्णन नहीं किया गया और एक विचार अपनी भूलका प्रसिद्ध हुआ कि, महात्मा गुरुसे सम्पूर्ण विधि भजनकी पूंछा था। परन्तु परिमाण नहीं पूछा कि, कबतक भजन करना चाहिये। इस संदेहके उत्पन्न होनेसे भजनकी प्रीति सम्पूर्ण जाती रही। और ऐसा ज्ञान दृढ हुआ कि,पहले भजनका परिमाण विचार करना चाहिये इस विचारमें एक महात्माके पास जो उसी पर्वतपर विराजमान रहे थे, मैं गया और भजनका परिमाण पूंछा। तब महात्मा गुरु बोले कि हमको चौवीस वर्ष हो गये सवा लाख रामनाम नित्य एक पांवसे खडा होकर अजपा जाप करता हूं, परन्तु चमत्कार देखनमें अभी पहला दिन है और पिछले ग्रन्थोंके सिद्धान्त देखनेसे प्रगट होता है कि, अनेक जन्मके भजनमेंभी प्राप्त होना उसका दुर्लभ और कठिन है। शेषजी दो हजार जिह्वासे सदा अखंड भजन करते हैं। महादेवजी अठासी हजार वर्षकी समाधि लगाते हैं। सरस्वती शारदा गणेश आदिक देवता सदा भजन करते हैं। भजनका परिमाण कोई नहीं कह सक्ता। तुमको बारह वर्षमें महाप्रलय हो गया। यह ज्ञान सुनकर बडी चिन्ता उत्पन्न हुई। बारह वर्षका भजन मिथ्या ऊंटका पाद हो गया। रामनाम विषसमान

कडुआ लगा। ब्रह्मप्राप्तिकी आशा जाती रही। अनेक जन्मके आसरेपर भजन नहीं हो सक्ता। तत्काल फल सब चाहता है। भजनकी प्रीति विपरीत हो गई। सब आसन मुद्रा छोड-कर जलपान त्याग कर दिया। पंदरह दिन अपने आसनपर निराहार पडा रहा और भूंखा मौतका रास्ता देखता रहा।

इति अभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद चौथे तरंगमें भज-नपरिमाणविचार नाम प्रथम लहरी संपूर्ण।

दूसरी लहरी।

सर्व जीव जड, चेतन राम है।

अथ श्रीरघुवीराय नमः। उस समयमें एक महात्मा गुरु सर्वज्ञ वेषवाले आप कृपा करके आये और मेरे दुःखका कारण पूछा। मैंने सब हाल अपना विस्तारसहित कह सुनाया। तब महात्मा गुरु बोले कि भजनका परिमाण किस वास्ते पूंछते हो? तुमको क्या चमत्कार देखनेकी इच्छा है? मैंने हाथ जोडकर कहा कि मुझको केवल रामके दर्शनकी इच्छा है और कुछ वासना नहीं है। तब महात्मा गुरु बोले कि मेरे ज्ञानमें यह जीव जड चेतन सब राम है। सबमें वही राम है। उसका शुद्ध चैतन्यस्वरूप पहले निराकार था और पांच तत्त्वसेभी जुदा था। यह सबको प्रगट है। जब अपनी इच्छासे अपनी मायामें मोहित होकर आकार हो गया तब जीव हो गया। फिर जब मायाका संग छोड देवे

तब राम हो जावे जैसे कोई पंडित वेदपाठी वेश्याके संग बाजा बजावे, भडुआ कहावे। जब उसका संग छोडकरके पोथी पढे तब पंडित हो जावे। और जैसे सिंहका बच्चा आदिसे बकरियोंमें रहे, सिंहका पुरुषार्थ नहीं रहेगा। इस प्रमाण यह निराकार ब्रह्म मायाके संग आकार होकर जीव हो गया। तेरेको चमत्कार देखनेकी इच्छा है तो मायाका संग छोड दे। मैंने हाथ जोडकर कहा कि माया बडी प्रबल है। ब्रह्मलोकतक इसका राज्य है त्रिभुवनमें इसको कोई जीत नहीं सका। ब्रह्मा पंचमुखसे चतुरानन हो गये, महादेव मोहनीरूपपर कामातुर होकर दौडे, नारदका मुख बंदरका हुआ, चन्द्रमाका कलंक सर्व जगत्को प्रगट है। इन्द्रके शरीरमें हजारों भग हो गये, गरुडके मोहको काग भुशुंडने छुडाया। फिर हम ऐसे पापी जीवोंको क्या सामर्थ्य है जो मायाको छोड सकें ? यह माया शरीर छूटनेपरभी संग रहेगी। ऐसा शास्त्रका प्रमाण है और माया ब्रह्म निराकारकी छाया है, विलग नहीं हो सक्ती। यह सुनकर महात्मा गुरु बोले कि मैं तुम्हारा समाधान नहीं कर सक्ता। मेरेको जो ज्ञान था वह कहा।

इति अभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद चौथे तरंगमें भजनपरिमाणविचार नाम दूसरी लहरी संपूर्ण।

तीसरी लहरी।

काचके मोर्चे समान भजनसे माया छूटती है।

अथ श्रीसीतापतये नमः। मैं दूसरे महात्मा गुरुके पास गया और सब हाल अपना कहा। तब महात्मा गुरुने एक छोटा लोहेका कांच (मुकुर) मोर्चेमें भरा हुआ बहुत पुराना मेरेको दिया। मैं उसको आठ प्रहर साफ करके थक गया, पर सफा नहीं हुआ। तब महात्मा गुरुसे विनंती की, कि यह मोर्चा बहुत मुद्दतका है, एक दिनमें नहीं छूटेगा। कदाचित् दो चार दिनमें खटाई आदिकमें छोडकर सफा करें तब छूटेगा। महात्मा गुरुने अच्छा कहा। मैं चार रोजमें साफ शुद्ध करके लाया, सन्मुख रख दिया। तब महात्मा गुरु बोले कि, इसी प्रकारसे माया छूट जावेगी। जैसा पापरूपी मोर्चा पुराना होगा वैसा उसके छुडानेमें काल व्यतीत होगा। मैंने हाथ जोडकर कहा कि यह दृष्टान्त इस सिद्धान्तमें प्रतिकूल है। आपने बिना विचारे दुःख दिया। मोर्चा अनादि नहीं है, माया अनादि है। मोर्चेकी खटाई बहुत है; मायाकी कोई नहीं। मोर्चा छुडाना आता है माया छुडाना नहीं आती। अनेक महाप्रलय हो गये इस जीवकी गति नहीं हुई। इस महाप्रलयमें पचास वर्ष हो चुके, एक दिन हजार चौजुगीका होता है। तब महात्मा गुरु बोले कि, मायाके छुडानेका उपाय उत्तम सत्संग है और खटाई भजनकी बहुत चोखी है। और सौ वर्ष ब्रह्माका भजनके प्रतापसे लोम बराबर है। देखो लोमश ऋषि ब्रह्माके पुत्र भजनके प्रतापसे ब्रह्माके मरनेको नित्यकी उपाधि जानकर एक बाल अपने शिरका उखाडते हैं। इस कारण तुम अपने जीवात्माको

भजनकी खटाईमें कुछ काल छोड दो और सत्संगकी उपायसे विमल किया करो । काचके समान हृदय तुम्हारा विमल हो जावेगा और चौरासी लाख जीव रामस्वरूपी दर्शावेंगे। जैसे सूर्यका प्रकाश सबमें दर्शाता है । मैंने हाथ जोडकर कहा कि गुरु महाराज ! आपकी कृपासे मुझको यह ज्ञान है और पहलेभी था कि भजनके प्रतापसे सब कुछ हो सक्ता है और कुछ काल विधिसंयुक्त जैसा चाहिये वैसा भजन किया परन्तु अज्ञानरूपी यह संदेह उत्पन्न हो गया है, कि कबतक भजन करना चाहिये, कदाचित् आपको भजनका परिमाण आता हो, तो उपदेश कीजिये । मैं फिर भजन करूंगा । यह सुनकर महात्मा गुरु बोले कि भजनका परिमाण कोई नहीं कह सक्ता और यह उत्तर नहीं दे सक्ता ।

इति अभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद चौथे तरंगमें भजन-परिमाणविचार नाम तीसरी लहरी संपूर्ण ।

चौथी लहरी ।

मायासे ब्रह्म जीव हुआ । भजन औषध है, गुरु वैद्य है ।

अथ श्रीवसिष्ठाय नमः । मैं दूसरे महात्माके पास गया और सब हाल अपना कहा । तब महात्मा गुरु बोले कि ब्रह्म निराकार कर्त्ता जिसको तुम राम कहते हो वह आप मायाके रोग लगनेसे जीवरूपी आकार हो गया है । भजन उसका औषध है और गुरु वैद्य है। जबतक रोगका नाश न हो जावे,

तबतक औषध खाना धर्म है। जब रोग नष्ट हो जावेगा, तब औषध आपही आप छूट जावेगी। यह सिद्धान्त सबको मालूम है। इसी प्रमाण भजन करते २ जब माया छूट जावेगी, तब मनोरथ सिद्ध हो जावेगा और भजनभी छूट जावेगा। इसके सिवाय दूसरा परिमाण भजनका कोई नहीं है। त्रिभुवनमें कोई परिमाण नहीं कह सक्ता, सच्चे प्रेमसे सदा अखंड भजन करो, परिमाणका विचार मत करो। माया अज्ञान भ्रम वासना भूल एक अर्थके शब्द हैं, चेतनको सब साक्षी हैं और शुद्ध आत्माको घेरे हुए हैं। जब भजनके प्रतापसे ये पांचों विकार रोगसमान नष्ट हो जावेंगे, वही आत्मा परमात्मस्वरूप प्रकाशमान हो जावेगा और भजनभी छूट जावेगा।

इति अभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद चौथे तरंगमें भजनपरिमाण-विचार नाम चौथी लहरी एवं चौथा तरंग समाप्त ॥ ४ ॥

पांचवां तरंग प्रारंभ।

प्रथम लहरी।

पृथ्वी ब्रह्म है।

अथ श्रीरामनाथाय नमः। जब महात्मा गुरुने भजनके परिमाणको रोगका दृष्टान्त दिया तब बहुत चिन्ता उत्पन्न हुई, इस कारण कि, ब्रह्म निराकार होना सबका मत है। जब निराकार है तो रोग नहीं लगना चाहिये। रोग दुःख

शरीरको होता है और इस सिद्धान्तमें माया ब्रह्मसे प्रबल हुई और रोगीके भजनमें कोई आरोग्य नहीं होगा । ऐसा ब्रह्म कहां रहता है ? और कैसा स्वरूप है ? और क्या गुण उसमें है ? पहले ब्रह्मका निरूपण अच्छी तरह होना चाहिये । पीछे भजनका परिमाणविचार हो जावेगा, ब्रह्मके सिद्धान्तमें बडा पोल दीखता है । कोई निराकार कहता है, कोई साकार बताता है, कोई भोगी जानता है, कोई रोगी मानता है । ऐसा विचार करके एक महात्माके पास जाकर सब हाल अपना कहा और ब्रह्म पदार्थका स्वरूपविचार किया । तब महात्मा गुरु बोले कि स्थूलरूप ब्रह्मका पृथ्वी है । पृथ्वीसे आकाश हुआ । आकाशसे वायु हुई । वायुसे अग्नि प्रकट हुई । अग्निसे जल प्रगट हुआ । सर्व सृष्टि जड चेतन पृथ्वीसे उत्पन्न होकर पृथ्वीमें मिल जाती है । चराचर जो जीव रूपमानमें हुआ सो सब पृथ्वीसे उत्पन्न हुआ अन्तमें सब पृथ्वी होगा । और प्रथम शब्दका अर्थ ब्रह्म निश्चय अनुमान होता है । नाम सबका अर्थ संयुक्त है । पृथ्वीका नाश नहीं होता । प्रलय शरीरनाश हो जानेको कहते हैं । जल रुधिर है । वायु श्वास है । अग्नि ज्ञान है । आकाश शब्दस्थान है और इसका बहुत विस्तार यंत्र[1] पंचीकरण और दोहा चौपाईमें देखो ।

चौपाई ।

पृथ्वी रूप ब्रह्मको जानो । जलको बीज रुधिर पहिचानो ॥

१ यहांका यंत्र ग्रंथके अंतमें देखो ।

वायूको शक्ती अनुमानो। अग्नि ज्ञान सबको दरशानो॥
व्योम शून्य कुछ रूप न होई। पृथ्वी ब्रह्म कहै सब कोई॥
रूपमान जो वस्तु दिखावै। ताको कारण भूमि लिखावै॥
स्थूल गंध ताडक जागृत। हम अपान अंडज प्राकृत॥
रज गुदा वैखरी गोचर। विषयानन्द खेचरी अच्छर॥
निराकार कुछ काम न आवै। पृथ्वी सर्व अकार दिखावै॥
पृथ्वी रूप अनादी जानो। अविनाशी उसको पहचानो॥

दोहा–परथम जाको नाम है, सोई है भगवान।
पृथ्वीसे आकार है, पृथ्वीसे चौखान॥
पृथ्वी सबको रूप है, रूप विना कुछ नांय।
पृथ्वी सब ब्रह्मांड है, और शून्य सब ठांय॥

सर्व सृष्टिका आधार पृथ्वी है। सिवाय पृथ्वीके और कोई तत्त्व स्थूल रूपमान नहीं हो सक्ता। युगादिमें पहले पृथ्वीकी पूजा होती है। मेरे ज्ञानमें पृथ्वी ब्रह्म है मैंने हाथ जोडकर कहा कि, पृथ्वी जलके ऊपर जमाई है और नित्य एक परिक्रमा सूर्य देवताको देती है। हिरण्याक्षदैत्यने विष्ठामें छिपाया था जिस कारण वराह अवतार हुआ। राजा पृथुने गौ बनाकर सब औषधि पृथ्वीसे निकाला और वे उसे रातको शिराने तकिया बनाकर रख लेते थे और चन्द्रमा सदाकाल पूर्णमासीको पृथ्वीसे भोग करता है और यह शरीर नाशवान् केवल मृत्तिकास्वरूप है। जब चैतन्य जीव साक्षी नहीं रहता तब भयंकररूप मुर्दा हो जाता है और प्रलयकालमें

पहले पृथ्वीका नाश हो जाता है इसलिये पृथ्वीको ब्रह्म कहना अनुचित है यह सुनकर महात्मा गुरु चुप हो रहे ।

इति अभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद पांचवें तरंगमें जडब्रह्मविचार नाम प्रथम लहरी संपूर्ण ।

दूसरी लहरी ।

जल ब्रह्म है ।

अथ श्रीबदरीनारायणाय नमः । मैं दूसरे महात्माके पास गया और सब हाल अपना कहा तब महात्मा गुरु बोले फिर ब्रह्मका सूक्ष्म स्वरूप जल है । जलसे पृथ्वी, पृथ्वीसे आकाश, आकाशसे वायु, वायुसे अग्नि पैदा हुई यह शरीर जब मुर्दा हो जाता है तब जल नहीं रहता । और जड चेतन जो आकार रूपमान है वह सब जलका स्वरूप है । और जलका स्वरूप सिद्धान्तमें जीव अनुमान होता है । और आदिमें सबकी उत्पत्तिका कारण जल दीखता है । और जलको आपरूप कहते हैं । और जलसे सब शुद्ध होता है । किसी पात्रमें जल कुछ काल रक्खो उसमें जीव आपही आप प्रगट हो जाता है और वर्षाऋतुमें कदाचित् जल न बरसे तो जगत्में प्रलय हो जावे । और व्यास भगवान्का मत ऐसा है कि, उसी जलकी इच्छासे आदिमें कमलका फूल होता है उसमें ब्रह्मा उत्पन्न होता है । वह ब्रह्मा अपने विचारसे सारा जगत् बनाता है और अन्तमें सौ वर्षके पीछे यह जगत् और वह ब्रह्मा दोनों जल हो जाते

हैं। इस कारण जलको ब्रह्म निश्चय जानना चाहिये और विस्तारसहित जलका स्वरूप यंत्र¹ पंचीकरण और दोहा चौपाइमें देखो।

चौपाई।

जलसे कमल कमलसे ब्रह्मा। वह सब लोकको सिरजा ब्रह्मा॥
उत्पति स्थिर परलय करै। जलसे तीनि लोक अवतरै॥
जलसे सागर जलसे गंगा। जलसे सब रस जलसे रंगा॥
जलसे बिन्दु बिन्दुसे काया। निश्चय जल भगवान कहाया॥
जलसे चौदह रतन निकारा। जलसे चौरासी परचारा॥
जलसे जीव जीवसे ज्ञान। ज्ञान विना अन्धा अज्ञान॥
जल है ब्रह्म पृथ्वी माया। रात दिवस सबको दरशाया॥
सूक्ष्म दंड अंगुष्ठ परमाना। योगानन्द बीज परधाना॥

दोहा–लिंग सतोगुण मध्यमा, को हम जलचर खान।
पालन अंडज भूचरी, यजुर्वेद ईसान॥
हिरनगर्भ जलको कहैं, मुक्तसमेत विचार।
वामदेव मुख ज्ञान बुध, यह अभिलाखविचार॥

और कोई तत्त्ववादी ऐसा कहता है कि, बीजका स्वरूप जल है और वेदमें बीज ब्रह्म प्रधान है। मैंने हाथ जोडकर कहा कि कमलका झाड क्षीरसागरमें नारायणकी नाभिसे उत्पन्न हुआ है, जलसे नहीं। और जल स्वतः नहीं रह सक्ता। दूसरेके आधार है। और मुर्दा शरीरमेंभी जल रहता है। और

१ यहांका यंत्र ग्रन्थके अन्तमें देखो।

सूखे लक्कड पत्थरमेंभी जल रहता है। जलकी प्रकृति मलमूत्रकी है। मेघ वर्षाता है, सूर्य सोखता है और प्रलयमें नाश हो जाता है और जड है। कुंभज ऋषि सातों समुद्रको पी गये। पीछे मूत्रकी राहसे निकाला जो स्वतः प्रत्यक्षमें नहीं है उसको ब्रह्म कहना योग्य नहीं। जल अग्निसे पैदा होता है।

यह सुनकर महात्मा गुरु चुप हो रहे।

इति अभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद पांचवें तरंगमें जड-ब्रह्मविचार नाम दूसरी लहरी संपूर्ण।

तीसरी लहरी।

अग्नि ब्रह्म है।

अथ श्रीजगन्नाथाय नमः। मैं दूसरे महात्माके पास गया और सब हाल अपना कहा। तब महात्मा गुरु बोले कि ब्रह्मका कारणरूप अग्नि है। अग्निसे जल पैदा हुआ, जलसे पृथ्वी, पृथ्वीसे आकाश, आकाशसे वायु उत्पन्न हुई। तेजरूप होकर घट २ में व्यापक है। जब तेज नहीं रहता तब शरीर मुर्दा भयंकररूप हो जाता है। और आजतक जिस अधिकारीने ब्रह्मका अनुभव पाया होगा सो तेजरूपही पाया होगा। पश्चिमका मुल्क बहुत पुराना है। वहां अग्निहोत्री अर्थात् आतिशपरस्त बहुत हैं वे लोग अग्निको ब्रह्म जानते हैं और दीन महम्मदीवालेभी खुदाको नूर कहते हैं। मूसा पैगम्बरको नूरका अनुभव हुआ और श्रीकृष्ण भगवान्ने अर्जुनको समुद्रमें जो दर्शन कराया

वह ज्योतिःस्वरूपका था। राजा दशरथको चार लडके अग्निने दिये। अग्निसे अन्धकार नाश होता है और गर्मीसे उत्पन्न, सर्दीसे नाश होना सबको प्रगट है। और विस्तारसहित इसका स्वरूप यंत्र[1] पंचीकरण और चौपाईमें देखो।

चौपाई।

तेजरूप है जगका कर्त्ता। तेज रूप है ब्रह्म अकर्त्ता॥
तेज न होय शून्य हो जावै। तेज न होय तमोगुण छावै॥
ज्योतिस्वरूप ब्रह्म कहै वेदा। ब्रह्म अग्निमें नाहिं कछु भेदा॥
घट अद्वैत विकार जलावै। तेजरूप परमेश्वर पावै॥
चारों दिशा अग्निकी पूजा। करैं नेमसे राजा परजा।
तेज ब्रह्ममें भेद न जानो। निर्गुन सगुण ब्रह्म पहिचानो॥
कारण अर्ध पहर परमाना। सोहं प्राण मनोंमें ध्याना॥
रहत सुषुप्ति गुप्त अविचार। शून्य चाचरी मध्य ओंकार॥

दोहा—तेजरूप भगवानको, जो जानै कुछ और।
ज्ञानी सन्त समाजमें, सपन न पावैं ठौर॥
तेज ब्रह्म अद्वैत है, ज्योति विदित संसार।
नेत्र विना अभिलाखसे, भटकत फिरैं अपार॥

मैंने हाथ जोडकर कहा कि, जलसे अग्निनाश हो जाता है और तेजका शत्रु अन्धकार प्रत्यक्ष है। दीन महम्मदीवाले खुदाको नूर नहीं कहते, उसकी उपमा है। पश्चिमके मुल्कमें पगम्बर लोग आतिशपरस्तोंको कतल करके कुरान पढाया।

१ यहांका यंत्र अन्तमें देखो।

अग्निमें शान्ति शीतलता स्वतःपना स्थिरता जो ब्रह्म लक्षण हैं सो कुछ नहीं अग्निका विकार लोभ है। प्रकृति क्षुधा तृषा आलस्य मैथुन पांच हैं। महाप्रलयमें अग्निकाभी नाश है और अग्निका स्वभाव कर्त्ता नहीं है, नाशमान है। अग्निकी उत्पत्ति वायुसे है। अग्निको ब्रह्म कहना अज्ञान है। यह सुनकर महात्मा गुरु चुप रहे।

इति अभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद पांचवें तरंगमें जडब्रह्मविचार नाम तीसरी लहरी संपूर्ण।

चौथी लहरी।

वायु ब्रह्म है।

अथ श्रीद्वारकेशाय नमः। मैं दूसरे महात्माके पास गया और सब हाल अपना कहा। तब महात्मा गुरु बोले कि, ब्रह्मका महाकारणरूप वायु है वायुसे अग्नि, अग्निसे जल, जलसे पृथ्वी पृथ्वीसे आकाश उत्पन्न हुआ। वायु श्वास होकर घट २ में व्यापक है। जब वायुरूपी श्वास निकल जाता है तब सब जीव निर्जीव हो जाते हैं। योगी लोग वायुका समाधिमें साधन करके ब्रह्मसमान हो जाते हैं। और यह ब्रह्मांड वायुके आधारसे स्थिर और चर है और गर्मी सर्दी वर्सातका वायु कारण है। वायुका बंधन और जीवकी उत्पत्तिका अर्थ एक है। जब वायु वायुमें मिल जाती है तब जीवकी मुक्ति हो जाती है। विचारसे सबका कर्त्ता वायु दर्शाता है।

और विस्तारसहित वायुका स्वरूप यंत्रं[1] पंचीकरण दोहा चौपाईमें देखो ।

चौपाई ।

वायूसे ब्रह्मांड बनाया । वायू चार तत्त्व उपजाया ॥
शक्ति विना सब नाश कहावै । शक्ती विना सत्य नहिं पावै ॥
शक्ती प्राणसमान चराचर । परमानन्द अप्रमेय मंतर ॥
पंच प्राणसे रहै शरीरा । वायू सबको करै अधीरा ॥
तीन लोक वायूपर वसै । वायूके बल रोवे हँसै ॥
वायूसे वर्षा ऋतु आवै । वायू शून्य समाधि लगावै ॥
वायू सूरज चन्द्र चलावै । पांच तत्त्व तामें दरशावै ॥
वायू बोले वायू चलै । वायू बांधै वायू खुलै ॥

दोहा—वायू अर्द्ध मकार है, उत्तम पुरुष विवेक ।
आतम भास अगोचरी, सर्व साक्षि यह एक ॥
वायू ब्रह्म अनादि है, सत्य रूप सब साख ।
ब्रह्म हेत घर घर फिरै, यह मूरख अभिलाख ॥

मैंने हाथ जोडकर कहा कि, जहां आकाश नहीं है वहां वायु नहीं जा सक्ती । योगी वायुके साधनसे ब्रह्मका विचार करते हैं । पकडनेवाला दूसरा है । वायु वायुको नहीं पकड सक्ता । वायु एक तत्त्व जड है । महाप्रलयमें उसकाभी नाश है । वायु कोई प्रत्यक्ष पदार्थ नहीं है, पृथ्वी जिस प्रकार क्रम सिवाय रेल प्रमाण चलती है उस प्रमाण वायुका अनुमान

१ यहांका यन्त्र ग्रन्थके अन्तमें देखो ।

होता है । जैसे दौडनेमें वायु विशेष मालूम होती है । वायुकी संख्या ४१००० है । और शरीरमें पंच प्राण पंच वायु हैं और वायु नाम एक देवताका है जिसका पुत्र हनुमान् है और वायुमें स्थिरता और स्वरूप नहीं है वह कैसे ब्रह्म होगा यह सुनकर महात्मा गुरु चुप हो रहे ।

इति अभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद पांचवें तरंगमें ब्रह्मविचार नाम चौथी लहरी संपूर्ण ।

पांचवीं लहरी ।

आकाश ब्रह्म है ।

अथ नवग्रहाय नमः । मैं दूसरे महात्माके पास गया और सब हाल अपना कहा । तब महात्मा गुरु बोले कि, ब्रह्मका केवल रूप आकाश है । आकाशसे वायु वायुसे अग्नि, अग्निसे जल, जलसे पृथ्वी पैदा हुई । सर्व विस्तार ८४ लाख योनिका इन चारों तत्वसे उत्पन्न होकर अन्तमें सब आकाश हो जाता है । और सबकी सम्मति है । यह जगत् ब्रह्मसे उत्पन्न होकर पीछे ब्रह्ममें लय हो जाता है । इस प्रकार सारा जगत् आकाशसे उत्पन्न होकर अन्तमें सब आकाश हो जाता है और शरीरमें जो पोलाणरूपी आकाश वही जीव चैतन्य अन्तःकरण अनुमान होता है । उसके बंद हो जानेसे श्वास बंद हो जाता है । घट बाहरमें आकाशरूपी ब्रह्म सर्वत्र व्यापक है । निर्गुण निराकार शब्द आकाशको शोभा देते हैं और जिस तरह ब्रह्म अक्षय

बेअन्त सबसे बडा व सबसे छोटा है। उस प्रकार आकाशभी है, और वेदमें खं ब्रह्म लिखा है। अनेक महात्माओंका मत है कि ब्रह्म आकाश है और विस्तारसहित आकाशका स्वरूप यंत्रे पंचीकरण और दोहा चौपाईमें देखो।

चौपाई।

व्योम अकाश स्वर्ग नभ ताका। खंको ब्रह्म कहैं करि साखा॥
सबसे बडो छोट जो होई। निराकार देखै सब कोई॥
पकड न आवै सबको पकरै। ब्रह्म अकाश कहै सब सुधरै॥
ब्रह्म अकाशका अन्त न पावै। ब्रह्म अकाश न आवै जावै॥
ब्रह्म अकाश अभेद अनादी। शंका करै सो मिथ्यावादी॥
निराकार निर्गुण निर्लेपा। ऐसो ब्रह्म अकाश अलेपा॥
केवल बिन्दु उन्मनी निर्गुण। ऐसो ब्रह्म अकाश निरंजन॥
ब्रह्म अकाशमें भेद लगावै। बिना पूंछका पशू कहावै॥

दोहा—ऐसो ब्रह्म अकाश है, शंकारहित अभेद।
ओंकार कर्त्ता पुरुष, कहत पांचवां वेद॥
षट् शास्त्र पुराण बहु, चार वेदका सार।
ब्रह्म अकाश अभेद है, यह आभिलाखविचार॥

मैंने हाथ जोडकर कहा कि, आकाशको इच्छा नहीं हो सक्ती और वायु आदिककी उत्पत्ति आकाश जडसे कहना अज्ञानका मत है। जहांतक सूर्यका प्रकाश है उसको आकाश कहते हैं। महाप्रलयमें उसका नाश हो जाता है।

---

१ यहांका यंत्र ग्रंथके अन्तमें देखो।

जिसमें कुछ सार नहीं उसको आकाश कहते हैं ज्योतिषमें सात आकाश प्रमाण हैं। पंचीकरणमें पांच आकाश हैं और आचार्योंने लाखों आकाश पाताल कह दिये हैं। शरीरमें अन्तसमय पोलाणको कौन बंद करता है। वह कौन है ? और ऐसे ब्रह्मके भजनमें क्या आनन्द प्राप्त होगा? आकाश शून्य जड है। आजतक किसी भक्तने आकाशब्रह्मसे फल नहीं पाया। आकाश क्योंकर ब्रह्म हो सक्ता है? यह सुनकर महात्मा गुरु चुप हो रहे।

इति अभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद पांचवें तरंगमें जडब्रह्मविचार नाम पांचवीं लहरी संपूर्ण।

छठी लहरी।

पंचतत्व मिलकर ब्रह्म है।

अथ श्रीसनकादिकाय नमः। मैं दूसरे महात्माके पास गया और सब हाल अपना कहा। तब महात्मा गुरु बोले कि, ब्रह्मका स्वरूप एक तत्व नहीं है, पाचों तत्त्व मिलकर उसका स्वरूप सम्पूर्ण होता है। जुदा २ देखनेमें खंडन दर्शाता है। एक आचार्यका मत ऐसा है कि, आकाश ब्रह्मका मुख तथा शिर है। वायु हाथ है। अग्नि पेट हैं। जल कमर है। पृथ्वी पांव है। जगत् उसका स्वप्न है जैसे अपनेको स्वप्नमें जगत् भासता है। दूसरेका मत ऐसा है कि, आकाश उसका रूप है। वायु श्वास है। अग्नि प्रकाश है। जल पृथ्वी मल मूत्रसमान हैं। चौरासी लाख

जीव उसके कीडे हैं। उसमें उत्पन्न होकर उसमें मिल जाते हैं। तीसरेका मत ऐसा है कि, पृथ्वी उसका रूप है जल रुधिर है। वायुशक्ति है। अग्नि ज्ञान है। आकाश स्थान है। चौरासी लाख योनि उसके अंग हैं इस सिद्धान्तमें विराट् पुराण देखो। चौथेका मत ऐसा है कि, आकाश कैवल्य शरीर है। वायु महाकारण शरीर है। अग्नि कारण शरीर है। जल सूक्ष्म शरीर है। पृथ्वी स्थूल शरीर है। ये पांचों शरीर जुदे २ नामके हैं सबको एक जानना। उसे शरीरमें चौरासी लाख योनि गुप्त प्रगट होती हैं। पांचवेंका मत ऐसा है कि, उसका अनादि निराकार रूप आकाश है। यह रूप महाप्रलयके पीछे बना रहता है। जब सृष्टिकी रचना उसको बनानी होती है तब अग्निरूप हो जाता है। और वायु उसकी शक्ति है। उसको ब्रह्म और माया निराकार रूप कहते हैं। जब दूसरी बार आकार है तब जल पृथ्वीका रूप हो जाता है, उस रूपसे सब आकार सृष्टिका जड चेतन उत्पन्न होता है। अन्तमें निराकार हो जाता है। पंचतत्वका गुण अन्त कोई नहीं कह सक्ता। जिस तरह जलमें बुदबुदा या लहरी या तरंग आपही आप प्रगट होता है और पीछे उसमें मिल जाता है। इसी तरह यह सारा जगत् पंच तत्वके संयोगसे उत्पन्न और नाश होकर पंचतत्त्वमें मिल जाता है और पांच तत्त्वके कारणसे यह जगत् पांच प्रकारका है। अंडज, पिंडज, ऊष्मज, स्थावर, देव आदिक गुप्त योनि ये पांच योनि जगत्में हैं। पांच तत्त्वके सिवाय चौदह भुवनमें

कुछ पदार्थ नहीं है। तत्त्व पद ब्रह्म है। पंचतत्त्वकी सत्ता निराकारसे पंच प्राण होता है। उसकी सत्तासे अन्तःकरण होता है। वह अन्तःकरण ज्ञान इन्द्रियसे तदाकार है उसके आधारसे पंच विषयको जानकर पंच कर्मेन्द्रिय द्वारा सब कार्य होता है। इसके सिवाय और कोई ब्रह्म नहीं है। जो विचार करो वही पंचतत्त्वकी रचना है। प्रकट विचार यंत्र[1] पंचीकरणमें और दोहा चौपाईमें देखो।

चौपाई।

पंच तत्त्व सब जग उपजाया। पंच तत्त्व सब देव बनाया॥
शक्ति ज्ञान शब्द सब रहै। पंच देह मानुषकी कहै॥
पांच विषय सब तत्त्व विचारो। ब्रह्मा विष्णु महेश अकारो॥
रूपमान सब तत्त्वसे होवै। निराकार अनुभव नहिं देवै॥
पंच तत्त्व भोगै चौरासी। पंच तत्त्व जोगी संन्यासी॥
पंच तत्त्व राजा महराजा। पंच तत्त्व जड चेतन साजा॥
पंच तत्त्व पुरुष स्त्री। पंच तत्त्व गोरख भरतरी॥
पंच तत्त्वसे खाली कहां। ज्ञान बुद्धि जावै नहिं जहां॥
पंच तत्त्व सब ब्रह्म कहावै। अनुभवमें दूजा नहिं आवै॥
पंचीकरण जुदा जो लेखै। ज्ञानवान सब एकहि देखै॥
पांचसे एक एकसे पाँचा। ऐसो ब्रह्म नचावत नाचा॥
पंच तत्त्वको ब्रह्म बतावै। सब अपनी अभिलाख पुरावैं॥

दोहा—पंच तत्त्व सब एक है, ब्रह्म अलख अद्वैत।

[1] यहांका यंत्र ग्रंथके अन्तमें देखो।

निराकार निर्गुण अलख, नहीं कृष्ण नहिं श्वेत ॥
अनुभव दूजे ब्रह्मकी, जो देवै अज्ञान।
ब्रह्म निरूपण ना कियो, ना पायो गुरु ज्ञान ॥
आदि युगादि अनादिसे, पंच तत्त्वको खेल।
अनुभव विन सब झूंठ है, मूरख भूले गैल ॥
पच तत्त्व अभिलाखसे, ब्रह्म प्रत्यक्ष प्रमाण।
भरम भूल अज्ञानमें, घर २ गयो मैं श्वान ॥

कवित्त—तत्त्वको पसार सब जगत् दिखाय देत, तत्त्वको पसार सब शून्यमें दिखात है। तत्त्वको पसार सब रूपमें प्रकाश होत, तत्त्वको पसार सब जीवमें दिखात है ॥ तत्त्वको पसार सब चार खान देखत है, तत्त्वको पसार राग दोषमें दिखात है। तत्त्वको प्रमाण जान तत्त्वको प्रधान मान, तत्त्व अभिलाष ज्ञान तत्त्व सब बात है ॥

मैंने हाथ जोडकर कहा कि अग्निका जलसे वैर है और वायुका पृथ्वीसे वैर है। इसको एक जगह करनेवाला कौन है ? और सब मतका ज्ञान है कि महाप्रलयमें पंचतत्त्वका नाश हो जाता है। और जगत्की उत्पत्तिका कारण बीज दर्शाता है। पंच तत्त्व उसको मदद देते हैं। कदाचित् बीज न हो तो पंच तत्त्वसे कुछ प्रकट नहीं हो सक्ता। और सिवाय मृत्युलोकके चौदह भुवनमें जो जीव हैं उनके शरीर मायारूपी हैं समें पांच तत्त्व नहीं हैं। अनेक भक्तोंको दर्शन देता है। पंच तत्त्व नरक स्वर्गमें और राम रावणमें हैं। ब्राह्मण भंगीमें

हैं । गधा और महात्मामें हैं । स्वप्नमें जो पदार्थ दर्शाता है उसमें कोई तत्त्व नहीं है, चौवीस अवतार वेद पुराण शास्त्र गुरु सर्व पूजनीयका अपमान इस ज्ञानमें प्रकट दर्शाता है । जडरूपी पंचतत्त्वको ऐसी सामर्थ्य नहीं है कि सातों आकाश सातों पातालमें चौरासी लाख सृष्टि अनन्त भांतिकी उत्पन्न और पालन करके संहार करे । तत्त्व और ब्रह्म दो शब्द हैं । तत्त्वको ब्रह्म कहना मूर्खका काम है । यह सुनकर महात्मा गुरु चुप हो रहे ।

इति अभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद पांचवें तरंगमें जडब्रह्मविचार नाम छठी लहरी सम्पूर्ण ।

सातवीं लहरी ।

ब्रह्म विराट्रूप है ।

अथ श्रीसर्वजगते नमः । मैं दूसरे महात्माके पास गया और सब हाल अपना कहा । तब महात्मा गुरु बोले कि ब्रह्मका रूप विराट् है । यावत् ब्रह्मांड उसका रूप है । जब आदिमें ब्रह्म अद्वैत रहा तब कोई तत्त्व आदिक नहीं था और तम प्रकाशभी नहीं रहा । उसके पीछे जो कुछ उत्पन्न हुआ वह अब हुआ । इस कारण सब उसका स्वरूप है । इसके सिवाय जो पदार्थ आदि अनादिसे उत्पन्न हुआ है उसका नाश नहीं हुआ । कीडीसे ब्रह्मातक घाससे सुमेरुगिरि (पर्वत) तक ज्योंका त्यों बना हुआ है । और कोई [illegible]

सृष्टिभी आजतक नहीं हुई । जैसे समुद्रमें लहरें उत्पन्न नाश हुआ करती हैं उस प्रमाण यह चौरासी लाख योनिभी गुप्त प्रकट हुआ करती हैं । ताम्बूलका पत्ता जैसे नित्य नाश होता है वैसे नित्य उत्पन्न होता है । और एक यंत्र विराट्रूपका दोहा चौपाईमें इसके साथ जुदा है वह देखो ।

चौपाई ।

ब्रह्म विराट सत्य परधान । वेद शास्तर कहत पुरान ॥
पंच तत्त्वका पुतला बने । चौदह लोक ब्रह्म सब गने ॥
शिर आकाश पाव पाताल । सूरज अलख चरण दिक्पाल ॥
मस्तक चंन्द्र बरौनी तारा । चोटी बादल अस्थि पसारा ॥
ऐसी उपमा सब जग मोहे । ब्रह्म विराट् अखंड पिरोहे ॥
अन्तःकरण ज्ञान सब झूंठा । सहज सुषोपातिमें सब डीठा ॥
सुखदुःख मान अपमान अनिथ्या । नरक स्वर्ग सब जानो मिथ्या
रूप विराट एक ब्रह्मंडा । पूरण ब्रह्म अभिलाख अखंडा ॥

दोहा–चार खान ब्रह्मांडमें, स्वर्ग पताल मिलाय ।
ब्रह्म रूप निश्चय करो, और ज्ञान जर जाय ॥
शिर आकाश पाताल पग, और मध्य सब अंग ।
मलसे उपज्यो जीव यह, करत अहं अहंग ॥
यह विराट संसार है, वेद शास्त्र ईं साख ।
ध्यान गुरूउपदेशसे, करै सदा अभिलाख ॥

अनेक ग्रन्थ और पुराणका मत है कि ब्रह्म विराट्रूप

१ यहांका यंत्र ग्रंथके अन्तमें देखो ।

है, सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, अखंड, विराट् एक है। मैंने हाथ जोड-कर कहा कि विराट्रूप ब्रह्मका अनेक ग्रन्थोंमें लिखा है। आपने सबसे अधिक सम्पूर्ण बताया। आपकी बुद्धि धन्य है चौवीस अवतार किसके होते हैं ? राम कृष्ण ब्रह्म नहीं थे तो कौन थे ? ब्रह्मा विष्णु महादेव मिथ्या है या सत्य ? व्यास भगवान्ने अठारह पुराणमें ब्रह्मलीला कही है उसके वाक्य ब्रह्मवाक्यसमान हैं। बडे २ राजा बादशाह जो लाखों सुखको छोडकरके जंगलमें चले जाते हैं उनको क्या प्राप्त होता है ? हजारों भक्तोंको कलियुगमें परमेश्वरका दर्शन हुआ सो कैसे हुआ ? एक ब्राह्मण होता है, उसका पांव धोकर संसार पीता है। एक भंगी होता है, उसको कोई छूता नहीं। एक पत्थर हीरा है और एक पाखानेमें लगाया जाता है सब पंचतत्त्व हैं। परन्तु प्रकाशरूप परमात्माका कुछ औरही है। पंचतत्त्वके ज्ञानमें भक्तिका नाश होता है। भक्तविरुद्ध पुरुष दैत्य प्रसिद्ध होता है। चैतन्य अवस्थामें कोई अपने ऊपर विष्ठा नहीं कर-ता। कदाचित् ब्रह्मपद तत्व होता तो कोटयनुकोटि योगसे भजन कीर्तन पूजा न होती। अश्वमेध यज्ञका फल कौन देता है ? दिन रात कौन करता है ? इस ज्ञानमें मेरा बोध नहीं होगा। लाखों शंका हैं ब्रह्मासेभी विराट् ब्रह्मका बोध नहीं होगा। यह सुनकर महात्मा गुरु चुप हो रहे।

इति अभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद पांचवें तरंगमें जडब्रह्मविचार नाम सातवीं लहरी संपूर्ण।

आठवीं लहरी।

शब्द ब्रह्म है।

अथ श्रीओंकाराय नमः। मैं दूसरे महात्माके पास गया और सब हाल अपना कहा। तब महात्मा गुरु बोले कि शब्द ब्रह्म है। आदिमें ओम् शब्द जगत्का कर्ता वेदमें प्रधान है। उसका अर्थ मैं हूं। उस शब्दसे चौरासी लाख सृष्टि उत्पन्न हो गई। जबतक ॐका ओंकार रहेगा तबतक यह सृष्टि बनी रहेगी और शरीर मध्यभी जबतक शब्द है तबतक सब कुछ है। शब्द नाश होने उपरान्त शरीर भयंकर मुर्दा हो जाता है। शब्दरहित ब्रह्मका ज्ञानभी नहीं हो सक्ता। ब्रह्मा विष्णु महेश आदिक देवताओंको जब अनुभव हुआ तब शब्दसे हुआ। आदिमें ब्रह्माको तत्त्वशब्दका अनुभव हुआ। चार वेद छः शास्त्र अठारह पुराण मंत्र गायत्री सब शब्द हैं। भजन, स्मरण, कीर्तन सब शब्द होना अनेक आचार्यका मत प्रसिद्ध है। वे लोग ओंकारको ब्रह्म जानते हैं कोई ज्ञानी उसको सोहं कहते हैं जो नासिकाद्वारा सब जीवोंके आपही आप उच्चारण होता है। अर्थ वही मैं हूँ। ओहं सोहं जाप वेद प्रमाण है। जो कोई जाप करे तो ब्रह्मका अनुभव होवे। कुछ चौपाई ओंकारबानी सिद्धान्तकी देखने योग्य है।

चौपाई।

निराकारको माथ नवाऊं। घट२की अभिलाख मिटाऊं॥
सबसे आदि तत्व आकाश। जिसकी आदि न पायो व्यास॥

उसकी आदि बखानै कौन। इच्छारूपी उपज्यो पौन ॥
पूरण पवन भयो यह जबहीं। पावक तत्त्व प्रगट भई तबहीं ॥
पावक पवन मथ्यो आकाश। आप रूप उपज्यो परकाश ॥
आप रूप स्थिर जब भयो। ताको रूप पृथ्वी भयो ॥
आदि तत्त्व वेदनमें आवै। चार खानके जीव कहावै ॥
बाहरसे भीतर जब आवै। निराकार ओंकार कहावै ॥
चार वेद उसका गुन गावै। छहों शास्त्र भेद न पावै ॥
अक्षर तीन एक सुर मानो। वव्वा कक्का ररा जानो ॥
वाको आदि कहै सब कोई। कर्ता धर्त्ता जानो सोई ॥
काको कारण मध्य पहचानो। राको कारज अन्त बखानो ॥
कर्ता कारन कारज होई। ताको कर्म कहै सब कोई ॥
अक्षर तीन कर्ममें आनो। जैसाका तैसा दर्शानो ॥
कर्म प्रधान वेद अस कहै। जैसा करै सो तैसा लहै ॥
व्यंजन तीन एक स्वर जानो। ताको ॐकार पहचानो ॥
ब्रह्मरूप आयो ॐकार। मायारूपी मिल्यो मकार ॥
मम्मा मोहरूप जब आयो। अक्षर चार वेद कहवायो ॥
बानी चार पदारथ चारी। चारों युग अभिलाख पुकारी ॥
वव्वा सामवेद कहवावै। कक्का यजुर्वेद सब गावै ॥
ररांको ऋग्वेद बतावैं। मम्मा वेद अथर्वण गावैं ॥
तीन वेदमें ब्रह्म विचार। चौथा वेद मोहका सार ॥
अक्षर तीन एक स्वर होई। भये अठाइस अक्षर सोई ॥
योग तिथी नक्षत्र अठाइस। ॐकारकी सब पैदाइश ॥

निर्गुणसे सगुण जब भयो। लख चौरासी पैदा भयो॥
वव्वा वास करै मनमाहीं। कक्का चितमें रहै समाही॥
ररा अवध विलास बखानो। मम्मा अहंकारपद जानो॥
अन्तस् निराकार कहवावै। शून्य सरूप अकाश बतावै॥
ॐकारमें अक्षर हैं तीन। माया मिले पांच परवीन॥
पांच तत्त्वका खेल बनाया। रात दिवस सबको दरसाया॥
ॐकार एक शब्द कहावै। ताको रूप कौन लख पावै॥
किञ्चित् शब्द पकडमें आवै। शब्द करंता लखा न जावै॥
आपहि आप आपको ध्यावै। तीन लोकमें पता न पावै॥
आदि एक निर्गुणमें आवै। पांच तत्त्व हुइ जग उपजावै॥
पांचों पांच पचीस कहावै। तीस रूपकी देह बतावै॥
पंच विषय अरु पंच विकार। ज्ञान कर्म दश इन्द्री सार॥
पंच प्राण और वायू पंच। पंच अवस्था भये शिर पंच॥
रजगुण ब्रह्मा सतगुण हरी। तमोगुण शंकर कर्त्ता करी॥
सूरज और गणेश मिलावै। पांच देवका नाम बतावै॥
शब्द स्पर्श रूप निहारो। रस अरु गंध सुभाव विचारो॥
त्वचा नाक श्रवण अरु बानी। चक्षु ज्ञान अरु इन्द्री जानी॥
हाथ पांव मुख लिंग गुदा। कर्म इन्द्री जानो सदा॥
प्राण अपान व्यान समान। पंच प्राण प्रगटे उद्यान॥
नाक किरकिला कुर्म मानो। दत्त धनंजय वाय जानो॥
जाग्रत स्वप्न सुषुप्ती सबको। तुर्या उन्मनी योगी जनको॥
चौदह इन्द्रिय रजोगुण मानो। चौदह देव सतोगुण जानो॥

पांच तत्त्व अरु पच्चीस विकार । तम गुणसे उपज्यो संसार ॥
ॐकार सब जग उपजाया । ब्रह्मा विष्णु महेश कहाया ॥
आदि शब्द ॐकार कहावै । ताकी महिमा कही न जावै ॥
मंत्र गायत्री है ॐकार । राम कृष्ण जानो ओंकार ॥
महा वाक्य ॐकार कहावै । बीज मंत्र ॐकार कहावै ॥
ओहं सोहं है ॐकार । तैंतिस अक्षरका आधार ॥
ॐकार सोलह स्वर जानो । अक्षररहित नहीं कछु मानो ॥
ॐकार चौबीस अवतार । शक्ती भैरव पवनकुमार ॥
अष्टादश पुराण ॐकार । मंत्र यंत्र वरणों ॐकार ॥
ॐकारसे ध्यान लगावै । निराकारका दर्शन पावै ॥
श्वासा २ अजपा जापै । परमानन्दसुक्तिसे धापै ॥
आसन वज्र खेचरी मुद्रा । जपै शुद्ध होकर दिन पंद्रा ॥
गणित प्रमाण जपै जब लाख । पूरन होय दास अभिलाख ॥
संवत् उन्निससौ चव्वालीस । कृष्ण पक्ष वैशाख अमावस ॥

कवित्त—शब्दसे आकाश और पाताल मृत्युलोक भयो शब्दसे पसार खंड दीपको दिखात है । शब्दसे वर्ग वर्ण ब्राह्मण और क्षत्री भयो शब्दसे कहाये वैश्य शूद्र चार जात है ॥ शब्दसे शरीर जीव इन्द्री और ज्ञान बुद्धि शब्दसे अनेक यंत्र मंत्र करामात है । शब्दसे है सत्य नाम शब्दसे असत्य नाम शब्दसे अनेक शब्द शब्द तत्त्व बात है ॥

मैंने हाथ जोडकर कहा कि शब्द मुँहसे होता है और मुँह शरीरमें होता है उसमें आकाश होता है । शब्द आकाशकी

प्रकृति है। पञ्च विषयमें एक विषय है। शब्द जड है। उसका मालिक करनेवाला है। शब्द स्वतः आपही आप नहीं हो सक्ता। गूंगे पुरुषभी होते हैं। उष्मज योनिके जीव शब्द नहीं करते। गुदासे शब्द होता है। वह कुछ प्रधान नहीं है। वेदमें ब्रह्म निराकार प्रधान है। जो निराकार ब्रह्म जानेगा वह शब्दको ब्रह्म नहीं कहेगा। ओंकार वाणी बहुत शुद्ध है परन्तु वह शब्द किस प्रकारसे ब्रह्म होगा ? यह सुनकर महात्मा गुरु चुप हो रहे।

इति अभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद पांचवें तरंगमें
जडब्रह्मविचार नाम आठवीं लहरी सम्पूर्ण।

नौवीं लहरी।

अक्षर ब्रह्म है।

अथ श्रीचित्रगुप्ताय नमः। मैं दूसरे महात्माके पास गया और सब हाल अपना कहा। तब महात्मा गुरु बोले कि, अक्षर ब्रह्म है। कोई पदार्थ जड चेतन अक्षरके बाहर नहीं है। अक्षरकी शक्ति मंत्र गायत्री आदिकमें ब्रह्मसमान पूजनीय है और अक्षरके रहित ब्रह्मभी नहीं है और जगत्भी नहीं है और मायाभी नहीं है। सिवाय अक्षरके और कोई ब्रह्म ऐसा नहीं है जो एक रूपसे सर्व व्यापक हो वही अक्षरकी शक्ति निराकार ब्रह्म अनुमान होती है। ब्रह्मका अनुभव अक्षर आधीन है। किसी भक्तने ब्रह्मका अनुभव पाया होगा तो अक्षरकी साम-

र्थ्यसे पाया होगा। नाम अक्षर आधीन है। जगद्रूपी कागजपर यह सृष्टि अक्षररूप है। शब्दका नाश है अक्षरका नाश नहीं है। तत्त्वमसि ओंकार आदिक महावाक्य तथा चारों वेद जो प्रसिद्ध हैं वेभी अक्षर हैं। जो अक्षरको नाशमान जाने वह मूर्ख है। ब्रह्मका अनुभव सिवाय अक्षरके दूसरे पदार्थमें देखना अज्ञान है। अक्षरका यंत्र[1] और अक्षरदीपिका जो इस ग्रन्थके साथ है सो देखो। अक्षरका अन्त नहीं।

अक्षरदीपिका–चौपाई।

कक्का कर्त्ता करम बनाया। खख्खा खं आकाश लगाया॥
गग्गा गुरु उपदेश न भावै। घघ्घा घोर नरकमें जावै॥
ङा अक्षर व्यंजन नहिं होवै। ज्ञान होय तो सब कुछ होवै॥
चच्चा चार वेदमें पेखौ। छछछा छहों शास्त्रमें देखो॥
जज्जा जगत् एक दरशावै। झझ्झा झाड बीज दो गावै॥
ञा अक्षर ईश्वर पहचानो। ञावां एक ब्रह्म अनुमानो॥
टट्टा टेक दर्शनकी राखै। ठठा ठाकुर अमृत भाखै॥
डड्डा डाकिन माया जावै। ढड्ढा ढोल बजावै गावै॥
णा अक्षर सब रांड बिरादर। जबतक खसम न देवै आदर॥
तत्ता तन मन दुइ मत जानो। थथ्था थाह नहीं दरशानो॥
दद्दा दयामूल है वटमें। धध्धा ध्यान रहै प्रकटहिमें॥
नन्ना नाम सत्य है सत्य। यह अभिलाख अन्त असत्य॥
पप्पा पाप पुण्य पहचानो। फफ्फा फनपर जगत् बसानो॥

१ यहांका यंत्र ग्रंथके अंतमें देखो।

बब्बा ब्रह्म अखंड अलेखा। भभ्भा भूल द्वैत बहु भेखा॥
मम्मा मोह मृत्यु निकट रहै। यह अभिलाख देखके कहै॥
यय्या याद एककी राखो। ररा रामनाम नित भाखो॥
लल्ला लीला करै दिखावै। वव्वा वाह गुरु दर्शावै॥
सस्सा सूरज चन्द्र प्रधान। शश्शा शंकर है भगवान॥
षा अक्षर कुछ काम न आवै। बिना अर्थ मिथ्या दर्शावै॥
हह्हा हर हर हर हर गावो। संपूरण अभिलाष पुरावो॥
आइव एक होवे ओंकार। सत्य नाम अभिलाख विचार॥

मैंने हाथ जोडकर कहा कि, जिसका रूप है उसका नाश है। अक्षर कारजरूप है कर्त्ता नहीं। नेह अक्षरभी हो सक्ता है। एक अक्षर दूसरे अक्षरका मालिक नहीं हो सक्ता। यथार्थमें एक अक्षर दूसरे अक्षरसे विरुद्ध है। जैसे 'ह' और 'न' और अक्षरका प्रमाण हिन्दीमें छत्तीस और पारसीमें बत्तीस और अर्बीमें अट्ठाईस और अंगरेजीमें छब्बीस। हरएक मुल्कमें कम सिवाय है। अक्षर लिखनेवालेके आधीन है और शुद्ध अशुद्धकाभी विचार हो सक्ता है। अक्षरशब्दका भेद है जैसे होठसे प फ ब भ म। इसी तरह तालु जिह्वा दन्तसे जो शब्द निकलता है वह अक्षर हो जाता है। सिवाय मनुष्यके और योनिमें अक्षरका ज्ञान नहीं है। ब्रह्मका ज्ञान सबको है। आगे ऋषि मुनि व्यास शुकदेव आदिक बहुत विद्वान् थे। उन लोगोंने तपके बलसे अक्षर बनाया और सब पदार्थ जो अनाम थे, उनको नाम रक्खा। इस अक्षरके ज्ञानमें

ब्रह्मका बोध रती प्रमाण नहीं हो सक्ता। यह सुनकर महात्मा गुरु चुप हो रहे।

इति अभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद पांचवें तरंगमें
जडब्रह्मविचार नाम नौवीं लहरी एवं
पांचवां तरंग समाप्त ॥ ५ ॥

छठवा तरंग प्रारंभ।

पहिली लहरी।

चौबीस अवतार ब्रह्म हैं।

अथ श्रीविष्णवे नमः। मैं दूसरे महात्माके पास गया और सब हाल अपना कहा। तब महात्मा गुरु बोले कि, ब्रह्म चौबीस अवतार होकर सदाकाल जगत्में रहता है और सगुणरूप साकार विष्णु नाम है। जब २ इस पृथ्वीपर दुष्ट दैत्य दुःखदायी होते हैं तब २ वह प्रगट होकर उनका नाश करता है। एक अवतारसे सदा काल जगत्में बना रहता है। जैसा अब कलंकी अवतार होनेवाला है। जब कलिंजर दैत्य दुःखदायी होगा तब वह रूप प्रगट होगा। अभी गुप्त है कुछ छन्द और दोहा कवित्त अवतारोंके देखने योग्य हैं।

चौबीस अवतार–दोहा।

मीनरूप भगवानसे, चार वेद विस्तार।
कच्छरूप होइ अवधमें, चौदह रत्न निकार॥

शूकर होय पृथ्वी रचो, हिरण्याक्ष संहार।
नरहरि हिरणाकुश हन्यो, कर प्रहलाद उबार॥
वामन होइ बलिको छल्यो, तीन पैंड विश्वास।
परशुराम अवतारसे, सहसबाहुका नाश॥
रामरूप रावण हन्यो, बाल तज्यो संसार।
कृष्णरूप शिशुपाल अरु, दन्तवक्रको मार॥
बुद्धरूपसे मौन हुई, कियो शुद्ध परसाद।
निष्कलंक अभिलाख है, दश अवतार अनाद॥
स्वयंभु मनु अवतार है, आदिपुरुषको जान।
नारद हुई भक्ति कियो, दियो जगत्को ज्ञान॥
विष्णु हुई पालन कियो, पुर वैकुंठ निवास।
सनकादिक चारों ऋषी, वरस पांच परकास॥
रूपमोहनी सिन्धुपर, सुरा दैत्यको पान।
कपिलरूप हुइ मातको, सांख्य बतायो ज्ञान॥
व्यास प्रसिद्ध पुराणमें अष्टादश षट चार।
दत्तात्रय चौबीस गुरु, ज्ञान कियो विस्तार॥
पृथु पृथिवी धेनु कर, सकल औषधी काढ।
हयग्रीव हुइ मधुकैटभको, मारो दैत्य पछाड॥
बद्रीनारायण पर्वतपर, करत तपस्या शुद्ध।
प्रश्न उत्तरके वास्ते, भयो हंस परसिद्ध॥
धन्वंतरि अवतार हुई कियो रोगको नाश।
यज्ञ ऋषभ हुइ जैनमत, कियो जगत परकाश॥

ये चौबीस अवतार तू, निराकारके जान ।
मुक्त होय अभिलाखसे, करै जो अन्तर्ध्यान ॥

ध्रुपदछन्द–दश अवतार ।

वाह गुरु राम सुनो सेवक परणाम तुही पूरण सब काम सुभग सुन्दर अभिराम तुही दीन तुही मीन तुही शंखासुर मार चतुर्वेद निकारा । तुही विरत तुही तेल तुही खेलनमें खेल तुही परवत और शैल तुही झाड तुही बेल तुही राह तुही गैल तुही शूकर अवतार हिरण्याक्ष संहारा ॥ तुही सिद्ध तुही जोग तुही भाव तुही भोग तुही दुःख तुही रोग तुही हर्ष तुही शोक तुही सायत संजोग तुही कच्छप अवतार रतन चौदह सारा । तुही राज तुही पाट तुही राह तुही बाट तुही पूर तुही घाट तुही तख्त तुही खाट तुही मख्मल और टाट तुही नरहर अवतार हरण कश्यप मारा ॥ तुही तात तुही मात तुही पुत्र तुही भ्रात तुही चाकर परजात तुही आवत और जात तुही पांच तुही सात तुही वावन अवतार छल्यो बलि अविचारा । तुही ढाल तुही खड्ग तुही भूमि स्वर्ग तुही याज्ञवल्क्य गर्ग तुही जात तुही वरग तुही सिंह तुही मृग तुही भृगुपति अवतार सहसबाहुको मारा ॥ तुही शास्त्र तुही वेद तुही भर्म तुही भेद तुही हर्ष तुही खेद तुही शर्म तुही स्वेद तुही औषध अरु वैद्य तुही राम तुही धाम तुही दशरथप्यारा । तुही रंग तुही रूप तुही छांह तुही धूप तुही रंक तुही भूप तुही सिंध तुही कूप तुही परगट अरु गुप्त तुही सुन्दर अनुरूप तुही नन्द–

दुलारा॥ तुही यज्ञ तुही जाप तुही पुण्य तुही पाप तुही मेट तुही थाप तुही मंगल और आप तुही पुत्र तुही बाप तुही बुद्ध तुही आप जगन्नाथ संवारा। तुही आदि तुही अन्त तुही साधु तुही सन्त तुही जीव तुही जंतु तुही जीभ तुही दंत तुही एक तुही लाख तुही पूरण अभिलाख कलंकी प्यारा॥

कवित्त—मच्छ कच्छ शूकर नरसिंह वामन परशुराम राम कृष्ण बुद्ध निकलंक दश अकार है। स्वयंभु मनु नारद सनकादिक रूप मोहनी विष्णु कपिलदेव व्यासदेवजी आचार है॥ दत्ता पृथु बद्री हयग्रीव हंस यज्ञ ऋषभ चौबीस धन्वंतर अवतार गति अपार है। कारण अभिलाख जान समय पाय प्रकट होत चौबीस अवतार ब्रह्मरूप निराकार है॥

मैंने हाथ जोडकर कहा कि चौबीस अवतारका सिद्धान्त एक महात्माने मेरेको उपदेश किया था वह सम्पूर्ण कहता हूं सुनो। पहला अवतार मीन हुआ, उसीको मच्छ कहते हैं। चैत्र कृष्ण पंचमीको राजा मनुके कमंडलुसे उत्पन्न होकर शंखासुर दैत्यको मारा। सात लाख पैंतीस हजार वर्ष राज्य किया। चारों वेद जो चोर ले गया था प्रकट हुआ। यह मच्छपुराणकी कथा है उसका सिद्धान्त ऐसा है कि, बीजरूपी ब्रह्म जिसको मीनजी कहते हैं लिंगरूपी मच्छशरीर धरके शंखरूपी भगको छेदन करता है और श्वास जिसको वेद कहते हैं। वह प्रगट होता है श्वास शरीरमें चार हैं मुख नासिका गुदा लिंग। यह पहला अवतार हुआ। सबका होता है॥

दूसरा अवतार विष्णुकी इच्छासे ज्येष्ठ कृष्ण पंचमीको क्षीरसागरमें कच्छरूप हुआ और महिषासुर दैत्यको मारकरके तीन लाख तेरह हजार वर्ष राज्य किया और क्षीरसागरको मथन करके चौदह रत्न उत्पन्न किये ।

दोहा—धनु धन्वन्तरि धेनु हय, कमला शंख गयन्द ।
जहर सुरा मन कल्पतरु, रंभा अमृत चन्द ॥

यह पुराणकी बात है। उसका अर्थ ऐसा है कि वही बीजरूपी ब्रह्म पेटको मथन करके पिंड हो जाता है। कच्छपके समान पंच कोशके अन्तरमें रहता है और चौदह इन्द्रिय रत्न समान उत्पन्न किया। चार अन्तः पांच ज्ञान पांच कर्म ये चौदह रत्न हैं दूसरा अवतार हुआ ॥ तीसरा अवतार वराह (शूकर) का ब्रह्माकी छींकसे हुआ चैत्र कृष्ण तेरसको। इक्कीस हजार वर्ष राज्य किया। हिरण्याक्ष दैत्यको फाडकरके मारा और पृथ्वीको जो विष्टाके भीतर छिपाया उसे दांतपर धरके लाया यह पुराणकी बात है । उसका अर्थ ऐसा है कि गर्भबंधनरूपी हिरण्याक्षको फाडकरके वही ब्रह्म शरीररूपी पृथ्वीको मल और मूत्रसे बाहिर लाता है। जो स्त्री तथा माताके पेटमें पडा रहता है। गर्भत्यागरूपी शक्ति वराह मलमूत्रसंगसे शूकर नाम प्रगट हुआ। यह तीसरा अवतार हुआ ॥ चौथा अवतार नरसिंह खंभ फोडकर प्रह्लादके वास्ते हुआ। वैशाख शुक्ल चौदसको प्रकट होकर सत्ताईस हजार वर्ष राज्य किया। और हिरण्यकशिपु दैत्यको फाडकरके रुधिर उसका पान कर

लिया। यह पुराणकी बात है उसका अर्थ ऐसा है कि जंघारूपी खंभ पांव औरतका फोडकर बालक पैदा होता है। बुद्धि सिंहकी रूप नरका शत्रुरूपी माता जो जीवको बांधा उसकी छातीपर चढकर दूध पान करता है। यह चौथा अवतार हुआ। इन चारों अवस्थाको चार पांव सत्ययुगके कहते हैं। सत्ययुगका प्रमाण सत्रह लाख अट्ठाईस हजार वर्ष। लाख वर्ष आयु, अस्थिगत प्राण, इक्कीस ताड ऊंचे पुरुष, बीस हजार ग्रहण। कार्तिक शुक्ल नवमी गुरुवार श्रवण नक्षत्र विष्कंभ योग तुला लग्नमें सत्ययुग उत्पन्न हुआ। चारों अवस्थामें पाप पुण्य नहीं है॥ पांचवां अवतार वामनका हुआ। कश्यप और अदितिसे भादों शुक्ल बारसको। दो लाख अट्ठाईस हजार वर्ष राज्य किया। राजा बलिसे साढे तीन पग पृथ्वी मांगकर तीनों लोक नाप लिया। उस पांवकी धोवन गंगाजी है। ब्रह्माने ब्रह्मलोकमें धोया था। राजा बलिको पाताल भेज दिया। यह पुराणकी बात है। उसका अर्थ ऐसा है कि लडकपनकी बालचर्याकी अवस्थाको वामन कहते हैं। उसकी बातोंपर बडे २ बलवान् छले जाते हैं। यज्ञोपवीतमें जो मांगता है वह पाता है। बलिका बंधन जनेऊ पहनना एक है। ब्रह्मफांसमें कैद हुआ। बडे आदमी बालकके साथ बालक हो जाते हैं वे पाताल जाते हैं। यह पांचवां अवतार हुआ॥ छठवां अवतार परशुरामका हुआ, जमदग्नि ऋषि व रेणुकासे वैशाख शुक्ल तीजको। सत्ताईस हजार वर्ष राज्य किया। सहस्रबाहु दैत्यको

मारा। इक्कीस वार पृथ्वी निःक्षत्रीय जीतकर ब्राह्मणोंव
दान कर दिया। पिताकी आज्ञासे माताका शिर का
लिया। यह पुराणकी बात है। उसका अर्थ ऐसा है कि
ब्रह्मचर्यकी अवस्थाको परशुराम कहते हैं। भोगरूपी दैत्य
जिसके हजारों व्यवहार भोगके हैं उसको सहस्रबाहु कहते हैं।
ब्रह्मचर्यमें हजारों भोग खंडन करना पडता है। सर्व भोग त्याग
करना होता है। और इस अवस्थामें माताका सुख नहीं देखना
चाहिये। ब्रह्मचर्य खंडन हो जाता है। यही अर्थ शिर काट-
नेका हुआ और इक्कीस वार पृथ्वीकी परिक्रमा करके पुण्य
उसका ब्रह्मके अर्पण करना चाहिये। यह पृथ्वी जीतकर दान
देना सिद्ध हुआ। यह छठवां अवतार हुआ॥ सातवां अवतार
रामका हुआ। राजा दशरथ और कौसल्या रानीसे चैत्र सुदी
नवमीको। ग्यारह हजार वर्ष राज्य किया। रावण और वालि
दैत्योंको मारे। यह पुराणकी बात है। उसका अर्थ ऐसा है
कि गृहस्थ अवस्थामें दश इन्द्रियका भोग है। उसमें सुख
उत्पन्न होता है और आराम प्राप्त होता है। उसी आरामको राम
कहते हैं और रावणरूपी मद और वालिरूपी क्रोध इस अव-
स्थामें मारना चाहिये। दीन वृत्तिसे रहना चाहिये। यह सातवां
अवतार हुआ॥ इन तीनों अवस्थाको तीन पांव त्रेताके कहते हैं।
त्रेताका परिमाण बारह लाख छियानवे हजार वर्ष। दश हजार
वर्ष आयु। मांसगत प्राण। चौदह ताड ऊंचाई। ग्रहणसंख्या
छत्तीस हजार है। वैशाख शुक्ल तीज सोमवार रोहिणी नक्षत्र

शुक्र योग कर्क लग्नमें त्रेता उत्पन्न हुआ॥ आठवां अवतार कृष्णका हुआ। वसुदेव और देवकीसे। भादों वदी अष्टमीको। कई वर्ष राज्य किया। शिशुपाल और दन्तवक्त्र और कंसको मारा। सोलह हजार गोपी व्रजमें, सोलह हजार गोपी द्वारकामें और एक सौ आठ पटरानीसे भोग किया। बालब्रह्मचारी अच्युत पदवी बनी रही। यह पुराणकी बात है। उसका अर्थ ऐसा है कि वह अवस्था वानप्रस्थकी है। इस अवस्थामें स्त्री संग रहती है विषय करना दोष है। रातको वस्त्रर अर्द्ध बिछौनेमें तिनका रखना होता है। और कामरूपी शिशुपाल लोभरूपी दन्तवक्र, मोहरूपी कंसको मारना पडता है और सर्व प्रकारकी तपस्या इस आश्रममें करना चाहिये यह आठवां अवतार हुआ॥ नवां अवतार बुद्धका राजा इन्द्रदमनके वास्ते और पार्वतीका शाप पूर्ण-होनेके वास्ते उडीसामें हुआ। तथा वही पिंड कृष्ण शरीरका समुद्रमें बहकर द्वारकासे आया। अगहन शुक्ल तीजको हुआ। तीन लाख तेईस हजार वर्ष राज्य किया। रक्तबीज दैत्यको मारा। हाथ पांव नहीं हैं। जातिका भेद नहीं। मौन धारण किया। यह पुराणकी बात है। उसका अर्थ ऐसा है कि यह अवतार संन्यास अवस्था है। रक्त और बीज जो शरीरमें हैं उनको मारना चाहिये। हाथ पांव नहीं होना। निष्कर्म होना एक अर्थ है। इन्द्रदमनके वास्ते उसका अर्थ इन्द्रियको दमन करना चाहिये। सर्वनाश तथा अद्वैतमत संन्यास है॥ यह नवां अवतार हुआ॥ इन दो अवतारोंको

द्वापरके दो पांव कहते हैं। उसका परिमाण आठ लाख चौंसठ हजार वर्ष। हजार वर्ष आयु। रुधिरगत प्राण। सात ताड ऊंचाई। ग्रहणसंख्या छियानवे हजार। माघ कृष्ण अमावास्या शुक्रवार श्रवण नक्षत्र सौभाग्य योग वृष लग्नमें द्वापर उत्पन्न हुआ॥

दशवां अवतार निष्कलंकी आगे होगा। सम्बल मुरादाबादके पास। नैमिषारण्य तीर्थमें। वैष्णव ब्राह्मणकी कुँवारी कन्यासे। भादों कृष्ण तेरस रविवार आश्लेषा नक्षत्र व्यतीपात योग मिथुन लग्नमें प्रकट होगा। कलिंजर दैत्यको मारेंगे। यह पुराणकी बात है। उसका अर्थ ऐसा है कि जब कलंकरूपी शरीरको छोड देवेगा तब निष्कलंक हो जावेगा दशवां अवतार सबका होना बाकी है। इस अवतारको एक पांव कलियुगका कहते हैं। सौ वर्षकी आयु। अन्नगत प्राण। एक ताड ऊंचाई। चार लाख पचीस हजार वर्ष प्रमाण युगका है। जरा कालको कलिंजर कहते हैं। ये दश अवतार चारों युगोंमें होते हैं। अथवा एक जन्ममें दश अवस्था होती हैं।

और चौदह अवतार सूक्ष्म कारण संयोगसे और हुए। उसकाभी विस्तार कहता हूं। पहला अवतार स्वायम्भू मनु सृष्टि देखनेके वास्ते ब्रह्माके पुत्र। वह मन इन्द्रिय है। दूसरा अवतार नारद जगतको भक्तिमार्ग बतानेके वास्ते और फिरनेके वास्ते ब्रह्माके पुत्र हैं। वह चित्त इन्द्रिय है। तीसरा अवतार विष्णु संतोषी दृष्टि निराकारसे तथा ब्रह्माके पुत्र वह बुद्धि इन्द्रिय है। चौथा अवतार सनकादिक ब्रह्माके पुत्र सदा पांच

र्षकी अवस्था वह अहंकार इन्द्रिय है। पांचवां अवतार मोहनी दैत्योंसे अमृत लेनेके वास्ते क्षीरसागरसे वह आंख है। छठवां अवतार कपिलजी, कर्दम ऋषि और देवहूतिसे। सांख्य योग्य प्रगट करनेके वास्ते वह नाक इन्द्रिय है। सातवां अवतार व्यासजी पराशर ऋषि और मच्छोदरीसे। अठारह पुराण बनाने वास्ते यह जिह्वा है। आठवां अवतार दत्तात्रय। अत्रि ऋषि और अनसूया महाराणीसे २४ गुरु करनेवास्ते। वह कान इन्द्रिय है। नवां अवतार राजा पृथु वेनके जंघासे। पृथ्वीको गौ बनाकर औषधि निकाला। वह त्वचा इन्द्रिय है। दशवां अवतार हयग्रीव हुआ मधुकैटभ दैत्य मारनेके वास्ते गुप्तसे, वह हाथ है। ग्यारहवां अवतार बद्रीनारायण, धर्मभार्यासे तप करने वास्ते। वह पांव है। बारहवां अवतार हंस उत्तर देने वास्ते प्रश्न सनकादिकके, वह लिंग है। तेरहवां अवतार धन्वन्तरि क्षीरसागरसे, रोगनाश होने वास्ते, वह गुदा है। चौदहवां अवतार यज्ञ ऋषभ इन्द्रकी कन्यासे यज्ञ करने वास्ते। वह मुख है। ये चौदह अवतार सूक्ष्मका सिद्धान्त है। ये चौदह अवतार सूक्ष्म और वे दश अवतार बडे सब चौवीस अवतार ब्रह्मके होते हैं। वह व्यासजीकी काव्य है। तब पुरुषका चौवीस अवतार होता है। चौदह इन्द्रिय दश अवस्था सबकी होती हैं। यह अवतार ब्रह्मका नहीं है। शूकरकी पूजा, मच्छ कच्छकी पूजा कोई नहीं करता। दुष्ट जीव उसको मारकर खा जाते हैं। ब्रह्मको कौन खा सक्ता

है ? पुराणका अर्थ जो प्रकटमें है, वह सिद्धान्त नहीं है । यह सुनकर महात्मा गुरु चुप हो रहे और हाथ जोडकर मुझको कहा कि आजसे यह सिद्धान्त अज्ञानसे मत कहना । मैं ब्रह्मको नहीं जानता ।

इति अभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद छठवें तरंगमें चैतन्य ब्रह्मविचार नाम पहिली लहरी संपूर्ण ।

दूसरी लहरी ।

राम अवतार ब्रह्म है ।

अथ श्रीरामचन्द्राय नमः । मैं दूसरे महात्माके पास गया और सब हाल अपना कहा । तब महात्मा गुरु बोले कि २४ अवतार ब्रह्म नहीं हैं केवल राम अवतार जो अयोध्यामें हुआ और सब कल्पमें होता है वह ब्रह्म है । वही राम दूसरा अवतारभी होता है । जब पृथ्वीपर पाप बहुत होता है तब रामका अवतार अनेक रूपसे होता है । जानकी जो जनकपुरमें प्रकट हुई वह माया है । हर कल्पमें ऐसा होता है और अन्तमें सारी अयोध्या वैकुंठको जाती है । रावण ऐसा दैत्य जिसने चौंसठ चौयुगी राज्य किया, मारा । उसके साथ कुम्भकर्ण मेघनाद खर दूषण और ऐसी सेना जहां अठारह अक्षौहिणी वाजिंत्र थे सब नाश हुए । वाली ऐसा योधा जिसकी कांखमें रावणभी षट् मास दबा पडा रहा नाश हुआ । ताडका, सुबाहु, मारीच जो विश्वामित्रके यज्ञ होने नहीं देते

थे, सींकके बाणसे मारे गये । समुद्रमें सेतु बांधा । गौतमऋषिकी स्त्री जो शिला होगई थी, चरण छूते अप्सरा होकर स्वर्गको गई । अठारह पद्म यूथ सेनाको इन्द्रपदवी दिया । वाल्मीकि ऋषि जो पहले व्याधाके समान थे, मरा २ कहकर देवता हो गये । महादेवजी अपना इष्ट जानते हैं । वाल्मीकि ऋषिने दश हजार वर्ष पहले उनकी लीला रामायणमें गाई । तीसरी तरंग चौथी लहरीमें जो महात्माने तुमको उपदेश किया वह बहुत सत्य है और सदेह सरयूमें गुप्त हो गये । ऐसी महिमा दूसरे अवतारकी नहीं है । कुछ पद रामचरित्रके देखने योग्य हैं ।

लावनी रामचन्द्रकी सम्पूर्ण कथा ।

राम लच्छमन भरत शत्रुहन चारों भाई लिया जनम । अवधपुरीमें सुवरन बरसै दशरथ कीन्हों धरम अगम ॥ जय और विजय द्वारपालको सनकादिकने दिया शराप । तीन जन्मतक राक्षस होकर फिर वैकुंठ पधारो आप ॥ रामचन्द्र जब आप अवतरैं तब २ छूटैं तुम्हरे पाप । इस कारणसे गढ लंकामें निशिचरपतिका बढो प्रताप ॥ कुंभकर्णको महाजु निद्रा ब्रह्मदेवने किया करम । राम लच्छमन भरत शत्रुहन चारों भाई लिया जनम ॥ १ ॥

महा पाप बाढ्यो पृथ्वीपर मेघनाद अविचार किया । चैतसुदीमें तिथि नवमीको रामचन्द्र अवतार लिया ॥ यज्ञ राखि निशिचरको मार्यो ऋषिपत्नी उद्धार किया । सिया स्वयंवर

धनुष तोडकर परशुरामको हार दिया ॥ तिलक भंग जब भयो अवधमें दशरथ पायो धाम परम। राम लच्छमन० ॥ २ ॥

सिया राम लछमन सहित जब तीनों वनको जाते थे। पशु और पंछी अवधपुरीमें तडप २ मर जाते थे ॥ पांव पियादे जटा बनाये कन्द मूल फल खाते थे। यक्ष गन्धरव रूप बदलकर दरशनको सब आते थे ॥ चित्रकूटको पावन करके पंचवटीमें किया शरम। राम लच्छमन० ॥ ३ ॥

शूर्पणखा आई जब वनमें लछमन उलटी काटी नाक। खर दूषणसे भई लडाई चौदह कोटि मिलायो खाक ॥ रावण और मारीच कपट कर सीताको ले गयो अचाक। रामचन्द्र पंपापुर पहुँचे गिद्ध जटायूको कर पाक ॥ वहां वालिका नाश हुआ और अंगद ऊपर किया रहम। राम लच्छमन० ॥ ४ ॥

हनूमान लंकामें पहुँचे रावणका वन दियो उजार। नगर जारिके पुत्र मारिके सात समुंदर आयो पार ॥ जनकसुताको धीरज देके रामचन्द्रसे कहा पुकार। भई तयारी पम्पापुरमें वानर भालू चले अपार ॥ सीतापति सुग्रीव केसरी जामवन्त नल नील पदम। राम लच्छमन० ॥ ५ ॥

चली कटक पम्पापुरसे जब सागर ऊपर वास किया। राम लच्छमन तीन दिवसतक सागरसे अर्दास किया ॥ गर्व न टूटा जब जलपतिका तब लछमनने कोप किया। अबै जलाऊं सातों सागर रामचंद्रने शान्त किया ॥ हाथ जोडकर कहै बिभीषण इस नादानकी रखो शरम। राम लच्छमन० ॥ ६ ॥

सेतु बांध रामेश्वर थाप्यो लश्कर उतरी एकहि बार । गया चसीठी बाल बांकुरा रावणका कांपा दरबार ॥ प्रथम लडाई मेघनादसे लछमनके भइ शक्ती पार । मूर सजीवन तुरत लिआयो अच्छा कीनो पवनकुमार ॥ भई लडाई कुम्भकरणसे रामबाणने लिया खतम । राम लच्छमन० ॥ ७ ॥

मेघनादको मार्यो लछमन रावण छोडो जीतकी आश । महिरावण ले गयो रामको वहां पवनसुत कीनो नाश ॥ रावण मरा रामसे लडकर जन्ममरणसे भयो खलास । लंकाराज विभीषण पायो सब देवनकी पूरी आश ॥ मंदोदरी भई पटराणी निशिचर कुल सब भयो भसम । राम लच्छमन० ॥ ८ ॥

सीता मिली राम लछमनसों अवधपुरीको चल्यो विमान । भरत मिलाप राजाकी शोभा घर २ गावें वेद पुराण ॥ कपि भालू सब बिदा भये वर पायो दुर्लभ भक्ती ज्ञान । जनकसुताको वनमें भेज्यो लव कुश पुत्र भये बलवान ॥ अश्वमेध सम्पूरण करके राम सिधारे निज आश्रम । राम लच्छमन० ॥ ९ ॥

भले लावणी कहै खोपसे दोष न देवें अच्छे लोग । दूजे तीजे फिर जो कहहों उसमें कहहों सब संजोग ॥ इसके सिवा सुकाम धारमें सब दुनियाका लागा रोग । क्या अभिलाख कहे गति अपनी भूल गया सब भक्ती जोग ॥ दशरथनन्दन दयाल होवें छूट जाय भवजाल भरम । राम लच्छमन भरत शत्रुहन चारों भाई लिया जनम ॥ १० ॥

रामस्तोत्र कवित्त।

चैतके महीनामें नवमी बुध शुध पक्ष भगवत् अवतार अवध सरजूतीर लेवत हैं। दशरथ कौशल्यासे रामचन्द्र प्रगट भये कैकयीसे भर्त्त नाम लेत पाप खोवत हैं॥ लछमन शत्रुहन सुमित्रासे जन्म लियो चारों सुत अवध बीच देखत छबि जोवत हैं। गावत वासिष्ठ वाल्मीकि आदि जन्मकथा सुनिके अभिलाख सहित संचित मल धोवत हैं॥ १॥

विश्वामित्र राजा ऋषि अरण्यमें यज्ञ करे ताडका सुबाहु नित यज्ञमें सतावत हैं। भगवत् अवतार जान दशरथसे मांगन गयो बालक अज्ञान जान नरपति सकुचात हैं॥ विद्या अभ्यास हेतु लायो है राम लखन निशिचर संहार यज्ञ पूरण करावत हैं। गौतम त्रिय शिलारूप तार्यो अभिलाख सहित ऐसी लीला अपार व्यास आदि गावत हैं॥ २॥

गुरुके चरण वंद उठे भोर अवधचन्द सुमनके कारण गये देखन फुलवाई। वहां सिया पिया हेतु पूजत जगदंब अम्ब सखी एक आतुरसे जायकर जनाई॥ पूजन कीजिये भोर देखो दशरथकिशोर आये हैं फूल लेन आज दोऊ भाई। शोभाके सेवन सदन देखत छबि मन्द मदन मेरी अभिलाख धनुष तोडि हैं राम माई॥ ३॥

साज्यो स्वयंवर आज जनकराज मिथिलापुर कहत ऋषि राज चलो तुमहू देखि आवो। बडे २ राजा महाराजा नरेंद्र इन्द्र रावण सहसबाहु सब देखिबेको आवो॥ उठै नहिं शंकर-

धनु हारे सब वीरजन राम तुम उठाय धनुष तृण सम बहावो। सुरपुरके काम होवें भृगुपति विसराम होवें पूरण अभिलाख होवें राम सिया पायो ॥ ४ ॥

क्रोधित परशुराम आज राखें भगवान लाज शोचत मिथिलेश राज काज सब नशायो । पूंछत भृगुपति रिसाय तोड्यो किन धनुष आय जनक नेक दे बताय मृत्यु निकट आयो ॥ बोलत कर जोड राज गिरा गोड सहित नाय कम्पत है परशुराम धनुष जब चढायो। हरषित अभिलाख रहे चिरंजीव दोऊ भ्रात साजके बरात सिया अवधको लिवायो ॥ ५ ॥

दशरथने राजतिलक रामको विचार कियो देवनने भंग कियो वनको पठवायो है । श्रीरघुवीर प्राग चित्रकूट जाय वास कियो दशरथको मरण पाय भरत अवध आयो है ॥ लेकर परिवार जाय रामसे मिलाप कियो आज्ञा प्रमाण राम पांवडी पुजायो है । तमसाके तीर जाय गुफामें भजन कियो शत्रुहन अभिलाख सहित परजा हित धायो है ॥ ६ ॥

इन्द्रसुत जयन्त चरण चोंच मार भाग्यो जब रामबाण तिहूं लोक पीछे दिखरायो है । नारदके मत प्रमाण रामके शरण गयो फोरयो एक नेत्र पास इन्द्रके पठायो है ॥ मारयो विराध जाय पंचवटी वास कियो लछमनके हाथ नाक शूर्पनखा कटायो है। मारयो खर दूषण लंकेश हरयो सीताको पम्पापुर बालि मार सीता सुधि पायो है ॥ ७ ॥

कहत सुग्रीवजी देख हनूमान कपि बालिके दूत दोय फिरत

चन हैं। धार बटुरूप सनकार मोहिं सैन देत जो यह शैल वन बहुत घन हैं॥ कहत हनुमान पहचान अवधेश मुनिनाथ यह शैल सुग्रीव जन हैं। सहित अभिलाख दोऊ प्रीति दृढ कीजिये जानकी हेतु अनुमान तन हैं॥ ८॥

गजो कपिराज यूथबंदरको सीताहेतु अंगद ऋक्ष पवनपुत्र दक्षिणको धायो है। पंछी सम्पात सिन्धु तीन भेद सर्व कह्यो तरक्यो हनुमान सिन्धु कूद फांद आयो है॥ सुरसाको बल दिखाय लंकिनीको त्रास दियो घर २ में सिया हेतु पवनपुत्र धायो है। मंदिर बिभीषणको देख्यो अभिलाष सहित कीन्हो पहँचान तुरत जानकी दिखायो है॥ ९॥

गरजत दशकन्धपुत्र देखो हनुमान वीर मारुत उनचास आज लंक बीज बहत है। होत है पुकार देत रावण राहिं गुहार गार करत नहीं अब सहाय लंका शठ जरत है॥ सुमिरत सब अवधनाथ कीजे जल्दी सनाथ रावण असुझ जान कान सब करत है। भाषत अभिलाष वेद शास्तर पुराण शाख नेक पहँचानो बात जो सुनकर बरत जरत है॥ १०॥

सीतासुधि पाय रामचन्द्र चल्यो लंकाको वानर भालू अपार चहुँ दिशिसे आवत है। पहुँचे जब सिन्धुतीर आये बिभीषण राज बांध्यो शिव सेतु कटक लंकामें धावत है॥ पाती लै पहुँचे जब लंकामें अंगद बली भागे सब राक्षस जान पवनपुत्र आवत है। रावणको डाट देत पांवको न टार सको आयो भगवान पास युद्धको बढावत है॥ ११॥

कहत दशकन्ध सुन प्राणप्रिया बावरी सहित त्रिपुरारि कैलास लाऊं। जीत सब लोक दिक्पाल पातालतक सोन घननाद गढ लंक ठाऊं ॥ भयो दश शीश भुज वीश लंकेशको भालु कपि मार नर कोट खाऊं। यही अभिलाख संग्राम कर रामसे तिहूं पुर सुयश निज धाम पाऊं ॥ १२ ॥

कहत मंदोदरी सुनो दशकन्ध पिया रामको ब्रह्म अवतार जानो। जानकी दीजै विनय बहु कीजै शरण अवधेश रघुवंश भानो ॥ जपत त्रिपुरारी दिन रात जेहि राम शठ ताहि नर कहत को हान मानो। कहत अभिलाष सुन लंकपति बावरे रामकी वैर जनि खैर जानो ॥ १३ ॥

कुंभकरण मेघनाद रावण अहिरावण सब निशिचर कुल नाश भयो देवन सुख पायो है। लंका बिभीषणको रावणकी नारि सहित त्रिजटाको भक्तिदान सीता ले आयो है ॥ बंदर सब बिदा भये रामचन्द्र राज कियो सीताको वन पठाय यज्ञको करायो है। लव कुशसे युद्ध भयो आये जब रामचन्द्र पुत्रनको त्याग सिया भूमिमें समायो है ॥ १४ ॥

कीन्हो अश्वमेध यज्ञ पृथिवीको भार हर्यो दशरथ वरदान कीन दुष्टनको मार्यो है। पुत्रनको राज दियो ब्राह्मण निहाल कियो सरयूमें गुप्त भयो भक्तनको तार्यो है ॥ ऐसो अवतार ब्रह्म निर्गुणमें भेद नांय गावे त्रिपुरारि शेष गाय २ हार्यो है। मूरख अभिलाख ताहि गावत है आन मान सूरजको दीप जान उपमा उर धार्यो है ॥ १५ ॥

मैंने हाथ जोडकर कहा कि रावण दैत्य होकर ब्रह्मकी स्त्रीको चुरा ले गया और हनुमान्‌की खोजनासे पता पाया। लक्ष्मणके शक्तिबाण लगनेमें अज्ञान समान विलाप किया। पवनसुतने धवलागिरि (पहाड) लाकर अच्छा किया। मेघ-नादकी नागफांसमें गरुड पंछीने प्राण बचाये। महिरावणके बलिदानसे हनुमान्‌ने प्राण बचाये। सहसरावणके युद्धमें सीताको माता कहा तब वह कालीरूप होकर उसको मारा। वेदमें ब्रह्म निराकार सर्व व्यापक है वहां राम रहीमकी चर्चाभी नहीं है। कैकेयीके शापसे चौदह वर्ष जंगलमें दुःख पाया। वाल्मीकि ऋषिने जो रामायण बनाया है वह आत्मज्ञानका सिद्धांत है। उसका यंत्र जो ग्रन्थके साथ है देखो तब बोध हो जावेगा।

परमार्थ सातों कांड रामायण।

कैलासब्रह्मांड।

आकाश वायु पुरुष स्त्रीसे शक्ति उत्पन्न हुई तेजसे संयोग हुआ। दो पुत्र अग्नि और शक्तिसे प्रगट हुए। जल और पृथिवी उनको ब्रह्मांड कहते हैं।

बालकांड।

उस ब्रह्मांडको शरीर नाम रक्खा। उसमें आत्मा देव हुआ। दश इन्द्रिय राजा हैं। त्रिगुणी माया तीनों रानी हैं। चार

१ यहांका यंत्र ग्रंथके अंतमें देखो।

अन्तःकरण चार पुत्र हुए मन चित्त बुद्धि अहंकार। स्वभाव मंत्री विद्या आई। अविद्या इच्छा भाग नाश हो गई निश्चय प्रीति प्राप्त होनेसे, सत्य देश धर्म श्रद्धा मिला। बंधन टूट गया। भविष्यके वास्ते परीक्षा हुई। विश्वास हुआ शक्ति प्राप्ति हुई।

अयोध्याकांड।

भूल आया भोगकी इच्छा हुई होतव्य कारणसे अकर्म हुआ। फल पाया। भ्रमना हुई। धीरजसे भवसागर पार हुआ गुरु विवेक विचार प्राप्त हुआ। एकान्तमें प्राणायाम किया। ममता परिवार सम्पत्ति आई वैराग्य हुआ।

आरण्यकांड।

अशुभ चिन्ताको त्याग दिया। योगसिद्धि प्राप्त हुई। विरुद्ध मर गया। शुद्धता प्रेम आनन्द मिला। दृढता मिलने समय लोभ काम क्रोध मोह मद पांचों विकार आये शक्ति जाती रही असत्य देशको शक्ति प्राप्त हुई।

सुन्दरकांड।

दीनता ज्ञान असंग शील संतोष जप तप संयम नियम आसन प्रत्याहार ध्यान धारणा समाधि प्राप्त हुई। अज्ञानका नाश हुआ। अभ्यास करनेसे पुरुषार्थ मिला। प्रकाश हुआ।

किष्किन्धाकांड।

आशा तृष्णा वासना दूर किया। मार्ग मिला हृदयमें। सत्संग किया। सद्गुरु मिले। निर्मल बुद्धि प्राप्त हुई।

लंकाकांड ।

अविचार दम्भ भ्रम ईर्षा मोह गर्व ताप परसन्ताप और सब मोहकी सेना मारी गई । कीर्ति शांति रह गई ।

उत्तरकांड ।

निष्काम हुआ । निर्गुण मुक्ति प्राप्त हुई । उसमें कुछ ब्रह्मका अनुभव नहीं है । यह सुनकर महात्मा गुरु चुप हो रहे ।

इति अभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद छठवें तरंगमें चैतन्यब्रह्मविचार नाम दूसरी लहरी संपूर्ण ।

तीसरी लहरी ।

कृष्ण अवतार ब्रह्म है ।

अथ श्रीकृष्णचन्द्राय नमः । मैं दूसरे महात्माके पास गया और सब हाल अपना कहा । तब महात्मा गुरु बोले कि शास्त्र प्रमाण और विचारप्रमाण कृष्णका अवतार ब्रह्म है । यह अवतार पूर्ण कलासे हुआ । त्रेतायुगमें एक यवन था उसने तप किया । उसको वरदान मिला कि अवतारसे न मारा जावे । उसने कंसका रूप पाया । उसके वास्ते पूर्ण अवतार हुआ । रामकी कथा रामायणमें है । कृष्णकी कथा अठारह पुराणों है । रामने रावण वालिको मारा । कृष्णने लाखों दैत्यों मारा । जरासंधकी लडाईमें इक्कीस अक्षौहिणी दल अठा वार आया था । सबको मारा । कौरव पांडवोंकी लडा

अठारह अक्षौहिणी सेना मारी गई। द्वारकामें छप्पन कराड़े यदुवंशी आपसमें लड़कर मर गये। सोलह हजार गोपी सोलह हजार राजकन्या एक सौ आठ पटरानीसे भोग विलास किया। परन्तु बालब्रह्मचारी बने रहे। अर्जुनको गीता सुनाया। समुद्रसे गुरुका मरा हुआ लड़का जीता लाया। अर्जुनको समुद्रमें अपना रूप दिखाया। गोवर्द्धन पर्वत छोटी अंगुलीसे उठाया। बालअवस्थामें हजारों दैत्योंको मारा। यमलार्जुन झाड़को गन्धर्व बनाया। राजा नृगको गिरगिटयोनिसे छुड़ाया। रहस्यलीलामें सोलह हजार कृष्ण हो गये। सुवर्णकी द्वारका समुद्रमें बसाई। गज और ग्राहका झगड़ा मिटाया। द्रौपदीकी लाज रक्खी। कालिनागको नाथा। ये सब लक्षण ब्रह्मके हैं और बहुत आचार्योंका मत ऐसा है कि श्रीकृष्णचन्द्र पूर्णब्रह्म हैं।

कृष्णाष्टक।

कवित्त–भादों अंधियार रात मथुरामें जन्म लियो लेकर वसुदेव तुरत गोकुल पग धार्‍यो है। बेडी और हथकडी पृथिवीमें जाय पडो फाटक सब खोल दियो सोवत रखवारे है॥ काली और मेघ सिंह मार्गमें साथ रह्यो यमुना हरषाय रात कारी अंध्यारी है। बालक ले पहुँचे वसुदेव जाय नन्द बार सोवत नंदरानीसहित कन्या गरुआरी है॥ १॥

कन्या ले आये जब मथुरामें वसुदेव बेडी और हथकडी पायनमें डारी है। फाटक सब बंद भये पहरो सब जाग उठ्यो

कन्याकी कूक सुनत दौरयो सुरारी है ॥ जल्दीसे हाथ पकड जाहो दे मारनको बिजलीसी चटक कहत सुरपुर पग धारी है। एरे मतिमन्द मूढ मोहिं पटक लाभ काह तेरो तो काल ब्रज जन्म्यो गिरिधारी है ॥ २ ॥

कन्या सुख वचन सुनत सोचत भये कंसराज दूती इक ढिग बुलाय गोकुल पठवायो है। स्तननमें विष लगाय पहुँची ब्रजनन्द द्वार जसुदासों हेतु जोड बालकको धायो है ॥ छातीकी राह प्राण खैंच्यो जब नन्दलाल पहुँची सुरधाम जाय निर्मल गति पायो है। ऐसे बहु दूत कंस भेज्यो ब्रज बार बार कीन्हो सब नाश पास कंसके पठायो है ॥ ३ ॥

कालीदह फूल लेन भेज्यो है कंसराज मोहन ब्रजबीच खेल गेंदको मचायो है। मोहन चढ कदम कूद नाथ्यो है काली नाग फनपर सवार नाग शापको मिटायो है ॥ भेज्यो जब फूल कंस मनमें भयमान भयो मारेगो मोहन कृष्ण निश्चय ठहरायो है। नारदके मत प्रमाण धनुषयज्ञ प्रकट कियो भेज्यो अक्रूर आप कालको बुलायो है ॥ ४ ॥

मथुरामें कंस मार पांडवोंको राज दियो कौरवोंको नाश कियो जरासंध असुर मारयो है। भौमासुर बाणासुर कोटिन यदुवंश असुर मारयो शिशुपाल दन्तवक्रको उधारयो है ॥ गोकुल अस्थान छोड द्वारका बसायो जाय गोवर्द्धन पर्वतको चढायके उतारयो है। ब्राह्मण सुदामाको ऋद्धि सिद्धि पूरण कियो पायन गजग्राह युद्ध जलमें सिधार्‍यो है ॥ ५ ॥

दानकी गलीमें रोकत वृषभानुलली कहत ब्रजराज आज दान देके जैहो। चोरी उठ भातकाल बेंचत सब ग्वालबाल सब दिननको दान आज देकरके जैहो॥ कैसी ठकुराई लड-काई करत नन्दलाल रोकत पराई नार ब्रजमें हँसै हो। मानो अभिलाख खाओ दही दूध मेवा दाख छोडो यह टेक दान छाछ नाहिं पैहो॥ ६॥

ब्रजकी हँसाई रह्यो चौदह भुवन छाई राधा कृष्ण भये कन्हाई अबको कहा हँसै है। कैसी ठकुराई बतराई अंधराई तोहि जानत सब आंख देख आगे और जनै है॥ नन्दकी दुहाई जसुदा मात सौंह खाई कहत सत्य हौं सुनाई राधा दान दे बनै है। विहँसत ब्रजनार ठाढ रोपत अभिलाख दोब-तकी नन्दलालसो दान ले मनै है॥ ७॥

गोकुलके बसैया और हँसैया ब्रज घरघरके गोपिनमें कन्हैया बलभैया असुरारीको। भक्तनके दयाल और दुष्टनके काल जाल नन्दके गोपाल लाल जसुदा महतारीको॥ योगिनमें योगी महाभोगी है भोगनको लोगनको मोहत छबि जोहत बनवारीको। कहत है गुलाब फिर प्यारीसे देख आज कुंज-नमें गया कुँवर सांवलिया गिरिधारीको॥ ८॥

राधाष्टक।

कवित्त—तीरथके जाये चारों धामके नहायेते देवको मना-येते राम कृष्ण रट लगायेते। गीताको गाये और भागवत सुना-येते ब्रतके कराये और आसन लगायेते॥ नेमके कराये ध्यान

धारणा बनायेते संयमके कराये प्राणायामके चढायेते । आठों योगके कराये अभिलाख सो जु पाये सो सुरपुरको जायगा राधागुण गायेते ॥ १ ॥

मथुरामें जन्म भयो गोकुलमें खेल कियो नन्दके गोपाल भयो पूतना नशायो है । यमला और अर्जुनके शरापको उधार कियो कालीको नाथ बांह परवतको उठायो है ॥ औरो सब दुष्ट मार मधुवनमें रास कियो कंसको पछाड उग्रसेनको छुडायो है । ऐसे सब काम कियो पूरण अभिलाख सहित राधाके संग रह्यो राधागुण गायो है ॥ २ ॥

गोपिनमें नायक सुखदायक यदुनायकको सुन्दर सब लायक बरदायक विज्ञानीको । काटत है बाधा जो साधनसे साधा ऐसी वो राधा अनुराधा मन ज्ञानीको ॥ यशोदाकी प्यारी वृषभानुकी दुलारी अभिलाख तेरी यारी मनमोहन सुखदानीको । जावत गुण खानी सब हानीको प्राप्त भयो उपमा नहिं पायो रूप राधा महारानीको ॥ ३ ॥

शिवकी आराधा नारदहू नित साधा करें ऐसी गुण अगाधा सब बाधाकी नाशनी । मोहनकी प्यारी गिरिधारीसों यारी है चाहत नंदलाल बाल वृषभानुकामिनी ॥ बंधनको काटै यमदूतनको डाटै अभिलाख चरण चाटै ऐसी कृष्ण हरषावनी । व्रजके विहारी वनवारी मुरारी श्याम धावत जिहि नित्य ऐसी राधा व्रजवासिनी ॥ ४ ॥

सूरज छिप जाय चन्द्र देखत रह जांय और तारा गिरि

जाय देख रूप वृषभानीको। चम्पा शरमाय कुन्द कालो पर-जाय कमल सम्पुट हो जाय देख मोहन मन मानीको॥ तारा और कुन्ती मन्दोदरी द्रौपदी सीता पंच कन्या रहत हाजर निगहबानीको। बोलत अभिलाख सो तो मोहत है नन्दलाल जंगलमें दुहत गाय राधा महारानीको॥ ५॥

दिननकी बारी मतवारी शृंगार साज बनके पनिहारी तट यमुनाके जावत हैं। देखत नरनारी बलिहारी बलिहारी करत मोहत आचारी ब्रह्मचारी मर जावत हैं॥ मुखकी छवि न्यारी लटकारी बादर समान खोलत जब सारी तब सूरज छिप जावत हैं। खोजत गिरिधारी अभिलाखसहित प्यारीको राधा बनवारीकी यारी सब गावत हैं॥ ६॥

मुखकी उजियारी अंधियारीको नाश करे पांयनकी लाली हरियारी दिखरावत है। जोबन सुपारी बलिहारी मतवारी रूप प्यारी निज बारी सब जीवोंको भावत है॥ रविकी उजियारी लटकारीसी नाश होत भादोंकी कारी अंधियारी दिख-रावत है। राधा सुकुमारी बनवारीसे प्रीति करत देखत अभि-लाख नित परमानंद पावत है॥ ७॥

सकुचत श्रुति शेष और शारद गणेश आदि पावत नहिं पार ध्यान बार २ लावत हैं। पूर्ण अवतार कृष्ण सबके कर-तार भये गोकुलमें नित्य रासमंडल करवावत हैं॥ माया महा-रानी ब्रह्माणी जहां पानी भरे रम्भा इन्द्राणी सब देखत शर-मावत हैं। ऐसी गुणखानी वृषभानी मनमोहनसो राधा महा-रानी अभिलाखको पुरावत हैं॥ ८॥

अष्टककी महिमा अभिलाखसे बखान करूं गावत जो अष्ट काल सोही भगवान् है। तीन काल गावै सो देवनसे अधिक रहै भोर सांझ गावै सो पंडित परमान है॥ एक बार गावै सो जगतमें निहाल रहै ध्यान जो लगावै सो अष्ट सिद्धिमान है। कबहूं नहिं गावै केवल राधा रट लावै सो सुरपुरको जावै अभिलाखकी जबान है॥ ९॥

मैंने हाथ जोडकर कहा कि त्रेतामें राम अवतार हुआ द्वापरमें कृष्ण अवतार हुआ। पहलेका अवतार ब्रह्म नहीं होगा तो दूसरा अवतार ब्रह्म नहीं हो सक्ता। वसुदेवजी चोरीसे गोकुल ले गये। माता पिता बंदीखानेमें बहुत काल रहे। जरासंधसे भाग गये। ब्रजमें गाय चराया। चोरी करके माखन खाया। स्त्रियोंके वस्त्र न्हाते हुए चुराये। सत्राजित यादवने मणिकी चोरी लगाई। उग्रसेनकी चाकरी किया। सान्दीपनसे विद्या पढी। रुक्मिणीको चोरीसे लेकर भागे। राधा जो उनकी मामी थी उसके साथ विषय किया। बलरामजीका पुरुषार्थ कुछ कम नहीं था। अन्तमें मल्लाहके लडकेने हिरण जानकर तीर मारा पांवमें लगा उस कारणसे मर गये। यह कौन लक्षण ब्रह्मका है? बडे शरमकी बात है। यह सुनकर महात्मा गुरु चुप हो रहे।

इति अभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद छठवें तरंगमें चैतन्यब्रह्मविचार नाम तीसरी लहरी सम्पूर्ण।

चौथी लहरी।

सूर्य ब्रह्म है।

अथ श्रीसूर्याय नमः। मैं दूसरे महात्माके पास गया और सब हाल अपना कहा। तब महात्मा गुरु बोले कि सूर्य ब्रह्म है। जब आदिमें सब ब्रह्मांडमें अंधकार था, तब ब्रह्मको ब्रह्मांड बनानेकी इच्छा हुई। तब सूर्यरूपी आकार हो गया। प्रकाश उसकी माया है। वायु धुआं है। उससे जल उत्पन्न हुआ। जलसे पृथिवी प्रगट हो गई। उत्पन्न पालन प्रलय तीनों काम सूर्यके हैं। छःही ऋतु सूर्यकी कला हैं। सूर्य्य उदय न होवे तो संसार नाशवान् हो जावे। चौरासी लाख सृष्टि सूर्यके आधारसे है। सूर्य्यका प्रकाश उपमा योग्य नहीं है जिसकी उपमा नहीं वही ब्रह्म है। चन्द्रमा सूर्य्यकी छाया है। बहुत मुल्कमें सूर्य्यको ब्रह्म जानते हैं। नव ग्रह पृथिवी भी सूर्यको परिक्रमा देते हैं। जैसे देखरेख सूर्य्यकी जगत्में प्रत्यक्ष है ऐसी दूसरेकी दृष्टि नहीं आती। सूर्यको ब्रह्म नहीं जानना अन्धा ज्ञान है। सूर्य्यका यंत्र[१] और दोहा चौपाई कवित्त देखो।

सूर्यस्तोत्र।

दोहा—उदय अस्त जो नित करै, सो सूरज परकाश।
चौदह भुवन तिरलोकमें, पूरण ब्रह्म अकाश॥
तम अपार संसारको, नाश करै अविनाश।
ऐसो सूरज ब्रह्म है, चौदह भुवन प्रकाश॥

---

[१] यहांका यंत्र ग्रंथके अन्तमें देखो।

तीन देव अवतार दश, नव ग्रह बारह रास ।
सब सूरजके अंश हैं, शेष शारदा दास ॥
उतपति परलय पालना, सब सूरजसे होय ।
और ब्रह्म जो जानै, निश्चय मूरख होय ॥

चौपाई ।

वंदौं अदिति ईश सुर भाना । जाको तेज विदित जग जाना ॥
सर्व पदारथ तुमसे दरशै । आतप काल शर्द जल वरषै ॥
तीन लोकके हो तुम कर्त्ता । चौदह भुवनके तुम संहर्ता ॥
तेतिस कोटि ज्योति है तुमसे । चौरासी लाख उपजे विनसे ॥
सात ग्रहोंके हो तुम राजा । बारह राशिके तुम महराजा ॥
तुम्हरे उदय जगत जब जागै । तुम्हरे अस्त शून्य सब लागै ॥
तुम ईश्वर परमेश्वर सबके । कर्त्ता धर्त्ता सारे जगके ॥
स्वर्ग नरक सब तुमसे राजै । तुम्हरी कृपा दुंदुभी बाजै ॥
पाप पुण्य तुम देखनहारे । सन्त भक्तके तुम रखवारे ॥
तिरगुणके तुम सिरजनहारे । शेष शारदाके करतारे ॥
सात द्वीप और सागर साता । तिनको क्षणमें करो निपाता ॥
तीन लोक तुमने उपजाया । ब्रह्मा विष्णु महेश बनाया ॥
रात दिवस सब तुमसे होई । तुम्हरी महिमा जान न कोई ॥
देव दैत्य सब तुमको ध्यावैं । तुम विन कोई राह न पावैं ॥
तुम्हरे उदय दृष्टि सब होई । हान लाभके कर्त्ता दोई ॥
चौदह भुवनमें जोत विराजै । तीन लोकमें कारज साजै ॥
जेते काम जगतमें होई । तुम्हरी कृपा सुधारैं सोई ॥

धन सन्तान मिलै सब तुमसे। भक्ति रु ज्ञान मिलै सब तुमसे॥
व्रत तुम्हार नेमसे करै। चार पदारथ घरमें धरै॥
चारों दिशा तुम्हारी पूजा। करै नेमसे राजा परजा॥
सबके अर्थ करो तुम पूरा। तुमसे विमुख न पावै धूरा॥
दीन भक्तके तुम हो स्वामी। घट २ के हो अन्तर्यामी॥
चार तुरंग पवनसे परबल। रथमें लगे करै बहु छल बल॥
अरुण सारथी रथको हाँकै। क्षणमें सात द्वीपको डाकै॥
तेज पुंजकी राशि बखानो। चौदह भुवन ज्योति प्रगटानो॥
उदय अस्त मध्याह्न बनावै। रात समय अन्तर हो जावै॥
रात न होय रहै नहिं पर्दा। ऐसे हो तुम जगके वरदा॥
तम अरु अंधकार सब भागै। तुम्हरी कृपा सोवत जागै॥
राहू केतु दुष्ट दुख देवै। ग्रहन करै दान बहु लेवै॥
और देवताको सब त्यागै। तुम्हरे चरणकमल अनुरागै॥
उत्तर दक्षिण दुइ दिशि रहो। घट बढ ज्योति जगतमें करो॥
मैं पापी हूं बहुत जनमका। काटो फंद दण्ड इस जनका॥
अपनी ज्योतिमें ज्योति मिलाओ। अपना दर्शन मोहिं दिखावो॥
मेरी लाज रहै जगमाहीं। मेरो यश गावैं जगमाहीं॥
कर अस्नान अरघ जो देवै। शुद्ध मनोरथ अपनो लेवै॥
नमस्कार जो करै प्रभाता। चार पदारथ चहुँ दिशि पाता॥
वरत करे अतवार अलोना। सुख सम्पत पावै बहु सोना॥
सदा अलोना जो जन खावै। सायुज्य मुक्ति परम पद पावै॥
चार पहर सन्मुख जो रहै। सुफल मनोरथ अपनो लहै॥

आठ प्रहर जो ध्यान लगावै। सम्पूरण अभिलाख पुरावै ॥

कवित्त–सूनो संसार अंधकार जान ज्योतिःस्वरूप कियो परकाश तेज भानुको जनायो है। स्थावर और जंगम चौरासी लाख योनि भयो वर्षा और गरम शरद तिराविधि प्रगटायो है॥ पूरवसे पश्चिमतक उदय अस्त नित्य होत भोर मध्य सांझ तीन कालको बनायो है। ऐसे परिपूरण ब्रह्म सूरज अखंड उदित गावत अभिलाखदास निर्मल गति पायो है॥

मैंने हाथ जोडकर कहा कि चार प्रहर सूरज रहता है। चार प्रहर नहीं रहता। जो व्यवहार दिनको होता है वही रातको है। राहु केतुका ग्रहण होता है। हनुमान् बंदर उत्पन्न समय लील गया। नव ग्रहमें एक ग्रह अशुभ और सात आकाशमें चौथे आकाशका मालिक और सात वारमें एक वारका स्वामी है। सूरजकी कन्या चित्रगुप्तको विवाही गई। चन्द्रमा अत्रिऋषिका पुत्र है और पुराणमें सूर्य कश्यप ऋषिका पुत्र है। पश्चिमके मुल्कमें एक हकीमने कूपमें सूरज बनाया। बारह कोसतक नित्य उसका प्रकाश रहता है। सूर्यकी संख्या कोई मतमें बारह है। सूर्यकी अवस्था ६० घडीमें पांच प्रकारकी होती है। ब्रह्म सदाकाल एक अवस्थासे रहता है। यह सुनकर महात्मा गुरु चुप हो रहे।

इति अभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद छठवें तरंगमें चैतन्यब्रह्मविचार नाम चौथी लहरी संपूर्ण।



पांचवीं लहरी ।

नारायण क्षीरसागरवासी ब्रह्म है ।

अथ श्रीलक्ष्मीनारायणाय नमः । मैं दूसरे महात्माके पास गया और सब हाल अपना कहा । तब महात्मा गुरु बोले कि नारायण ब्रह्म है । सदाकाल क्षीरसागरमें शेषनागके फण-पर शयन करता है । लक्ष्मी सदा सेवामें रहती है । उसीको शक्ति और मायाभी कहते हैं । वह माया अपनी सामर्थ्यसे सारा जगत् बनाती है । ब्रह्मको खबर नहीं वह सदा सुषुप्ति अवस्थामें रहता है । ब्रह्मा विष्णु महेश उस शक्तिके पुत्र हैं और हर एक औलादमें एक एक गुण विलग है । पहले ब्रह्मा उसमें रजोगुण, दूसरे विष्णु उसमें सत्वगुण, तीसरे महेश उसमें तमोगुण । रजोगुणसे १४ इन्द्रिय, सत्वगुणसे १४ देव, तमोगुणसे पंच तत्व २५ प्रकृति उत्पन्न हुईं । उससे सारा जगत् उत्पन्न होता है । उसका विस्तार यंत्रे[1] और दोहा चौपाईमें देखो ।

चौपाई ।

ब्रह्म निरंजन मूल बखानो । शाखा माया परबल जानो ॥
ताते निरगुण उपजे देवा । ब्रह्मा विष्णु महेश अभेवा ॥
रजगुण ब्रह्मा सतगुण हरी । तमगुण शंकर करता करी ॥
रजगुणसे इन्द्री पहँचानो । अन्तस कर्म ज्ञान अनुमानो ॥

---

१ [illegible] यंत्र ग्रंथके अंतमें देखो ।

एक २ में पांच बनावे। ऐसे सबको नाम बतावे॥
अंतःकरण चित्त मन बुद्ध। अहंकार अंतः परसिद्ध॥
त्वचा नाक श्रवण अरु बानी। चक्षु ज्ञान इन्द्री जानी॥
हाथ पांव मुख लिंग गुदा। कर्म इन्द्री जानो सदा॥
सतगुणसे सब देव बनाओ। अंतस देवको नाम लखाओ॥
विष्णु शक्ति ब्रह्मा ब्रह्म। शिव शंकर अंतसके धर्म॥
सूर्य कुबेर अश्विनीकुमार। सरस्वती गणेश ज्ञानमें सार॥
वरुण इन्द्र दिक्पाल करम। प्रजापति यमराज धरम॥
तमगुणसे उपजे संसार। पांच तत्व पच्चीस विकार॥
नभ वायु पावक जल भूम। पांच तत्वकी देखो धूम॥
काम क्रोध लोभ मद मोह। यह प्रकृतिमें जानो द्रोह॥
चलन कूद दौडन फैलाव। संकोचन वायू परभाव॥
तेज आलकश क्षुधा पियास। नींद अग्निमें है परकाश॥
रुधिर पसीना चर्बी राल। वीर्य्य आपसे उपजो जाल॥
अस्थि मांस नाडी चर्म रूम। पांच प्रकृति बनावै भूम॥
ऐसा झाड ब्रह्मका देखो। सागरमें नारायण पेखो॥
शेष नागका आसन कहै। शक्ती माया हाजिर रहै॥
ऐसे ब्रह्मको ध्यान लगावै। सब अपनी अभिलाख पुरावै॥

दोहा—पयसागरके बीचमें, शेष नागके शीश।
शयन करै कर्त्ता पुरुष, सत्य नाम जगदीश॥
शक्ती सेवामें रहै, माया करै पसार।
तीनों लोक चौदह भुवन, है अभिलाख अधार॥

अजामिल भीलने अपने लडकेको नारायण नामसे पुकारा मुक्ति पाया। वर्तमानमें सत्यनारायणकी कथा चारों वर्णमें होती है। कोई कल्पमें नाभिसे कमल होता है। उसमें ब्रह्मा उत्पन्न होता है और वेद पुराणका मतभी ऐसा है कि नारायण क्षीरसागरवासी हैं। जब देवतोंको संकट हुआ तब क्षीरसागरतीर जाकर पुकार किया यह सिद्धांत अचल है। मैंने हाथ जोडकर कहा कि, जब पांच तत्व तमोगुणसे हुए तो उसके पहले क्षीरसागर क्योंकर हो सक्ता है और रूपवान् नारायणमें कौन तत्त्व था और मायाभी अविनाशी हुई। ब्रह्म घट २ व्यापक मिथ्या होगा और जगत्‌की कर्ता माया प्रसिद्ध हुई। ब्रह्म सदा निद्रामें रहता है यहभी कहना उचित नहीं। मैथुन आहार प्रकृति जीवको हैं ब्रह्मको नहीं हैं। नारायण शब्दका अर्थ जलचर प्रसिद्ध होता है और २४ अवतार ब्रह्मके पुरुषरूप हुए, स्त्रीरूप नहीं हुआ। लक्ष्मी द्रव्यको कहते हैं। जो नीच ऊंच सबको प्राप्त होती है। यह सुनकर महात्मा गुरु चुप हो रहे।

इति अखिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद छठवें तरंगमें
चैतन्यब्रह्मविचार नाम पांचवीं लहरी संपूर्ण।

छठी लहरी।

आदिज्योति महामाया देवी ब्रह्म है।

अथ श्रीदुर्गायै नमः। मैं दूसरे महात्माके पास गया

और सब हाल अपना कहा। तब महात्मा गुरु बोले कि आदि ज्योति महामाया देवी ब्रह्म है। शक्तिरूप होकर चराचरमें व्यापक है और बडे २ दैत्योंको पुरुष अवतार होकर मारा। जानकीने हनूमान्को उपदेश दिया था कि अयोध्यामें राम अवतार मेरा है। जब रामचन्द्रने सतम रावणके युद्धमें सीताको माता कहा तब वह कालीरूप होकर नाश किया। शुंभ निशुंभको ऐसा वरदान था कि अवतारसे न मारा जावे उसको अपने असली रूपसे मारा। जब २ देवतोंको संकट पडा तब २ देवीने उपकार किया। कृष्णको काली अवतार कहते हैं। अर्जुनको समुद्रमें जो दर्शन हुआ वह देवी है। त्रिपुरदैत्य कालीके बाणसे मारा गया। स्त्रीसे पुरुष होता है। पुरुषसे स्त्री होना असंभव है। एक स्तोत्र देवीका भजन योग्य है।

देवीस्तोत्र–अष्टपदी।

ऐ श्रीकालिका कृपा कीजे। मोहिं निज शरण राख सुख दीजे॥ प्रगटे संपदा विपत छीजे। व्याधि मिट जाय हो रहै जै जै॥ मेरी सब आपदाको हरि लीजे। दास अभिलाखपर कृपा कीजे॥१॥ तुझको कहते हैं कालिका देवी। तूही ब्रह्मा महेशकी सेवी॥ तू सकल जगत्में प्रगट देवी। आदिदेवी अनादि तू देवी॥ मेरे अपराधको क्षमा कीजे। अभिलाखपर कृपा कीजे॥ २॥ ऐ भवानी तू जगत् रानी है। तेरी लीला विकट कहानी है॥ तूही ब्रह्मा महेश वानी है। तू चतुर वेदमें वखानी है॥

चित्तको मेरे शुद्ध कर दीजे। दास अभिलाखपर कृपा कीजे॥ ३॥ तू सकल सृष्टि जगत जाती है। तू सकल कामना पुराती है॥ चौदह लोक तू बनाती है। आदि और अंत तू खिपाती है॥ कामना मेरी पूर कर दीजे। दास अभिलाखपर कृपा कीजे ॥ ४ ॥ दैत्य भंजन व देवकी माया। है तीनों लोकपर तेरी दाया॥ नरक और स्वर्ग तेरी माया। चौदह लोक हैं तेरी छाया॥ भर्म भवजालसे जुदा कीजे। दास अभिलाखपर कृपा कीजे ॥ ५ ॥ पंचकन्या तुझे कहै कोई। आदिमाया तुझे कहै कोई॥ नवदुर्गा तुझे कहै कोई। सर्व शक्ति तुझे कहै कोई॥ वासना मेरी नाश कर दीजे। दास अभिलाखपर कृपा कीजे ॥६॥ चार युगमें तुही रही परधान। तेरी लीलाका कुछ नहीं परमान॥ चौव्वीस अवतार है तेरी सन्तान। वंदना तेरी करते हैं भगवान॥ मोह मदको निपात कर दीजे। दास अभिलाखपर कृपा कीजे ॥ ७ ॥ ऐ जगत् मात सृष्टिकी अम्बा। तुझको कहते हैं लोग जगदंबा॥ दासकी आस पूरी कर अंबा। मैं तेरा पुत्र तू मेरी अंबा॥ काम और क्रोध शांत कर दीजे। दास अभिलाखपर कृपा कीजे ॥ ८ ॥

देवीस्तोत्र–चौपाई।

श्रीगजवदन गणेश विधाता। ज्ञान बुद्धि भक्तिकी दाता॥
गुणानुवाद माताका गाऊं। तब अपनी अभिलाष पुराऊं॥
देवी शक्ती मात भवानी। चारों नाम मुक्तिकी दानी॥
दुर्गा रूप आदि कहवावे। जिहकर यश पुराणमें गावे॥

मात शारदा सबको पाले। देव दैत्य सबके उर शाले॥
ज्ञानविचार सरस्वती देवै। मूरखको पंडित कर लेवै॥
रुक्मिणि दर्शन कर फल पावे। मात अंबिका कृष्ण मिलावै॥
कमलाका जो नाम उचारे। सुख पावे वैकुंठ सिधारे॥
चंडी दुष्ट दैत्यको मारे। भक्तनकी अभिलाख सुधारै॥
ध्यान महाकालीका करै। संचित पाप दुःख सब हरै॥
करै कालिका जो परासिद्धी। देवै ऋद्धि सिद्धि नौ निद्धी॥
कालीको पूजै दिनराता। चार पदारथ आवे हाता॥
आदि अनादि जगत बनावे। चौरासी लखको उपजावे॥
हिंगलाजको ध्यान लगावे। मुक्तिसहित परम पद पावे॥
मात कामाक्षी कृपा करै। ऋद्धि सिद्धि सब घरमें धरै॥
पाटन उत्तर देश विराजे। ड्योढी सदा बधाई बाजे॥
भैरों सहित भैरवी गाऊं। जन्म २ का पाप नशाऊं॥
ब्रह्मचारिणी करै अचारा। तीन लोकमें करै सहारा॥
शैलपुत्तरी शीलनिधाना। जाके वश शंकर भगवाना॥
उमका झुमका दोनों बहन। दुष्ट दैत्यको करती दहन॥
सिद्धी हर सिद्धीको भजे। सब शृंगार सहजमें सजे॥
चामुंडाकी अस्तुत करो। त्रिविध तापको तनसे हरो॥
ज्वालामुखी तेज दर्शावै। संतनकी अभिलाष पुरावै॥
विमला विमल कर सब ज्ञान। पंडित होय मूढ अज्ञान॥
विन्ध्येश्वरी रहै विन्ध्याचल। दर्शन करै सो होवै निर्मल॥
परमेश्वरी लगावै पारा। जो पूजे सोलह प्रकारा॥

वाला सवमें वाला राखे। सर्व पदारथका सुख चाखे ॥
महा सुंदरी सुंदर करै। नेम प्रेमसे पूजन करै ॥
अन्नपूर्णा पूरण रहे। ऋद्धि सिद्धि सव घरमें लहे ॥
जगदंबा जगपावन माता। मुक्ति भुक्ति वैकुंठकी दाता ॥
कुशमांडिका रहै कृपाल। छूट जाय सब मायाजाल ॥
गौरी सहित गणेश मनाऊं। स्वामी कार्तिक ध्यान लगाऊं॥
महालक्ष्मी संपत देवै। अपनी सेवा पूजा लेवै ॥
मात कराली परसन रहे। कालकालसे निर्मल रहे ॥
चंद्रघंटिका घंटा साजे। सेवकसदन दुंदुभी बाजे ॥
वगुलामुखी देय संतान। बुधवान लक्ष्मी निधान
मात विजाशन पूरे आशा। दुष्ट दैत्यकी होवै नाशा ॥
मात शीतला शीतल करै। दुष्ट दैत्यको भंजन करै ॥
महाज्योतिका रहै उजाला। ध्यान करै जो तीनों काला ॥
भीमा देवी द्वापरवाली। चौदह भुवनकी है रखवाली ॥

लावणी।

महा ज्योति अद्भुत सरूप विकराल रूप जय जय माता। संसार छोड सब मोह तोड हूं हाथ जोड तुझको ध्याता॥ ब्रह्मा विष्णु महेश आदि सब देव तुहीको ध्याते हैं। सती लक्ष्मी ब्रह्माणी अर्धंग नारि सब पाते हैं। राम कृष्ण परशुराम आदि तेरी आज्ञा सब आते हैं। और देव तेतीस कोटि शरणागत तेरी जाते हैं॥ चार आठ सोला चौसठ भुजसेती हैं कालकी तू खाता। महाज्यो० ॥ १ ॥ शुंभ निशुंभ दैत्य भंजन तू

रक्तबीजको नाश किया । महाबली त्रिपुरदानवको एक बाणसे फांस लिया ॥ आदि शक्ति संसारहेतु तू घट घट अंतर वास किया । आदि अनादि युगादि जगतमें चौरासी परकाश किया ॥ सहस्र भुजा और कोटि शस्त्रसे पापमोचनी सुखदाता । महा० ॥ २ ॥ विन्ध्यवासिनी दुष्टनाशिनी वज्रासनी तू ज्वाला । खड्ग कृपाण बाण गले सोहैं दुष्टनकी मुंडनमाला ॥ रंग बरंग रूप दिखलावे तरुण वृद्ध सुंदरबाला । आदि ज्योति जगदंब अंब ब्रह्मांड अंधकी उजियाला ॥ कल्पवृक्ष और कामधेनु नव निधि सिद्धिकी तू दाता । महा० ॥ ३ ॥ देव असुर संग्राम जीतके दैत्योंको संहार किया । सुर नर मुनि गंधर्व आदिको संकटमें उपकार किया ॥ हिंगलाज कामरू कामाक्षी जगतहेतु प्रचार किया । जय काली कलकत्तेवाली सूत्राको अधिकार दिया ॥ मान मथो औरंगजेबको टका दुकान अभय पाता । महा० ॥ ४ ॥ शारदरूप बैठ महियरमें आलाहको वर-दान दिया । श्रीचंद चामुण्डा पूज्यो उनको पद निर्वाण दिया ॥ भैरों भूत भवानी डाकिन सबको तू अस्थान दिया । दुर्गा काली यक्ष मतंगी सबको घर घर मान लिया ॥ देवमात और दैत्यमात और जगतमात त्रिभुवन माता । महा० ॥ ५ ॥ हिंदूमुसलमान ईसाई सब तेरेको ध्यावत हैं । धर्म मोक्ष और अर्थलाभ तेरी किरपा सब पावत हैं ॥ तेरी सेवा भक्तिमें अपनी अभिलाख पुरावत हैं । सहत लाख अभिलाखदास शरणागत तेरी आवत हैं ॥ जनम मरण वैकुंठ मुक्त सुरलोक आदिकी तू दाता । महा० ॥ ६ ॥ इति देवीकी लावणी समाप्त ॥

दोहा—रावणगृह मंदोदरी, लंकाकी पटरान ।
मेघनाद बलवान सुत, जीतो सकल जहान ॥ १ ॥
अनसूयाका योगबल, जानत सकल जहान ।
दत्तपुत्र जाके भये, चंद्र पूत बलवान ॥ २ ॥
नारि अहिल्या ऋषिकी, पति आज्ञा पाषाण ।
रामचरणकी धूलसे, पायो गति प्रधान ॥ ३ ॥
कुंती पांडव पत कियो, पांच पुत्र बलवान ।
देवनसे उत्पन्न कियो, वर्‍यो द्रौपदी रान ॥ ४ ॥
ताराबाल सुग्रीव सँग, पंपा पूर पहाड ।
राज करे अभिलाखसे, अंगद बली कुमार ॥ ५ ॥
सीता सती जानकी, जनकसुता परधान ।
ध्यान करे अभिलाखसे, पावे पद निर्वाण ॥ ६ ॥
राधा रुक्मिणि कृष्ण सँग, मधुवन करे वहार ।
नाम लेत पातक हरै, मिले पदारथ चार ॥ ७ ॥
शक्तीरूप अनादि है, वरण सके नहिं शेष ।
ब्रह्मा विष्णू पुत्र हैं, सेवा करे महेश ॥ ८ ॥
आदि ज्योति अद्भुत चमक, चिनगारी शिशुभान ।
उत्पाति पालन प्रलय सब, शक्ती रची जहान ॥ ९ ॥

जब जब महामायाने दुष्टोंको मारा रुधिर मांस उनका खान पान कर लिया और अबतक वही नैवेद्य देवीके पूजनमें चलता है। शुंभ दैत्य सूअरयोनि हुआ। निशुंभ बकरा हुआ। महिषासुर भैंसा हुआ। रक्तबीज मछली हुआ। रुधिर सुरा होकर

चौदह रत्नोंमें प्रगट हुआ। इस नैवेद्यसे एक कन्यारूपी शक्ति को जो रजस्वला और भोगसे निष्कलंक हो पंच मकारसे तृ करके विधिसंयुक्त उसका पूजन करे वह आद्य ज्योति मनोरथ सिद्ध करेगी। और जबसे पंचमकारी पूजन बंद हुआ। ब्राह्मण साधुकी शक्ति जाती रही। शाक्तमत अनादि है। ब्रह्मा, विष्णु, महेश देवीके पुत्र हैं। मैंने हाथ जोडकर कहा कि वेदमें ब्रह्म पुरुष लिखा है। और शक्तिरूप आधीन है। जिसके रूप नहीं उसके शक्ति नहीं। और देवी दुर्गा भजन क्यों करते हैं। हनुमानूजीने पातालमें पांवसे दबाया था। महिरावणके यहां और रक्तबीजके संग्राममें देवीका क्रोध शांत नहीं हुआ। मद्य मांसका नैवेद्य राक्षसी है। बाबा श्रीचंदने भक्तगिर गुसाईंको हिंगलाज देवीका दर्शन गुरुद्वारेमें झाडू देते कराया। तब वह गुसाईंसे उदासी हो गये। पूरबमें उनका भेष बहुत है इस कारण देवीको ब्रह्म कहना मूर्खपना है। करोडों देवी भगवानूकी आज्ञामें हैं। यह सुनकर महात्मा गुरु चुप हो रहे।

इति अभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद छठवें तरंगमें चैतन्यब्रह्मविचार नाम छठी लहरी संपूर्ण।

सातवीं लहरी।

शिवमहादेव पूर्णब्रह्म हैं।

अथ श्रीशिवाय नमः। मैं दूसरे महात्माके पास गया और सब हाल अपना कहा। तब महात्मा गुरु बोले कि, शिव महादेव पूर्ण ब्रह्म हैं। शक्ति शंकरकी अर्धांगी है। लिंगरूपी शरीर जिसमें सत्रह पदार्थ प्रसिद्ध हैं। वह शिव है। अहंकार-रूप चराचरमें व्यापक है। सगुण रूपसेभी कैलासपर्वतपर विराजमान हैं। छत्तीस करोड देवता अट्ठासी हजार ऋषि सब शंकरके हुक्ममें हैं। उसकी इच्छासे उत्पत्ति प्रलय होती हैं। ब्रह्मा विष्णु उसके पुत्र हैं और सब अवतार उसको पूजते हैं। उसके वरदानसे एक एक दैत्य ब्रह्म समान हो गये। कैलासपर्वत उत्तर हिमालय पर्वतके पास है। उस पर्वतकी शोभा कोई वर्णन नहीं कर सक्ता। केदार कल्पकी विधि प्रमाण महात्मा लोक जाते हैं। बारह वर्ष ललितापुरीमें यह मंत्र अवघड साधन करे। " ॐ फट् स्वाहा " इस साधनसे वज्र अंग होगा। अपने पांवपर चावल पकावेगा। तब केदारनाथ महादेव गुप्त राह जो हिमालय पर्वतसे गई है बता देवेंगे। उस राहसे महात्मा लोग जाते हैं और जावेंगे। मार्गमें देवलोक इन्द्रलोक सूर्य चन्द्रलोक नागसिद्धलोक गन्धर्वलोक मिलेंगे। उस लोकवाले जानेमें विघ्न करते हैं। अनेक प्रकारकी माया और सुख सन्मुख लाते हैं। जिसपर शंकरकी कृपा विशेष होती है वह उस सुखको देखता नहीं। सीधा कैलासको चला जाता है। उस पर्वतपर

पहुँचकर चतुर्भुजी रूप हो जाता है। और एक शक्ति देव-कन्या उसको मिलती है। शक्तिसहित अमर होकर सदाकाल चौदह भुवनमें इच्छा प्रमाण भोगविलास कर सक्ता है। इस कलियुगमें लाख महात्मा सदेह कैलासको जावेंगे। और सिवाय अवघड मंत्र षडक्षरीके और कोई दूसरा मंत्र जीवके कल्याणका नहीं है। कदाचित महादेव ब्रह्म न होते तो उनके लिंगकी पूजा कोई न करता। मूलस्थ लिंगपुराण शिवपुराण देखो। वेदमें शिव भगवान् शब्द प्रमाण है। शिव स्तोत्र देखो।

अथ शिवस्तोत्र–प्रभाती।

गाइये त्रिकाल काल महाकाल शिव दयाल गिरजा अर्धंग संग सोहत शिर गंगा। ओंकार आद्य ज्योति विश्वनाथ मुक्ति देत रामनाथ निर्गुण पद बदरी दुख भंगा॥ शंकर शिव त्रिपुरारी कामदेव दहनहार गावत हैं वेद चार नगन जटिल अंगा। नंदी पर हैं सवार अगड बंबकी पुकार स्वामी कार्तिक कुमार गणपति सुत संगा॥ १॥ डमरुकी घोर ताल तांडवकी रागमाल शिंगी मृदंग ताल बाजत मुरचंगा। केहरकर मृगछाल सोहै गिरि नागमाल जटाजूट पटलजाल कारी बहु रंगा॥ जटा भसम मुंड माल तीन नेत्र कर कपाल चंदा सोहै ललाट दैत्य भूत संगा। जिनके है शिव अधार तिनकी महिमा अपार गावत अभिलाख दास काशीतट गंगा॥ गाइये त्रिकाल काल महाकाल शिव दयाल गिरिजा अर्धंग संग सोहत शिर गंगा॥

शिवचालीसी—चौपाई ।

शिव शिव कहत होत आनंदा । शिव शिव भाखत परमानंदा ॥
शिव शिव कहत पदारथ पावै । शिव शिव कहत मुक्त हो जावै ॥
शिव शिव कहत होत कल्याणा । शिव शिव कहत संपदा नाना ॥
शिव शिव कहत ज्ञान सब पावे । शिव शिव कहत स्वर्ग पुर जावे ॥
शिव शिव कहत पाप सब जावे । शिव शिव तीन लोक दर्शावे ।
महादेव है सबके स्वामी । घट घटके हैं अंतर्यामी ॥
शंकर शिव त्रिपुरारी भोला । गौरा भांग खिलावे गोला ॥
गांजा निशिदिन चिलम चढावे । पलकें उघडे और रह जावे ॥
थूवर आंक धतूर संखिया । भूत पिशाच असंख्य पंखिया ॥
सबका भोग गणेश लगावै । स्वामी कार्तिक हाथ धुवावै ॥
गौरा पांव दबावे निशिदिन । भैरों झाड बिछावे आसन ॥
शक्ति शाप ब्रह्मको लाग्यो । विष्णू भस्म भयो शिव जाग्यो ॥
शक्तिको अर्धांग बनायो । ब्रह्मा विष्णु तुरत जिवायो ॥
हरणाकुश ऐसो वर पायो । विष्णूको नरसिंह बनायो ॥
रावण कुंभकरण वर पाता । रामरूप होय उसे निपाता ॥
ऐसे बहुत दैत्य वर पायो । विष्णु होय अवतार नसायो ॥
शंभु वास सर्वज्ञ बतावें । सद्गुणको कैलास दिखावें ॥
सीता भेख सती जो लीना । तेहि कारण उनको तज दीना ॥
मृगछाला बाघंबर गजचर्म । नाग भसम मसानपर आश्रम ॥
कर कपाल शिर खप्पर सोहैं । डमरू हाथ मदन छवि मोहै ॥
शृंगी भृंगी गुन बजावें । तांडव नाग गंधर्व गावें ॥

पहुँचकर चतुर्भुजी रूप हो जाता है। और एक शक्ति देव-कन्या उसको मिलती है। शक्तिसहित अमर होकर सदाकाल चौदह भुवनमें इच्छा प्रमाण भोगविलास कर सक्ता है। इस कलियुगमें लाख महात्मा सदेह कैलासको जावेंगे। और सिवाय अवघड मंत्र षडक्षरीके और कोई दूसरा मंत्र जीवके कल्याणका नहीं है। कदाचित् महादेव ब्रह्म न होते तो उनके लिंगकी पूजा कोई न करता। मूलस्थ लिंगपुराण शिवपुराण देखो। वेदमें शिव भगवान् शब्द प्रमाण है। शिव स्तोत्र देखो।

अथ शिवस्तोत्र–प्रभाती।

गाइये त्रिकाल काल महाकाल शिव दयाल गिरजा अर्धंग संग सोहत शिर गंगा। ओंकार आद्य ज्योति विश्वनाथ मुक्ति देत रामनाथ निर्गुण पद बदरी दुख भंगा॥ शंकर शिव त्रिपुरारी कामदेव दहनहार गावत हैं वेद चार नगन जटिल अंगा। नंदी पर हैं सवार अगड बंबकी पुकार स्वामी कार्तिक कुमार गणपति सुत संगा॥ १॥ डमरुकी घोर ताल तांडवकी रागमाल शिंगी मृदंग ताल बाजत मुरचंगा। केहरकर मृगछाल सोहै गिरि नागमाल जटाजूट पटलजाल कारी बहु रंगा॥ जटा भसम मुंड माल तीन नेत्र कर कपाल चंदा सोहै ललाट दैत्य भूत संगा। जिनके है शिव अधार तिनकी महिमा अपार गावत अभिलाख दास काशीतट गंगा॥ गाइये त्रिकाल काल महाकाल शिव दयाल गिरिजा अर्धंग संग सोहत शिर गंगा॥ २॥

शिवचालीसी—चौपाई।

शिव शिव कहत होत आनंदा। शिव शिव भाखत परमानंदा ॥
शिव शिव कहत पदारथ पावै। शिव शिव कहत मुक्त हो जावै ॥
शिव शिव कहत होत कल्याणा। शिव शिव कहत संपदा नाना ॥
शिव शिव कहत ज्ञान सब पावे। शिव शिव कहत स्वर्ग पुर जावे ॥
शिव शिव कहत पाप सब जावे। शिव शिव तीन लोक दर्शावे ॥
महादेव है सबके स्वामी। घट घटके हैं अंतर्यामी ॥
शंकर शिव त्रिपुरारी भोला। गौरा भांग खिलावे गोला ॥
गांजा निशिदिन चिलम चढावे। पलकें उघडे और रह जावे ॥
थूवर आंक धतूर संखिया। भूत पिशाच असंख्य पंखिया ॥
सबका भोग गणेश लगावै। स्वामी कार्तिक हाथ धुवावै ॥
गौरा पांव दबावे निशिदिन। भैरों झाड बिछावे आसन ॥
शक्ति शाप ब्रह्मको लाग्यो। विष्णू भस्म भयो शिव जाग्यो ॥
शक्तिको अर्धांग बनायो। ब्रह्मा विष्णु तुरत जिवायो ॥
हरणाकुश ऐसो वर पायो। विष्णूको नरसिंह बनायो ॥
रावण कुंभकरण वर पाता। रामरूप होय उसे निपाता ॥
ऐसे बहुत दैत्य वर पायो। विष्णु होय अवतार नसायो ॥
शंभु वास सर्वज्ञ बतावें। सगुणको कैलास दिखावें ॥
सीता भेख सती जो लीना। तेहि कारण उनको तज दीना ॥
मृगछाला बाघंबर गजचर्म। नाग भसम मसानपर आश्रम ॥
कर कपाल शिर खप्पर सोहैं। डमरू हाथ मदन छवि मोहै ॥
शृंगी पुंगी भूत बजावें। तांडव राग गंधर्व गावें ॥

नंदीकी छबि अधिक विराजे । जिसकी पीठ महाप्रभु राजे ॥
सींग पूंछ खर कानकि शोभा । मनो छबि देखि मदन मन लोभा॥
चौदह भुवनका भार उठावे । क्षणमें प्रदाक्षिण कर जावे ॥
माथे पूरण चंद्र विराजे । शीश जटामें गंगा राजे ॥
कर त्रिशूल वरदा असवारा । भूत प्रेत दैत्यके धारा ॥
गरुड श्वान चूहा सँग रहें । गणपति आदिक उसपर चढें ॥
साठ हजार बरस पर्वतपर । पार्वती तप कियो बराबर ॥
दक्ष प्रजापति गर्व बढाया । जग विध्वंस शीश कटवाया ॥
रामनाथ दक्षिणमें राजे । बद्री नारायण उत्तर गाजे ॥
काशी विश्वनाथको ध्यावें । ओंकार नर्मदा चितावें ॥
बेल पान और फूल सुपारी । घिरत मिष्टान्न कनक भर झारी॥
मर्घट राख लगावे अंगा । शिव अर्पण करे गांजा भंगा ॥
केसर और कस्तूरी लावे । दूध अबीर गुलाल चढावे ॥
फल धतूरका डोडा लावे । आक फूल बेल अधिक चढावे॥
घृत कपूरको दीप जलावे । अगर तगर पंचांग मिलावे ॥
वस्त्र भेंट शिव आगे धरे । मन कर्म वचनसे पूजा करे ॥
सायंकाल प्रात मध्याना । तीन काल पूजे भगवाना ॥
चार पदारथ सहजमें पावे । अंतकाल वैकुण्ठकूं जावे ॥
अष्ट प्रहर जो शिव शिव गावें । संपूरण अभिलाख पुरावें ॥

मैंने हाथ जोडकर कहा कि लाखों दैत्य महादेवके वरदानी विष्णुके हाथसे मारे गये । बहुत ठिकाने दैत्य और विष्णुके युद्धमें महादेव दैत्यके सहायक हुए । परंतु पीछे हार मानकर

स्तुति किया। और सती परम प्रियाको जानकीरूप होनेसे त्याग दिया। भस्मासुरके आशीर्वादमें विष्णुके उपकारसे प्राण बचा। महादेव सत्यकरके ब्रह्माके पुत्र हैं। निराकार हेतु अट्ठाशी हजार वर्षकी समाधि करते हैं। रामनामका इष्ट है और शिवकी आयुष्य सौ वर्ष देवका प्रमाण है। रामाश्वमेध यज्ञमें हनूमान् बंदरने महादेवको बहुत मारा। गाली दिया। शिवनिर्माल्य लाना उचित नहीं। काम उनका शत्रु है। भगवान्‌की मोहनीरूप र कामातुर होकर दौडे। तमोगुणरूप अहंकार स्वरूप हैं। जगत्‌का नाश करता है। ये कौन लक्षण ब्रह्मके हैं? यह सुनकर महात्मा गुरु चुप हो रहे।

इति अभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद छठवें तरंगमें चैतन्यब्रह्मविचार नाम सातवीं लहरी संपूर्ण।



आठवीं लहरी।

पंच देव ब्रह्म हैं।

अथ श्रीपंचदेवाय नमः। मैं दूसरे महात्माके पास गया और सब हाल अपना कहा। तब महात्मा गुरु बोले कि, पंचदेवताको ब्रह्म कहते हैं। वेही पांचों पंचतत्वके स्वामी हैं। पहिले विष्णु आकाशका स्वामी श्वेतवर्ण फीका रस सर्व त्याग किया। दूसरा शक्ति वायुका स्वामी हरा रंग खाटा रस सर्व भक्षी किया। तीसरा रुद्र अग्निरूप तथा स्वामी कृष्ण रंग

चर्परा रस प्रलय क्रिया । चौथा ब्रह्म जलका स्वामी रक्त वर्ण खारा रस पालन क्रिया । पांचवां गणेश पृथिवीका स्वामी पीत वर्ण मधुर रस उत्पत्ति क्रिया । सिवाय इन पांच देवोंके और कोई देव निराकार साकार नहीं हैं । इन पाचों देवोंका अवतारभी होता है । पीछे संसारमें पंचतत्वका विस्तार सबको प्रसिद्ध है । सर्व जगत्में पंचदेवकी उपासना है । जिसकी निश्चय जिसपर है वह उसको पूजता है । इसका विस्तार पंचीकरण यंत्र[1] और दोहा चौपाईमें देखो ।

चौपाई ।

पंच देव सब जगके करता । पंच देव हैं ब्रह्म अकरता ॥
पंच देव तिरगुणके करता । पंच देव सरगुणके करता ॥
पंच देव बिन कुछ नहिं होई । पंच देव जो करे सो होई ॥
पंच देव ब्रह्मांडके नायक । जगतपूज्य पूजनके लायक ॥
पंच देव चौरासी करे । पंच देव अविनाशी करे ॥

दोहा—पंच देव ब्रह्मांडमें, ब्रह्मरूप परधान ।
स्वर्ग आदि वैकुण्ठ सब, पंच देव अस्थान ॥
पंच देवके ब्रह्मको, करै जु अंतर्ध्यान ।
पुरे हुए अभिलाख सब, रहै बुद्धि अरु ज्ञान ॥

मैंने हाथ जोडकर कहा कि आपके ज्ञानसे पांच ब्रह्म हैं । यह सिद्धांत श्रवण योग्य नहीं है । अद्वैतमें द्वैत था । अब पंचायतका झगडा उत्पन्न हुआ । इस प्रमाण छत्तीस कोटि देवता

१ यहांका यंत्र ग्रंथके अन्तमें देखो ।

है। अपने अपने काममें राहु केतुकीभी पूजा होती है, वेद प्रमाण ब्रह्म एक है। पांच तत्व एक हैं। सबकी उत्पत्ति आकाशसे है और महाप्रलयमें देव दानव सर्व सृष्टिका नाश है। ब्रह्म अविनाशी है। विष्णुको ब्रह्माने बनाया। शक्ति निराकारकी इच्छा है। महादेवको ब्रह्माने बनाया। ब्रह्मा कमलके फूलसे हुआ। गणेशको पार्वतीने अपने अंगके मैलसे बनाया। ये कौन लक्षण ब्रह्मके हैं? यह सुनकर महात्मा गुरु चुप हो रहे।

इति अभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद छठवें तरंगमें
चैतन्यब्रह्मविचार नाम आठवीं लहरी संपूर्ण।



नवीं लहरी।

लोकालोकवासी ब्रह्म है।

अथ श्रीसत्यलोकाय नमः। मैं दूसरे महात्माके पास गया और सब हाल अपना कहा। तब महात्मा गुरु बोले कि, कर्त्ता ब्रह्म ब्रह्मलोकमें है। वह लोकालोकवासी चौदह लोकोंका धनी है। सात ऊपर सात नीचे। बीचमें पंद्रहवां मृत्युलोक है। ब्रह्मलोकतक जो जावे वह ब्रह्मको पावे। वहां कोई जा नहीं सकता। कदाचित् जन्मजन्मांतर भक्ति करे तो उस लोकको प्राप्त होवे। चौदह लोकोंके नाम ये हैं। सत्यलोक १, वैकुंठलोक २, शिवलोक ३, सूर्यलोक ४, देवलोक ५, पितृलोक ६, सिद्धलोक ७, मायालोक १, यमलोक २, गंधर्वलोक ३, यक्षलोक ४, किन्नरलोक ५, नागलोक ६, दैत्यलोक ७, यह मृत्युलोक पंद्रहवां बीचमें जेलखाना तथा बन्दीखाना है। चौदह

लोकके मायारूपी जीव जो कर्मपापसंबंध करते हैं उसका फल या दंड मृत्युलोकमें पाते हैं और लोकोंमें दंड नहीं हो सकता। पांच प्रकारके अकर्म हैं काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद उसका दंड होनेके वास्ते पांच मकान बनाये गये। अंडज, पिंडज, ऊष्मज, स्थावर, देव या बादल। ब्रह्मा विष्णु महेश देवता बन्दीखानेके अधिकारी हैं। चार वेद छः शास्त्र अठारह पुराण ये अट्ठाईस ग्रंथ इस बन्दीखानेके शास्त्र हैं। उनकाभी नाम संपूर्ण वर्णन करता हूं। पहिले वेदका नाम ऋग्वेद १, पूर्वके देशमें प्रकट हुआ, उसमें ज्ञान और उपासना कर्म प्रधान है। यजुर्वेद २, दक्षिणके देशमें प्रगट हुआ, उसमें ब्रह्म अकर्ता कर्म कर्ता अहंब्रह्म कार्यरूप प्रधान है। सामवेद ३, पश्चिम देशमें प्रगट हुआ, उसमें तत्वमसि शब्द ब्रह्मवाक्य निर्गुण प्रधान है। अथर्वणवेद ४, उत्तरके देशमें प्रकट हुआ, उसमें आत्मा परमात्मा ब्रह्म प्रधान है। ये चारों वेद चार लाख श्लोक प्रमाण हैं। अब छः शास्त्रका भेद कहता हूं। पहिले मीमांसा च्यवन ऋषिने बनाया उसमें कर्म प्रधान है। दूसरा पातंजल पतंजल ऋषिने बनाया उसमें ब्रह्म समाधि प्रधान है। तीसरा न्यायशास्त्र गौतम ऋषिने बनाया उसमें संयोग प्रधान है। चौथा सांख्यशास्त्र कपिलदेवने बनाया उसमें आत्मा प्रधान है। पांचवां वैदिक वैशेषिक ऋषिने बनाया उसमें कालघडी प्रधान है। छठवां वेदांतशास्त्र व्यासजीने बनाया उसमें अद्वैत ब्रह्म प्रधान है। इसके

सिवाय ज्योतिःशास्त्र, धर्मशास्त्र, जैनशास्त्र, नास्तिकशास्त्र कई शास्त्र और हैं। अब अठारह पुराणका भेद कहता हूं विचार करो। १ मत्स्यपुराण १४ हजार, २ कच्छपुराण १७ हजार, ३ वामनपुराण १० हजार, ४ ब्रह्मांडपुराण १२ हजार, ५ गरुडपुराण १९ हजार, ६ शिवपुराण २४ हजार, ७ भागवतपुराण १८ हजार, ८ वराहपुराण २४ हजार, ९ अग्निपुराण १५ हजार ४ सौ, १० लिंगपुराण ११ हजार, ११ पद्मपुराण ५५ हजार, १२ ब्रह्मभूतपुराण १८ हजार, १३ भविष्योत्तरपुराण १४ हजार ५ सौ, १४ विष्णुपुराण २३ हजार, १५ स्कंदपुराण ८१ हजार १ सौ, १६ नारदपुराण २५ हजार, १७ मार्कंडेयपुराण ९ हजार, १८ ब्रह्मपुराण दश हजार। ये अठारह पुराण सब चार लाख श्लोक बराबर हैं। वेदके तथा उसके ऊपर जो चलता है वह अपना दंड भोगकरके अपने लोकको चला जाता है और जो उसके प्रतिकूल चलता है वह चौरासी लक्ष योनि भोगता है और जो सदा भजन स्मरण करता है, वह ऊंचे लोकको जाता है और ब्रह्मकी प्राप्ति होती है, उसका पाप नष्ट होकर मुक्त हो जाता है। और सृष्टिकी उत्पत्ति अनेक प्रकारसे आचार्योंने लिखी है। विराट्पुराणमें चौरासी लाखका विस्तार ऐसा है सत्रजखान इक्कीस लाख, उसमें तारा नव लाख, मेघ चार लाख, पहाड आठ लाख। अयुज्यखान इक्कीस लाख, उसमें नाग नव लाख, जलचर चार लाख, पक्षी आठ लाख। जरायुजखान इक्कीस लाख, उसमें दोपदा नव लाख, चौपदा चार

लाख, कीडी आठ लाख,। उदरजवीर्यखान इक्कीस लाख, उसमें निर्गंध नव लाख, सुगंध चार लाख, कंदमूल आठ लाख ये सब चौरासी लाख हुए। कोई सूक्ष्म ऐसा कहता है कि रजोगुणसे ३२ लाख, सत्वगुणसे १६ लाख, तमोगुणसे ३६ लाख, ये सब चौरासी लाख हुए और तुलसीदास गुसांईने दोहा कहा है।

दोहा—नव लख जलको जंतु हैं, दश लख पंछी जान।
एकादश कट भृंग हैं, स्थावर बीस बखान॥
तीस लाख पशुयोनि हैं, चतुर्लक्ष नर होय।
इनमें जो रामे भजे, तुलसी धन है सोय॥

यह चौरासीका विस्तार है, मृत्युलोकमें ब्रह्मकी प्राप्ति नहीं हो सकती। भजनके प्रतापसे जब ब्रह्मलोककी प्राप्ति होगी तब ब्रह्मका दर्शन हो सक्ता है। चौपाई कवित्त और यंत्र[1] चौदह लोकके देखो।

चौपाई।

ब्रह्मलोकमें ब्रह्म विराजे। लोकालोक दुंदुभी बाजे॥
चौदा भुवन राज है उसका। नीचे सात सात ऊपरका॥
मृत्युलोक पंद्रहवां गावे। चौदा लोकके बन्दी आवे॥
पांच विकार जीवमें सोहै। काम क्रोध लोभ मद मोहै॥
पांच योनि उपजे संसारा। चौदा भुवनके जीव अपारा॥
कामविकार मेघदल सोहै। इच्छारूपी जलमें मोहै॥
क्रोध योनि अण्डजमें आवे। अधर पवनमें पंख डुलावे॥

१ यहांका यंत्र ग्रंथके अन्तमें देखो।

ऊष्मज योनि लोभमे आवे । उतपति [illegible] छिन में आवे ॥
अस्थावर है मोह विकारा । चार योनिका नाम अधारा ॥
पिंडज मदविकारसे पावे । शूकर कूकर देह उपजावे ॥
दंडप्रमाण भोग चौरासी । अपने लोक जाय सुखभोगी ॥
अधम बीच कुछ सुकर्म होवे । ताको देह अधिक सुख होवे ॥
अवध बीच कुछ अकर्म होवे । ऊंचे लोक जाय सुख सोवे ॥
कर्म करत चौदा घर जावे । ताको ब्रह्म रूपमें आवे ॥
ब्रह्मरूप सत गुरु उपदेशा । तब अभिलाख मिटे अंदेशा ॥

कवित्त-वेद ४ ।

पूरव ऋगवेद कहं ज्ञान और उपासना कर्मको प्रधान करे ब्रह्म एक गायो है । दक्षिण यजुर्वेद शुद्ध अहं ब्रह्म कार्य रूप ब्रह्मको अकर्ता कर्म कर्ता ठहरायो है ॥ पश्चिममें सामवेद अहं ब्रह्म तत्त्वमसि निर्गुण प्रधान ब्रह्म शब्दमें समायो है । उत्तरमें अथर्वण अहं आत्मा परमात्मा निर्गुण अभिलाख चार त्याग सब बतायो है ॥

कवित्त-शास्त्र ६ ।

मीमांसामें च्यवन ऋषी कर्मको प्रधान करें पातंजल प्रधान ब्रह्म खोजत सब आचारमें । गौतम संयोग न्यायशास्त्रमें प्रमाण करे कपिल देव सांख्यशास्त्र आतमके विचारमें ॥ वैदिक विशेषक काल घडीको प्रसिद्ध करे अद्वैत वेदान्त कहं व्यासदेव सारमें । ऐसे षटशास्त्र विचारत अभिलाख लाख पावत नहीं सार कछु आचारमें विचारमें ॥

कवित्त–पुराण १८।

मच्छ कच्छ वामन ब्रह्मांड गरुड शिव पुराण भागवत वाराह लिंग पद्म अग्नि गायो है। ब्रह्म भूत भविष्य उत्तर विष्णुपुराण सबसे स्कंद अधिक व्यासने बनायो है ॥ नारद मारकण्डयो ब्रह्मको पुराण भयो अष्टादश चार लाख सत्रा सो गायो है। ऐसे प्रगट पुराण गावत सब ज्ञानवान् भाषत अभिलाख पार कोई नहिं पायो है ॥

मैंने हाथ जोडकर कहा कि, कोई ब्रह्मज्ञानी चौदह लोकों का विस्तार शरीरमें बताता है। ब्रह्मांड आंख, कान, नाक, मुख, कंठ, हृदय, हाथ, पेट, पीठ, पाँव, लिंग, गुदा, नाभि दूसरा लोक कोई नहीं है। चौबीस अवतार ब्रह्मके मृत्युलोकमें हुए वह बंदीखानेमें कैसे आया और ब्रह्म लोकाकोकवासी साकार है या निराकार है। अट्ठाईस ग्रंथ जो प्रमाणके आपने उपदेश किये उनमें ब्रह्म घट घट व्यापक है। चौदह लोकोंसे इस बंदीखानेमें आना कुछ प्रमाण नहीं है, मैं पहिले किस लोकमें था यहां कबतक रहूंगा और पीछे कहां जाऊंगा और किस अपराधसे यहां आना हुआ इस सिद्धांतका निश्चय जबतक न हो तबतक आपका सिद्धांत बोधयोग्य नहीं है। भक्तमाल देखो। हजारों साधुओंको भगवान् प्राप्त हुआ। पंचतत्वके सिवाय आत्माका अनुभव नहीं हो सकता। पृथिवी शरीर है। जल जीव है। अग्नि ज्ञान है। वायु श्वास है। आकाश शब्द है। आपका सिद्धांत अट्ठाईस ग्रंथके प्रतिकूल है। चौदह लोकोंकी

संख्या प्रसिद्ध नहीं है। लाखों आकाश पाताल कोई कहता है। कोई सर्व सृष्टिको ब्रह्म जानता है। उसको विराट् कहते हैं। यह सुनकर महात्मा गुरु चुप हो रहे।

इति अभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद छठवें तरंगमें चैतन्य ब्रह्मविचार नाम नवीं लहरी एवं छठवां तरंग समाप्त ॥ ६ ॥

सातवां तरंग प्रारंभ।

पहिली लहरी।

ज्ञान ब्रह्म है।

अथ श्रीकेशवाय नमः। मैं दूसरे महात्माके पास गया और सब हाल अपना कहा। तब महात्मा गुरु बोले कि ब्रह्म निराकार है। उसका ज्ञानसे अनुभव होता है। अथवा ज्ञान ब्रह्म है। ज्ञानकी आंखसे देखा जाता है। जिसको ज्ञान नहीं है उसको करोडों ब्रह्म नाशवान् हैं। चौदह भुवन ब्रह्मके जो प्रसिद्ध हैं वे ये हैं। विवेक १, विचार २, संतोष ३, सत्य ४, वैराग्य ५, प्रेम ६, भक्ति ७, योग ८, धर्म ९, दया १०, निश्चय ११, प्राणायाम १२, उदास १३, आनंद १४ ज्ञान दृष्टिसे अनुभव होता है। और यह जगत् तथा सुख दुःख अज्ञानसे भासता है। ज्ञानीको अद्वैत दर्शाता है। ज्ञान प्राप्त होना जीवन्मुक्त होना एक अर्थ है। जिस पदार्थका ज्ञान नहीं है उसका सुख दुःख व्यापक नहीं होता। जो भाषा अप-

नेको नहीं आती उस भाषामें कोई गाली देवे अथवा प्रशंसा करे उसका हर्ष शोक नहीं होगा । सबका कर्त्ता ज्ञान है । ब्रह्म और माया और जगत् तीनोंका भेद ज्ञान है । एक झगडा कर्म ज्ञानका इस सिद्धांतमें देखने योग्य है । निद्रा आहारसे तृप्त हुआ अज्ञान बालक ब्रह्मसमान है ।

झगडा ज्ञानकर्म–चौपाई ।

वाह गुरूको माथ नमाऊं । जे सुमरे निर्मल मत पाऊं ॥
सो मत पाय कहानी गाऊं । ज्ञान करम संवाद सुनाऊं ॥
देहनगर एक देश कहावे । तामें राज सत्यको छावे ॥
ताकी नारी शांता रानी । भगिनी तास कीरती जानी ॥
पिता नाम निष्काम बखानो । माता मुक्ति पांचवीं जानो ॥
सत्य शांति भोग जब करे । ज्ञान कर्म दो सुत अवतरे ॥
पहिले कर्म भयो संसारा । पीछे ज्ञान लीन अवतारा ॥
जबतक सत्य राजपर रह्यो । कर्म ज्ञान दोउ बालक रह्यो ॥
कुछ दिन गये सत्य जब मरई । कर्म ज्ञानमें झगडा पडई ॥
कर्म कहे मैं कुछ नहिं दीहों । ज्ञान कहे मैं आधा लीहों ॥
कर्म कहे मैं बडा सयाना । ज्ञान कहे मैं चतुर सुजाना ॥
कर्म कहे मैं तीरथ करूं । ज्ञान कहे मैं दर्शन करूं ॥
कर्म कहे मैं गंध बनाऊं । ज्ञान कहे मैं सूंघ बताऊं ॥
कर्म कहे मैं कहूं पुराण । ज्ञान कहै मैं सुनूं बखान ॥
कर्म कहे मैं सब कुछ करूं । ज्ञान कहे मैं समुझत रहूं ॥
कर्म कहे मैं सब उपजाऊं । ज्ञान कहे मैं षट्रस खाऊं ॥

कर्म कहे मैं ज्ञान बताऊं। ज्ञान कहे मैं कर्म सिखाऊं॥
विग्रह बढी शांति सब गई। आपुसमें पंचायत भई॥
पांचों प्राण पंच कहवावें। मन अरु बुद्धि गवाही जावें॥
काम क्रोध आदिक पँच भैया। ये सब बैठे खेल दिखैया॥
खोजत खोजत रह्यो सुलतानू। कर्म ज्ञानका अंत न जानू॥
कर्म रामकी उपमा लावे। ज्ञान कृष्णका नाम बतावे॥
विषय पांचसे पूंछा गया। उन दोनोंको एकी किया॥
मंत्री एक विचार सत्यका। बूढा वडा रहा मुद्दतका॥
वो दोनोंको पास बुलावे। बहुत प्रेमसे न्याय चुकावे॥
सुनो कर्म हम तुमें बतावे। बाप तुम्हारे सत्य कहावे॥
उनके घरमें जो धन आया। सो सब हमने हाथ गमाया॥
तिनके पुत्र भयो तुम दोई। इनमें छोट वडो नहिं कोई॥
चार पदारथ तुमरे घरमें। दो छोडो दो राखो वशमें॥
मैं चारोंको प्रगट बताऊं। विलग विलग सबके गुण गाऊं॥
अर्थ काम दो तुमको ध्यावें। धर्म मोक्ष दो ज्ञानको भावें॥
र्म कहे मैं चारों लीहों। ज्ञान कहे मैं कुछ नहिं दीहों॥
ब विचार देख्यो मनमाहीं। कर्म ज्ञान दोउ समझत नाहीं॥
फेर दो भाग चार करि लावे। पुरुषारथ निष्कर्म दिखावे॥
र्म कहे पुरुषारथ भावे। ज्ञान कहे निष्कर्म सुहावे॥
विध भाग राजको कियो। कर्म ज्ञान दोउ राजी भयो॥
छ दिन गये कर्म मर गयो। एक ज्ञान बाकी रह गयो॥
ज अखंड सत्यको कियो। अमर अजर होय जगमें रह्यो॥

ज्ञानी तास विचार बखाने। जो सपनो अभिलाख न जाने॥
कार्तिक मास पक्ष उजियारा। अडतिस संवत चंद्र पसारा॥

मैंने हाथ जोडकर कहा कि इस चौदह स्थानके सिवाय लाखों स्थान हैं। उसमें कौन रहता है। प्रेम ज्ञान पशुको है। आनंद भय सब जीवोंको होता है। और जब वह निराकार है तब ज्ञानसेभी देखा नहीं जावेगा। पंच ज्ञान इंद्रियनको रूपका अनुभव है, अरूपका नहीं। ज्ञानका अर्थ निर्मल बुद्धि, वह अंतर इंद्रिय है। शबरी, गणिका, अजामील, रोहिदास, कुबरी, धना, पीपा, सैन आदिक बडे विद्वान् नहीं थे। पीछे ब्रह्म मिलनेसे सर्व गुणके मूल हो गये। ध्रुवको छोटी उमरमें जब ज्ञान नहीं था, तब ब्रह्म मिला। ज्ञान अज्ञान वृत्ति है, वह कुछ पदार्थ नहीं है। ज्ञान जगत्का कर्ता नहीं हो सकता और निराकारका अनुभव किसी प्रकारसे नहीं होगा। कदाचित् ब्रह्म कुछ पदार्थ होवे, तब ज्ञानसे देखा जावे। यह सुनकर महात्मा गुरु चुप हो रहे।

इति अभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद सातवें तरंगमें निराकारब्रह्मविचार नाम पहिली लहरी संपूर्ण।

दूसरी लहरी।

निश्चय ब्रह्म है।

अथ श्रीपरमेश्वराय नमः। मैं दूसरे महात्माके पास गया और सब हाल अपना कहा तब महात्मा गुरु बोले कि ब्रह्म

निराकार है। परंतु निश्चयसे अनुभवमें आता है । अथवा निश्चय ब्रह्म है। जिसकी जिसपर निश्चय है, उसका वह ब्रह्म है। मुसलमान खुदाकी, ईशाई ईशाकी, हिंदु राम कृष्णकी, जैनी आर्रहन्त निश्चय करते हैं। सबका मनोरथ सिद्ध होता है। कदाचित् मनोरथकी सिद्धि न होती तो निश्चय जाती रहती। निश्चय होनेसे रज्जुमें सर्प, मसानमें भूतका अनुभव होता है। निश्चयसे धनाजाटको पत्थर सरूपमान हो गया। जब भ्रमका नाश हो जाता है, तब ब्रह्मपद निश्चय होता है। मृत्तिकाकी मूर्ति निश्चय करनेसे ब्रह्म समान प्रधान है । कोई पूजा, ध्यान, भजन विना निश्चय निरर्थक है । मेरे ज्ञानमें निश्चय आप ब्रह्म है। जो कोई किसी देवपर निश्चय करेगा ...फल पावेगा। चौपाई दोहा देखो ।

चौपाई ।

पहिले प्रीति गुरूसे कीजे। प्रेम डगरमें पग तब दीजे ॥
जहँ देखो तहँ रूप है न्यारा। कारण कारज कर्ता सारा ॥
शून्य स्वरूप आकाश बतावे। तेजरूप पावक दरशावे ॥
सूक्ष्म रूप वायूमें जानो। आपरूप जलमें पहिचानो ॥
रूप विराट पृथिवी देखो। चारों तत्त्व हरी हर पेखो ॥
आदि अंत अरु मध्य दिखावे। उत्तम मध्यम नष्ट कहावे ॥
अंडज पिंडज ऊष्मज माहीं। स्थावर जड चेतनके माहीं ॥
तम प्रकाश दोनोंमें देखो। स्वर्ग पताल भूमिमें पेखो ॥
चारों दिशा वोहि दरशावे। चारों कोन वोहि कहवावे ॥

तीनों लोक रूप है उसका। धरा अकाश होत है सबका ॥
कफ पित वात रोग सब वो है। हर्ष उदास शोक सब वो है ॥
ज्ञान वैराग्य योग सब वो है। राजा रंक भोग सब वो है ॥
आगे पीछे नायें वो है। दाहिने बायें तिरछे वो है ॥
जाग्रत स्वप्न सुषोपत वो है। चार अवस्था तुरिया वो है ॥
सूक्ष्म रूप विराट वोही है। कारण महाकारणभी वो है ॥
देव दैत्य मानुष सब उसमें। विष अमृत पारस सब उसमें ॥
तंत्र मंत्र यंत्रनके माहीं। वेद पुराण शास्तर माहीं ॥
सूरज चंद्र नव ग्रह माहीं। बारा राशि नखत्तर माहीं ॥
योग करण तिथि लग्न वही है। भरणी भद्रा ग्रहण वही है ॥
मूरत और प्रतिमा वो है। चेतन जीव आतमा वो है ॥
इंद्रिय प्राण प्रकृती वो है। गुण स्वभाव स्मृतिही वो है ॥
ब्राह्मण वैश्य क्षत्री शूदर। चार एक उसके है सुंदर ॥
शक्ती शिव अरु वैष्णव वो है। सर्व भेषमें भक्ती वो है ॥
प्रकट गुप्त अवतार वही है। जंगल नदी गांव वोही है ॥
स्त्री पुरुष नपुंसक वो है। अक्षर एक मात्राभी वो है ॥
तीर्थ गया प्रयाग वोही है। सरिता कूप तडाग वोही है
पुरी धाम पुर धाम वोही है। कारण कारज काम वोही है ॥
शक्ति भूत प्रेत निरंतर। जिन मोकल उसके अंदर ॥
राग रागिनी सुर सब वो है। तबला ढोल पखावज वो है ॥
नाच नकल नटविद्या वो है। नजर बंद हठविद्या वो है ॥
भोग विलास अमीरी उसकी। भूख प्यास फकीरी उसकी ॥

आदर भाव निरादर वो है। कादर सूर बहादुर वो है ॥
औषधी कल्प कीमिया वो है। गुटका कज्जल अंजन वो है ॥
लोभ काम मद मोह वोही है। तृष्णा मोह वासना वो है ॥
सत संतोष शांतिही वो है। तेज प्रकाश भी कांती वो है ॥
तेतीस कोटी देव में देख्यो। लख चौरासी जीव में पेख्यो ॥
सात अकाश पाताल वोही है। उत्पति जीवन काल वही है ॥
अकर्म कर्म धर्ममें वो है। निश्चय प्रेम भरममें वो है ॥
ओहं कोहं सोहं माहीं। मैं तैं मोर तोर सब माहीं ॥
हां नाहीं दोनोंमें वो है। जहँ देखो तहँ प्रकट वो है ॥

दोहा—अलख लखै अस आंखसे, गुरु पूरे अभिलाख।
लाख प्रकार सकार हैं, वेद रु शास्तर साख ॥
वेदहि शास्तर ज्ञान है, कही बडानी रीत।
उस प्रमाणसे जो चले, सोई ज्ञान अतीत ॥
आदि अनादि युगादिसे, देखी सुनी जु बात।
कहै दास अभिलाख हट, सबमें अलख लखात ॥
कोई मत ऐसा कहै, ब्रह्म नहीं कुछ सार।
हां नाहींके बीचमें, साहिब अगम अपार ॥
है बडाई ब्रह्मकी, हांमें हां हो जाय।
नाहींमें नाहीं रहे, ज्योंका त्यों दरशाय ॥
अलख शब्दको अर्थ है, जाय लखे नहिं कोय।
तथा दूसरा अर्थ है, अधिक लाखसे होय ॥
अर्थ तीसरा अलखका, लखनेके नहिं योग्य।

चौथा अर्थ अकार जो, लखे अलखके योग्य ॥
अर्थ पांचवां अलखको, जो अभिलाख सुहात ।
जैसे सूरज तपतको, चिह्न नहीं दरशात ॥
जब ढाई पचीसमें, अट्ठादशको साल ।
अधिक सतासी ईसवी, जग आयो कलिकाल ॥

मैंने हाथ जोडकर कहा कि, निश्चय और भ्रम जगत्में सबको है । जैसे ज्ञान अज्ञान यह बुद्धिका भेद है । मैं आपको विष देता हूं, आप उसको अमृत निश्चय करिके खा जावे, मेरे-को दोष नहीं लगना चाहिये । और आपकोभी विषका दुःख नहीं होकर अमृतका फल प्राप्त होना चाहिये । निश्चयसे रात्रि दिवस नहीं होगी । जो पदार्थ आदिसे जैसा है उसी प्रमाण रहेगा । रज्जुके सर्पमें विष नहीं है । झूठा निश्चय फलदायक नहीं है । ब्रह्म निराकारपर निश्चय होना समझमें नहीं आता । मेरे ज्ञानमें निराकारका अर्थ मिथ्या है । जिसको ज्ञान होगा वह इस सिद्धांतको जानेगा । निश्चय वृत्ति पदार्थ विना नहीं होता और निश्चयसे हाथी कीडी नहीं होगी । निश्चयको ब्रह्म कहना अथवा केवल निश्चयसे ब्रह्मका अनुभव होना मिथ्या है । यह सुनकर महात्मा गुरु चुप हो रहे ।

इति अभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद सातवें तरंगमें निरा-कारब्रह्मविचार नाम दूसरी लहरी सम्पूर्ण ।



तीसरी लहरी।

प्रेम ब्रह्म है।

अथ श्रीगोविंदाय नमः। मैं दूसरे महात्माके पास गया और सब हाल अपना कहा। तब महात्मा गुरु बोले कि, ब्रह्म निराकार है परंतु प्रेमसे अनुभव होता है। अथवा प्रेम आप ब्रह्म है। आजतक जहां वह प्रगट हुआ प्रेमसे हुआ। जैसे लकडी और पत्थरके अग्नि विना उपाय या कारण प्रकट नहीं हो सक्ती। उसी प्रमाण ब्रह्म विना प्रेम प्रगट नहीं होगा। जिसको प्रेम नहीं है उसको ब्रह्मप्राप्तिका आसरा करना आकाशका फल चाहना है। गोपियोंके प्रेममें सोलह हजार कृष्ण हो गये। शबरीके प्रेममें झूठे बोर खाया। कुबरीके प्रेमसे अपना पति बनाया। करमाबाईके घर खिचडी खाया। सुदामाके कारण रुक्मिणीपर क्रोध किया। विदुरके घर शाक भात खाया। जिसको मिलेगा प्रेमसे मिलेगा। प्रेम भक्तिको कहते हैं। भक्ति नव प्रकारकी है। श्रवण, कीर्तन, स्मरण, उदार, आचरण, वंदन, दास्य, हर्ष, उदास। यश सुनना १, यश गाना २, सेवा करना ३, आज्ञा पालना ४, याद रखना ५, बडा जानना ६, सबमें जानना ७, एक जानना ८, आपमें जानना ९, ब्रह्मके मिलनेका प्रेम रास्ता है। जैसा तुमने बारह बरस भजन किया था कदाचित् प्रेम करते तो मनोरथ सिद्ध हो जाता। अब भी प्रेम करके देखो और इस प्रेमचालीसेको पढो, जो इसके साथ है।

दोहा—जनक प्रेम अद्भुत अगम, सीताप्रेम अगाध।
प्रेम कियो प्रह्लादने, मार्‍यो दैत्य असाध॥
प्रेम धनाको जब भयो, पत्थर रूप बनाय।
मित्रभावसे कछुक दिन, ते घर गाय चराय॥
प्रेम भयो ब्रजनारको, सोलह सहस्र सरूप।
रासमंडलमें नाचकर, पीछे हो गयो गुप॥
प्रेम रुक्मिणीको भयो, भाग्यो रथ बैठाय।
रुक्मैयाको बांधकर, डाढी मूंछ मुडाय॥
प्रेम विदुरको देखिके, खायो तंदुल साग।
दुर्योधन घर ना गयो, रच्यो जहां बहु माग॥
प्रेम बिभीषणको भयो, पायो लंकाराज।
वालि मार सुग्रीवको, अंगदको युवराज॥
प्रेम सुदामाको भयो, पायो धन संतान।
दास मलूकके प्रेमसे, शिरपर ढोये धान॥
प्रेम भयो गजराजको, फँस्यो ग्राहके फंद।
पांव पयादे धाय कर, काट्यो ताके बंद॥
पीपाजीके प्रेमसे, रच्यो द्वारिका छाप।
छीपा छान छबाईके, बांद उठावे आप॥
सैन भक्तके प्रेमको, अंत लख्यो नहिं जाय।
राजाकी सेवा करै, ताको रूप बनाय॥
प्रेम जटायूको भयो, पायो पद निर्वाण।
केवट जात अजातको, भेट्यो श्रीभगवान॥

प्रेम अजामिलको भयो, अंत मिल्यो भगवान ।
गणिका कीर पढायकर, पायो पद निर्वान ॥
प्रेम यशोदाको भयो, गोद खिलायो राम ।
राधा प्रेम अगाध है, मोहनको विश्राम ॥
प्रेम अहिल्याको भयो, शिला गई सुरलोक ।
हनूमानके प्रेमकूं, जानत तीनों लोक ॥
तुकारामजी प्रेमसे, गये सदेह अकाश ।
रामदासके प्रेमसे, दासबोध परकाश ॥
नरसी प्रेम अगाध है, हुंडी दियो सिकार ।
माधवदासके प्रेमसे, मल धोवे करतार ॥
पलटुप्रेम प्रकाश है, शुद्ध भयो परवार ।
सात महल सिद्धो रही, विदित जगत् ससार ॥
नीच जात रोहिदासको, प्रेम प्रगट संसार ।
काशी मध्य समाजमें, ब्राह्मण रूप हजार ॥
सजन कसायी प्रेमसे, पूजे शालिग्राम ।
संतनके ढिग ना रह्यो, पलट गये उस ग्राम ॥
सूरदासके प्रेमसे, लकडी पकड्यो राम ।
सवा लाखमें अधिक पद, सूर कियो है श्याम ॥
प्रेम कबीर बहुत कियो, जलमें गयो समाय ।
गोरखके संवादमें, दियो सिद्ध दर्शाय ॥
दादु प्रेम अपार है, जेहि घर सुंदर दास ।
सर्व सिद्धिके रूप है, दूजे निश्चलदास ॥

कर्मांबाई प्रेमसे, करे खीचडी भोर ।
मथुरा गोकुल छोडकर, आवत नंदकिशोर ॥
दशरथ कौशल्या कियो, प्रेम रामसम पूत ।
रावण कुंभकर्ण हनु, मेघनाद अवधूत ॥
दंतवक्त्र शिशुपाल असुर, जरासंध अरु कंस ।
गुप्त प्रेम सबकूं रह्यो, ताते कियो विध्वंस ॥
पांडव प्रेम अपार है, कौरव गर्व अपार ।
अष्टादश दिन बीचमें, हन्यो भूमिका भार ॥
प्रेम भर्तरी अगम है, गोपीचंद अखंड ।
अंबरीषके प्रेममें, दुर्वासाको दंड ॥
प्रेम द्रौपदीने कियो, मध्य सभाके बीच ।
सारी बढ़ी अगाध जब, हार दुशासन खींच ॥
प्रेम कूबरीको भयो, पायो कृष्ण मुरार ।
प्रेम शबरीको भयो, जूंठे बोर अहार ॥
गिरिधर भड्डर नरहरि, पद्माकर कवि गंग ।
सबको प्रेम प्रकाश है, विदित जगत रसरंग ॥
शंकर स्वामी अंतमें, प्रेम कियो भरपूर ।
जैनीमत खंडन कियो, वेद शास्त्रसे दूर ॥
रामानंदके प्रेममें, वैष्णवमत परकाश ।
वामन द्वारा चार घर, जगत विदित आकाश ॥
मीराबाई प्रेममें, विष पायो भर जाम ।
हरिकृपा अमृत भयो, गिरिधरजीसे काम ॥

त्रियलोचनके प्रेमसे, सेवक होइ भगवान।
ताकी सेवा नित करै, ऐसो प्रेम प्रधान॥
अग्रदासके प्रेमसे, नाभा भये सपूत।
भक्तमाल रचना कियो, कही कथा अद्भूत॥
प्रेम देवकीको भयो, पुत्र भये भगवान।
मथुरासे गोकुल गये, वासुदेव परधान॥
जाम्बवंत नल नील कपि, तारा प्रेम अपार।
सबको निर्मल गति दियो, राम भक्त अधिकार॥
जगजीवनके प्रेममें, दूलन दास प्रसिद्ध।
तुलसिदासके प्रेमको, वरण सके नहिं सिद्ध॥
गुरु नानकके प्रेमको, मूरख करे बखान।
बाला मरदाना सहत, गये जहां भगवान॥
श्रीचंदके प्रेमसे, विदित्त भगत भगवान।
माधवदासके प्रेमसे, ये अभिलाख प्रधान॥

मैंने हाथ जोडकर कहा कि जब ब्रह्म निराकार है तो नवधा भक्ति किस रूपकी करे। ये नव व्यवहार आकार ब्रह्ममें हो सकते हैं सबमें जो है उसका प्रेम असंभव और जब एक है तो प्रेम अनुचित और जब अपनेमें है, तब प्रेम निरर्थक है। आप अपना प्रेम किस प्रकार करे। जब कुछ रूप दर्शावे, तब प्रेम होवे। चकोर चन्द्रका प्रेम है। जो दृष्टांत भक्तोंका आपने कहा वह अवतारोंका प्रेम है। राम, कृष्ण, परशुराम, वामन आदिक उनको प्रसन्न हुए। उनका मनोरथ

सिद्ध दुहा। ऐसा मानुषशरीरवालेका प्रेम जिसका अब कहीं हो सकता है। निराकारका प्रेम ज्ञानमें नहीं आता। पहिले निश्चय होना चाहिये पीछे प्रेमका उपदेश स्वार्थ होगा। यह सुनकर महात्मा गुरु चुप हो रहे।

इति अभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद सातवें तरंगमें निराकारब्रह्मविचार नाम तीसरी लहरी संपूर्ण।

चौथी लहरी।

मंत्र आप ब्रह्म है।

अथ श्रीभगवते नमः। मैं दूसरे महात्माके पास गया और सब हाल अपना कहा। तब महात्मा गुरु बोले कि, ब्रह्म निराकार है। मंत्र आधीन है अथवा मंत्र आप ब्रह्म है। जिस काल विधिपूर्वक मंत्र उच्चारण होवे ब्रह्मका दर्शन तथा अनुभव निश्चय करके हो। तुम्हारा ज्ञान ऐसा है कि निराकार तथा अदृष्टका अनुभव नहीं हो सक्ता। यह ज्ञान मिथ्या हो सक्ता है सुनो अपनी आंखमें कज्जल अदृष्ट है, परंतु सत्य है। काचमें अनुभव हो सक्ता है। अदृष्टका कारण अति निकट है १। दूसरे आकाशमें जो कबूतर चला जाता है अदृष्ट हो जाता है। परंतु ऊपर रहता है। कुछ काल पीछे जब नीचे आवेगा, तब अनुभव होगा। अदृष्टका कारण अति दूर है २। तीसरे अणु सर्व आकाशमें भरे हैं अदृष्ट हैं।

परंतु कोई छिद्रमें सूर्यका प्रकाश होवे तब अनुभव हो सक्ता है । अदृष्टका कारण अति सूक्ष्म है ३ । चौथे जलमें जल मिला हुआ विलग अदृष्ट है परंतु उसमें है । पात्रमें पहिले कम था, पीछे विशेष हुआ । इस प्रकारसे अनुभव हो सक्ता है । अदृष्ट होनेका कारण मिश्रित है ४ । पांचवें सन्मुख पदार्थ रक्खा था कोई ले गया । अदृष्ट है, परंतु सत्यकरके ले गया खोजनेसे अनुभव हो जावेगा । अदृष्ट होनेका कारण ध्यान नहीं रहा ५ । छठवें दिनको तारा नहीं दर्शाता, अदृष्ट है; परंतु वह स्थिर है । जब सूर्यका प्रकाश कम होगा तब अनुभव होगा । अदृष्टका कारण तेजरहित हो गया ६ । सातवें दीवार या पहाड आदिकके ओटमें जो पदार्थ है वह अदृष्ट है । उस पार जानेसे अनुभव होता है और सत्य है । अदृष्ट होनेका कारण बीचमें परदा है ७ । आठवें आंखके अंधेको सब अदृष्ट है; परंतु जगत् सत्य है । स्पर्श आदिकसे अनुभव होता है । अदृष्ट होनेका कारण अज्ञान दृष्ट है ८ । यह आठ दृष्टांत अदृष्ट देखनेके हैं । जैसे ये उपाय अदृष्टके हैं इसी प्रमाण ब्रह्म मंत्रसे देखा जाता है । अनुभव होना, ज्ञानमें आना, देखना सब बराबर है । मंत्रका जाप करना बहुत कठिन है । सांप विच्छूका जहर मंत्रसे प्रत्यक्ष उतरता है । मोहन, वशीकरण, आकर्षण, स्तंभन, विद्वेषण, शांति, उच्चाटन, मारण सब मंत्रके आधीन हैं । सर्व साधनमें मंत्र प्रधान है । गुरु उपदेशकोभी मंत्र कहते हैं । चालीस मंत्र नित्यकर्मके देखो ।

सिद्ध दुहा। ऐसा मानुषशरीरवालेका प्रेम जिसका अब कहीं हो सकता है। निराकारका प्रेम ज्ञानमें नहीं आता। पहिले निश्चय होना चाहिये पीछे प्रेमका उपदेश स्वार्थ होगा। यह सुनकर महात्मा गुरु चुप हो रहे।

इति अभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद सातवें तरंगमें निराकारब्रह्मविचार नाम तीसरी लहरी संपूर्ण।

चौथी लहरी।

मंत्र आप ब्रह्म है।

अथ श्रीभगवते नमः। मैं दूसरे महात्माके पास गया और सब हाल अपना कहा। तब महात्मा गुरु बोले कि, ब्रह्म निराकार है। मंत्र आधीन है अथवा मंत्र आप ब्रह्म है। जिस काल विधिपूर्वक मंत्र उच्चारण होवे ब्रह्मका दर्शन तथा अनुभव निश्चय करके हो। तुम्हारा ज्ञान ऐसा है कि निराकार तथा अदृष्टका अनुभव नहीं हो सक्ता। यह ज्ञान मिथ्या हो सक्ता है सुनो अपनी आंखमें कज्जल अदृष्ट है, परंतु सत्य है। काचमें अनुभव हो सक्ता है। अदृष्टका कारण अति निकट है १। दूसरे आकाशमें जो कबूतर चला जाता है अदृष्ट हो जाता है। परंतु ऊपर रहता है। कुछ काल पीछे जब नीचे आवेगा, तब अनुभव होगा। अदृष्टका कारण दूर है २। तीसरे अणु सर्व आकाशमें भरे हैं अदृष्ट हैं।

परंतु कोई छिद्रमें सूर्यका प्रकाश होवे तब अनुभव हो सक्ता है। अदृष्टका कारण अति सूक्ष्म है ३ । चौथे जलमें जल मिला हुआ विलग अदृष्ट है परंतु उसमें है । पात्रमें पहिले कम था, पीछे विशेष हुआ। इस प्रकारसे अनुभव हो सक्ता है। अदृष्ट होनेका कारण मिश्रित है ४। पांचवें सन्मुख पदार्थ रक्खा था कोई ले गया। अदृष्ट है, परंतु सत्यकरके ले गया खोजनेसे अनुभव हो जावेगा। अदृष्ट होनेका कारण ध्यान नहीं रहा ५। छठवें दिनको तारा नहीं दर्शाता, अदृष्ट है; परंतु वह स्थिर है। जब सूर्यका प्रकाश कम होगा तब अनुभव होगा। अदृष्टका कारण तेजरहित हो गया ६ । सातवें दीवार या पहाड आदिकके ओटमें जो पदार्थ है वह अदृष्ट है। उस पार जानेसे अनुभव होता है और सत्य है। अदृष्ट होनेका कारण बीचमें परदा है ७ । आठवें आंखके अंधेको सब अदृष्ट है; परंतु जगत् सत्य है। स्पर्श आदिकसे अनुभव होता है। अदृष्ट होनेका कारण अज्ञान दृष्ट है ८। यह आठ दृष्टांत अदृष्ट देखनेके हैं। जैसे ये उपाय अदृष्टके हैं इसी प्रमाण ब्रह्म मंत्रसे देखा जाता है। अनुभव होना, ज्ञानमें आना, देखना सब बराबर है। मंत्रका जाप करना बहुत कठिन है । सांप विच्छूका जहर मंत्रसे प्रत्यक्ष उतरता है। मोहन, वशीकरण, आकर्षण, स्तंभन, विद्वेषण, शांति, उच्चाटन, मारण सब मंत्रके आधीन हैं। सर्व साधनमें मंत्र प्रधान है। गुरु उपदेशकोभी मंत्र कहते हैं। चालीस मंत्र नित्यकर्मके देखो।

मंत्र जाग्रतका ।

आदि पुरुष अनादि माया जागृत । स्वप्न सुषुप्ति बनाया ॥
प्रकाश रूप त्रिलोकी नाथ । दैत्यभंजन भक्तके साथ ॥
सोहं प्रकाश आदिति देव । ब्रह्मा विष्णु न जाने भेव ॥
पंच तत्त्वको करै नमस्कार । जिसकी माया अपरंपार ॥
जाग्रत होय गायत्री पढे । सहत अभिलाख ज्ञानबुध बढे ॥१॥

मंत्र पात्रका ।

खाक पाकसे पात्र बना । कमंडलु तुंबा किस्ति बहुगुणा ॥
पहिला कमंडलु मनुने बनाया । मत्स्यरूप तामें दर्शाया ॥
पात्र विचार ज्ञान जल । भ्रमको नाश संतोष अस्थल ॥
उस पात्रमें अमृत भरा । नव नाथ चौरासी सिद्धके आगे धरा॥
ऐसा कर पात्र अभिलाख राखे । निर्गुण मुक्त प्रेम रस चाखे॥२॥

मंत्र मलमूत्रका ।

सत्यकी माया असत्यकी काया । दस इंद्रीका भोग बनाया ॥
निर्मल धरति देवको वास । चंद्र सूरज करै प्रकाश ॥
प्राण अपान गुदामें फिरे । मल मूत्रकी क्रिया करे ॥
सर्व देवकी विनती करै । सहत मर्याद मल मूत्र करै ॥
प्रथम अभिलाख गायत्री पढे । पीछे एकांत मलमूत्र करे ॥३॥

मत्र मुखारीका ।

राख सुखारी मिस्सी मंजन । नित्य प्रात मुख धोवे निरंजन ॥
अंकुर मृत्तिका जो कुछ पावे । मुख धोवे और दांत मँजावे ॥
ओघड ज्ञान अर्ध अज्ञान । पंच देवका लावे ध्यान ॥

मुख धोवे गायत्री पढे। ज्ञान बुद्धि पुरुषार्थ बढे॥
मस्तक बीच लगावे राख। सुख संपत पावे अभिलाख४॥

मन्त्र स्नानका।

सागर विचार ज्ञान जल। निश्चय धाम विवेक अस्थल॥
गंगा यमुना त्रिवेणी घाट। दत्त दिगंबर लावे थाट॥
शील लंगोटी धरम जनेऊ। मंजन करे सुजाने भेऊ॥
कर अस्नाव गायत्री पढे। तिलकछाप और भस्मी चढे॥
ऐसा स्नान अभिलाखसे होवे। पापकी मैल हृदयसे धोवे ५॥

मंत्र जनेऊका।

ज्ञानकी रुई विज्ञानकी कपास। सूत कातय दत्त अविनाश॥
उस सूतका जनेउ बनाया। ब्रह्मगांठ ब्रह्माने लगाया॥
छानवे चौवा नाप प्रमाण। जनेऊ पहरे आप भगवान॥
चारों वर्णको जनेऊ दिया। यज्ञ उपवीत करके शुद्ध किया॥
जनेउ पहरे सहत अभिलाख। वेद पुराण शास्तर साख॥६॥

मंत्र लंगोटीका।

तकुशाका लंगोट मूंजकी करधन। लकड धात ऊन कुशपटसन॥
पगोती अचला विभुत चढावे। वज्र लंगोट हनुमान पहिरावे॥
ऐलक्ष्मण जती भीष्म महादेव। दत्तगणेश सनकादिक शुकदेव॥
करधनलंगोटकोशुद्धकिया। अठ्याशीहजारऋषिकोआज्ञादिया
करधन लंगोटकी गायत्री पढे। सहत अभिलाखसुरलोकचढे७

मंत्र कंठीमालाका।

तुलसीमलयागरहलदीकमलाक्ष। सुवर्ण मूंगा मोती रुद्राक्ष॥

कंठीमाला सुमरण बनाया। ब्रह्माविष्णु महेशके मन भाया॥
घटमें सोहं सुमरण जाप। जपे निरंजन आपे आप॥
माणिका विचार ज्ञानमाला। दत्त दिगंबर बैठ मृगछाला॥
अजपा जपै नित्य प्रति लाख। निर्गुण मुक्ति लहै अभिलाख८

मंत्र रुद्राक्षका।

ब्रह्म निराकारकी माया। गौरी शंकर वृक्ष लगाया॥
उस वृक्षका नाम रुद्राक्ष धरा। उसमें पंचमुखी फल फरा॥
उस फलको महादेवपर चढाया॥चारमुखीचारोंदिशाकोभेजाया॥
एकमुखी माला जपे निर्वाण। एक सो आठ आयु प्रमाण॥
ओहं सोहं सहत अभिलाख। मुक्त पावे जपे जब लाख॥९॥

मन्त्र जटाका।

जटा लटूरी भूरे केश। गोरखनाथ बनावे भेष॥
पाच केशको राख मुडावे। सत्यनामको दोनों भावे॥
कंगा करे लगावे तेल। डाढी भसम बनावै सेल॥
जटा जडाव मुकुट बनावे। सनकादिककी आज्ञा पावे॥
ऐसी जटा करे अभिलाख। वेद पुराण शास्तर साख १०॥

मंत्र तिलकका।

केशर कस्तूरी कपूर गोरोचन। कृष्णागरु चंदन वंशलोचन॥
अगर तगर और देवदार। कुंकु सिंदूर द्वादश प्रकार।
द्वादश तिलक देवें त्रिपुरार। तिलकी झलक झलके संसार॥
आडा खडा गोल त्रिभाग। प्रेमसे लगावे संहत अनुराग॥
सोहं तिलक सब आकार। जपे अभिलाख नाम निराकार११।

मंत्र भस्मीका ।

सुरा गायका गोबर आया । अग्निमें जलाकर भस्मी बनाया ॥
वो भस्मी श्मशानसे आवे । नव नाथ चौराशी सिद्ध चढावे॥
भसमंती सर्व योगकी माता । ऋद्धि सिद्धि नव निधिकी दाता॥
भस्मा लगाया तीरथ बनाया । चार पदार्थ परम पद पाया ॥
भस्मी सबकी अभिलाख पुरावै।भस्मी अलखनिरंजन दर्शावै १२

मंत्र चोलाका ।

कुरता बंडी बारातनी । कोट अंगरखा और कफनी ॥
अलफी चादर पाटंबर । सबको पहिरे दत्त दिगंबर ॥
गोरख पहिरे गोपीचंद । हटक पटन जंजिर अबंद ॥
उलटा सीधा पहिरे परदा । आज्ञा देवे शेष शारदा ॥
ऐसा चोला अभिलाख चढावे।जन्म मरणका ज्ञान भुलावे॥ १३॥

मंत्र पांवडीका ।

अक्कल चरम रूप पोलाद । करें पांवडी पहिरे आद ॥
पौला खूंटी दार सपाट । महादेवका लगे कपाट ॥
तीन लोकमें विचरत डोलै । गोरख दत्त दिगंबर बोलै ॥
पहर पांवडी आवे जाय । शुद्ध अशुद्धको देउ बचाय ॥
ऐसी पांवडी अभिलाख राखै।विमल पवित्र शुद्ध सत भाखै॥ १४

मंत्र भगवांका ।

भगवां पहिरे ब्रह्मा विष्णु महेश।नारद सनकादिक आदि गणेश ॥
भगवां रंग अनादि जुगाद । सोहं शब्द अनाहत नाद ॥
मुक्त अनेक वैकुण्ठ लाख । भगवां पहिरे सहत अभिलाख॥ १५॥

मंत्र धूनीका।

ज्ञान अग्नि भ्रम लकड। धूनी तापे दत्त दिगंबर॥
उस धूनीमें जरै ज्वाला। चंद्र सूरज करै उजियारा॥
ध्रुवकी धूम ब्रह्मांडमें रह्यो। ज्योतिसरूप प्रकट भयो॥
भ्रमको जलावैं ज्ञान पावै। ऐसी धूनी निराकारको भावै॥
उस धूनीकी निर्मल राख। निर्गुण मुक्त होवै अभिलाख १६

मंत्र चिमटेका।

कठिन धातु लोहकी जात। पोलाद खेडि और असपात॥
सोला अंगुल सबसे छोटा। अस्सी अंगुल सबसे मोटा॥
दृढ होइ पकडे गुरुमुख बात। मोह काम दोनों जर जात॥
नारद गोरख सूर कबीर। चिमटेके बल राखै धीर॥
अभिलाख वृत्ती पांहन समान। चिमटेसे होवे विज्ञान॥ १७॥

मंत्र आसनका।

आसन बैठे सिद्ध अवधूत। दत्त दिगंबर अत्रिके पूत॥
आसन चौराशी चौराशी सिद्ध। ऋद्धि सिद्धि पूरण नव निद्ध॥
आसन सिद्ध मनोरथ करै। दृढ आसन हृदयमें धरै॥
सोहं ध्यान आतम उदास। आतम अनुभव होय प्रकाश॥
पूरण अभिलाख आसन शांत। निर्गुण मत विचार वेदांत १८

मंत्र आसनका दूसरा।

मृग केशरी और गज चरम। उनका पट कुश रेशम नरम॥
खाक पाक सब अष्ट प्रकार। आसन शुद्ध कियो कर्तार॥
ऐसा आसन बैठे योगी। भोगी बैठे होवै रोगी॥

आसन ऊपर ध्यान लगावै। निर्गुण मुक्त परम पद पावै ॥
ऐसा आसन अभिलाख बिछावै। षट्चक्र आतम दर्शावै॥ १९ ॥

मंत्र विघ्ननिवारणका।

भूल चूक अक्षरको फेर। उलटा सीधा देर सवेर ॥
लोम अनुलोम अजपा जाप। विघ्न निवारण छूटे पाप ॥
दिशा भूम आसन संवाद। सायत घडी वार मरयाद ॥
गिरा गणेश सरस्वती शेष। सिद्ध मनोरथ होवै हमेश ॥
ऐसा विघ्न अभिलाख निवारै। सर्व प्रकारका ध्यान धारै २०

मंत्र शरीररक्षाका।

तीन ताप और पांच विकार। गिरा दिशाको करै उद्धार ॥
देव दैत्य देवी वेताल। जिन मोकल काल दुकाल ॥
जादू मंतर टुटका मूठी। शत्रु मित्र करे सब छूठी ॥
गोरख भैरव पाचों पंडा। हनूमानका शिरपर दंडा ॥
ऐसी रक्षा अभिलाख करे। कलुवा महँदाकी चौकी फिरे २१

मंत्र चित्त एकाग्र करनेका।

पांच प्राणको घटमें राखे। दृष्टि नासा ऊपर नाखे ॥
मन और चित्तको एक बनावे। सर्व सृष्टिको भूल मिलावे ॥
सहज शिशुपन मूर्छत तुरया। परमहंसकी राखे क्रिया ॥
गौरी गणपत शंकर दत्त। ध्यान करे होवे चित सत्त ॥
चित्त एकाग्र करे ये भांत। कहत अभिलाख विचार शांत २२

मंत्र ध्यानका।

जैसे चंद्र चकोरका ध्यान। बालमृग शशि देख लुभान

पपैया बूद स्वाती चाहै। कछुवा अंडाकि प्रीत निवाहै॥
क्षुधा प्रगट भोजनका ध्यान। काम प्रगट कामिनीका ज्ञान॥
गुरुमुख ब्रह्मको ध्यान लगावै। सहज सुषूपत गत हो जावै॥
ऐसा ध्यान करे अभिलाख। वेद पुराण शास्तर साख॥२३॥

मंत्र आवाहनका।

ग्राहसे गजको जाय बचावे। रुक्मिणिको चोरी ले जावे॥
जूंठे बेरका भोग लगाया। धन्नाके घर गाय चराया॥
सैन भक्तकी सेवा करे। दीन वचन सुन कृपा करे॥
दीन वचन और निरछल सेवा। कर्माके घर खिचडी मेवा॥
दीन वचन अभिलाख पुकारे। निराकारका मंत्र उचारे॥२४॥

मंत्र नमस्कारका।

नमो नमो निर्गुण कर्तार। नमो निरंजन अलख अपार॥
नमो नमो त्रिगुणके भेवा। नमो नमो परमेश्वर देवा॥
नमस्कार है सत्यनामकी। नमो सर्व शिव कृष्ण रामकी॥
नमस्कार मेरी सुन लीजे। जयजयकार हमारी कीजे॥
नमस्कार अभिलाख पुरावे। नमस्कार निर्मल गत पावे॥२५॥

मंत्र देवसन्मानका।

हृदयासनमें करो निवास। काम क्रोधका होवे नाश॥
चरण धोय चरणोदक पावे। भागीरथी क्षीर अन्हवावे॥
फूल पान अरगजा सुपारी। शक्कर घृत सहत दधि चारी॥
वस्त्र भेंट सब आगे धरे। निराकारके अर्पण करे॥
ऐसी पूजा देवकी करे। चार पदारथ अभिलाषसे धरे॥२६॥

मंत्र भोजन नैवेद्यका।

छत्तिस व्यंजन छपन प्रकार। छः रस चाखे आप निराकार॥
शक्ति बनाया देव खाया। राम कृष्णको भोग लगाया॥
अग्नि मुख खावे जलमुख नहावे। गुरु आज्ञासे भोग लगावे॥
घृत मिष्टान्न वासुदेवको चढावै। पहिला कौन अग्निको खिलावे॥
इस प्रकारसे भोजन करे। अपनी अभिलाख संपूरण भरे॥२७॥

मंत्र धूपका।

अगर तगर चंदन कृष्णागर। ऊद पंचांग कस्तूरी केशर॥
अग्निदेवके सुखमें देवे। उसकी वास निरंजन लेवे॥
काल पाय शक्कर घृत शुद्ध। ज्ञान पुरुषार्थ निर्मल बुद्ध॥
सर्व प्रकारकी धूप सुहावे। प्रेम नेमसे अग्नि जलावे॥
ऐसी धूप अभिलाख जलावे। पांच देवकी आज्ञा पावे॥ २ ॥

मंत्र स्तुतिका।

दीनानाथ दीनके स्वामी। भक्त सहायक अंतर्यामी॥
घट घटकी पीरा तुम जानो। दुष्ट भक्त तुम सब पहिंचानो॥
मेरे नेत्र सुफल तुम करो। हृदय भीतर आसन करो॥
संचित प्रारब्ध त्रिय ताप। नाश होय सब मेरे पाप॥
अपनी ज्योतिमें मोहिं मिलावो। ये मेरी अभिलाख पुरावो२९॥

मंत्र दीपका।

घृत कपूर कपासकी वात। तीन पांच सारो नव सात॥
धातुपात्रमें दीप जलावे। जोती सरूपको जोत दिखावे॥
प्रेम आरती देव उतारे। व्यास वेदकी ऋचा उचारे॥

ब्रह्मा विष्णु महेश भवानी। अगम अगोचर प्रभु निर्वानी॥
पढे मंत्र आरतीउतारे।साहित अभिलाख सुरलोक सिधारे॥३०॥

मंत्र विसर्जनका।

मंगल ध्यान विसर्जन देव। हृदय वास करो तज भेव॥
स्वर्ग लोक कैलास स्थान। गोलोक सागर प्रधान॥
ब्रह्मलोक इंद्रासन नाम। सातों पुरी और चारों धाम॥
पूरण आस दासका करो। अपने गृहवास सब करो॥
वेद पुराण शास्तर साख। पूरण होय दास अभिलाख॥३१॥

मंत्र निद्रा।

चार पहर जाग्रतमें फिरे। निद्रा शयन रातमें करे॥
स्वप्न सुषुपति तुरया लहे। सूक्ष्मरूप जाग्रत रहे॥
सोवे शरीर सोई अज्ञान। योगी जागे आत्मज्ञान॥
पढ गायत्री निद्रा करे। ऋद्धि सिद्धि नवनिद्धि घर धरे॥
तालकी शब्द काल भागे। साहित अभिलाख सोवे जागे॥३२॥

मंत्र अमलका।

अमलसे आमिल अमलसे एमाल। अमलसे कामिल अमले कमाल॥ सांप कैअरी बंदरकी प्यारी। एकका कोढा एक असवारी॥ राजा प्रजा योगी सब पावे। महाकालिका ध्यान लगावे॥ सूके कुसुंभा मदक प्रधान। पोस्ती परम पदारथ जान॥ ऐसी अमल अभिलाखसे खावे। चारों मुक्त पदारथ पावे॥३३॥

मन्त्र गांजाका।

इक्कीस लाख फल फल पान। सबमें गांजा है परधान॥ षट्

दर्शन सब गांजा पीवे। गांजाके बल योगी जीवे॥ गांजा तमाखु प्रेमसे मिलावे। दम खींचे ज्योतीसरूप दरशावे॥ मनको आधार बुद्धीको अंजन। पिये अभिलाख देखे निरंजन॥३४॥

मंत्र भांगका।

जंगलकी पत्ती शंकरका ध्यान। ब्रह्मका जीवन विष्णुका ज्ञान॥
घोटे कालभैरव श्याम कार्तिकगणेश। छाने पार्वती पीवे महेश॥
चारों वर्ण चारों आश्रम। चारों वेदका पूरा धरम॥
विजया माता जगत विख्याता। पंचानंद मुक्तिकी दाता॥
प्रेमकी विजया अभिलाख पावे। चौदह भुवन मिथ्या दर्शावे॥

मंत्र सुराका।

धन्वंतरने बनाया वर्णको ध्याय॥चौदह रतन क्षीरसागरमेंपाया॥
सुरा वारुणी तीरथ मद। योगी पीवे राखे हद॥
देवी भैरव सिद्ध पुरंदर। शुद्ध किया सब नलका यंतर॥
गुड महुवा मेवा स्थावर। सनकी दारु कनकबराबर॥
सुरमा ताको देवे साख। तीर्थपान करे अभिलाख॥३६॥

मंत्र विषयका।

आदि निराकार निर्गुण आकार। जिसकी महिमा नपावें त्रिपुरार
पुरुष प्रकृती परमार्थ भोग। जगतकी वृद्धी अनादी योग॥
शुभ विचार अभिलाख भाखें। पढ गायत्री विषयरस चाखें३७

मंत्र मांस मछलीका।

जलचर नभचर भूचर नाना। पशू मच्छ पक्षी परमाना॥
आत्मद्रोही जो न भरमावे। उनको नाश करत फल पावे॥

ऐसी बहुत योनिमें आवे। प्राण जाय तब दूजे पावे॥
गोरख दत्त मछिंदर खाया। देवी भैरव भोग लगाया॥
राम कृष्णने देखा चाख। ऐसी मांस खावे अभिलाख॥ ३८॥

मंत्र झोलीका।

झोली रामकृष्णको भावे। ब्रह्मा विष्णु महेश सुहावे॥
झोली बांधे दत्त दिगंबर। गोरख गोपीचंद जलंधर॥
झोली हनूमानको भावे। झोलीसे शिव अलख जगावे॥
झोली अंदर चौदा रतन। झोली भीतर चौदा भवन॥
ऐसी झोली अभिलाख बनावे। चारों कोनमें गांठ लगावे॥ ३९॥

ब्रह्मप्राप्तिका मंत्र।

ग्रंथमें मत लिखो उसको चालीस रोज एकांतमें जाप करो। ब्रह्मका अनुभव होगा। मैं महात्मा गुरुकी आज्ञा-प्रमाण विधिपूर्वक वह मंत्रजाप किया कुछ अनुभव प्रत्यक्ष नहीं हुआ। तब महात्मा गुरुसे हाथ जोडकर कहा कि मंत्र अक्षरसे बनाया गया। अक्षरका सिद्धांत पहिले प्रगट हो चुका सांप विच्छूका जहर मंत्रसे नहीं उतरता, हजारों मर जाते हैं। गुरुका मंत्र सबको आता है। कोई सिद्ध अमर नहीं हो गया बाजीगर हाथसे खेल करता है सबको झूठा मंत्र सुनाता है इंद्रजाल ग्रंथ संसारमें सबके पास है। चार आनेमें आता है। हजारों मंत्र उसमें लिखे हैं। कोई सिद्ध नहीं हुआ लंडनकी विलायतमें अठरा सलतनत हैं उस मुलुकमें कोई मंत्र नहीं जानता। विचारकी बात है कि मंत्र मुखसे पढा

जाता है वह आकाशमें नाश हो जाता है। वह एक शब्द है। ऋषि लोगोंने संसार बनाने वास्ते और भक्तिमार्ग चलानेके कारण जातिका धर्म निर्वाह होने निमित्त लाखों प्रकारके मंत्र बनाये। उसी प्रमाण आपनेभी ये चालीस मंत्र बनाये उसमें कुछ सार नहीं। शब्दके भेद अनंत हैं। कोई कह नहीं सक्ता। यह सुनकर महात्मा गुरु चुप हो रहे।

इति अभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद सातवें तरंगमें निराकारब्रह्मविचार नाम चौथी लहरी संपूर्ण ।

पांचवीं लहरी ।

मानसीध्यान ब्रह्म है ।

अथ श्रीब्रह्मदेवाय नमः। मैं दूसरे महात्माके पास गया और सब हाल अपना कहा। तब महात्मा गुरु बोले कि, ब्रह्म निराकार है। मानसिक पूजनसे अनुभव होता है। तथा मानसिक ध्यान करनेवाला मन आप ब्रह्म है। इस पूजाके वास्ते जगह बहुत एकांत होना चाहिये। कोई शब्द कानमें न आवे उसको शुद्ध पवित्र करके अर्धरात्र मध्याह्नके समय तथा दो प्रहर दिनको नित्य कर्म करके मानसिक पूजा करे। पद्मासन लगावे। अगोचरी मुद्रा धारण करे। श्वासमें सोहं जाप रक्खे। चित्त एकाग्र करे पीछे गुरूपदेश प्रमाण हृदयमें आसन बनावे। उस परब्रह्मकी मूर्ति विराजमान करे। गंगाजल दूध आदिकसे स्नान करावे। चन्दन केशर कस्तूरीका तिलक लगावे! वस्त्र

पहिरावे, सुगंध लगावे। धूप कर्पूर जलावे। नैवेद्य भेंट आदिक जो प्रकट पूजामें चढाया जाता है सब चढावे। पीछे उस रूपको अपने ध्यानमें दृढ करे। अपनेको भूल जावे। उसके उपरांत आंख खोलकर देखे सन्मुख दर्शन हो जावेगा। प्रश्नका उत्तर देवेगा और सब मनोरथ सिद्ध करेगा। यह ध्यान सबको नहीं मालुम। अच्छे अच्छे परमहंस सदा इस ध्यानमें आनंदित रहते हैं। मनका यंत्र देखने योग्य है।

मैं तीन महीने महात्मा गुरुकी आज्ञा प्रमाण बडे प्रेमसे इस साधनको सिद्ध किया। यथार्थमें ऐसा अनुभव हुआ कि, जैसा रूप अपने हृदयमें दृढ करता है वैसा प्रत्यक्ष सन्मुख दर्शाता है। कारण अपना ध्यान उस रूपमें ले रहता था. जब ध्यान जाता रहे तब रूपभी जाता रहे। कुछ दिन ये तमाशा इंद्रजालका देखा कुछ सामर्थ्य प्राप्त नहीं हुआ जैसे स्वप्नमें अनेक वार्ता देखे जाग्रतमें उसका कुछ स्वाद नहीं है। मनकी संकल्पसे वह रूप ध्यानमें दृढ हो जावे। वही भ्रमरूपी चर्मचक्षुसे भी कुछ घडी दरशावे। ऐसा सिद्धांत निरर्थक देखकर छोड दिया और महात्मा गुरुसे हाथ जोडकर कहा कि यह रूप ब्रह्म नहीं है। भ्रम है। मेरेको अच्छी तरह ध्यानमें ब्रह्म आया। कुछ फल प्राप्त नहीं हुआ। यह सुनकर महात्मा गुरु चुप हो रहे।

इति अभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद सातवें तरंगमें निराकारब्रह्मविचार नाम पांचवीं लहरी संपूर्ण।

---

१ यहांका यंत्र ग्रंथके अंतमें देखो।

छठी लहरी।

समाधि ब्रह्म है।

अथ श्रीवासुदेवाय नमः। मैं दूसरे महात्माके पास गया और सब हाल अपना कहा। तब महात्मा गुरु बोले कि, ब्रह्म निराकार है। अष्टांग योग समाधिमें अनुभव होता है। अथवा समाधि आप ब्रह्मरूप है॥ सर्व साधनमें समाधि प्रधान प्रसिद्ध है नारद सनकादिक महादेव सब समाधि लगाते हैं। समाधिवाले पुराने साधु अबतक पहाड खोदे जानेसे अब दुनियामें मिलते हैं उनका शरीर महाप्रलयतक रह सकता है और चौदह भुवनको देख सकते हैं, कालका भय छूट जाता है पहिले शरीरको शोधन करना चाहिये। जल आहार निद्राप्रमाणसे करना चाहिये। पीछे आसन मुद्रा ध्यान धारणा करना चाहिये। पीछे इडा पिंगला सुषुम्णा नाडीका भेद कुंभक पूरक रेचकका भेद जानना चाहिये। तत्त्व समाधि तालुमें जिह्वाका उलट पलट ब्रह्मांडका विचार करना चाहिये। षट्चक्र द्वादश कमल सोलह कला सूर्य चंद्रका गुण सब जानना चाहिये। इस विचारके उपरांत आत्मा ब्रह्मांडमें स्थिर हो जाता है। वह पुरुष जीवन्मुक्त हो जाता है। अष्टांग योगके नाम ये हैं। संयम नेम अथवा यम, आसन व्रत अथवा प्राणायाम, प्रत्याहार धारणा, ध्यान, समाधि उसके सिद्ध होनेमें आठ सिद्धि प्राप्त होती हैं। उसके नाम ये हैं। अणिमा, महिमा, लघिमा, गारिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व, वशित्व ये

अष्ट सिद्धि हनूमान्‌को थीं। क्षणमात्र भोगमें जो सुख होता है वही समाधि चढ जानेपर आत्माको अखंड सदा आनंद बना रहता है विषयानंद, योगानंद, अद्वैतानंद, इच्छानंद, ब्रह्मानंद पाँचों आनंद प्राप्त होते हैं। एक आनंदसे दूसरा आनंद हजार गुणा विशेष है उसीको मुक्ति कहते हैं। सालोक्य सामीप्य सारूप्य सायुज्य स्वयंभू ये पांचों मुक्ति समाधिमें हैं और विस्तार यंत्र¹में देखो।

मैंने हाथ जोडकर कहा कि इस सिद्धांतमें ब्रह्मका कुछ बोध नहीं हुआ। समाधिमें बडी सामर्थ्य है। वही समाधि-वाला आप ब्रह्म हो जाता है आनंद मुक्तिका भोक्ता हो गया। जैसे मद्यपान किया हुआ पुरुष अपनेको बादशाह जानता है। अनेक महात्मा समाधिवाले देखते मर गये। कोई अमर नहीं हुआ। श्वास प्राणका मार्ग है। उसके बंद करनेसे वह घबडाता है। अभ्यास करते करते स्थिर हो जाता है। ज्ञान पदार्थ जो मुक्तिका दाता है वह नहीं रहता। कितने साधक शरीरशुद्धिमें मर जाते हैं। मुरदा होकर महा प्रलय-तक बैठना निरर्थक है भांड नकल करनेमें समाधि लगाता है। एक भांडका प्राण समाधिमें चढ गया। एक साल ज्योंका त्यों बैठा रहा। पीछे जब प्राण उतरा तब उठकर कहने लगा कि लाओ घोडा जोडा श्वासका रोकना समाधि है। मेरे

---

१ यहांका यंत्र ग्रंथके अन्तमें देखो।

ज्ञानमें खेल तमाशा दर्शाता है। जैसे नट विद्याका साधन कठिन है यह सुनकर महात्मा गुरु चुप हो रहे।

इति अभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद सातवें तरंगमें निराकारब्रह्मविचार नाम छठी लहरी सम्पूर्ण।

सातवीं लहरी।

शांति ब्रह्म है।

अथ श्रीसत्यनारायणाय नमः। मैं दूसरे महात्माके पास गया और सब हाल अपना कहा। तब महात्मा गुरु बोले कि शांतिपद ब्रह्मपद एक है। सर्व व्यवहार सुखके कारण हैं। वह सुख शांतिमें हैं। शांति प्राप्तिमें है। प्राप्ति प्रीतिमें है। प्रीति निश्चयमें है। निश्चय ज्ञानमें है। ज्ञान सत्संगमें है। सत्संग संयोगाधीन है। संयोग प्रारब्धाधीन है। जिसके पास शांति नहीं है उसको करोडों ब्रह्मके मिलनेमें सुख नहीं हो सकता। जैसे आंखवाला पुरुष सूर्यका प्रकाश सर्व पदार्थमें देखता है उसी प्रमाण शांति प्राप्त होनेसे सर्व पदार्थमें सुखरूपी ब्रह्म दर्शाता है। किसीके दर्शनकी तथा भजन कीर्तनकी चाहना नहीं रहती। दुःख चिंता कोई प्रकारका नहीं रहता। यह शरीर और जीव मरने उपरांत पंचतत्त्वमें मिल जाता है गुप्त प्रकट होना वायुका कारण है। मरनेके पीछे सिवाय नेकनामी और बदनामीके कुछ नहीं रह जाता। परमात्मा घट घट व्यापक है। घट पंचतत्त्वका है। पंचतत्व अनादि हैं। जैसे किसी वनमें एक नदी रही उसमें एक नाव

पडी थी उसका स्वभाव इधर आना उधर जाना उसपर मुसाफर बटोई उतर जाते थे। एक दिन कोई राहगीर उस नावपर सबके साथ सवार था। सबने विचार किया कि, यह वन किसका है नदी कहांसे आई नाव किसने बनवाई उसका उत्तर कौन देवे। सब बटोई दो घडीके आये हुए थे। इस प्रमाण ब्रह्म। ब्रह्मांडको वन, पंच तत्त्वको नदी, शरीरको नाव, जीवको बटोई सिद्ध करो और इस दृष्टांतको अच्छी तरह जब गुरुमुखसे सुनोगे तब भेद प्रगट होगा। मेरे ज्ञानमें जो शांति है वह ब्रह्म है। जो भ्रममें है वह नरकमें है। शांत वाणी देखो।

शांतवाणी–चौपाई।

गुरु नानकको टेकूं माथ। श्रीचंदको जोडूं हाथ॥
सतगुरुको अभिलाख प्यारा। सत्यनामको भेष हमारा॥१॥
कर्ता पुरुष सत्य है नाम। निर्भय निर्विकार निष्काम॥
मूरत सत्य काल नहिं व्यापे। जो न भंग गुरुमुखको जापे॥२॥
आदि अनादि सत्य सब सत्य। है युगादि होगाभी सत्य॥
सत्य सत्य सब खेल बनाया। रात दिवस सबको दर्शाया॥३॥
वेद पुराण शास्तर कथा। इनमें खोज रहे सब यथा॥
चार वर्ण षटदर्शन देखे। चार आश्रम वन वन पेखे॥४॥
अगम निगम भेद नहिं पाया। ब्रह्मा विष्णु महेश बनाया॥
पंडित ज्ञानी साधक संत। सोचे सोचे न पावे अंत॥५॥
निर्गुण सगुण ब्रह्म विचार। त्रिगुणमें भूला संसार॥

जनमे मरे रहे कुछ काल। मिथ्या बीते तीनों काल ॥ ६ ॥
पूजा पाठ कीर्तन भजन। तीरथ व्रत दास स्मरण ॥
माता पिता मरे सब जाने। अपनी मौत हृदय नहिं आने ७॥
भाई बहिन पुत्र सब मरे। अपनी मौत याद नहिं करे ॥
बालक तरुण वृद्ध हो गये। मिथ्या तीनों वृथा गये ॥ ८ ॥
रूप शृंगार शक्ति सब गई। मोह रूप तृष्णा नहिं गई ॥
पाके केश नेत्र नहिं सूझे। दांत गिरे तबहूं नहिं बूझे ॥ ९ ॥
तोर मोरमें जनम गमाया। तोर मोरका भेद न पाया ॥
मैं मैं कहत अर्थ नहिं जानत। अजया शब्द लाज नहिंमानत १०
हंकोहं सोहं नहिं जाने। आतम ब्रह्म नहीं पहिचाने ॥
हं कोहं सोहं जो जानो। अहंकारकी गत पहिचानो ॥ ११ ॥
शब्द स्पर्श रूप रस गंध। ऐसे पंच विषय मत मंद ॥
तीन स्वभाव शब्दमें जानो। भय रोचक विश्वास बखानो १२
कोई गूंगा मैं मैं करै। कोई बहिरा श्रवण न करै ॥
जो अपने मनमें मैं कहे। गूंगा बहिरा जैसे रहे ॥ १३ ॥
बालक बोली मैं नहिं कहे। परमहंस ऐसी गति रहे ॥
पढत कवित्त विवेक न जाने। सर्वरूपको एकी माने ॥ १४ ॥
होय विवेक ज्ञान जब आवे। सत्संगतमें कोई पावे ॥
राम वसिष्ठ ज्ञानसे लीजे। पुरुषारथ पर निश्चय कीजे १५
अष्टावक्र एक सब जाने। दुःख सुखमें भेद न जाने ॥
च्यवनऋषीको कर्मप्रधान। गौतम कालघडीको ज्ञान १६॥
ऐसे बहुत ऋषी कह गये। नाम प्रकाश जगत् कर गये ॥

वर्तमानमें लाखों गावे। भेद नहीं कुछ उसका पावे१७
कोई कहे समुंदरवासी। कोई गावे रमानिवासी॥
कोई पुर वैकुंठ बतावे। कोई शेष नागपर गावे॥१८॥
कोई पीपल पात लखावे। हिरणगर्भ ताको दिखलावे॥
कोई ब्रह्मा उत्पन्न करता। कोई विष्णु पालन करता१९॥
कोई शंकरको बतलावे। कोई आदि गणेश बतावे॥
कोई कहै भवानी माता। कोई पंच तत्वका ज्ञाता॥२०॥
कोई दश अवतार बतावे। चौवीस रूप तिर्थंतर गावे॥
कोई कहे झूठ सब जानो। जगत युगादि अनादि बखानो२१
पंच तत्वका गुण दरशावे। उपजे विनशे आवे जावे॥
कोई कहे स्वप्न सब जानो। निद्रारूप देह अनुमानो॥२२॥
ऐसे कोटिरूपको धावे। एकरूप विन मुक्त न पावे॥
एक रूपको खोजो कहां। वेद पुराण शास्तर जहां॥२३॥
रूप न रंग न रेख बखाने। निराकार निर्गुण कर जाने॥
कोई खुदा महंमद जाने। कोई ईशाको पहिचाने॥२४॥
ऐसे भरम बहुत जगमाहीं। अंतसमय सबके कुछ नाहीं॥
कोई कहे ब्रह्म सब करे। कोई कहे भलाई करे॥२५॥
कोई कहे नहीं कुछ करे। कर्म प्रधान जगतमें रहे॥
कोई व्रत करे फलहार। कोई मदिरा मांस अहार॥२६॥
कोई हिंसा नरक पग धारे। बलि देवे वैकुंठ सिधारे॥
मलमूत्र कोई नाहिं खावे। पंचगव्यसे पातक जावे॥२७॥
रोम चरमसे करे विचार। कंबल बाघांबर आधार॥

मारे गौ नाश हो जायी। दिन दिन दूना होय कसायी ॥ २८ ॥
जेते दुःख शास्तरमें गावे । चारों युगमें शूद्र वसावे ॥
ब्रह्मदेव मानुष सब हने। ताको दुःख नहीं कोउ गिने ॥ २९ ॥
समरथको नहिं दोष गुसाईं। रवि सुर पुर पावककी नाईं ॥
गुण अवगुणको भेद न जाने। कुलरीति जगत पहिचाने ॥ ३० ॥
सत्यनामको सच्चा जाने । तीन लोक उसको पहिचाने ॥
रहे उदास नामको जाने। मोहरूप मिथ्या करि माने ॥ ३१ ॥
कर्म गुमान करे जो कोई। सपन्यो अर्थलाभ नहिं होई ॥
कर्म करे मिथ्या करि जाने। शुभ अशुभ झूठ सब जाने ॥ ३२ ॥
सत्य नाम राखे आधार। देह कर्मका कुछ नहिं सार ॥
देह कर्म पावे जब देह। विना देह पावे नहिं देह ॥ ३३ ॥
जीव कर्म सब जीको होई। शांतरूप पावे फल सोई ॥
ऐसी रीति रहे सुख पावे। विन संतोष न काम नशावे ॥ ३४ ॥
हम मिथ्या निश्चय करि जानो। देह नहीं अपनी कर मानो ॥
बालक तरुण वृद्ध हो जावे। हम मिथ्या कुछ खबर न पावे ३५ ॥
नींद क्षुधा मैथुन सब आवे। हम मिथ्या कुछ पता न पावे ॥
हर्ष शोक बिमारी आवे। हम मिथ्या कुछ जान न पावे ॥ ३६ ॥
ऐसी वस्तु बिगानी होवे। उसको कैसी अपनि करावे ॥
मरे जिये कुछ काबू नाहीं। ताको मूरख कोइ लिपटाहीं ॥ ३७ ॥
श्वासा आवे जावे तनमें। बंद होय जब उसके मनमें ॥
अपने किये नहीं कुछ होवे। कर्ता करे सो अनुभव होवे ॥ ३८ ॥
शांतरूप वैराग्य बढावे। त्याग विना निष्काम न पावे ॥

जगत पदारथ मिथ्या जाने। अपनी देह अनित्यहि माने ॥३९॥
सत्यनामसे ध्यान लगावे। सत्यरूप सच्चा हो जावे॥
जीवन्मुक्त उसीको कहिये। कर्म करे फिर न्यारा रहिये॥४०॥
कर्ता धर्ता आप न माने। आपन रूप साक्षी जाने॥
देह कर्म सब देखा करे। अपने मनमें आनंद करे॥ ४१॥
अंतःकरण शुद्ध जब होवे। आतम अनुभव सच्चा होवे॥
आत्मज्ञान प्राप्ती होवे। जरा मरणसे छूटे सोवे ॥ ४२ ॥
नाम अधारी जीवे लाख। जीवन्मुक्त होवे अभिलाख॥
संवत् उन्नीससे चवालिस। फाल्गुन शुदि मिति अग्यारस॥४३॥
बुधवार मास फरवरी। सन् सत्याशी है शरवरी॥
मुल्क बडार हैदराबादी। खामगांव ओछी आबादी॥ ४४ ॥

मैंने हाथ जोडकर कहा कि जड सृष्टिको भ्रमना नहीं दर्शाते, सर्व प्रकारसे शांत दर्शाते हैं और जिस मनोरथकी सिद्धि नहीं प्राप्त होती। अंतमें शांति हो जाती है। शांति और भ्रम सर्व जीवोंको है। जिसको ज्ञान है यह वृत्ति बदलभी जाती है। जैसे शांतिमें भ्रम उत्पन्न हो जाता है। जो अशक्त होता है वह शांत होता है। शांति एक शब्द है। जिसमें पांच अक्षर हैं। निद्रा मैथुन आहारकी शांति जीवमात्रको नहीं है चौरासी लाख सृष्टि अनंत प्रकारकी रचना शांतिसे नहीं होती। शांति सरूपको है जैसे कोई कहता है कि मेरेको शांति हुई उसको ब्रह्म कहना, आपका काम है। यह ज्ञान चौदह भुवनके प्रतिकूल होगा। हजारों भक्त निष्कपट और

प्रेमीको वर्तमानमें दर्शन होता है। अठारह पुराणमें भगवान्‌की लीला ऐसी अद्भुत अपार व्यासजीने गायी है जो सुनकरभी प्राप्त होता है। वसिष्ठजीने रामचंद्रको उपदेश दिया है कि पुरुषार्थ करो। शांतिसे अथवा देवके भरोसेपर कुछ भला नहीं होगा। कर्म प्रधान है। यह सुनकर महात्मा गुरु चुप हो रहे।

इति अभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद सातवें तरंगमें निराकारब्रह्मविचार नाम सातवीं लहरी संपूर्ण।

आठवीं लहरी।

निष्काम पद ब्रह्म है।

अथ श्रीनरसिंहाय नमः। मैं दूसरे महात्माके पास गया और सब हाल अपना कहा तब महात्मा गुरु बोले कि, निष्काम पद ब्रह्म है। शांतिपद निराशा होनेपरभी प्राप्त हो सक्ता है। जिसको काम है उसको जन्म मरण है। सर्व सृष्टि कामनासे है। वह माया है। ब्रह्मको जब मायारूपी कामना होती है तो जगत् उत्पन्न होता है। तीस नाम ब्रह्मके अ अक्षरपर श्रवण करने योग्य हैं अनाम १, अरूप २, अकाम ३, अकर्ता ४, अजन्म ५, अगम ६, अभोग ७, अशोग ८, अरोग ९, अशोक १०, अवर्ण ११, अलेख १२, अलख १३, अभेष १४, अयोनि १५, अजाति १६, अदेश १७, अनादि १८, अकाल १९, अकलंक २०, अकाश २१, अनाश २२,

अकर्म २३, अमान २४, अशंक, २५, असंग २६, अटल २७, अगाध २८, अलंध्य २९, अनंत ३०। हजारों ग्रंथका प्रमाण है कि सृष्टि ब्रह्मकी कामना है। जब निष्काम होता है वह जगत् उसमें लय हो जाता है। जो जीव निष्काम होता है शरीर उसका पंच तत्वमें लय हो जाता है। जीव अकाम अरूप हो जाता है। निष्कामका रूप निर्गुण है, निरंजन है, निरामय है, निराकार है, निर्भय है, निर्वैर है। इस कारण उसका वर्णन नहीं हो सक्ता। जो स्वतः सामर्थ्यवान् होगा वह निष्काम होगा। शांतिपद लाचारी पद है। निष्कामपद श्रीमंत पद है। जो किसीके आश्रित न हो स्वतः स्वतंत्र सब काम उसका चल जावे वह ब्रह्मसमान है। निष्काम पदार्थ किसीके आश्रित नहीं। सर्व उपमा ब्रह्मकी निष्कामको शोभा देती है। तीन अष्टपदी देखने योग्य हैं।

पहिली अष्टपदी–ब्रह्म निराकार

कवित्त–शंकरको पूजें और शक्तीको ध्यान धरें देवीको सेवें और गणेशको मनावत हैं। ईश्वर नारायण परमेश्वर भगवान् राम कृष्णकी कहानी सब घर घरमें गावत हैं॥ सूरज और चन्द्र बुध मंगल गुरु शुक्र शनि राहु और केतु ग्रह घर घर पुजवावत हैं। ऐसे नाहिं पावे पार बैठे सब हार हार मूर्ख अभिलाख ताहे ढूँढे कब पावत हैं॥ १ ॥ वालमीक भारद्वाज गौतम वसिष्ठऋषि अंगिरा व्यास पुलह भेद नहीं पावत हैं। विश्वामित्र च्यवन ऋषि अष्टावक्र शुक्राचार्य उद्दालकमुनि

वासुदेव अष्टकाल ध्यावत हैं ॥ लोमश दुर्वासा ऋषि दत्ता जड-भरत ऋषी कर्दम रोहिण्यऋषी निशि दिन गुण गावत हैं। ऐसे नहिं पावे पार बैठे सब हार हार मूर्ख अभिलाख ताहे ढूँढे कब पावत हैं॥ २ ॥ जोगी अरु जगम संन्यासी वनवासी आदि ब्रह्मचर्य बालचर्य निशिदिन गुण गावत हैं। वानप्रस्थ परमहंस सुथरा शरभंगी नाथ भर्तरि अघोर सतनामी सब ध्यावत हैं ॥ कूका और अकाली निर्मला गुलाबपंथी सेवडा अनुरागी वैरागी दुख पावत हैं। ऐसे नहिं पावे पार बैठे सब हार हार मूर्ख अभिलाख ताहे ढूँढे कब पावत हैं ॥ ३ ॥ जमदगन पुलस्त्य ऋषि नाचिकेत शांडिल्य ऋषि ऐसे सब और ऋषि मनमें गोह-रावत हैं। कश्यप दाल्भ्य ऋषि श्रवण मारीच ऋषि ऋषभदेव वासुदेव अष्ट प्रहर ध्यावत हैं ॥ भृगुऋषि जनक ऋषि गर्ग ऋषि पराशर ऋषि भीषम पितामह ऋषि रणमें दुख पावत हैं। ऐसे नहिं पावे पार बैठे सब हार हार मूर्ख अभिलाख ताहे ढूँढे कब पावत हैं ॥ ४ ॥ धना और नामदेव पीपा रोहिदास दास सजना कसाई विदुर ढूँढे नहीं पावत हैं। नरसीजी शबरी गणिका करमा द्रौपदी कुंती और तारा अहल्या सब ध्यावत हैं ॥ रामदास युगलदास संतदास माधवदास पलटुदास मोहदास नित्य ध्यान लावत हैं। ऐसे नहिं पावे पार बैठे सब हार हार मूर्ख अभिलाख ताहे ढूँढे कब पावत हैं ॥ ५ ॥ शृंगीऋषि भृंगीऋषि याज्ञवल्क्य रोमऋषि धौम्यऋषि विमलऋषि निशि दिन गुण गावत हैं। पाकऋषि कपिलऋषि

अत्रिऋषि बादशाहन ऋषभमुनि अगस्त्यमुनि अनंतर सब ध्यावत हैं ॥ शुकदेव वामदेव देवमुनि वसिष्ठमुनि मित्री सज्जन शरभंग ध्यान लावत हैं। ऐसे नाहिं पावे पार बैठे सब हार हार मूर्ख अभिलाख ताहे ढूँढे कब पावत हैं॥६॥ शारद और नारद मुनि सूत सनकादिक सब इंद्र और उपेंद्र सब ध्यानको लगावत हैं। गंगा और यमुना त्रिवेणी सरस्वती शरयू मंदाकिनी शोणभद्र धावत हैं ॥ जगन्नाथ बद्रीनाथ रामनाथ द्वारकानाथ मथुरा उज्जैन अवध काशी सब जावत हैं। ऐसे नहिं पावे पार बैठे सब हार हार मूर्ख अभिलाख ताहे ढूँढे कब पावत हैं॥७॥ दादू कबीर सूर तुलसी गुरु नानकशाह स्वामी परिणामी नित्य नया मत चलावत हैं। गोरख मछिंदर जलंदर और गोपीचंद प्रेमनाथ नेमनाथ जैनमें कहावत हैं॥ रामानंद रामानुज बिंद्रावन रामसनेही विठलजी तुकाराम दक्षिणमें पुजावत हैं। ऐसे नाहिं पावे पार बैठे सब हार हार मूर्ख अभिलाख ताहे ढूँढे कब पावत हैं॥ ८ ॥

दूसरी अष्टपदी।

कवित्त—अनाम है अकाम है अकर्म है अभर्म है अदेख है अलख है अनाद है अपार है। अरूप है अनूप है अभंग है असंग है अछूत है अभूत है अकार है नकार है॥ अरोग है अशोक है अभोग है अयोग है अदेश है अभेश है वकार है मकार है। अनंत है असंख्य है असीख है अभेख है अखाद है अजाद है असत्य है असार है ॥ १ ॥ न नाम है

न काम है न कर्म है न धर्म है न रेख है न देख है न वार है न पार है। न रूप है न रंग है न भूत है न अंग है न छूत है न संग है न मिष्ट है न खार है॥ न रोग है न शोक है न भोग है न योग है न राग है न दोष है न कार है न बार है। न आदि है न अंत है न साधु है न संत है न जीव है न जंतु है न सत्य है न सार है ॥ २ ॥ शून्य है अकाश है अखंड है प्रकाश है अभेद है अभाष है अनाश है विनाश है। भूंक है प्यास है पच्चीस है पचाश है अदेश है अदास है अवास है सुवास है॥ वर्त है उपास है वियोग है सपाश है नकाश है बकाश है उसांस है हवास है। भूत है पिशाच है हुलास है विलास है सुदास है उदास है समास है मसास है ॥ ३ ॥ न एक है न दोन है न तीन है न पचास है न वीस है न तीस है न पांच है न चार है। न रक्त है न श्वेत है न कृष्ण है न पीत है न श्याम है न नील है न रंग है न सार है ॥ न मंत्र है न यंत्र है न सुक्ख है न दुक्ख है न रात है न दिवस है न लय है न वार है। न देव है न दैत है न भूत है न प्रेत है न लेत है न देत है न जीत है न हार है॥ ४ ॥ हमेश है गणेश है महेश है मुनेश है सुरेश है विशेष है अदेश है अनाम है। सुदेश है विदेश है दुरेश है अक्लेश है सुभेष है कुभेष है सुनाम है कुनाम है॥ लाल है गुलाल है जमाल है विशाल है कठोर है कराल है सरूप है सुनाम है। काम है अकाम है कयाम है सुकाम है कलाम है सलाम है हलाल ह हराम है॥ ५ ॥ न मृच्छ है न

कच्छ है न वाम है न दक्ष है न सूर है न प्रत्थ है न बुद्ध है न व्यास है। न कृष्ण है न पृश्नि है वैद्य न है न धन्वंतर है न व्याल है न बाल है न दत्त है न दास है॥ न नरहरी न बद्री न शिबुमुनि न कपिलमुनि न हंस है न बालऋषि न अश्व है न आस है। न यज्ञऋषभ न धर्म है न मोहनी न बाउली न परशु राम राम है कलंक सर्व नाश है॥ ६ ॥ ज्ञान है विचार है अजान है अचार है अरूप है अनूप है अगूप है स्वभाव है। शब्द है स्पर्श है सुगंध है सरूप है श्वास है अलक्ष है आनंद है चुवाव है॥ हान है गिलान है प्राण है अपान है समान है वयान है उदान है उदाव है। लोक है सलोक है सरूप है सायुज्य है समीप है स्वयंभु है अहं है अभाव है॥ ७ ॥ न जीव है न जगत है न देव है न शक्त है न श्वेत है न रक्त है न कारो है न लाल है। न ज्ञान है न भक्त है न योग है न युक्त है न बंध है न मुक्त है न कर्म है न काल है॥ न ब्रह्म है न ईश है न भाल है न केश है न पाव है न शीश है न रोम है न बाल है। न हांमें है न हींमें है कहांमें है कहींमें है वहांमें है वहींमें है जहांमें है जमालमें है॥ ८ ॥

तीसरी अष्टपदी–सवैया।

रूप न रंग न रेख न भेख न नाम न गांव न जात न धर्मा।
बाप न पूत न बंधु न ताउ न मित्र न शत्रु न काल न कर्मा॥
एक न दोय न बास न बोय न मिष्ट न खार न शीत न गर्मा।
ब्रह्म न क्षत्रि न वैश्य न शूद्र न ज्ञान न ध्यान न शांत न भर्मा १

ब्रह्म न रुद्र न शक्र न विष्णु न शेष गणेश न राम रहीमा।
कृष्ण न नंद न काव्य न छंद न देव न दैत्य न काल करीमा॥
आदि न अंत न साधु न संत न जीव न जंतु न अर्जुन भीमा।
रक्त न पीत न हर्ष न भीत न हार न जीव न वाद न बीमा॥२॥
अंड न पिंड न थावर जंगम कीट पतंग न योनि न वरणा।
शून्य अकाश न अंध प्रकाश न देह न श्वास न शीश न चरणा॥
भूत न प्रेत न वैर न प्रीति न कृष्ण न श्वेत न शिष्य न शरणा।
साहु न चोर न सर्प न मोर न सांझ न भोर न जन्म न मरणा॥३॥
योग न भोग न रोग न शोक न सत्य असत्य न प्रीति न प्रेमा।
राग न रंग न त्याग न संग न कूप न गंग न लोह न हेमा॥
दर्व न सर्व न अर्व न खर्व न संयम नेम न आसन नेमा।
मुक्त न भक्त न ज्ञान न जक्त न बुद्ध न उक्त न धीरज क्षेमा॥४॥
तेज कहे तो सुमेर नहीं और आप कहे तो न आप है कर्ता।
शब्द कहे तो स्पर्श नहीं रस रूप कहे तो न गंध है कर्ता॥
सूक्षम स्थूलका मूल नहीं अरु कारण कर्म न धर्म है कर्ता।
ईश न जीव न देह न गेह न नेह न मेह न खेद है कर्ता॥५॥
कोई कहे वो शेष विराजे कोई कहे वो सागरवासी।
कोई कहे वो घट २ व्यापक कोई कहे सुरलोकनिवासी॥
कोई कहे वो घटमें राजे कोई कहे की रहे अविनाशी।
कोई कहे वो शून्यमें व्यापक कोई कहे वो मिलो चौरासी॥६॥
कोइ कहे शिव श्रेष्ठ उपावे कोई कहे कि गणेश है कर्ता।
कोई कहे रवि चंद्र है मालिक कोई कहे चतुरानन कर्ता॥

कोई कहे सब शक्तका खेल है कोई कहे कि अनाम है कर्ता।
कोई कहे जग अनादि युगादि है कोई कहे सत नाम है कर्ता७॥
बीजसे झाडके झाडसे बीजके पूतसे बापके बापसे पूता।
दिवससे रातके रातसे दिवसके सूत कपास कपासके सूता॥
कर्मसे जीवके जीवसे कर्मके भूतसे भर्मके भर्मसे भूता।
ज्ञानसे भक्तके भक्तसे ज्ञानके भूतसे देहके देहसे भूता॥ ८॥

मैंने हाथ जोडकर कहा कि जो पुरुष निष्काम, निष्क्रोध निर्लोभ, निर्मोह, निर्मद हो गया। वह कौन है! शरीरमें पांच विकार होते हैं काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, कदाचित् काम जाता रहा तो चार विकार शरीरमें रहेंगे। जड सृष्टिमें कामना नहीं है। कामना निष्काम वृत्तिको कहते हैं। जब ब्रह्मका ज्ञान होगा, तब निष्काम होगा। ब्रह्मके चौबीस अवतार होते हैं और भक्तोंको दर्शन देता है। दिन रात करता है। चौरासी लाख योनि उसका भजन करते हैं। जिसको ब्रह्म प्राप्ति होगी, उसको शांति और निष्काम पद प्राप्त होगा दूसरेको नहीं होगा। यह सुनकर महात्मा गुरु चुप हो रहे।

इति अभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद सातवें तरंगमें निराकार ब्रह्मविचार नाम आठवीं लहरी संपूर्ण।

नवीं लहरी।

बडाई ब्रह्म है।

अथ श्रीपरशुरामाय नमः। मैं दूसरे महात्माके पास

गया और सब हाल अपना कहा। तब महात्मा गुरु बोले कि ब्रह्म निराकार है। संसारमें जिसको बडाई प्राप्त हुई उसको ब्रह्म-पदवी प्राप्त होती है। और चारों वर्ण चारों आश्रम बडाईको चाहते हैं। व्यास वाल्मीकि आदिक ऋषि और सब ऋषि मुनि बडाईसे पूजे जाते हैं और उनके ग्रंथ पूजनीय हुए और जिस कविने उलटे सीधे दो चार पद बनाये अमर हो गया। बडाई वैकुंठ है। बडाई मुक्ति है। बडाई ब्रह्म है। जो कुछ कहो वह बडाई है। कलियुग वर्तमानमें तुलसीदास, सूरदास, कबीरदास, रामदास, तुकाराम, पलटुदास, जगजीवनदास ऐसे हजारों साधु महात्मा गुरु ग्रंथकी बडाईसे अमरपदवीको प्राप्त हो गये। और जबतक वह ग्रंथ जगत्‌में रहेगा तबतक अमर रहेंगे। जैसे ग्रंथ मंगलभवनके बनानेसे तू अमर रहेगा। या देवतासमान जन्म पावेगा। जैसे वाल्मीकि ऋषि तुलसीदास गुसांई हुए, जिनकी कीर्ति जगत्‌में विदित है, उनको वैकुंठ और मुक्ति प्राप्त है। मैंने हाथ जोडकर कहा कि पशुयोनि जडयोनिमें बडाईकी चाहना नहीं है। उनका संबंध ब्रह्मसे रहेगा या नहीं। बालक अज्ञान बावला आदमी बडाई नहीं चाहता उनको ब्रह्मका बोध कैसे होगा। और जिसकी बडाई गानेसे सब अमर हो जाते हैं, वह कौन है जन्म मरणका दुःख जिसकी बडाई गानेमें जाता है उसके दर्शनमें कुछ प्राप्त नहीं होगा। यह असंभव है।

ग्रंथ मंगलभवन।

दोहा—गिरा कहत सकुचात जहँ, बुद्धि ज्ञान लवलेश।

महिमा अमित अपार है, पूजत आदि गणेश ॥ १॥
गुरुपद पद्म प्रयागकी, महिमा कही न जाय।
मो सम कूर कपूतको, दीनो नाम सुनाय ॥ २ ॥
वेद न पावत पार जहँ, शेष कहत सकुचाय।
सुर माया बलवानको, मंगल भवन सुहाय ॥ ३ ॥
भजन भरोसे रामके, चार दिशा चौकोन।
त्रिभुवनमें अभिलाखको, सब विध मंगल भोन ॥४॥
गिरिजापति त्रिपुरारि शिव, सब देवनके देव।
प्रिया सहित अभिलाख हिय, वास करो तज भेव॥५
संत शिरोमणिसुभग शठ, कलियुग साधु फकीर।
मंगल भवन सराहिये, तुलसी सूर कबीर ॥ ६ ॥
जाहि न भावत मुक्त फल, जाय न भावत ज्ञान।
मंगल भवन न भावई, भावत नरक निदान ॥ ७ ॥

मगल बत्तीसी।

कवित्त–माते श्रीभवानी तीनों लोकमें बखानी महामाया महाराणी ध्वजा स्वर्ग फहरात है। पूजत हमेश तोय ब्रह्म और महेश दूर होत सब कलेश शेष वर्णत दिन रात हैं ॥ मुक्तिकी दाता विधाता माता संसारकी ऋद्धि सिद्धि आदिक तोय पूजन मिल जात हैं। कहत अभिलाख राख ध्यान चरणकमल बीच बूडत हूं अथाह थाह तूही एक दिखात है ॥ १ ॥ काहूको अधार राजकाज परिवार धन काहूको अधार नौबत निशान सुलतानी है। काहूको अधार यार दोस्त नात बात है काहूको

अधार बल पौरुष जवानी है ॥ काहूको अधार स्थान देश जन्म भूमि काहूको अधार नौकर चाकर सब खानी है। कहत अभिलाख सबके सब कुछ अधार मेरे तो तू अधार जगदंबा महाराणी है ॥ २ ॥ मोहे तो पुकारत करत आरत विलंब भई तोय तो उबारत मात देर नहीं लागत है। दीनकी दाता विधाता सृष्टिकर्ता संसारकी पूजत तो चरणकमल कोटन अघ भागत है ॥ मोसम आधीन छीन मनमलीन दीन देख्यो भर नैन तिहूं लोकमें तू छाजत है। चरणनमें ध्यान रहे शरणनमें मान रहे माता अभिलाखकी विधाता मुक्त मांगत है ॥ ३ ॥ दशरथके बारे भये नंदके दुलारे आप आपी भये रामचंद्र आपी घनश्याम है। आपी करत अवधराज आपी भये व्रजराज अवधपुरी वृन्दावन दोनों सुरधाम है ॥ आपी भये गोवर्धन तोडो आप शंकरधनु आपी भये राधा कृष्ण आपी सिया राम है । दुष्टनके दहनहार संतनके प्राणअधार शोभित अभिलाख हृदय सुंदर दो नाम है ॥ ४ ॥ कोटन ब्रह्मांड रोम रोममें विराजत है कोटन वैकुंठ नरके कोटन सुरधाम है। कोटन कैलास ब्रह्मलोक गोलोक कोटन आकाश पाताल पुरी धाम है ॥ कोटन रवि चंद्र इंद्र नारद सनकादिक कोटन कोटन महादेव कोटन दशरथ नंदग्राम है। कहत अभिलाख वेद शास्तर पुराण कोटन कोटन अवतार एक दूसरो न राम है ॥ ५ ॥ शारद लजाय शेष शरमित भये गाय वेद खोजत बनाय शास्त्र शोधत है जाहेको । गावत गणेश जाय रटत है महेश ध्यान लावत मुनीश ब्रह्मा ढूंढत हैं

जाहेको ॥ ज्ञानी विज्ञानी महादानी गुणखानी आदि नारद सनकादि भेद पावत नहीं जाहेको । जाके नहीं आदि अंत पावत नहीं साधु संत घामड अभिलाख मूढ खोजत है ताहेको ॥ ६ ॥ उदरमें सम्हाऱ्यो जलबूंदसे सरूप सुभग गोदमें खिलावत मात पिता सुख पावत है । आई तरुणाई सुखदाई अनेक भांत कोटन विलास ऋद्धि सिद्धि दरसावत है ॥ चौथे पण आय सब भुलाऱ्यो व्यवहार भोग दारा सुत बन्धु आदि जलको तरसावत है । सोचत अभिलाष काह रीति ये पुराणी है मिथ्या पिछतात तोहे आवागमन भावत है ॥ ७ ॥ काहूको अधार राजकाज परिवार धन काहूको उपास नित्य काहूको वासी है । काहूको योग यज्ञ जप तप स्नान ध्यान काहूको लोभ मोह काहू विषयवासी है ॥ काहूको मुक्ति भक्त पूरण वैकुंठ धाम काहूको शोकदंड काहू नरकवासी है । काहू अनुकूल होत काहू प्रतिकूल होत वाकी अभिलाख ताहे पठवत चौरासी है ॥ ८ ॥ योगी अतीत परम हंस जटाधारी दंडी आखंडी ध्यान रात दिन लगावे । ध्रुव प्रहलाद आदि याज्ञवल्क्य भरद्वाज वालमीकि विश्वामित्र तेरी गत न पावे ॥ शारद गणेश शेष रटत हैं महेश जाहे नारद सनकादि आदि खोजत रह जावे । देख्यो अभिलाख सहत प्रेमवश गुपाल लाल व्रजकी गवार ताहे गलिनमें नचावे ॥ ९ ॥ यमला और अर्जुनके शापके मिटायवेको बांधत नंदरान हात ओखलमें गुपालके । धन्य वो माटी जो चाटी है राधारमण धन्य वो साटी जो मारी व्रजलालके ॥

धन्य वो ग्राम जहां करते विश्राम श्याम धन्य व्रत धाम धन्य ग्वाल और बालके। कहत अभिलाख तिहूं लोकमें धन्य है रटत दिन रात जो नाम नंदलालके ॥ १० ॥ रावणको मारिके बिभीषणको राज दियो कंसको निपात उग्रसेनको बढायो है। बालिको मार सुग्रीव राजकाज दियो कौरवोंको नशाय पांडव सुतनको बसायो है॥ निशिचर संहार सकल मुनिनको उबार कियो हरिणाकुश मार प्रहलादको बचायो है। कहत अभिलाख ये कौन बान करुणानिधान एकको बिगाड और एकको बनायो है ॥ ११ ॥ गीधको तार्‍यो दशकंधर संग लडिवेमें शबरीको तार्‍यो जूंठे बेरके खियायेते। विदुरको तार्‍यो साग भातके खिलायवेमें सुदामाको तार्‍यो मूठी तंदुलके चबायेते ॥ गोपिनको तार्‍यो प्रेम प्रीतके लगायवेमें कुबरीको तार्‍यो तनक चंदन चर्चायेते। कहते अभिलाख ऐसे चतुर हो करुणानिधान तार्‍यो तो सबको परंतु कुछ न कुछ पायेते ॥ १२ ॥ पालनको मात पिता भोजनको देत सुधा शोभा अनेक भांत कोटन अराम है। नौकर अरु चाकर हितकारी व्योहारी अनेकन स्त्री परिवार पुत्र राजकाज धाम है॥ वाजी गजराज साज अभिमत विस्तार सहित और अनेक भांत पूरण सब काम हैं। आंधर अभिलाख तोहे सूझत नहीं सेत धाम ऐसो प्रतिपाल पर न जानत कौन राम है ॥ १३ ॥ बालरूप खेलत गमायो लडकाईमें तरुणाई कमाई हेतु अंध होय बितायो। कौडी हेतु

लवडी हुए पालन परिवार कियो चोरी और चमारी अप-
राध सब उठायो ॥ अंतके समय जब प्राण त्याग होन लगे
देख्यो भर नैन कोई काममें न आयो । रही अभिलाख भगवं-
तके भजनकी सोचत पछतात जन्म मिथ्या मैं गमायो ॥१४॥
आदर न होय संसारमें निरादर हो मंदिर न होय विविध भांतिसे
दुखारी हो । भूषण न होय और वस्त्रसे न वस्त्र होय भोजन न
होय रोग शोककी वेआरी हो ॥ पालक न होय बालककी कौन
कहे स्त्री न होय मित्र शत्रु हितकारी हो । एते असयमपर भज-
नकी अभिलाख नहीं संयमपर कौन भांति रामभक्त प्यारी हो
॥ १५ ॥ रोगत शरीर ग्रसित कफवातसे औषधिको देत वैद्य
दही भात वासी है । कंठबीच फोडा पीडा अधिक होत ऊपरसे
बार बार आवत छींक खांसी है ॥ निर्धन निरूप निर्वंशके निरंध्र
है नाना अपराध नित्य नंग अरु दासी है । एते दुख जीव
अभिलाखसे भोग करत जपत एक रामनाम होत मनो फांसी है
॥१६॥ योगी भोगी कर्मनाशी शिवशाक्तके उपासी जटाधारी
संन्यासी महाज्ञानी गुणरासी हैं । चारों धामके निवासी तीर्थरा-
जके प्रवासी अवधवासी ब्रजवासी सेवत कल्पकल्प काशी है ॥
साठों दण्डके उपासी आठों यामके विलासी ऋद्धि सिद्धि आदि
दासी अघनाशी उदासी है । एते कर्मके उपासी अभिलाख नरक-
वासी राम कहत होत फांसी अंत भरमत चौरासी है ॥१७॥
सागरको थाह आये पुरी सातों घूमि आये तीर्थराजहू नहाये
भ्रमं आये चार धामको । जटा योजनभर बढावे भस्म सेरों

तन लगाये शंख रातों दिन बजाये नहीं बराये सेतधामको ॥ ब्राह्मणको जिमाये दान कोटन नित लुटाये गीता भागवत सुनाये पूज्य आये सुर विरामको। एते दुःख सब उठाये कोऊ काम नहिं आये एक नाम जो न गाये अभिलाख सिया रामको ॥ १८॥ हाथको बढाय दान पुण्य यथाशक्ति कियो पांवको बढाय घूम आयो सब धामको। पेटको बढाय कियो कोटन पकवान भोग नाकको बढाय श्वास खींचो सुरधामको॥ कानको बढाय सुनी अनहदकी शब्द तान आंखको बढाय कियो दरशन अभिरामको। एते सब बढाय भयो पूरण अभिलाख नहीं जीभको बढाय नहीं रटो सिया रामको ॥ १९ ॥ सागर अथाहसे उबाऱ्यो तोय दीनानाथ घाटपर लगायो तोय अवघट सुहात है। शूकर अरु कूकरके जोग जन्म तेरो भयो मानुष न दीन ताय पूंछत नहीं बात है॥ मेवा पकवान भोग विविध भांति पूरण सब आंधर असोज झूंठ अखाद्य क्यों खात है। सोचत अभिलाख हानि लाभको विचार नहीं मूतसे सपूत फिर कपूत होन जात है ॥२०॥ साहिबके हजूर जब विचारेंगे कसूर दण्ड पावेंगे जरूर पाप शाहद बनि आवेंगे। देवेंगे गवाहि पकड मारेंगे सिपाहि तहां आवेगी तबाहि सजा कामिल फर्मावेंगे॥ हाथी घोडा निशान स्त्री परिवार द्रव्य यमके इजलासमें न कोऊ काम आवेंगे। घामड अभिलाख चेत सीता राम याद राख माटीके भवन अंत माटी मिल जावेंगे ॥ २१ ॥ काहूको भरोसो तीर्थ व्रतकी कमाईमें काहूको भरोसो दान पुण्य अरु स्नानका।

काहूको भरोसो सेवा श्रृंगार प्रेम भावमें काहूको भरोसो सत-संग ब्रह्म ज्ञानका ॥ काहूको भरोसो रामनामके रटनमें काहूको भरोसो योगदंड निर्वाणका । कहत अभिलाख यह भरोसो मोह कोऊ नहीं मोह तो भरोसो एक केवल भगवानका ॥ २२ ॥ गजकी पुकारमें अवार तनक लायो नहीं द्रौपदीकी लाज राख्यो सभामें सुनत हैं। भारतमें बचायो अंड पंछी गजघंट तरे उदरमें बचायो प्राण परीछतको कहत हैं ॥ व्रजको बचायो उठाय गोव-र्धन पहाड भक्तनहित आप विविध रूप धरत रहत हैं । कहत अभिलाख मोहे आवत प्रतीत नहीं मेरे तो लाज प्राण दोऊ जान चहत हैं ॥ २३ ॥ रावणको तार्‍यो महिरावणको उबार्‍यो तार्‍यो कुंभकर्ण सहसबाहुके तरैया हो। कंसको तार्‍यो जरासं-धको उबार्‍यो तार्‍यो शिशुपाल दंतवक्त्रके तरैया हो ॥ कौरों-को तार्‍यो पांडो सुतनको उबार्‍यो तार्‍यो हिरणाक्ष हिरण-कश्यपके तरैया हो । एते दुष्ट तार्‍यो अभिलाखको न तार्‍यो तारो ए दुष्टको तो जाने हम तरैया हो ॥२४ ॥ संतनहित मीन कमठ नरसिंह वराह भयो मार्‍यो सब दुष्ट सुयश त्रिभुवनमें छायो है । संतनहित राजकाज अवधिकी समाज छोड लीनो वनवास जाय लंकपर नशायो है ॥ संतनहित नंदलाल गोपिनसों खेल कियो संतनहित नाग नाथ पर्वतको उठायो है । संतनहित विविध भांति पूरण अवतार लियो पापी अभिलाखको असंत क्यों बनायो है ॥ २५ ॥ परशत रज चरणकमल गौतम त्रिय गई धाम धोवत निषादके विषाद रह गयो नहीं । तोर्‍यो धन

महाघोर त्रिभुवनमें भयो शोर देखत परशुरामके क्रोध कुछ भयो नहीं॥ पालत सुग्रीव प्राण वालि काल कमलापति मार्‍यो लंकेश दुःख मुनेशके रह्यो नहीं। हैं हो दयालु करत सबको सब विधि निहाल तरसत अभिलाख ताय अबतक कुछ कह्यो नहीं ॥ २६ ॥ परीक्षतको बचायो माताके उदर बीच ब्रजको बचायो उठाय गोवर्धन पहाडीको। गजकी पुकारमें अबार तनक लायो नहीं जरत विषम ज्वालाते बचायो बालक मंजारीको॥ ऐसे महाराज बीच सभा राख लियो लाज खींच दुश्शासन हार्‍यो द्रौपदीकी सारीको। कहत अभिलाख ऐसे कोमल चित्त होकर दयालु सुनत नहीं कौन भांति आरत ये दुखारीको ॥२७॥ पूजत रैदास भयो सधन भयो पावन परम जातको जुलाहो ताहे पदवी कबीरकी। जेते कपि भालु हते रावण संग्रामबीच तेते सब लियो अमरपदवी शुनासीरकी॥ विषयका अहारी निषाद भयो त्रिपुरारि गणिका कीर सहत तारी बडाई भई अहीरकी। विनीत अभिलाख हाथ जोडकर सुनो करुणानिधि कीजे सनाथ मोहे बारी है फकीरकी ॥ २८ ॥ अवधिमें न रैहों काशी पुरी छोड दीहों तीर्थराजहू न जैहों मथुरा स्वपनमें न रहि हों। जहांतक अस्थान देव देवनके जगत् बीच तहांतक जान प्रतिबिंबको बचै हों ॥ जेते योगी अतीत परमहंस जटाधारी औरों अनेक भेष दर्शनको न जैहों। कारि हों नहीं कोई काम एक नाम सीताराम पूरण अभिलाख सहत घरहीमें कहि हों ॥२९॥ वेदके पढैयाको अढैया भर अन्न नहींआल्हके गवैया-

को रुपैया रोज आवत हैं। साधु और संत मरत क्षुधावंत भूखनसे विश्वाके हेतु विविध व्यंजन बनवावत हैं ॥ जननी और जनक दोऊ सेवक भये कुटुंबके ब्राह्मण अरु कामधेनु देखत दूरि आवत हैं। भरतकी कहानी कहत ज्ञानी होय सूर कूर देखो अभिलाख राज कलियुगके आवत हैं ॥३०॥ नामकी बडाई करत शारद सकुचाई गिरा बापुरी लजाई शेष वर्णत अष्ट याम हैं। निगम नीति कहे सुनाई वेद चार भांति गाई ब्रह्म ढूँढन सरमाई नहीं पाये ठौर ठाम हैं ॥ अद्भुत अपार अमित सूक्ष्म विस्तार आदि अंत वे विचार सगुन निर्गुण बहु नाम हैं। भाषत अभिलाख वेद शास्तर पुराण साख नाम तो अनंत रामनाम परम नाम है ॥ ३१ ॥ वेदके पढानेमें बुढाने ब्रह्मा अनेक शास्तर समझानेमें लजाने अहिराजा हैं। देखत पुराण भये पुरातन पंडित प्रवीण ज्योतिषके गिरा दिशा भाखत बेकाजा हैं ॥ गीता और भक्तमाल वालमीक तुलसीकृत वैद्यक और कोकसार देखत कविराजा हैं। भाषत अभिलाष बलिहारी दो अक्षरकी रकार जो राजा तो मकार महाराजा हैं ॥ ३२ ॥

अष्टपदी।

रामका नाम निष्काम होय रटन कर दया और धर्मसे काम राखो। विषयकी वास संतोषसे नाश कर सहित परिवार रस प्रेम चाखो ॥ साधु अरु विप्रको देख दंडवत कर यथासे शक्तितक मान राखो। सहित परिवार ये भांत हरनाम भज भ्रम छूट जाय

अभिलाष भाखो ॥ १ ॥ सहित परिवार घर बैठ हरनाम भज गुरुके चरणमें राख ध्यानो। विषयसे भाग रहो धर्मसे ध्यान रहो बैठ सतसंग कुछ शीख ज्ञानो ॥ साधु अरु विप्रको देख दंडवत कर वेदकी राह कर कारखानो। कहत अभिलाख ये भांति परिवारमें भ्रम भवजाल सब झूठ जानो ॥ २ ॥ ज्ञानका देश विज्ञानको राज दे भजनकी सभा तब जीव जागे। नाम अखंडकी कटक तैयार कर सहित परिवार मद मोद भागे ॥ दया और धर्मको सचो सरदार कर काम औ क्रोध तब संग त्यागे। कहत अभिलाख प्रारब्ध अनुकूल विन रामका नाम यश जहर लागे ॥ ३ ॥ पुरीमें वास कर धामकी आश कर दूर हो जाय सब पाप तनका। घाटपर जायकर गंग न्हायकर प्रेमसे दर्श कर साधुजनका ॥ संतकी सभामें बैठ सतसंग कर झूठ सब जान व्यवहार धनका। ध्यान अखंड कर दूर पाखंड कर छोड मद मोह अभिलाख मनका ॥ ४ ॥ झूठ संसार व्यवहार सब झूठ है झूठ परिवार धन धाम झूठा। झूठ आचार वीचार सब झूठ है झूठ सब कर्म सब काम झूठा ॥ झूठ आकाश पाताल सब झूठ है झूठ दिन रात युग याम झूठा। कहत अभिलाख एक राम तो सत्य है और सब काम सब नाम झूठा ॥ ५ ॥ भजनके जोरसे रचत प्रपंच विधि भजनके जोर शिव भये दाता। भजनके जोर रवि चंद्रमें तेज है भजनके जोरसे होत ज्ञाता ॥ भजनके जोर अहिराज गजराज है भजनके जोरसे काल खाता। भजनके जोरसे मुक्ति मिल जात है भज-

नके जोर अभिलाष माता ॥ ६ ॥ ज्ञानसे होत वैराग्य अनुराग सब ज्ञानसे होत है मौनधारी । ज्ञानसे होत जप योग आचार सब ज्ञानसे होत है ब्रह्मचारी ॥ ज्ञानसे जीवको होत कल्याण है ज्ञानसे होत है वर्णधारी । चेत अभिलाष अज्ञान क्यौं होत है ज्ञानको शीख नहिं चाट पारी ॥ ७ ॥ रामके नामसे काम रख बावरे और व्यवहार नहीं काम अइये । राज परिवार धन धाम गज वाज सब जीवके संग नहिं कोउ जइये ॥ काम अरु क्रोध मद लोभ अहंकारको मित्र मत जान नहीं दुःख पइये । रटत अभिलाख दिन रात हरनाम जो मुक्त गत सहित निज धाम पइये ॥ ८ ॥

दोहा–रामनाम महिमा अमित, को कर सकै बखान ।
शारद शेष महेश विधि, करत निरंतर गान ॥ १ ॥
अवधपुरी सरयू नदी, सर्ग द्वार सुघाट ।
राजा राम नरेश हैं, सब विधि पूरण थाट ॥ २ ॥
तहां वास अभिलाखको, गढ उज्जैन मुकाम ।
कार्तिक मास एकादशी, देवउठानी नाम ॥ ३ ॥
संवत् छत्तिस मध्यमें, सोम दिवसके अंत ।
संपूरण मंगल भवन, पाहि पाहि भगवंत ॥ ४ ॥
मंगल भवन बनायकर, विनवत हूं कर जोर ।
होय प्रसन्न वर दीजिये, श्रुतिसिद्धांत निचोर ॥ ५ ॥

कदाचित् ब्रह्म कुछ न होता और किसीको दर्शन न देता तो ऐसी बडाई कौन गाता । लाखों भक्तका उपकार ब्रह्म

प्रत्यक्ष कर चुका और करता है। संदीपनगुरुका मरा हुआ पुत्र जीता करके दिया। सुदामाजी दरिद्रीको चार पदार्थ दिये। गजको ग्राहसे छुडाया। शबरीका बेर जूंठा खाया। विदुरका साग भात खाया। नंद यशोदाको माता पिता बनाया। अजामीलको मुक्ति दिया। छीपाकी छांय छवाया। सेन बह्लल सेवा किया। धना जाटकी गाय चराया। खेत जमाया। मलूकदासका माल ढोया। अहल्याको अप्सरा बनाया। द्रौपदीकी लाज रखना ऐसी ब्रह्मकी महिमा भूलकर बडाई आदिकको ब्रह्म कहना अज्ञान और मूर्खपना है यह सुनकर महात्मा गुरु चुप हो रहे।

इति अभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद सातवें तरंगमें निराकारब्रह्मविचार नाम नवीं लहरी एवं सातवां तरंग सम्पूर्ण।

आठवां तरंग प्रारंभ।

मिथ्या ब्रह्म है।

अथ श्रीनारदाय नमः। मैं दूसरे महात्माके पास गया और सब हाल अपना कहा। तब महात्मा गुरु बोले कि अज्ञानके सत्संगसे तुमको ऐसा निरर्थक परिश्रम हुआ और पैंतीस महात्माकी सेवा करना पडा। ब्रह्मका अर्थ भ्रम है जिस पदार्थपर निश्चय नहीं होता वह भ्रम है। सृष्टिका कर्ता आजतक किसीके निश्चयमें नहीं आया, इस कारण उसपर सबको

भ्रम है। ये संसार सर्व सृष्टि और पंचतत्व अनादि हैं, इसका सिद्धांत वेद नहीं कह सकता। सृष्टिका प्रमाण तथा विस्तार शास्त्र पुराण कोई नहीं कह सकता। अनंत द्वीप तथा खंड जो संसारमें हैं कोई नहीं जानता। जितने द्वीप और खंड हैं सबमें दूसरा मत दूसरी विद्या दूसरा ब्रह्म दूसरा वेद है। हिंदुस्थान जिसको प्रसिद्ध कहते हैं वह चार धामके भीतर है। इस द्वीपमें पहिले राजा हिंदू थे, सूर्यवंशी चंद्रवंशी क्षत्री राज्य करते रहे। इनके राज्यके पहिले सब मनुष्य पशुसमान रहते थे। विद्याका व्यवहार नहीं था। बहुत काल पीछे जिसकी संख्या कहना निरर्थक है। कोई पुरुषको अपने सत्संगसे वैराग्य हुआ सर्व संपदाको छोड़कर एकांत रहने लगा। एकांत रहनेसे कुछ विवेक विचार ज्ञान उत्पन्न हुआ और शरीरमें जो श्वास प्रधान है उसका भेद देखा तो समाधिका ज्ञान हुआ। पिंडके ज्ञानसे ब्रह्मांडका अनुभव हुआ। उत्पत्तिका गुण दोष संपूर्ण ज्ञानमें आ गया। संसारी मूर्खोंको बहुत कुछ चमत्कार दिखाया, हजारों आदमी चेला हो गये, कुछ अक्षर शब्द उन लोगोंने बनाया, छंद चौपाइ दोहा श्लोक मंत्र गायत्री कवित्त कुंडली सब बनाया, उसका देववाणी नाम रक्खा। बुद्धिसे और युक्तिसे संसारी लोगोंको करामात और चमत्कार दिखाया। जब वे लोक अज्ञानमें चलने लगे तब उनको जुदा २ कर्म बताया, चार वर्ण ब्राह्मण, क्षत्रिय, वेश्य, शूद्र बनाया, रामकृष्ण जो उस वक्त राजा रहे उनको अवतार

बनाया, अपनी सेवा पूजा सबमें प्रधान रक्खा। अपना गुरु नाम रक्खा, उनको शिष्यपदवी दिया, कोई शिष्यने ब्रह्म को पूंछा तौ उसको निर्गुण निराकार निरंजन बताया, जिसमें वह सारी उमर ढूँढकर मर जावे पता न पावे। ब्रह्मकी प्रशंसा अपनी सेवामें प्रकट किया। संसारके दिखलाने वास्ते जलशयन, चौराशी धूनी, शूलशय्या, झूला, ऊर्ध्वबाहु, ठाडेसरी, मौनी, फलाहारी अनेक तपस्या किया। अठारह पुराणोंमें रामकृष्णको ब्रह्म गाया। उनके बनाये हुए स्थान देवलको पुरी धाम बनाया, साधु ब्राह्मण गौको पूजनीय बनाया जैसा चाहा वैसा किया। जब राजा उनकी सेवा करता था, तब सब जगत् उनको सेवा पूजा करता था। और जो शास्त्र वे बनाते थे उसपर राजा प्रजा सब चलते थे उस वक्त मुसलमान अंग्रेजी इस द्वीपमें नहीं थे। समुद्रपार कोई नहीं जाता था, अगिनबोट जहाज पहिले नहीं था, अब प्रकट हुए। जो लोग मांसाहारी थे उनको शाक्तमत बनाया। जो नहीं थे उनको विष्णु शिव बनाया, सर्व व्यवहारका मंत्रशास्त्र बना दिया मल मूत्रका मंत्र बनाया, सर्व संसारको अपने शास्त्रमें कैद किया, गुप्त इंद्रजाल अपना संसारी लोकोंसे छिपाया जैसे नाच जगत्को नचाया सबने नाचा, लाखों पुरुष ब्रह्म निराकारकी खोजनामें राज परिवार स्त्री धन आदिक छोडकर वन (अरण्य) में मर गये। जो महात्मा विद्यमान थे अपना मत चलाया, ब्रह्म-चर्य, वानप्रस्थ, संन्यास, परमहंस, गुसांई, बैरागी, नाथ, सेवडा,

जंगम हजारों नाम उस भेषका रक्खा। पीछे विद्याका ऐसा अधिकार हुआ कि लाखों ग्रंथ आचार्योंके बनाये हुए मौजूद हैं वह कहांतक इसका विस्तार किया जावे जिसको कुछभी ज्ञान होगा। वह इस सिध्दांतको जान लेवेगा। और ब्रह्मका भ्रम स्वप्नमेंभी नहीं करेगा जगत् व्यवहार अनादि जानकर शांत हो जावेगा। गौ मारना भगवान्का हुक्म नहीं है। सर्व द्वीपमें मुसलमान खाते हैं। चोर, डाकू, कसाई परद्रव्य परस्त्री ग्रहण करनेवाले चारों युगोंमें रहते हैं। कुछ बुरा नहीं होता। जबसे मुसलमान इस टापूमें आये तबसे आचार्योंका पाखंड प्रगट होता जाता है। तीर्थयात्रा, मूर्तिपूजन यावत् हठयोग करना कम हो गया। हिंदू लोक ताजियादारी कबरपूजा उरस सब करने लगे। लाखों क्रिस्तान हो गये। लाखों धर्म छोडकर दूसरे द्वीपको चले गये। साधु सर्व भेषके गृहस्थ हो गये। लाखों दादूपंथी नोकरी करते हैं। नाथ गुसांई खेती मजरी करके पेट भरते हैं। बैरागी देनलेन दुकानदारी करते हैं। चारों वर्ण अपना धर्म छोडकर अंग्रेजी फारसी पढते हैं। रेल जहाजपर रोटी खाते हैं। कोई झाड वनस्पती बीज विना उत्पन्न नहीं होता। कोई जीव मैथुन विना पैदा नहीं होता। यावत् व्यवहार सृष्टिका जो होता है सबका कारण जुदा दरशाता है। मेंडुककी मिट्टी पानीमें डाले तो बहुत हो जावे। संसारका कारज कुछ ब्रह्मके संबंध नहीं है। गंगा बारह बरसमें नदी हो जावेगी। देवका पत्थर सेर पंसेरीके काम आवेगा।

अठारह पुराणोंमें पसारी पुड़ियां बांधेंगे। जो काम पहिले परमार्थ रहा, अब स्वार्थ हो गया। गुरु शिष्य धनवान् ढूंढते हैं। ज्ञानवान्से कुछ प्रयोजन नहीं। ब्राह्मण क्षत्री वैश्य चोरी चमारी करते हैं। चमडा शराब हड्डीकी दुकान रखते हैं। रेलमें गौकी चरबी डालते हैं। मुसलमान सूअरका गोस्त पकाते हैं। अस्पतालमें सर्वजात एक पात्रमें शराब पीता है। नमक शक्करमें हड्डी खाते हैं। चरबीका दीपदान ठाकुरके पास होता है। छापेके ग्रंथकी पूजा होती है। अब कौन धर्म हिंदूका बाकी रहा। जो कुछ झूठा सच्चा दर्शाता है, थोडे कालमें सब जाता रहेगा। दिल्लीके आलमगीर औरंगजेब बादशाहने सब देवतोंको फोड डाला। मालवा मारवाडमें हजारोंको मुसलमान कर डाला। पीछे वे हिंदू हो गये। कोई देवने उसको दंड नहीं दिया अंग्रेज सरकार जो मेला यात्रा चाहता है, बंद कर देता है कोई देव दंड नहीं देता। मुसलमानोंके मतमें बाबा आदमको सात हजार बरस हुआ। मोहमंदको तेरह सौ नव बरस हुआ। इसके पहिले कुछ नहीं था। अंग्रेजके मतमें ईसाको अठारह सौ इक्यानवे बरस हुआ पहिले कुछ नहीं था। हिंदूके यहां त्रेतालिस लाख वीस हजार वरसका चारों युग होता है ऐसे हजार चौयुगी जब व्यतीत होता है, तब ब्रह्माका एक दिन होता है। ये सब व्यासकी बनावट है। सात हजार बरसके पहिलेका कुछ अनुभव जगत्में नहीं है। पुराणका मत जगत्के प्रमाणमें ऐसा है कि, साठ पलकी एक घडी होती

है। और सात घडीका एक दिन होता है और तीस वारको मास कहते हैं। बारह मासको साल कहते हैं। इस सालके प्रमाणसे चारलाख बत्तीसहजार बरसका कलियुग, उसका दूना आठ लाख चौंसठ हजार बरसका द्वापर, उसका त्रिगुण बारह लाख छानवे हजार बरसका त्रेता, उसका चौगुणा सत्रा लाख अट्ठाईस हजार बरसका सत्ययुग, ये सब चारोंयुग, त्रेतालीस लाख वीस हजार बरस हुआ। इसको एक कल्प कहते हैं। ऐसे नव सौ चवऱ्यानवे कल्पका एक दिन ब्रह्माका होता है, उसमें चौदह मन्वंतर होते हैं। चार अरब उन्तीस करोड चालीस लाख अस्सी हजार बरसका दिन होता है आठ अरब अट्ठावन करोड इक्यासी लाख साठ हजार बरसका दिन रात हुआ। दो खरब सत्तावन अरब चौंसठ करोड अड-तालीस लाख बरसका मास हुआ। तेईस खरब इक्यानवे अरब ऱ्यहत्तर करोड छहत्तर लाख बरसका साल होता है। इस हिसाबसे ब्रह्माकी आयुष्य सौ बरसकी है। उसका प्रमाण तीस नील इक्यानवे खरब ऱ्यहत्तर अरब छहत्तर करोड बरस ब्रह्मा जीता है। पीछे मर जाता है इसी प्रमाण शून्य रहता है। पीछे दूसरा ब्रह्मा पैदा होताहै वोह सारा जगत् बनाताहै और नित्य प्रलय जब ब्रह्मा सोता है तब होती है। प्रात जब जागता है, दूसरा बनाता है। ब्रह्माकी आयुष्य पचास बरसकी हो चुकी। इक्यावन बरसमें पहिलादिन है तेरा घडी दिन चढा उसमें छः मन्वंतर हो गये। सातवां व्यतीत होता है। तीस करोड

सरसठ लाख वीस हजार बरसका एक मन्वंतर होता है। वैवस्वत नाम मन्वंतर सातवां व्यतीत होता है। सब मन्वंतरके नाम ये हैं—१ स्वायंभुव, २ स्वारोचिष, ३ उत्तम, ४ तामस, ५ रैवत, ६ चाक्षुष, ७ वैवस्वत, ८ सावर्णि, ९ दक्षसावर्णि, १० ब्रह्मसावर्णि, ११ धर्मसावर्णि, १२ रुद्रसावर्णि, १३ देवसावर्णि, १४ इंद्रसावर्णि, साल हालतक बारह करोड पांच लाख बत्तीस हजार नव सौ नवासी बरस वैवस्वत मन्वंतरमें हुआ। अठारह करोड एकसठ लाख सत्यासी हजार ग्यारह बरस बाकी हैं। और नित्य प्रलयमें एक अरब छानवें करोड आठ लाख बावन हजार नव सौ नवासी बरस हुआ। बाकी जो नित्य प्रलयमें हैं, उसका प्रमाण दो अरब तेतीस करोड बत्तीस लाख सत्ताईस हजार ग्यारह बरस रहा। एक मन्वंतर इकहत्तर चौयुगीका होता है उसमें एक इंद्र राज्य करके नष्ट हो जाता है। भविष्यमें राजा नल इंद्र होंगे और हनुमान्‌जी ब्रह्मा होवेंगे। विष्णु महादेवके दिनका प्रमाण इससे बहुत जादा है और ब्रह्माका दिन इससेभी जादा है। यह पुराणोंका मत है विचार करके देखो तो कुछ ज्ञान ध्यानमें नहीं आता; जो पाप परमेश्वरकी आज्ञासे नहीं होता, वह करनेवाला झाड मूलसे नष्ट हो जाना चाहिये। सो कुछ नहीं होता, धर्मात्माके अवलाद नहीं होती। कसाईके आठ आठ लडके होते हैं। जो पुण्यकर्ता है, सन्निपातमें बहुत काल दुःखा रहता है। जो पाप करता है, सौ बरस जीता

रहकर हँसते बोलते शरीर छोड देता है। गौ विष्ठा खाती है। चमार भंगी भागवत पढते हैं। धर्मशास्त्र शरा आईन कानून सबका अर्थ एक है। आजतक किसीको ब्रह्म मिला नहीं। कदाचित् मिलता तो नाश न होता। और चोरके मुकामका पता मिल जाता है। ब्रह्मका स्थान क्यौं प्रगट नहीं होता। ये सब भ्रम हैं जीवत्पर्यंत आत्मा शरीरका संबंध है। मरने उपरांत दोनों मिथ्या हैं। जैसे चिराग और उसकी प्रकाश शुभाशुभ दोनों कर्म निरर्थक हैं। विचार करो, चालीस कुंडलियां ब्रह्म मिथ्याकी देखो।

कुंडलियां–मिथ्या ब्रह्म।

निराकार निर्गुण अलख व्यापक ज्ञानस्वरूप। रजगुण तमगुण सत्वगुण अद्भुत अगम अनूप॥ अद्भुत अगम अनूप निरंतर निशि दिन ध्याऊं। कारण कारज कर्म तिहूंको माथ नमाऊं॥ कहे दास अभिलाख आपको कर्ता मानो। निर्गुण अलख अनादि ब्रह्मको मिथ्या जानो॥ १॥ नभ भीतर वायु रहे तामें पावक होय। ताते जल पृथ्वी भयो पांच तत्त्व इक होय॥ पांचतत्व इक होय ताहेकी देह बतावें। पांचों पांच सुभाव शुभाशुभ कर्म करावें॥ कहे दास अभिलाख पांचमें पांच समानो। निर्गुण अलख अनादि ब्रह्मको मिथ्या जानो॥ २॥ मायाके स्पर्शसे उपजे पंच ज्ञान। त्वचा घ्राण श्रवण गिरा चक्षू पंच प्रमान॥ चक्षू पंच प्रमाण पंचको पंच बतावे। हाथ पांव मुख लिंग गुदा ये करम कहावे॥ कहे दास अभिलाख चार अंतस पहचानो।

निर्गुण अलख अनादि ब्रह्मको मिथ्या जानो ॥ ३ ॥ शब्द स्पर्श रूपसे उपजे रस और गंध । काम क्रोध मद लोभको मोह बतावत अंध ॥ मोह बतावत अंध बूझ सपन्यो नहिं आवे । निद्रा मैथुन क्षुधा चराचर सबको भावे ॥ कहे दास अभिलाख प्राण पांचोंको जानो । निर्गुण अलख अनादि ब्रह्मको मिथ्या जानो ॥४॥ कारण कारज कर्मको कर्ता कहिये मूल । मिट्टी घडा कुम्हारमें चाक भयो अस्थूल ॥ चाक भयो अस्थूल सदा चक्करमें रहहीं । आगे करे विचार कर्मको कर्ता कहहीं ॥ कहे दास अभिलाख आपसे जुदा न जानो । निर्गुण अलख अनादि ब्रह्मको मिथ्या जानो ॥५॥ एक तत्त्वके पांच गुण पांचों पांच पचीस । जीव अविनाशी एक है ताहे कहत जगदीश ॥ ताहे कहत जगदीश तिसके संग विराजे । घटे बढे नहीं मरे सदा आनंदमें राजे ॥ कहे दास अभिलाख उसीको भरम समानो । निर्गुण अलख अनादि ब्रह्मको मिथ्या जानो ॥ ६ ॥ राजासे प्रजा भये प्रजासे भय राज । बाल तरुण वृद्धपर भये तीनहीं काज ॥ भये तीनही काज रोग सब एकी देखा । निद्रा मैथुन क्षुधा हर्ष भये एकी लेखा ॥ कहे दास अभिलाख ज्ञान विन कर्म कमानो । निर्गुण अलख अनादि ब्रह्मको मिथ्या जानो ॥ ७ ॥ बीजरूप भगवानने लिंगरूप धर मीन । शंखरूप भग मर्दकर श्वासा प्रगट कीन ॥ श्वासा प्रकट कीन चार अंतस् अनुमानो । साम यजुर ऋग्वेद अथर्वण चार प्रधानो ॥ कहे दास अभिलाख प्रथम

अवतार बखानो । निर्गुण अलख अनादि ब्रह्मको मिथ्या जानो ॥ ८ ॥ कच्छरूप भगवानने धऱ्यो पिंडका रूप । चौदा इंद्री प्रगट भई ताको रतन अनूप ॥ ताको रतन अनूप उदरको सागर कहहीं । इंद्री रतन बनाय शुभाशुभ कारज करहीं ॥ कहे दास अभिलाख द्वितीय अवतार बखानो । निर्गुण अलख अनादि ब्रह्मको मिथ्या जानो ॥ ९ ॥ देह रूप भगवानने फाड गर्भको देत । हिरण्याक्षते कहत है मल मूत्रके खेत ॥ मल मूत्रके खेत देहको बाहर लावे । ताहे कहत वाराह रूप भगवतको गावे ॥ कहे दास अभिलाख तृतीय अवतार बखानो । निर्गुण अलख अनादि ब्रह्मको मिथ्या जानो ॥ १० ॥ शिशू रूप भगवानने धऱ्यो सिंहनर रूप । जंघ फोड भयो प्रगट सुंदर परम अनूप ॥ सुंदर परम अनूप मात हरिणाकुश जाने । चढ छातीपर दूध पिये शंका नहिं माने ॥ कहे दास अभिलाख जीव प्रहलाद बखानो । निर्गुण अलख अनादि ब्रह्मको मिथ्या जानो ॥ ११ ॥ बालकरूपी ब्रह्मको वामन रूप बखान । अपने मीठे वचनसे छलत बडे बलवान ॥ छलत बडे बलवान वोही राजा बलि गावें । हर पैठो पाताल बुद्ध बालक लै जावें ॥ कहे दास अभिलाख पंचम अवतार बखानो । निर्गुण अलख अनादि ब्रह्मको मिथ्या जानो ॥ १२ ॥ ब्रह्मचर्यकी देहको परशुराम तू जान । भोगरूप संसारको सहसबाहु पहिचान ॥ सहसबाहु पहिचान हजारों कर्म छुडावे । माताका संग त्याग

पिता संग विद्या पावे ॥ कहे दास अभिलाख छठा अवतार बखानो । निर्गुण अलख अनादि ब्रह्मको मिथ्या जानो ॥ १३ ॥ गृहस्थावस्था देहको ताय कहत है राम । दश इंद्रीके भोगसे दशरथसुत भये नाम ॥ दशरथसुत भये नाम बाल रावणको माऱ्यो । मद और क्रोधको मार सिया संग वन पग धाऱ्यो ॥ कहे दास अभिलाख अवधको अवध बखानो । निर्गुण अलख अनादि ब्रह्मको मिथ्या जानो ॥ १४ ॥ वानप्रस्थ शरीरको कहे कृष्ण अवतार । दंतवक्र शिशुपालको छिनमें डाऱ्यो मार ॥ छिनमें डाऱ्यो मार काम अरु क्रोध नसावे । मोहरूप है कंस ताहेको मार गिरावे ॥ कहे दास अभिलाख भोगमें जोग कमानो । निर्गुण अलख अनादि ब्रह्मको मिथ्या जानो ॥१५॥ संन्यासीके रूपको कहे बुद्ध अवतार । हाथ पांवसे रहित होय धऱ्यो मौनको धार ॥ धऱ्यो मौनको धार जातको धरम नसायो । सबी जात एक जात भात घर घरको खायो ॥ कहे दास अभिलाख नवां अवतार बखानो । निर्गुण अलख अनादि ब्रह्मको मिथ्या जानो ॥१६ ॥ अंत अवस्थाके मिले निष्कंलक होय जात । अकलंकी इस देहको त्याग मुक्त मिल जात ॥ त्याग मुक्त मिल जात राजकूलको आयो । देह भसम हो जात ताहे प्रलय कहवायो ॥ कहे दास अभिलाख दशम अवतार बखानो । निर्गुण अलख अनादि ब्रह्मको मिथ्या जानो ॥ १७ ॥ चार अवस्था आदिके सतयुग है प्रधान । तीन अवस्था पादके त्रेता ताय बखान ॥ त्रेता ताय

बखान द्वापर दो पद गावें । अंत अवस्था एक ताहे कलियुग कहवावें ॥ कहे दास अभिलाख यही चारों युग मानो । निर्गुण अलख अनादि ब्रह्मको मिथ्या जानो ॥ १८ ॥ शैव विष्णु शाक्त तीनों मत परमान । स्वर्ग नरक अपवर्गको चाहत सकल जहान ॥ चाहत सकल जहान अनेकन जाल बनावे । ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र होय करम कमावे ॥ कहे दास अभिलाख भेष सब उद्यम मानो । निर्गुण अलख अनादि ब्रह्मको मिथ्या जानो ॥ १९ ॥ चार वेद षट शास्त्र और अठरा पुरान । पढ पढ सब पंडित भयो आयो एक न ज्ञान ॥ आयो एक न ज्ञान यज्ञ तर्पण सब करहीं । ब्रह्म भोज कुलश्राद्ध गया सब कर कर मरहीं ॥ कहे दास अभिलाख देव पितर सनमानो । निर्गुण अलख अनादि ब्रह्मको मिथ्या जानो ॥ २० ॥ सुत दारा भाई बहिन मात पिता परवार । फूफा मामा भानजा छूट जाय ससुरार ॥ छूट जाय ससुरार गुरूको बाप बनावै । आपन पुरखा छोड औरका शिष्य कहावै ॥ कहे दास अभिलाख नहीं कुछ हान गिलानो । निर्गुण अलख अनादि ब्रह्मको मिथ्या जानो ॥ २१ ॥ रामनाथ दरशन करे बद्रीनाथको जाय । जगन्नाथके भातको शरभंगी हो जाय ॥ शरभंगी हो जाय द्वारिका छाप लगावे । पितृकर्मसे जाय यज्ञके काम न आवे ॥ कहे दास अभिलाख धाम चारोंमें छानो । निर्गुण अलख अनादि ब्रह्मको मिथ्या जानो ॥ २२ ॥ माया मथुरा कांची अवध द्वारिका जाय । काशी करवट ले मरें गड उज्जैन नहाय ॥ गड उज्जैन नहाय पुरी सातोंमें वासे । छोड्यो

राज समाज धर्म कुलके सब नासे ॥ कहे दास अभिलाख अंतमें वही ठिकानो। निर्गुण अलख अनादि ब्रह्मको मिथ्या जानो ॥ २३ ॥ नाथ गुसाईं सेवडा योगी जंगम दास। वैरागी रागी जती वन वन फिरें उदास ॥ वन वन फिरें उदास रात दिन ध्यान लगावें। सारी उमर गवांय अंत योंही मर जावें ॥ कहे दास अभिलाख जगत सब भरम भुलानो। निर्गुण अलख अनादि ब्रह्मको मिथ्या जानो ॥ २४ ॥ भगवां वस्त्र रंगके कंठी तिलक लगाय। भसम जटा कुंडल कडा जरे द्वारिका जाय ॥ जरे द्वारिका जाय जनेऊ फूंकके तापे। घर घर मांगे भीक एक छिन चित्त न धापे ॥ कहे दास अभिलाख जातको धर्म नसानो। निर्गुण अलख अनादि ब्रह्मको मिथ्या जानो ॥२५॥ भूत भवानी देवता भैरों पवनकुमार। काली दुर्गा यक्षिणी कर्णपिशाची चार ॥ कर्णपिशाची चार मौक्कल जिन्न बुलावें। अंतकालमें जाय मौत कुत्तेकी पावें ॥ कहे दास अभिलाख जगतको ठगत सयानो। निर्गुण अलख अनादि ब्रह्मको मिथ्या जानो ॥२६॥ ज्योतिषविद्या देखिके कहे गुतका हाल। लगन मुहूरत वार तिथि योग नक्षत्र संभाल ॥ योग नक्षत्र संभाल ग्रहोंको भाव बतावें। सुता रांड हो जाय ज्योतिषी नाम धरावें ॥ कहे दास अभिलाख करम गत कोइ न जानो। निर्गुण अलख अनादि ब्रह्मको मिथ्या जानो ॥२७॥ कल्प कीमियां धातु रस गुटका कज्जल वंग। बूटी जडी जहानकी राखत अपने संग ॥ राखत अपने संग धातुको नित्य जलावें। घर घर मांगे भीक अंत

चोरी कर जावें ॥ कहे दास अभिलाख धातुको भेद न जानो । निर्गुण अलख अनादि ब्रह्मको मिथ्या जानो ॥ २८ ॥ इडा पिंगला सुषुमना नाडी जानों तीन । पांच तत्वको साधकर काम करत परवीन ॥ काम करत परवीन चंद्रको अचर बतावें । सूरजको चर कहें ज्ञान बिन नाक दबावें ॥ कहे दास अभिलाख मूर्ख होवंत बखानो । निर्गुण अलख अनादि ब्रह्मको मिथ्या जानो ॥ २९ ॥ आसा सारंग गूजरी मारू फाग मलार । कल्याणी अरु भैरवी दीपक राग केदार ॥ दीपक राग केदार नादको आद बतावें। कसबी और कव्वाल भांड घर घर सब गावें ॥ कहे दास अभिलाख आदि सनकादि न जानो । निर्गुण अलख अनादि ब्रह्मको मिथ्या जानो ॥ ३० ॥ नाडी देखें हाथकी कहैं अंगके रोग। गर्मी सर्दी वात पित्त ताते भयो वियोग ॥ ताते भयो वियोग अनेक दवा बतावें । काढा गोली तिला तेल मात्रा बनावें ॥ कहे दास अभिलाख मौतकी दवा न जानो । निर्गुण अलख अनादि ब्रह्मको मिथ्या जानो ॥ ३१ ॥ मुसलमान रोजा रहें सुन्नत करें नमाज । गौ मार कलमा पढें बुतसे करे लिहाज ॥ बुतसे करें लिहाज ताहेको काफर गावें । हसन हुसेनका रूप सालमें सदा बनावें ॥ कहे दास अभिलाख गौरका तौर न जानो । निर्गुण अलख अनादि ब्रह्मको मिथ्या जानो ॥३२॥ ईशाई सब कहत हैं ईसा बडे प्रधान। बाप नहीं फांसी मिली गाय सूरको खान ॥ गाय सूरको खान हगें फिर कुछ नहिं धोवें। सबी जात इक जात साथ कुत्तेके सोवें ॥ कहे दास अभिलाख धरमको नाम न जानो ।

निर्गुण अलख अनादि ब्रह्मको मिथ्या जानो ॥ ३३ ॥ जन्म भयो संसारमें प्रगट्यो पुत्र सुजान । नाच रंग आनंद सब दान देत यजमान ॥ दान देत यजमान चहूं दिश मंगल छावे । राजा रंक अमीर अंतकी खबर न पावे ॥ कहे दास अभिलाख मृत्युके हाथ विकानो । निर्गुण अलख अनादि ब्रह्मको मिथ्या जानो ॥ ३४ ॥ रामरामके कहेते मरा मरा होय जाय । मरामराके कहेते राम राम होय जाय ॥ राम राम होय जाय उलटके अर्थ लगावें । घामड सब संसार ताहे जप जप मर जावें ॥ कहे दास अभिलाख रामको मरा बखानो । निर्गुण अलख अनादि ब्रह्मको मिथ्या जानो ॥ ३५ ॥ वेद कहें सर्वज्ञ है भक्त कहे वो एक । दर्शन होय करतारको जो हठ राखे टेक ॥ जो हठ राखे टेक धनाको गाय चरावे । ब्रह्मा विष्णु महेश ताहेको अंत न पावे ॥ कहे दास अभिलाख झूंठ दोनोंको मानो । निर्गुण अलख अनादि ब्रह्मको मिथ्या जानो ॥ ३६ ॥ जती सेवडा धोंडिया मुह बांधे दिन रात । नागादेव बनायिके जूंठा घर घर खात ॥ जूंठा घर घर खात कभी अस्नान न करहीं । पालें चीलर जुवां काम भंगीका करहीं ॥ कहे दास अभिलाख जतीको जाल बखानो । निर्गुण अलख अनादि ब्रह्मको मिथ्या जानो ॥ ३७ ॥ मत अघोर सबसे अधिक सर्व ऊपर है मान । मल मूत्र भोजन करें मुर्दा जिन्दा खान ॥ मुर्दा जिन्दा खान ग्यान सपन्यों नहिं आवे । निशि-दिन पियें शराब अडंगा घर घर लावें ॥ कहे दास अभिलाख

नरकका कीडा जानो। निर्गुण अलख अनादि ब्रह्मको मिथ्या जानो ॥ ३८ ॥ नाक दबावें ज्ञान विना श्वासा लेय चढाय। धोती पोती गजकर्ण नौली करम कराय ॥ नौली कर्म कराय पांच मुद्राको देखें। आसन पद्म लगाय छैउ चक्करको सोधें ॥ कहे दास अभिलाख समाधी समचित जानो। निर्गुण अलख अनादि ब्रह्मको मिथ्या जानो ॥ ३९ ॥ ज्ञान योग वैराग्य सब भक्ती प्रेम विचार। दया धर्म जप तप क्रिया पूजा वरत अचार ॥ पूजा वरत अचार करें सब ध्यान लगावें। निद्रा मैथुन क्षुधा हर्ष भय नित्य सतावें ॥ कहे दास अभिलाख करम सब मिथ्या जानो। निर्गुण अलख अनादि ब्रह्मको मिथ्या जानो ॥ ४० ॥ कुंडलियां चालीस कह्यो मिथ्या ब्रह्म बनाय। नास्तिक मत जानकर मत कोई रिसियाय ॥ मत कोई रिसियाय कथाको अर्थ कहानी। गावें सुनें गवांर ताहेको सच्ची जानी ॥ कहे दास अभिलाख झूंठ सब जगत बखानो। निर्गुण अलख अनादि ब्रह्मको मिथ्या जानो ॥ ४१ ॥ जगत अनादि युगादि है कर्ता है संयोग। ब्रह्म निरंजन शून्य है निद्रा मैथुन भोग ॥ निद्रा मैथुन भोग सदा जन्मे और मरे। पूरा नहीं अभिलाख श्वान होय घर घर फिरे ॥ कहे दास अभिलाख करम सब मिथ्या मानो। निर्गुण अलख अनादि ब्रह्मको मिथ्या जानो ॥ ४२ ॥

मैंने हाथ जोडकर कहा कि आपका ज्ञान नास्तिक मत है। और मैं कबूल करूंगा, परंतु जब शंका बोध हो जावे।

पहिले इन चालीस प्रश्नका उत्तर होना चाहिये। इसका विस्तार ग्रंथके साथ है देखो।

प्रश्न चालीस।

१ कर्ता जगत्का कोई है या नहीं अगर है तो कहां है और क्या नाम और क्या स्वरूप प्रत्यक्ष होना चाहिये।

२ जगत् संसार दुनिया ब्रह्मांड किसको कहते हैं इसकी हद्द है या नहीं किसने बनाया और कब बनाया क्यों कर बनाया।

३ आकाश कुछ पदार्थ है कहांतक है इसकी हद्दपर क्या है।

४ वायु क्या पदार्थ है कहांसे आती है कहां जाती है सदा कहां रहती है।

५ अग्नि किससे पैदा हुई ऐसा तेज उसमें क्योंकर हुआ पत्थर लकडीमें क्यों हुई।

६ जल क्योंकर बना पृथ्वीके ऊपर है या नीचे सदा कम होता है या जादा वर्षा समुद्र नदी कूएमें है।

७ पृथिवी किसने बनाई हद्द है या नहीं किसके ऊपर है स्थिर है या चर है।

८ सूर्य क्या चीज है चर है या स्थिर जड है या चेतन रातको क्यों नहीं दरशाता।

९ चंद्रमा क्या तत्व है कम सिवाय क्यों होता है चर है या स्थिर जड है या चेतन।

१० तारा मंडल छोटे बडे क्यौं हैं कितने हैं चर हैं या स्थिर ध्रुव क्यौं नहीं चलता ।

११ बिजलीमें चमक गर्ज तडप जलदी क्या है जमीनपर क्या गिरता है मुकाम कहां है ।

१२ धनुष पांच रंगका वर्षा ऋतुमें सदा भी निकलता है क्या है संपूर्ण भेदका विस्तार होना चाहिये ।

१३ ग्रहण सूर्य चंद्रमें क्या है ज्योतिषमें क्यौं प्रगट हो जाता है अमावस पूनमको क्यौं होता है ।

१४ मंडल जो सूर्य चंद्रमें होता है क्या है सदा क्यौं नहीं दरशाता ।

१५ आकाशमें मार्ग जो दरशाता है वह क्या है बहुत करिके दो रास्ता दरशाते हैं ।

१६ प्रातःसंध्याका लाल बादल या अरुण सूर्य क्यौं दरशाता है संपूर्ण व्यवस्था होना चाहिये ।

१७ मेघ क्या काम करते हैं उनकी उत्पत्ति स्थिति नाश क्यौं कर होती है ।

१८ ओस रातको कहांसे पडती है ठंडमें जादा क्यौं पडती है ।

१९ कोहिरा प्रातको ठंडमें क्यौं पडता है वर्षामेंभी पडता है ।

२० वर्षाऋतुमें अनेक जानवर पडते हैं वीरबहूटी मेंडक मछली छोटे जानवर बहुत ।

२१ गार या पत्थर कहांसे पडता है कौन गिराता है।

२२ तारा रातको टूटता है वह क्या है।

२३ गर्मी सर्दी बरसात होनेका कारण क्या है।

२४ दिन रात क्यों होता है कौन करता है।

२५ भूकंप जो कभी कभी होता है कौन करता है।

२६ नींद क्यौं आती है चेतन कहां जाता है स्वप्न देखना किसका धर्म है।

२७ क्षुधा तृषा क्यौं होती है शांति किसको होती है।

२८ मैथुन कर्मकी संपूर्ण सामर्थ्य कहांसे आती है और बीज कहां रहता है।

२९ ज्ञान बुद्धि किसको है।

३० जन्म मरण किसको होता है जीव क्या पदार्थ है।

३१ पाप पुण्य किस प्रकारसे लगता है। कसाई चोर डाकू विषयी सदा रहते हैं।

३२ भाग अभाग क्या चीज है कर्म आधीन है या लक्ष्य आधीन है।

३३ जादू करामत यंत्र मंत्र प्रयोग आदिक जो होते हैं सच्चे हैं या झूठे हैं।

३४ अक्षर क्या पदार्थ है किसने बनाया किस आधारपर।

३५ गुप्त भेद नाम अर्थ आदिक प्रगट हो सक्ता है या नहीं।

३६ चौरासी लाख परमाण क्यौं सिद्ध हुआ किस ग्रंथमें संपूर्ण विस्तार है।

३७ दैत्य भूत प्रेत जिन्द राक्षस चुडैल डाकिनी यक्षिणी परी पिशाच आदिक सच्चे हैं या झूठे हैं ।

३८ हनुमान् भैरों पंढरीनाथ महादेव गणेश देवी आदिक सत्य हैं कहां रहते हैं ।

३९ जातिका धर्म सच्चा है या झूंठा, ब्राह्मण चमारमें क्या फरक है ।

४० शरीर और जीव और हम तीनोंका प्रत्यक्ष ज्ञान होना चाहिये ।

चार वेद छः शास्त्र अठारह पुराण जो व्यास भगवान्‌ने कहे उनका संपूर्ण पढनेवाला और समझनेवाला अब कोई नहीं है । संस्कृत विद्या देववानी है । हिंदुस्थान तुर्कस्थान लंडन तीनों मुल्कमें ये बोली नहीं है । जगन्नाथ धाममें जातिका धर्म क्यों छोडते हैं । कामरू कामिक्षामें देवी तीन रोज रजस्वला रहती है । हिंगलाजके ब्रह्मयोनीसे पानी निकलता है । ज्वालामुखीमें लौ निकलती है । आलमगीर बादशाहने उसपर लोहेका तवा जडाया था फोडकर निकलती रही । भर्तरी गोपीचंद और बुखारेका बादशाह और अनेक राजा महाराजा धनपरिवारका सुख छोडकर जंगलमें चले गये । कदाचित् उन सबको कुछ अनुभव प्राप्त न होता तो घरको पलट आते । रामचंद्रने समुद्रमें सेतु बांधा । श्रीकृष्णने गोवर्धन पर्वतको उठाया । हिंदुस्थानमें इस प्रकारसे भ्रम हुआ दूसरे द्वीपमें किस प्रकारसे भ्रम हुआ वहभी कहना चाहिये । ज्योतिष विद्यावाले सबका भविष्य कह देते हैं ।

बंगालेमें सांपका मंत्र ऐसा प्रसिद्ध है कि बहुत दिन पीछे मुर्दा जिलाते हैं । जादूसे आदमी जानवर हो जाता है । चौरासी लाख सृष्टिका मैंही ऐसा कहना मूर्खपना है । जिसके एक नाम है वह झूंठा नहीं हो सकता । ब्रह्मके असंख्य नाम हैं वह क्योंकर झूंठा होगा । यह सुनकर महात्मा गुरु चुप हो रहे ।

इति अभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद मिथ्याब्रह्मविचार नाम आठवां तरंग संपूर्ण ॥ ८ ॥

नौवां तरंग प्रारंभ ।

पहली लहरी ।

नेत्र ब्रह्म है ।

अथ श्रीव्यासदेवाय नमः । मैं दूसरे महात्माके पास गया और सब हाल अपना कहा तब महात्मा गुरु बोले कि ब्रह्म नेत्रमें रहता है । पूतली छोटी मूर्तिको कहते हैं । मूर्ति सब शरीरकी नक़ल है और दृष्टिसे पुरुष प्रकृति उत्पन्न हुई । पुरुष प्रकृतिसे सृष्टि उत्पन्न हुई । ऐसे सिद्धांत अनेक महात्माका है । वर्तमानमें बहुत महात्मा नेत्रसे ज्योतिका दर्शन करते हैं । उसको अपना इष्टदेव जानते हैं । दर्शन करनेकी क्रिया गुरु उपदेश प्रमाण बहुत हैं । चारों द्वार जो ब्रह्मांडमें हैं उनको इस रीतिसे बंद करे, दोनों अंगुष्ठ दोनों कानमें, दोनों तर्जनी दोनों नेत्रोंमें, दोनों मध्यमा दोनों नाकमें, दोनों अनामिका ऊपरके ओंठपर, दोनों कनिष्ठिका दोनों नीचेके ओंठपर ऐसा दबावे कि

कानसे शब्द सुने नहीं आंखसे रूप देखे नहीं, नाक मुँहसे श्वास निकले नहीं। पहिले श्वास पूरक कर लेवे, उस समय पांच प्रकारका रंग झिलमिल देख पडता है। पीछे ज्योति दिख पडती है। वह ज्योति स्वरूपके दर्शन समान है। इसके शिवाय जिसके नेत्र नहीं उसको किसीका दर्शन नहीं हो सकता। तीनों लोक चौदह भुवन उसको मिथ्या है। सर्व प्रकारका साधन जो साधक ज्ञानी करते हैं उसका फल नेत्रसे प्राप्त होता है। विद्या मंत्र आदिक नेत्रके आधीन हैं शरीरमध्ये अनंत पदार्थ हैं। परंतु नेत्रकी बराबरी कोई नहीं कर सकता। विवेक विचार प्राणायाम समाधि मानसी पूजा ध्यान लय चेतन आदिक जो ज्ञानके घर हैं वे सब नेत्रके आधीन हैं। सूरदास भगवान्का दर्शन पाकर अंधे हो गये और अपने ब्रह्मको पूर्ण ब्रह्ममें मिला दिया। कौवा पक्षी एकरंग होता है। विष्ठा व्यंजनको एक जानता है। अद्वैत मत है मौतसे नहीं मरता, इस कारण उसके एक आंख तथा एक पूतली है और सर्व जीवोंके दो पूतली हैं। जिसके एक नेत्र है वह दोनों नेत्रवालेके बराबर देख सकता है। यह आश्चर्यकी बात है। ज्योतिःस्वरूप साकार प्रत्यक्ष नेत्रमें है, जो चैतन्यकरके ढूंढेगा सो पावेगा। मैंने हाथ जोड-कर कहा कि नेत्र ज्ञानइंद्रिय है। रूप विषयसे पैदा हुई। विषय तत्वसे प्रगट है। पंचतत्त्वकी शरीर पहिले होना चाहिये पीछे नेत्र हो सकता है। जिसके शरीर नहीं उसके नेत्र नहीं। जो जीव अंधा होता है उसमेंभी ब्रह्मका अनुभव होता है। जड

जीवमें नेत्र नहीं है। उसमेंभी परमेश्वरका अंश है। शरीरमध्ये नेत्र प्रधान जरूर है। परंतु ब्रह्म उसको कहना उचित नहीं होता। कदाचित नेत्रमें ब्रह्म होता तो चारों धाम सातों पुरी और तीर्थ गयामें कोई नहीं जाता। जंगल पहाडमें कंद मूल फल फूल खाकर कोई भजन न करता। चौरासी प्रकारकी तपस्या हठयोग कोई न करता। नेत्र ज्ञानइंद्रिय है। उसमें ब्रह्म देखना लडकोंको समझना है। यह सुनकर महात्मा गुरु चुप हो रहे।

इति अभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद नौवें तरंगमें नेत्र ब्रह्मविचार नाम पहली लहरी संपूर्ण।

दूसरी लहरी।

मन ब्रह्म है।

अथ श्रीचंद्राय नमः। मैं दूसरे महात्माके पास गया और सब हाल अपना कहा। तब महात्मा गुरु बोले कि अहं ब्रह्म है। अहंका रूप मन है सर्व शरीरका धनी है। जैसा वह चाहता है वैसा शरीर करता है। यावत् व्यवहार शरीरका मनके आधीन है। और मन चालीस पदार्थसे संयुक्त होता तथा चालीस सेर और आठ पंसेरीका मन होता है। पांच तत्व पांच स्वभाव पांच प्राण वायु अंतरिंद्रिय पांच ज्ञानइंद्रिय पांच कर्मइंद्रिय पांच अवस्था पांच पसेरी पांच सेरको कहते हैं। जैसे ब्रह्म सृष्टिकी रचना करता है वैसे मन स्वप्न अवस्थामें सर्व

रचना करके देखता है। यह दृष्टांत एकदेशी नहीं है सर्वदेशी है और मन शरीरमें राजासमान है । उसके दो स्त्रियें हैं। औलाद बहुत हैं। उसका यंत्र मानसी पूजनकी लहरीमें मौजूद है देखो। बहुत आचार्योंका मत ऐसा है कि मनरूपी ब्रह्मको भ्रमरूपी निद्रा होनेसे जगत् भासता है। जब भ्रमरूपी निद्रा जाती रही तब स्वप्नरूपी जगत् अदृष्ट हो जावे। "मनके हारे हार है, मनके जीते जीत। परब्रह्मको पाहिये, मनहीकी परतीत॥" सर्व व्यवहार पाप पुण्यका मनके आधीन है । कदाचित् मन शुद्ध हो जावे तो शरीर शुद्ध हो जावे । जो मन अशुद्ध रहेगा तो शरीरभी अशुद्ध रहेगा। शरीर जड है उसको मान नहीं है, मान अपमान मनको है। सत्संग आदिकसे जो मन स्थिर हो जाता है वह जीवन्मुक्त हो जाता है। ज्ञान ध्यान पूजा पाठ भक्ति प्रेम सब मनके आधीन हैं। स्वप्नमें स्त्री बनाकर भोग करता है। क्षणमात्रमें चौदह भुवन बनाता है। मैंने हाथ जोड कर कहा कि, अंतःकरणमें पांच इंद्रिय हैं। उसमें एक मन है। चित्त बुद्धि अहंकार मनसमान है। स्वप्नमें जो रचना होती है वह जाग्रत्का अधिष्ठान है। सुषुप्तिमें पांचों अंतःकरण नाश हो जाते हैं। पंच ज्ञान इंद्रिय मारग जो जीवको ज्ञान रहता है वही स्वप्नमें भासता है। अच्छे अच्छे ज्ञानी मनको मारते हैं। दुःखसुखको मूल मन है। ब्रह्मकी औलाद जो प्रवृत्तिसे उत्पन्न हुई पापरूप दुःखदाई है। ब्रह्मकी औलाद पापी नहीं होना चाहिये। ब्रह्मके शरीर नहीं है तो दो स्त्री होना असंभव है। मन शुभ अशुभ दोनों

में रहता है। ब्रह्म विषय नहीं करता और अद्वैत है। मन अनंत है यह सुनकर महात्मा गुरु चुप हो रहे।

इति अभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद नौवें तरंगमें अहंब्रह्मविचार नाम दूसरी लहरी संपूर्ण।

तीसरी लहरी।

लिंग भग ब्रह्म है।

अथ श्रीरुद्राय नमः। मैं दूसरे महात्माके पास गया और सब हाल अपना कहा। तब महात्मा गुरु बोले कि लिंग ब्रह्म अहं ब्रह्म है। चौरासी लाख जीव लिंगसे उत्पन्न होते हैं और अनादिसे लिंग भगकी पूजा प्रधान है उसको संस्कृतमें शिव शक्ति कहते हैं। लिंगपुराण जो व्यासने बनाया वह देखो। शिवभी लिंग है। लिंगकी महिमा ब्रह्माने नहीं पाया। कोई पुरुषलिंग है कोई स्त्रीलिंग है। सारा जगत् लिंग दर्शाता है। लिंगकी पूजा चौबीस अवतारने किया फिर उसको ब्रह्म होनेमें क्या संशय? राम कृष्ण परशुराम जिसकी पूजा करें उसको ब्रह्म नहीं कहना मूर्खका काम है। लिंग ब्रह्म भग माया उसपर वह मोहित रहता है। जब दोनोंका संयोग हुआ सृष्टि उत्पन्न हुई। मैंने हाथ जोडकर कहा कि लिंग शब्द स्वतः नहीं है। पहिले शरीरका अनुमान होगा तब लिंगका अनुमान होगा। जब शरीर नहीं तब लिंग नहीं। वेदशास्त्रमें जो लिंग प्रधान है वह लिंग शिवका है।

शिव भगवान् सामर्थ्यवान् थे उनके लिंगकी पूजा जगत्में प्रसिद्ध है और लिंगपुराणमें शिवके लिंगकी महिमा व्यासने गाई है। शरीरमें पांच कर्म इंद्रियें हैं उसमें लिंगभी है और सृष्टिकी उत्पत्ति लिंग भगसे नहीं है बीजसे है। जिसकी धातु नष्ट हो जाती है उसके औलाद नहीं होती। लिंगको ब्रह्म कहना मूर्खका काम है। यह सुनकर महात्मा गुरु चुप हो रहे।

इति अभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद नौवें तरंगमें अहंब्रह्मविचार नाम तीसरी लहरी संपूर्ण ।



चौथी लहरी ।

अंड ब्रह्म है ।

अथ श्रीशंकराय नमः। मैं दूसरे महात्माके पास गया और सब हाल अपना कहा। तब महात्मा गुरु बोले कि अंड ब्रह्म है। रति माया है। संस्कृत विद्यामें उसको विष्णु लक्ष्मी कहते हैं। जिस महात्माने लिंग ब्रह्म कहा वह चूक है। देखो जानवरका अंड संसारी लोग निकाल डालते हैं। जानवर नपुंसक हो जाता है। उसका लिंग बना रहता है, परंतु कुछ काम नहीं आता और जिस स्त्रीका ऋतु बंद हो जाता है वह बांझ हो जाती है। भगमें कुछ सामर्थ्य नहीं। इस जगत्को ब्रह्मांड कहते हैं अथवा ब्रह्मका अंड है। उस प्रमाण मूर्ति शालिग्रामकी बनाया, विष्णु लक्ष्मी देवता नाम प्रकट किया। शरीरमें थोडी चोट अंडपर लगे प्राण निकल

जाता है। पुराणमें ऐसा लिखा है कि गोलाकार शक्तिपर शेषजी है उसपर जगत् है। उसका अर्थ ऐसा है कि, अंडके ऊपर लिंग उसपर शरीर है। मेरे ज्ञानमें अंड ब्रह्म जरूर है। मैंने हाथ जोडकर कहा कि शरीरमें अनेक अंग हैं उसमें अंड-भी है जबतक शरीर नहीं तबतक अंडका अनुभव नहीं हो सकता। जानवरका अंड आदमी खाता है। जनाना बाइला आदमी अंड और लिंग सब कटवाता है, मरता नहीं, जीता रहता है। अंड सबके पास है, ब्रह्म सबके पास नहीं है। अंडके रूप है, ब्रह्म अरूप है। अंड शरीरके आधीन है ब्रह्म स्वतः है। ब्रह्मांडका अर्थ वह अंड है। जिसमें पक्षी पशु बच्चा देते हैं। आजतक कोई अधिकारीने लिंग तथा अंडकी पूजा नहीं किया और भजनभी अंडका कोई नहीं गाता। ऐसा कैसा ब्रह्म है? यह सुनकर महात्मा गुरु चुप हो रहे।

इति अभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद नौवें तरंगमें अहं-ब्रह्मविचार नाम चौथी लहरी सम्पूर्ण।

पांचवीं लहरी।

मैथुन ब्रह्म है।

अथ श्रीहरिहराय नमः। मैं दूसरे महात्माके पास गया और सब हाल अपना कहा। तब महात्मा गुरु बोले कि, मैथुन ब्रह्म है। आदिमें ब्रह्म निराकार अपनी इच्छासे एक स्त्री बनाया

और अपना रूप पुरुष बनाकर उसके संग भोग किया। जब मैथुनका स्वाद पाया तब उस स्त्रीको चौरासी लाख रूप बनाया। और आपभी उसके समान पुरुष बन मैथुन किया। वह औलाद चौरासी लाख जगत्में हैं। और संपूर्ण सृष्टि मैथुनसे उत्पन्न हुई। और अबभी सब जगत् मैथुनसे पैदा होता है। सृष्टिके सिवाय और जो पदार्थ जगत्में है सब सिद्ध महात्माओंने बनाया। जैसे वर्तमानमें रेल तार आगपेटी अंजन कलबाजा आदिक अनेक प्रगट हुए हैं। वेदमें ऐसा प्रमाण है कि यह जगत् मैथुनसृष्टि है। और जो सृष्टिका कर्ता होगा वह ब्रह्म होगा। यह सिद्धांत अचल है। मैंने हाथ जोडकर कहा कि अब वह ब्रह्म कहां है और पांच तत्वको मैथुनसृष्टि कहना अज्ञानका काम है। सूर्य चंद्रमा तारा बिजली बादल आदिक किस विद्वान्ने बनाया। ब्रह्मका जन्म मरण नहीं होता। सृष्टि उसकी औलाद होकर क्यों मर जाती है। बापकी संपूर्ण प्रकृति औलादमें होती है। चौरासी लाख ब्रह्मपुत्र हैं तो नरकमें कौन जाता है। ऊष्मज योनि जो इक्कीस लाख प्रसिद्ध हैं मैथुनसृष्टि नहीं है। जैसे गूलर फलका कीडा और साधु संत महात्मा मैथुनवृत्तिको त्याग देते हैं। शास्त्रमें मैथुनकर्म राक्षसी कर्म है। यतिकर्मसे वैकुंठ मिलता है। मैथुन करके अच्छे विचारवान् स्नान कर डालते हैं। मैथुन ब्रह्म कहना अभक्ष्य खाना बराबर है। यह सुनकर महात्मा गुरु चुप हो रहे।

इति आभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद नौवें तरंगमें अहंब्रह्मविचार नाम पांचवीं लहरी संपूर्ण।

छठी लहरी।

बीज ब्रह्म है।

अथ श्रीपार्वतीपतये नमः। मैं दूसरे महात्माके पास गया और सब हाल अपना कहा। तब महात्मा गुरु बोले कि बीज ब्रह्म है। शरीर झाड है। बीजरूपी ब्रह्म जब एकसे अनेक होता है जगत् हो जाताहै। जब अनेकसे एक हो जाता तब बीज हो जाताहै और जो जो गुण ब्रह्ममें हैं वही गुण बीजमें संपूर्ण दरशाते हैं। देखो सबमें है किसीमें नहीं है १। दूसरे सबसे बडा और सबसे छोटा २। तीसरे अवस्था और प्रकृति नहीं ३। चौथे अनंत नाम और अनंत गुण ४। पांचवें इच्छारूपी और दूसरेकी इच्छासे प्रगट होता है ५। छठवें निराकार व निष्काम है ६। सातवें घटघटव्यापक ७। आठवें आनंदस्वरूप ८। ये आठ गुण ब्रह्म और बीज दोनोंमें समान हैं और बीज शब्दको उलटा करके देखो तो जीव होता है और जीव आत्माको परमात्मा कहते हैं। वेदमें ब्रह्म बीजरूपी लिखा है और सृष्टिका कर्ता बीज दर्शाता है। मैंने हाथ जोडकर कहा कि एक बीजमें एक झाड होता है। एक झाडमें करोडों बीज होते हैं और साल दरसाल होता है। इस सिद्धांतमें झाड बीजसे बडा हुआ। अंत दोनोंका कोई नहीं कह सकता। जो बीज उत्पन्न होता है उसका नाश हो जाता है। जगत्के उत्पन्न होनेसे ब्रह्मका नाश नहीं होता। और बीजरूपी ब्रह्मकी पूजा भजन ध्यान किसी गुरुने उपदेश नहीं किया और

कोई अधिकारी पूजता हुआ नहीं दर्शाया और किसीको आज-तक कुछ फल प्राप्त नहीं हुआ । प्रत्यक्ष इसका स्वरूप मल मूत्रसमान है । स्वप्न अवस्थामें कदाचित् गिर जाता है तो जिज्ञासु उसी समय स्नान कर डालते हैं। तुमको कुछ अनुभव हुआ हो तो उपदेश कीजिये मैं साधन करूंगा प्रत्यक्ष अनुभव होना चाहिये । बीजको ब्रह्म कहना अनर्थ है यह सुनकर महात्मा गुरु चुप हो रहे ।

इति अभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद नौवें तरंगमें अहं-ब्रह्मविचार नाम छठी लहरी संपूर्ण ।

सातवीं लहरी ।

विषयानंद ब्रह्म है ।

अथ महादेवाय नमः । मैं दूसरे महात्माके पास गया और सब हाल अपना कहा । तब महात्मा गुरु बोले कि विष-यानंद ब्रह्मका नाम है । जो विषयके आनंदको भोगता है वह ब्रह्म है। जो साधन करिके उस आनंदका अनुभव लेवेगा ब्रह्मा-नंदको पावेगा । इस सिद्धांतके अनुभव देखनेमें पच्चीस रुपैया खर्च होवें तो प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त होवे । मैंने उसी वक्त पच्चीस रुपये महात्मा गुरुके हाथपर रख दिया । तब महात्मा गुरु बोले कि आज शामतक व्रत निर्जल रहना चिराग जलने पीछे स्नान वगैरह करके हमारे पास आना । यहां सब सामान अनु-भव देखनेका तैयार रहेगा । मैं महात्मा गुरुकी आज्ञानुसार

विधिपूर्वक व्रत रहकर शामको पहुँचा। वहांका तमाशा यह दरशाया। कुछ स्त्री कुछ पुरुष जवान रंगीले रसीले बैठे हैं। एक कलश मृत्तिकाका कोठरीमें मध्य सभाके बीच पांच बत्तीका रक्खा था और होमभी अनेक साकल्यका आरंभ हो चुका था। नैवेद्यके वास्ते कई शीशा वारुनी कई सेर सिद्धि और सुक्कि पूडी कचौरी भजियां आदिक परातोंमें रक्खी थी। और सामान पूजाका धूप कर्पूर सेंदूर आदिक रक्खा था। सब स्त्री पुरुष हवनमें आहुति छोडते थे। और महात्मा गुरु एक माला मूंगोंकी हाथमें लेकर कुछ मंत्र पढते थे और स्वाहा बोलते थे। मुझकोभी आहुति छोडनेकी आज्ञा हुई। सबके बराबर मैंभी छोडने लगा। दो पहर उपरांत महात्मा गुरुका मंत्र पूरा हुआ। उस समय एक ज्योति नई बहुत प्रकाशमान एक आरतीमें प्रगट हो गई तब महात्मा गुरु बोले कि सब कोई खडे होकर आरती पढो और सब साकल्य हवनमें छोड दो। और वो सब नैवेद्य उस ज्योतिमें सन्मुख रख दिया। और सोलह बत्तीकी आरती उस ज्योतिको करके परिक्रमा दिया। और साष्टांग दण्डवत् किया तब वह ज्योति अंतर्धान हो गई। सब लोक बहुत आनंदित हुए। जैसे ब्रह्मका दर्शन पाया पीछे वह सब नैवेद्य एक थालीमें खाने लगे। और वारुनीभी एक पात्रमें पान करने लगे। मुझकोभी खान पानकी आज्ञा हुई। मैंने हाथ जोडकर पूछा कि ब्रह्मका अनुभव कब होगा तब महात्मा गुरु बोले कि एक प्रहर पीछे अनुभव होगा। मैं बैठा रहा। थोडी देरमें

जब नशा हुआ तब एक औरत एक मर्द आपसमें विषय करने लगे। जो सबसे अच्छी थी महात्मा गुरुके संगमें रही। मैं अपना मुँह छिपाकर वहांसे भागा। अपने आसनपर आया। दिनरात भूखा रहा। पच्चीस रुपैयोंका नुकसान हुआ। यह ब्रह्मका अनुभव पाया। महात्मा गुरु डरसे भाग गये।

इति अभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद नौवें तरंगमें अहं-ब्रह्मविचार नाम सातवीं लहरी संपूर्ण।



आठवीं लहरी।

शरीर ब्रह्म है।

अथ श्रीभैरवाय नमः। मैं दूसरे महात्माके पास गया और सब हाल अपना कहा। तब महात्मा गुरु बोले कि शरीर ब्रह्म है। जिसको शरीर ज्ञान होगा, उसको ब्रह्मका ज्ञान होगा. सर्व संसार शरीरके संयोगसे कुछ झूंठा सच्चा पदार्थ है। कदाचित् शरीर न होवे तो उसका कुछ अनुमान नहीं हो सकता। पंचतत्त्वकी शरीर सबका प्रगट है उसमें जो भेद गुप्त है वह जानना बहुत कठिन है। पहिले पंचकोशका ज्ञान होना चाहिये। जैसे जलके कोई जीवपर शंख आदिक ज्ञान होते हैं, उस प्रमाण अपनी शरीर है। उसके ऊपर पंच कोश हैं। अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय, आनंदमय ये पांचों कोशके नाम हैं। रोम चर्म मांस रुधिर अस्थि सुद्धा जो शरीर है उसको अन्नमय कोश कहते हैं। उसके भीतर पच्च प्राण व्यान समान उदान

अपान ये प्राणमय कोश हैं। उसके आधारसे पंच ज्ञानइंद्रियद्वारा पंच विषय जानकर पंच कर्म इंद्रियसे क्रिया करना और मनके भीतर अनेक विचार करना, उसको मनोमय कोश कहते हैं। और मनोमयरूपी ज्ञानवृत्तिसे ऐसा विचार करना कि मैं कौन हूं, तथा मैं कर्ता हूं, उसको विज्ञानमय कोश कहते हैं। और विज्ञानमय कोश धारण होनेसे चारों कोशकी भावना रहनेकी नहीं। मैं साकार कैवल्य पंच महाभूतका पूतला हूं। पंच प्राणके आधारसे ज्ञान हो जाता है। ऐसी भावना होनेसे विस्मृति होती है, उसको आनंदमय कोश कहते हैं ये पंच कोश शरीरमें प्रधान हैं। शरीरको सब ज्ञान है। अन्नमय कोशमें पंच महाभूतके पच्चीस भाग हैं। जिसको प्रकृति कहते हैं, विस्तार उसका ग्रंथमें बहुत जगह है। प्राणमय कोशमें पंच प्राण हैं। सर्व शरीरमें जो वायु है उसको व्यान कहते हैं। नाभीमें जो वायु है उसको समान कहते हैं। कंठमें जो वायु है उसको उदान कहते हैं। हृदयमें जो वायु है उसको प्राण कहते हैं। गुदामें जो वायु है उसको अपान कहते हैं। ये पंच प्राणके आधारसे श्वास चलता है। पंच प्राणरूपी कोथलीमें प्राण है, वो अन्नमय कोशके भीतर है। प्राणमय कोशके आधारसे स्वप्न आदिक तथा कल्पित सृष्टिकी रचना होती है। प्राणमय कोशके भीतर मनोमय कोश है। पंच ज्ञान इंद्रियसे पंच विषय भोगनेवाला पंच कर्म इंद्रियसे क्रिया करनेवाला पंच अंतःकरणरूप मनोमय कोशसे होता है। प्राणमय कोशके

अंतर जो वायु व्यापक है वही मनोमय कोश है। उसीको ब्रह्मज्ञानी ब्रह्म, आत्मज्ञानी आत्मा कहते हैं। जबतक शरीर है तबतक ब्रह्म माया जगत् है। शरीरका उत्पन्न होना पंच तत्वका संयोग है। ये सर्व पृथिवी जल सुद्धा सब हाली है। उसके हलनेसे पवन जो शरीरके बाहिर और भीतर है। परदेके ऊपर प्राणमय कोशमें धक्का लगता है। उस प्राणमय कोशमें जो मनोमय कोश वायु व्यापक है वह अनुभव लेवे है। वही परलो अपरलो मानते हैं। तातें सुख दुःखका अनुभव होता है। इसकी रीति ऐसी है कि मनोमय कोशको स्पर्श होनेवाली वस्तु कदाचित् कोमल और शीतल है तो परलो लागत है। और कदाचित् वहही वस्तु कठिन गरम है तो अपरलो लागतहै। परलो अपरलो सब शरीरको होता है। जीव आत्मा शरीरकी शक्ति है। ऐसा मनोमयका स्वभाव है। शरीरके भीतर रक्त इसमें प्राणकी वस्ती है। जब अन्नमय कोशको धक्का पवनके स्पर्शसे प्राणमय कोशमें लगता है तब मनोमय कोशके जानिवेमें आता है। नेत्र इंद्रियमें रूप विषयका ज्ञान है। जिह्वा इन्द्रियमें रस विषयका ज्ञान है। नासिका इंद्रियमें गंध विषयका ज्ञान है। त्वचा इंद्रियमें स्पर्शविषयका ज्ञान है। कान इंद्रियमें शब्द विषयका ज्ञान है। पंच विषयको ज्ञान इंद्रियें जानती हैं। उस पंच ज्ञान इंद्रियसे मनोमय कोश तदाकार है। इस कारण पंच इंद्रियका ज्ञान अंतःकरण पंचकको होता है। अंतःकरणपंचक मनोमय कोशमें है। कदाचित् इस पांच

ज्ञान इंद्रियमें कोई नष्ट हो जावे तौ उस विषयका ज्ञान अंतःकरणको नहीं होगा। यह सर्व व्यवहार पंचप्राणके आधारसे मनोमय कोशमें जो अंतःकरण है उसको होते हैं। अंतःकरण भी पंच तत्वका ज्ञान है। प्राणमय कोशके आधारसे मनोमय कोशको भावना होती है, अर्थात् पंचप्राणके आधारसे अंतःकरणपंचकको ज्ञान होता है कि, मैं कौन हूं या वह हूं उसको विज्ञानमय कोश कहते हैं। कदाचित् इन तीनों कोश विना भावना करे कि मैं शरीर ब्रह्म हूं तौ होवे नहीं कारण सूक्ष्म वायु हिलाने विना भावना होती नहीं। प्राणमयके आधारसे मनोमयको भावना होती है प्राणमय जड है। मनोमय चैतन्य है विज्ञानमय अनुभव पावे है उस अनुभवसे आनंद होता है उसको आनंदमयकोश कहते हैं। यह पंच तत्त्वकी शरीर प्राणमय है। उसमें पंचप्राण प्राणमय, उसमें अंतःकरणपंचक मनोमय, उसमें ज्ञान विज्ञानमय, उसमें आनंद आनंदमय कोश है। अन्नमय पृथिवी, प्राणमय जल, मनोमय अग्नि, विज्ञानमय वायु, आनंदमय आकाश ये पांच कोश पंच तत्त्वका आधार है। ब्रह्म कदाचित् निराकार सिद्ध होवे तौ झूंठा जानो और साकार सिद्ध होवे तो शरीर जानो। पंचतत्त्वका शरीर होगा। शरीररहित पदार्थ मिथ्या प्रसिद्ध है। जिसके शरीर नहीं वह कर्ता नहीं। शुभ अशुभ कर्म शरीरसे होता है। और सर्व शरीर चौरासी लाख सृष्टिकी एक है, जैसे मृत्तिकाका पात्र छोटे बडे अनेक रंगके हैं। शरीर जब शक्तिरहित हो जाता है तब नाश-

शान् हो जाता है। पहिले स्थूलका नाश होता है, पीछे सूक्ष्मका होता है। स्वरूपवान् पदार्थ कुछ काल झाड बनकर मर जाता है। जैसे वर्षाऋतुकी वनस्पति उत्पन्न होकर नाश हो जाती हैं। अब शरीरका लक्षण कहता हूं कि, शरीर पांच प्रकारका है। स्थूल सूक्ष्म कारण महाकारण उन्मनी तथा केवल ये पांच शरीर हैं। स्थूल शरीर पंच महाभूतात्मकही है। आकाश वायु अग्नि जल पृथिवी उसमें पांचों तत्त्वके पांच पांच भाग हैं। जिसको प्रकृति कहते हैं। आकाशके भाग काम[१] क्रोध[२] लोभ[३] मोह[४] मद[५]। वायुके पांच भाग चलना[१] दौडना[२] कूदना[३] फैलना[४] सुकडना[५]। अग्निके पांच भाग तेज[१] क्षुधा[२] तृषा[३] नींद[४] आलकस[५]। जलके पांच भाग बीज[१] रुधिर[२] चरबी[३] पसीना[४] लार[५]। पृथिवीके पांच भाग रोम[१] चर्म[२] नाडी[३] मांस[४] अस्थि[५] ये पांच तत्व और पच्चीस प्रकृतिको स्थूल शरीर कहते हैं। अब सूक्ष्म शरीरका प्रमाण कहता हूँ कि इस शरीरमें तत्व नहीं है प्रकृति है आकाशके पांच भाग अंतःकरण मन चित्त बुद्धि अहंकार अंतरिंद्रिय। वायुके पाँच भाग व्यान समान प्राण उदान अपान पंच प्राण। अग्निके पांच भाग आंख नाक कान जीव त्वचा ज्ञानइंद्रिय। जलके पांच भाग हाथ पांव मुख लिंग गुदा कर्मइंद्रिय। पृथिवीके पांच भाग शब्द स्पर्श रूप रस गंध पंच विषय। इसको सूक्ष्म शरीर तथा लिंगशरीर कहते हैं। सर्व व्यवहार लिंगशरीरसे होता है, इस प्रमाण विचार करके सुनो। आकाशका पहिला भाग अंतःकरण व्यान वायुके आधारसे

कान ज्ञान इंद्रिय मार्ग शब्दविषय जानकर मुख कर्म इंद्रियसे बोलता है। आकाशका दूसरा भाग मन समान वायुके आधारसे त्वचाइंद्रिय ज्ञान मार्ग स्पर्शविषयको जानकर हाथ कर्मइंद्रियसे लेता देता है। आकाशका तीसरा भाग चित्त उदान वायुके आधारसे नेत्र ज्ञान इंद्रिय मार्ग रूपविषय जानकर पांव कर्म इंद्रियसे चलता है । आकाशका चौथा भाग बुद्धि प्राणवायुके आधारसे जिह्वा ज्ञान इंद्रिय मार्ग रसविषयको जानकर लिंग कर्म इंद्रियसे बीज मूत्र त्यागता है। आकाशका पाँचवां भाग अहंकार अपान वायुके आधारसे नासिका ज्ञान इंद्रिय मार्ग गंधविषयको जानकर गुदा कर्मइंद्रियसे मल त्यागता है। इस प्रमाण आकाशके पांचों भाग अंतःकरण पंचप्राणके आधारसे पंच ज्ञान इंद्रिय मार्ग पंच विषयोंको जानकर पंच कर्मइंद्रियसे क्रिया करते हैं । सर्व जगत्का व्यवहार लिंगशरीरसे होता है। यह शरीर अंगुष्ठप्रमाण शास्त्रमें कहतेहैं। अब कारण शरीरका प्रमाण कहता हूं कि स्थूलशरीरमें तत्व प्रकृति दोनों हैं। और सूक्ष्ममें तत्त्व नहीं है प्रकृति है। कारण शरीरमें बीज है । स्थूल सूक्ष्मका साक्षी है अपनेको नहीं जानता है कि मैं कौन हूं। यथार्थमें वह शरीर अज्ञानरूप है। उसका जन्म मरण होता है । यह कारणशरीर लिंगशरीरका बीज है। लिंगशरीर स्थूल शरीरका बीज है और स्थूलशरीर पंचतत्वका बीज है । पंच तत्व अनादि हे। कारणशरीर नाश हो जानेपर अंतःकरणपंचक भुने हुए

बीजके समान हो जाता है। फिर उसका पुनर्जन्म नहीं होता। जैसे भुना हुआ बीज पृथिवीमें नहीं उगता उसी प्रमाण कारणशरीरका नाश होने उपरांत शरीरका पुनर्जन्म नहीं होता। पंचतत्वमें यह शरीर मिल जाता है। अथवा अज्ञानरूपी कारणशरीर जब नाश हो जाता है तब ज्ञानरूपी केवल शरीर निर्विकार हो जाता है। इसीको लिंगभंग शरीर कहते हैं। कारणशरीर अग्निका अंश है। स्थूल शरीर स्वरूप है। सूक्ष्म शरीर शक्ति है। कारणशरीर ज्ञान है। अब महाकारण शरीरका लक्षण कहता हूं कि, तुझको ऐसा निश्चय है कि मैं ब्रह्म हूं, परंतु यह खबर नहीं कि ब्रह्म कौन है। और कहां रहता है और क्या पदार्थ है। जो जिसको जानता है वह उससे न्यारा है। तीनों शरीरके आधारसे यह निश्चय होता है कि मैं ब्रह्म हूं। कदाचित् तीनोंका आधार छोड देवे तो निश्चय नहीं होवे। अकेले अंतःकरण आकाशरूपी पोलसे संकल्प होता नहीं। निश्चल शांतरूप मैं हूं। यहभी भावना प्राणवायुके आधीन है कल्पना मात्र प्राणवायुके आधारसे होती है। महाकारणशरीरको शिवोहं अहंकार व्यापक है। और सर्व वस्तुकी साक्षी है कर्त्ता है। यह शरीर सब शरीरनकी पुंजी है। इसका नाश होने उपरांत चारों शरीरका स्मरणभी नहीं रहता। शरीरको सर्व ज्ञान है। ब्रह्मका ज्ञान इस कारण नहीं है कि वह आप ब्रह्म है अपना ज्ञान अपनेको नहीं होता। स्थूल शरीर सबको दर्शाता है। सूक्ष्मशरीर प्रकृति

है। कारणशरीर बीज है। महाकारणशरीर श्वास है कैवल्य शरीर ज्ञान है उस शरीरका नाश नहीं होता। उन पांचों शरीरकी पांच अवस्था हैं। उसका लक्षण कहता हूं। जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति तुरीया उन्मनी। उसका भेद यह है पहिले जाग्रत्का लक्षण सुनो। अंतःकरणपंचक पंच प्राणवायुके आधारसे पृथिवीरूपी बोझा शरीरका उठाकर चलता फिरता है और पंचविषयका भोगी होकर पंच ज्ञानइंद्रिय द्वारा सर्व व्यवहार जानकर पंच कर्मेंद्रियसे क्रिया करता है पांचों तत्व अपने काममें चैतन्य ज्ञानवान् रहते हैं। अर्थात् अंतःकरण पाँचों तत्त्वमें लय रहता है। उसको जाग्रत् अवस्था कहते हैं। स्वप्नका लक्षण यह है कि वहही अंतःकरणपंचक पृथिवीरूपी बोझा छोडकर जलतत्त्वमें लय हो जाता है। तथा अंतःकरण पृथिवीसे विलग होजाता है। अथवा पृथिवीकी प्रलय हो जाती है। तथा नाश होकर जल हो जाती है। उस समय कल्पित सृष्टिकी रचना होती है। जैसे स्वप्नमें सृष्टि, विना पृथ्वीतत्वके बन जाती है। दश इंद्रियोंका व्यवहार नहीं होता। सर्व व्यवहार कल्पनासे होता है। उसको स्वप्न अवस्था कहते हैं। सुषुप्तिका लक्षण सुनो। जब पृथिवी और जलका नाश हो जाता है, तब अंतःकरण पृथिवीका भारी बोझा जलका हलका बोझा दोनोंको छोडकर अग्नितत्वमें लय हो जाता है। अर्थात् अंतःकरण पृथिवी और जलसे जुदा होकर तेजतत्वमें रह जाता है। यहां अद्वैतरूप संकल्परहित हो जाता है। जैसे बोझा शिरसे उतर जानेमें

हमाल सुख पाता है उसी तरह अंतःकरण पृथिवी जलका बोझा उतर जानेसे परम आनंदको प्राप्त होता है । न ब्रह्मकी खोजना, न मायाका व्यवहार, न जगत्का पता, न अपनी खबर ऐसी अवस्था सुषुप्ति हो जाती है । केवल श्वास वायु रहता है । संकल्प विकल्प जो दुःखका मूल है सो नाश हो जाता है । तीन अवस्थाका ज्ञान रहता नहीं, उसको सुषुप्ति अवस्था कहते हैं । तुरीया अवस्थाका लक्षण सुनो कि, तीनों तत्व पृथिवी जल अग्नि नाश होकर वायुमें लय हो जातेहैं । अथवा तीनोंका नाश हो जाता है । अतःकरणपंचक केवल वायुमें रह जाता है । सुषुप्ति अज्ञान है । तुरीयाको ज्ञान है । कोई तुरीया समाधिको कहता है । कोई अर्ध निद्रा अर्ध जाग्रत्को कहता है । कोई मृतक शरीरको तुरीया कहता है । यह शुद्ध नहीं । तुरीया उसको कहते हैं जैसे कोई पुरुष सब विद्या और सत्संगको प्राप्त होवे उसका अर्थ पायकर उस ज्ञानमें विदेह हो जावे । सर्व आकाशमें प्रकाशमान सर्व जगह सहज स्वरूप भरपूर है । सर्व वस्तुकी साक्षी है । उसका नाम तुरीया अवस्था कहते हैं । अब उन्मनी अवस्था पांचवींका लक्षण कहता हूं कि, चारों अवस्थासे विस्मृति हो जाना, आकाशरूप निर्मल निराकार शांतरूप हो जाना, सर्व भावनाका अभाव हो जाना तथा कल्पना छोडकर जैसाका तैसा हो जाना, अथवा कुछ न जानना उसको उन्मनी अवस्था कहते हैं । यह अवस्था मुक्तिसमान है । अब अंतःकरणपंचकका लक्षण कहता हूं

कि, निराकार शक्ति जो घटाकाशमें व्यापक है सो प्रथम शरीरको साक्षी होकर तदाकार होता है। हम तथा मैं ज्ञान दृढ हो जाता है। पंच ज्ञानेंद्रियका अनुभव उसको होता है। उसको अंतःकरण कहते हैं। उसके पीछे संकल्प, विकल्प, मान, अपमान, बंध, मोक्ष, सुख, दुःख, मोह, वैराग्य, शांत, भ्रम, सच्चा, झूंठ, विद्या, अविद्या, परलो अपरलो उसीको होता है। ज्ञानकरके सर्व वस्तुको मानता है। उसको मन कहते हैं। पीछे संकल्प की हुई पदार्थपर चितवन करना, अथवा गुप्त पदार्थपर ध्यान करना, उसकी चिंता करना उसको चित्त कहते हैं। जिसका चित्त शुद्ध नहीं उसका शरीर अशुद्ध है। पीछे चितवन की हुई पदार्थपर विवेक करना अथवा यह काम करूं, या न करूं, अच्छा होगा या बुरा होगा, यह विचार करना बुद्धिका काम है। पीछे विवेक हुए पदार्थपर दृढ होकर क्रिया करना। अथवा यह कार्य निश्चय करूंगा उसको अहंकार कहते हैं। यह सर्व व्यवहार अंतःकरण पंचकका है। जीवे जहांतक अच्छी तरह रहना मरनेकी चिंता करना, सुखकी इच्छा रखना, दुःखका त्रास मानना, मरे पीछे कैसे होगा यह सब भावना अंतःकरणको है। अंतःकरण सर्व वस्तुका जानकार है। और शरीरमध्ये अंतारिंद्रिय प्रधान हैं। पंच शरीर १ पंच अवस्था २ पंच अन्तारिंद्रिय ३ पंच ज्ञानेंद्रिय ४ पंच कर्मेंद्रिय ५ पंच विषय ६ पंच तत्त्व ७ पंच प्राण ८ यह सब विस्तार

शरीरका है। जन्म मरण शरीरका होता है। जीवन भी शरीरका होता है। वह शरीर पंचतत्त्वमें मिल जाता है। पंचतत्त्वसे उत्पन्न होता है वह ज्ञान गुप्त प्रगटका है, नाशमान नहीं होता। चौरासी लाख सृष्टिमें शरीर एक है। सबमें पंचतत्त्वकी रचना है। पंच तत्व अनादि है, उसको ज्ञान नहीं है। जब शरीर उत्पन्न होता है तब ज्ञान होता है। शरीर ब्रह्म है। जीव निराकार शक्ति है! जो शरीर अशक्त हो जाता है तब पंच तत्त्वमें मिलकर दूसरी शरीर उत्पन्न होती है। मैंने हाथ जोडकर कहा कि शरीरका ज्ञान बहुत उत्तम है। परंतु ब्रह्मका बोध कुछ नहीं हुआ। कदाचित् यह शरीर नाशमान न होता और आत्मा छोडकर चला न जाता तौ मैं कुछ बोध करता। मर जानेसे कुछ उत्तम पदार्थ निराकार चैतन्यका शरीरसे निकल जाना प्रत्यक्ष दर्शाता है। जब वह शक्ति निकल जाती है तब शरीर भयंकररूप हो जाता है। कुछ काम नहीं आता। अशुद्ध नाशमान हो जाती है। नाश हुआ वह कुछ नहीं रहा। उसको ब्रह्म कहना मूर्खका ज्ञान है। जिसकी शरीर नाशमान न हो, वह इस ज्ञानको प्रधान जाने। मेरे ज्ञानमें जो चैतन्य शरीरसे निकल जाता है वह कुछ पदार्थ होगा। उसके चले जानेसे परिवारके प्राणी शरीरको फूंक देते हैं। यह शरीर ब्रह्म कहना दोष और अनुचित है। कदाचित् शरीर ब्रह्म है तौ रोग, व्याधि चोट, चिंता, ग्लानि, वृद्धपन, अधेड, मूक, अपंग शरीरको क्यौं

होता है। धामपुरी जाना, भजन करना, पुण्यपापका विचार नहीं होना चाहिये । यह सुनकर महात्मा गुरु चुप हो रहे।

इति अभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद नौवें तरंगमें अहंब्रह्म-विचार नाम आठवीं लहरी सम्पूर्ण ।



नौवीं लहरी

आत्मा ब्रह्म है ।

अथ श्रीनिराकाराय नमः । मैं दूसरे महात्माके पास गया और सब हाल अपना कहा । तब महात्मा गुरु बोले कि शरीर नाशवान् है । उसको ब्रह्म कहना उचित नहीं है । आत्मा जो शरीरसे जुदा है और घट घट व्यापक है और सर्वज्ञ है वह ब्रह्म है । क्यों कि जो ज्ञान शरीरका महात्मा गुरुने बताया उसका संपूर्ण जाननेवाला आत्मा निज वस्तु निराला है। सांख्य शास्त्र वेदांतशास्त्र प्रमाण आत्मा ब्रह्म है । कलियुगमें अनेक ग्रंथ महात्माओंने बनाये । सबमें आत्माको ब्रह्म कहा है। जीवात्मा परमात्मा शब्दमें कुछ भेद नहीं है। अज्ञान दूर होनेसे जीवात्मा परमात्मा हो जाता है और इसके सिवाय कुछ सूक्ष्म आत्म-ज्ञान सर्व वेदांतका मूल कहता हूं । विचार करके सुनो बोध हो जावेगा जो जाग्रत् तेरे देखनेमें आता है पंचभूतरूपी विलास है तू जहां तहां स्थिर है और शांत है । जहां तहां अंतराल भासे है । उस पोलाणमें पंचमहाभूतकी आकृति विलग विलग निराकार साकार शुभरूप तू है । तेरे प्रकाशसे तू आप आनंद

है। तेरे रूपकी कुछ उपमा नहीं। तेरी आत्मा स्वरूपमें चंद्र सूर्य तारागण तीनों लोक चौदह भुवन कल्पना करनेसे भासते हैं। परस्परकी आकर्षणसे तेरे रूपके बीचमें फिरती है, और पृथिवी चंद्र सूर्य सब अंडेके आकार हैं। तथा अनेक गोल निराकारमें भासते हैं उसको अनंत ब्रह्मांड कहते हैं। तिसके ऊपर सबका ठिकाना है। उसपर जीवोंकी बस्ती है। सो ब्रह्मांड तथा रूपके भीतर अथवा बाहिर जो पोलाण है उस ठिकाने समप्रकाश निर्मल वस्तु तू है। और तेरे स्वरूपके भीतर भूगोल आदिक सर्व गोल प्रकट हैं। तिसके ऊपर सर्व जीव रमण हो रहे हैं। इस वास्ते उसे निराकार रमण करनेवाले जीवात्माको राम कहते हैं। जो सर्व जगह भरपूर है और शिव आत्माके विश्रामकी जगह है मनके भीतर बोलनेवाला सर्व इंद्रियरहित तू आत्मा कारणशरीर है, और पंच महाभूत तेरे आत्मा रूपका क्षेत्र है। शरीर भीतर तथा बाहिर जो आकाश भर रहा है तिसको अपनी जानी जगह जानता है, सोही प्रकाश ज्ञानरूपी आत्मा है। ऐसा स्थितरूप आकाश सोही आत्मा है। शरीरके भीतर जो आकाश व्यापक है, उसके भीतर पंच प्राणके आधारसे निराकार आत्मा रहता है। अपने इंद्रियोंसे मालूम नहीं होता तिसके लिये आकाशरूपी पोलाण भासता है। बोलनेको आकाश वाणी कहते हैं। तेरे स्वरूपमें माथेके भीतर दोनों नेत्रोंके बिंदुमें जो काली पीली धोली नीली लाल रंगकी कल्पित सृष्टि देखनेमें आती है सोही

देखनेवाला ज्ञानरूपी आत्मा है। तेरे निराकाररूप आत्माको जगत्की खबर नहीं है। जैसे सुषुप्ति अवस्थामें तेरी तुझको खबर रहती नहीं। अज्ञान तथा द्वैतसे तेरा रूप न्यारा है। पंच विषय और दश इंद्रियें पंच प्राण अंतःकरणपंचकको छोडकर निराकार अपने स्वरूपके ऊपर विश्राम लेनेसे निराकार स्वरूपका बोध होता है। निमिष मात्र अपने निराकाररूपका चितवन करनेवाला आत्मज्ञानका सुख पाता है। जैसे पात्रमें जल आनेसे सूर्यका प्रतिबिंब दिखाई देता है, तैसे शरीररूपी पात्रमें पंचप्राणरूपी जल आनेसे ज्ञानरूपी आत्माका अनुभव होता है। और इस ज्ञान प्राप्त होनेसे आत्मा शरीरका विवेक शुद्ध होता है। अज्ञानसे इस पञ्च महाभूतके साथ तू ज्ञानरूपी आत्मा तदाकार होकर साक्षीपनेका ज्ञान छोडकर सुखदुःख-भोक्ता हो गया। तुझको ऐसा देखनेमें आता है कि मैं सर्व कर्मका कर्ता हूं, और मैं सुखदुःखका भोक्ता हूं। परंतु विचारसे देखे तो तू पञ्च महाभूतके साथ साक्षी है तू पच्चीस प्रकृतिका जाननेवाला आत्मा शरीरसे न्यारा है। तू जिसको जानता है वही कैसे होगा तेरा स्वरूप इंद्रिय आदिकके देखने और विचारनेमें नहीं आता। कारण सब विचार तेरी आत्मा-को है जब तू अपने स्वरूपको विचार करके निराकारमें लक्ष लगावेगा तब अंतःकरण आदिक लय हो जावेंगे। उस वक्त तुझको निर्विकल्प स्थिति प्राप्त होगी और तू नहीं रहेगा। केवल निराकार आत्मा बहुत सुखी होगा। शरीरके हाथ पांव

टूटनेसे तू नहीं टूटेगा जैसे खड्ग म्यानमें न्यारा है। पञ्च विषय आदिक जगत्को जानता तथा इंद्रियोंको जानना अथवा पञ्च प्राण या अंतःकरणपञ्चकको जानना सबको छोडकर मन स्थिर करके अपने भीतरको देखने लगेगा, तौ तू कौन, वायुके जोरसे समुद्र जैसे खलबलाता है उसी प्रमाण देखनेमें आवेगा। तेरे स्वरूपमें अनेक गोल और समुद्र हैं। जो तेरे शरीरका जाननेवाला ज्ञानरूपी आत्मा उसको खबर पडे है। ताके ऊपर अथांगपानीका जमाव तथा जीवसृष्टि भासती है, परंतु वह सब निराकार तेरे स्वरूपमें केवल कल्पनामात्र बारीक प्रमाण तद्वत् है। और तू ऐसा है कि तुझको किसीका संग नहीं। तू आप अपने स्वरूपमें शांत है। तेरे स्वरूपको पाप पुण्य पुनर्जन्म स्वर्गनरकमें डालनेवाला अज्ञान करिके मैं मैं ऐसी मनमें कल्पना करनेवाला जो अभिमान सो मिथ्या है। तेरे निराकार स्वरूपको कुछ पीडा नहीं कर सकता। तू गुणदोषमें लेपायमान नहीं होगा। सुषुप्ति अवस्था अज्ञानरूप है तू ज्ञानरूप है। जैसे जलके ऊपर कुमुदिनी दूर होनेसे निर्मल जल देखनेमें आता है, उसी प्रमाण अज्ञानरूपी कुमुदिनी दूर होनेसे निर्मल ज्ञानरूपी जल देखनेमें आता है। उसी ज्ञानको मैं निराकार शांतरूप आत्मा हूं ऐसी स्थिति प्राप्त होती है। उसको तुरीया अवस्था कहते हैं। तू ज्ञानरूपी आत्मा निर्विकल्प है। तेरे निराकार रूपमें पंच महाभूतकी सृष्टि मृगजलसमान भासती है तेरे निराकाररूप विना कोई जानी जगह ब्रह्मांडमें नहीं है।

जैसे जलमें प्रतिबिंब हिलनेसे आदमी हिलता हुआ देख पडता है तैसे तू निराकार शांतरूप आत्मा इंद्रिय प्राण मनकी कल्पनाको भ्रम होनेसे अपनी कल्पना जानता है और अपने निराकाररूपको भूलकर पंच महाभूतके पिंजरोंको अपना रूप जानता है। साक्षीपनेका ज्ञान छोडकर तदाकार हो जाता है। कदाचित् साक्षीपनेका ज्ञान दृढ होवे तौ पंच विषय दश इंद्रिय पंच प्राण पंच अंतःकरणकी बाधा होवे नहीं। जैसे कोई मारा जाता है तो उसके साक्षीको चोट नहीं लगती। साक्षीसे तदाकार हो जाना यही माया भूल अज्ञानका मूल है। उसका मूल मोह है और मोह आकाशकी प्रकृति है। शरीर पात्र है। उसमें पंच प्राण जल है। और पंच विषय लहर हैं। उसके भीतर पंच ज्ञान इंद्रियकी शक्ति तदाकार है। इस कारण अंतःकरणपंचकको अपना प्रतिबिंब दिखाई देता है। ज्ञानरूपी आत्माको अनुभव होता है उस अनुभवसे अज्ञान होकर अपना रूप जानकर प्रतिबिंबको पकड लेता है। अपने शुद्ध निराकारको भूल जाता है। इस कारण सुख दुःख होता है। शरीरके संग नाना संकट सहता है। यह भूल चैतन्यको है। जब चैतन्य अज्ञान हो जावे तौ ज्ञान कहांसे आवे। इस कारण आत्मा अशक्त हो गया और जीव पदवी पाया और वासना दृढ होनेसे जन्ममरणभी होता है। चौरासी भोगना पडता है। वही अज्ञानरूपी प्रतिबिंब संसारी मोहको नहीं छोडता। इस कारण जीवपदवी बनी रहती है। आत्मज्ञान प्राप्त हो जानेपर जन्म मरण

नहीं होता। शरीरकी नाश हो जाती है जैसे जलसे भरा हुआ पात्र फूट जानेसे सूर्य नाश नहीं होता, इसी तरह आत्माका जन्म मरण नहीं होता। अंतःकरणके सुख दुःखसे तुझको कुछ वास्ता नहीं, जैसे प्रतिबिंब जुदा है। सुषुप्ति अवस्थामें अंतःकरणपंचक वायु शरीरमें लय हो जाता है। इस कारण सुख दुःख रहता नहीं। जाग्रत् स्वप्नमें अंतःकरणपंचकको सब सुख दुःख होता है। निराकार आत्मा कदाचित् तदाकार शरीरका न हो जावे। केवल साक्षीका ज्ञान दृढ रक्खे तो उसको सुख दुःख न होवे। मूर्च्छाकालमें अंतःकरण लय हो जाता है उसको मुक्ति कोई नहीं कहेगा। जीवन्मुक्तिका स्वरूप ऐसा है कि स्थूल सूक्ष्म शरीरसे सर्व व्यवहार जगत्का करता है और अंतःकरणमें अपने निराकाररूप आत्माको जुदा जाने और अहंरूपी अहंकारको झूठा समझे। रोमसे अस्थितक जो शरीर है उसमें अहंपदार्थ कुछ नहीं है कदाचित् ऐसा ज्ञान हो कि मैं आत्मा शरीरका धनी हूं तो विचारकी बात है कि उत्पन्न अवस्थासे मृतक अवस्थातक यावत् व्यवहार शरीरका अपने आधीन नहीं है। बाल वृद्ध तरुण होना, रोग आदिक होना, निद्रा मैथुन क्षुधा तृषा मल मूत्र करना, सर्व प्रकृति शरीरकी मैं मैंके आधीन नहीं है। हम चाहते हैं कि क्षुधा तृषा जाती रहे परंतु नित्य होती है। इस सिद्धांतमें हम शरीरके धनी नहीं हुए। शरीरको अपनी मानना मूर्खपना है। ऐसी वस्तुको अपना रूप जानना विना

अर्थ उसके सुखदुःखमें आप सुखी दुःखी होना कैसी बडी मूर्खता है ऐसे मूर्खको ज्ञान होना असंभव है। आत्मा सर्व जगत्की एक इसका बोध अनेक मतसे है। और प्रत्यक्षभी निद्रा मैथुन आहार हर्ष भय येही पांचों प्रकृति सर्व जीवमात्रको हैं। आत्मज्ञानीको देखनेमें सब आता है। आत्मज्ञानीको अपने आत्माकी और सर्व आत्माकी खबर रहती है। और सर्व आत्माको अपनी आत्मा जानता है, और सर्व जगह सम भरपूर है। और रजोगुण सत्वगुण तमोगुण सर्व आत्मामें एकरूपसे दर्शाता है। शरीर तथा प्रकृति दोनोंको छोडकर जब अपने रूप-को देखता है तब वृत्तिका नाश हो जाता है। कोईभी संकल्प तथा भावना रहती नहीं। उसी निराकार आत्माको बडी शांति प्राप्त होती है। वह सुख मुखसे कहनेमें आता नहीं। और तू मुक्त है तथा बंधमें है; यह दोनों निराकार आत्मामें नहीं हैं। अपने रूपकी पहिचान बहुत कठिन है, परंतु विचारसे कुछ कठिन नहीं है। जैसे कोई आदमी हठ करके कहता है कि चाहे हमारा प्राण जावे, परंतु यह काम नहीं करेंगे। इस वार्तासे सिद्ध होता है कि अपना रूप प्राणसे जुदा है अपना रूप क्या है यह ज्ञान नहीं है। प्राण जाने पीछे कैसे रहूंगा इस अंधकारका नाश होनेके वास्ते सिवाय गुरुकृपाके और कोई यत्न नहीं। आत्मज्ञा-नीको अद्वैतरूप जगत् दरशाता है, और प्रत्यक्ष जगत्का मूल पंचतत्त्वसे है और पंचतत्त्व एक तत्त्वसे है। उत्पत्ति पालन संहार पानीका बुद्बुदा तथा लहरीके समान है आत्माकी एकता

सर्व जगत्में प्रसिद्ध है। जैसे परमात्मा सर्व जगत्की जड़ चैतन्यमें एकरूपसे व्यापक है, उसी प्रमाण आत्मा शरीरमें व्यापक है। पिंड ब्रह्मांडमें एकता है। जिसको शरीरमें आत्माका अनुभव होवे उसको ब्रह्मांडमें परमात्माका अनुभव हठकरके होवे। घट उपाधिसे अनेक दरशाता है, और एक दूसरेसे वैर रखता है। किसीको अपना किसीको पराया जानता है। अपनेसे प्रीति परायेसे वैर, अपने लडकेका मल मूत्र राजा प्रजा सब उठाता है। दूसरेका उठावे भंगी कहलावे। अपना साला या साली गाली देते हैं तो अंतःकरणको सुख प्राप्त होता है। दूसरा देवे तो दुःख होवे। यह अज्ञान छूट जावे, सर्व आत्मा एक दरशावे। आत्मज्ञानीको वैर प्रीति नहीं होना चाहिये। आत्मज्ञानी विदेहपदवीको प्राप्त हो सकता है। विदेह उसको कहते हैं जिसको देहका भान न होवे। आत्मा सुषुप्तिरूप है। पाप संबंध कर्म ज्ञानसे होता है। ज्ञानका अर्थ जो बुद्धिमें आवे आत्माको ज्ञान बुद्धि कुछ नहीं है। अंतःकरणमें आत्माका सूक्ष्म अभ्यास है, उस अभ्याससे अंतःकरण चैतन्य है। सर्व व्यवहार शरीरका अंतःकरणसे होता है। पंच विकारके सत्संगसे निराकार रूपका ज्ञान भूलकर विषयानंद ज्ञानमें लिपायमान होकर इच्छानंदके वास्ते नाना प्रकारका दुःख उठाता है, कोई योगानंदमें ब्रह्मानंदको धाता है, परंतु आत्मज्ञान प्राप्त हुए विना परमानंद नहीं होता। शरीरसे आत्मा जुदा होकर कुछ करे या सुखदुःख पावे। इसका अनुभव सबको

नहीं है। जानना चाहिये कि स्वप्न अवस्थामें जो सर्व व्यवहार जाग्रत् समान होता है आत्मासे होता है, शरीरसे कुछ कार्य नहीं। आत्मा निराकार है परंतु परमात्माके समान साकारभी है। यह पंच महाभूतका पूतला जो मूत्रका स्वरूप है क्षणमात्रमें संयोग पाकर नाश हो जाता है। अपने देखते लाखों नित्य नाशवान् होते हैं। सौ बरसके भीतर कोई समय संयोगाधीन अपना पूतला निश्चय करके नष्ट होगा। इसमें कुछ भ्रम करना या अमर होनेका आसरा करना मूर्खका काम है, और पूतला नष्ट होने पीछे जो शरीरका व्यवहार होता है सबको प्रगट है। जैसे घटमें जल भरा है और सूर्यका प्रकाश उसमें दरसाता है। संयोग पाकर घट फूट गया, प्रकाश लोप हो गया। ऐसे पूतलेकी प्रीतिमें नाना प्रकारका दुःख उठाना मोह भ्रमका कारण है। कोई पुराणका ऐसा मत है कि प्रीति दृढ होनेसे पुनर्जन्म होता है। और वैराग्य धारण होनेसे तू आत्मा सर्व वायुमें मिलकर परमात्मा स्वरूप हो जावेगा। राजा जनकने गुरु करनेके वास्ते जब सभा किया था, तब सब ऋषि मुनि आये, पीछे सबके अष्टावक्र ऋषि आये, उनको आठ अंगसे टेढा देखकर सारी सभा हँसी। उनको क्रोध आया सबको चमार कह दिया। विश्वामित्रजीने चमार कहनेका कारण पूंछा। अष्टावक्रने हँसनेका कारण पूंछा। विश्वामित्रने उत्तर दिया कि तुम्हारे स्वरूपसे हास्यरस आप उत्पन्न होता है। अष्टावक्रने कहा कि हमारा रूप सबके समान है हमारा चमडा टेढा है। तुम

सबने हमको नहीं पहिंचाना। चमडा पहिंचाना जो चमारका कर्म है। सब कोई चुप हो रहे। कपिल भगवान्‌ने देवहूतिको यही ज्ञान दिया। श्रीकृष्ण भगवान्‌ने अर्जुनको गीतामें यही। ज्ञान दिया। वसिष्ठजीने रामचंद्रको यही ज्ञान दिया यह ज्ञान प्राप्त होना भाग्यके आधीन है। इसका सुख कहने योग्य नहीं है। आत्मज्ञानी जाने जबतक शरीरका संबंध है तबतक उसको आत्मा कहना चाहिये। पीछे इसके त्यागमें परमात्मा प्रसिद्ध है। जो दृष्टांत दासबोधमें कहा गया है देखो। आत्मा ब्रह्म ऐसा सबका मत है। व्यास भगवान्‌ने वेदांतमें आत्माको ब्रह्म कहा। तुमको भी उस प्रमाण मानना चाहिये, और शांति करना चाहिये। भ्रम करना निरर्थक दुःख है। मैंने हाथ जोडकर कहा कि आपका आत्मज्ञान वेदांतका मूल है। कोई आचार्य कवि पंडितने ऐसा निर्मल नहीं कहा, मुझको आत्माका ज्ञान संपूर्ण हो गया, परंतु ब्रह्मकी प्राप्ति नहीं हुई। जो शंका मेरे मनमें है वह कहता हूं। इस सिद्धांतमें आत्माका लक्षण पांच दरशाया। प्रथम घटघट व्यापक है। उसमें यह शंका है कि अपने घटकी उत्पत्तिका भेद जो सम्पूर्ण देखनेमें आया तो आत्माका पता न पाया। जीव और शरीर दोनों प्रधान हैं। दोनोंकी उत्पत्तिका भेद यह है कि अनादि सृष्टि प्रमाण स्त्रीपुरुषका संयोग होकर मैथुन होता है। उस मैथुनमें रज वीर्य दोनों वायुके साथ सर्व शरीरसे निकलता है। स्त्रीके गर्भस्थानमें दोनों वायुके जोरसे टकराता है और एक होकर चक्कर खाता

है। वे दोनों वायु एक होकर उस रजवीर्यके गोलेमें बंद हो जाती हैं। वायुका जीव रजवीर्यका शरीर उत्पन्न होता है। स्त्रीका बल विशेष होनेसे पुत्री; पुरुषका बल विशेष होनेसे पुत्र, दोनों समान होनेसे नपुंसक पैदा होता है। नवमासमें जो ऋतुका रुधिर निकलता है, उसकी शरीर बनती है। वही वायु सर्व शरीरमें व्यापक हो जाती है। स्त्रीपुरुषकी वायु बलवान् होकर संपूर्ण बंद हो जावे तो बच्चेकी आयु सौ बरसकी होवेगी कदाचित् कम रहेगी तो कमी प्रमाण जीता रहेगा। घडी और सायत स्त्री पुरुषका चित्त अच्छा होगा तो बालक अच्छा होगा। जिसके ऊपर ध्यान रहेगा वैसी सूरत शकल होगी। यह सिद्धांत शरीर और जीवका है। उसके सिवाय आत्मा कौन पदार्थ है, जो ब्रह्म समान होकर प्रगट नहीं होता। घट उत्पत्तिके पहिले आत्माका कुछ अनुभव नहीं, और घट नाश होने उपरांतभी कुछ पता नहीं। आत्मा कदाचित् कुछ होता तो घटसे जुदाभी कुछ अनुभव होता। दूसरे अद्वैत है। उसमें यह शंका है कि राम कृष्ण परशुराम आदिक अवतारोंने दैत्योंको मारा। सिंह आदिक अनेक जानवर नित्य जीवका आहार करते हैं। एक रोता है, एक हँसता है। एक पूजनीय है, एक म्लेच्छ है। एक नरकमें जाता है, एक सुरलोकमें जाता है। धर्मराज यमराज दो नाम क्यों हुए। एक गुरु है, एक चेला है। अद्वैतका ज्ञान नहीं हो सकता। अद्वैत कहनेवाला या समझनेवाला अद्वैतसे न्यारा

होगा। आत्मा परमात्मा जब दो होवें तब सर्व व्यवहार शुद्ध होवे। स्त्रीमातामें द्वैतका विचार सिद्ध होगा। अभक्ष्य व्यंजन एक नहीं हो सकता। गौ ब्राह्मण बकरा मेंढा एक जानना पाप है। तीसरे सर्वत्र है। उसमें यह शंका है कि जहांतक दृष्टि जाती है उसके उपरांत आत्माको कुछ ज्ञान नहीं होता। घरमें चोरी हो जाती है, जानवर आदमी भाग जाता है। आत्माको जान नहीं पडता कि वह वस्तु कहां है। और नरक स्वर्ग पाप पुण्यमें एक पदार्थ नहीं होगा। सर्वज्ञ उसको कहना चाहिये। जिसको तीनों लोक चौदह भुवन घरसमान दरशावें। स्त्री अर्धांगी है, उसकाभी हाल आत्माको नहीं मालूम होता। चौथे ज्ञानरूपी, उसमें यह शंका है कि आत्माको अपना हाल नहीं मालूम होता कि मैं कौन कहांसे आया, कहां जाऊंगा, इडा पिंगला सुषुम्ना नाडी अपने शरीरमें बदलती हैं, आत्माको नहीं मालूम होता। पलक अपने आंखकी खुलती बंद होती हैं, आत्माको नहीं मालूम होता। सृष्टिमें चौरासी लाख योनि हैं। सिवाय मनुष्य योनिके और सब अज्ञान दरशाते हैं। मनुष्य योनिमें भी लाखोंमें कोई ज्ञानी दरशाता है। वोहभी ज्ञान इंद्रियके अनुभव प्रमाण जानता है। बुद्धि ज्ञान एक अर्थ है। पांचवें अविनाशी है, उसमें यह शंका है कि जिस शरीरका नाश हो जाता है, उसका आत्मा पीछे अनुभवमें नहीं आता। कोई शरीर अविनाशी नहीं है। शरीरसे रहित निराकार पदार्थ अनुमान न होगा और

निराकार पदार्थ झूंठा पद बराबर है। जिसके आकार नहीं उसकी आत्मा कहां रहेगी। निर्गुण है तो चार वेद छः शास्त्र अठारह पुराणमें किसका गुण गाया है। निराकार है तो चौबीस अवतार किसके हुए। लाखों भक्तोंको दर्शन कौन देता है। जाति धर्म तीर्थ यात्रा ब्रह्मभोज दान यज्ञ पाप पुण्य गया काशी शादी क्रिया कर्म इस ज्ञानमें सब मिथ्या होता है। देवता ऋषि मुनि साधु सिद्ध सब निरर्थक हो जावेंगे। आत्मा ब्रह्म होता तो शरीरका मालिक वही है। अकर्म कोई न करता। सबको शांतपद प्राप्त होता, सब स्वर्गमें जाते। जान बूझकर नरकमें कोई न जाता। ऐसी अनेक शंका आत्मा ब्रह्म होनेमें उत्पन्न होती हैं। विद्वान् जान लेवेंगे। सिवाय हिंदुस्थानके दुनियामें बहुत मुल्क हैं। उनका मत देखो तो आत्माका नामभी कोई नहीं जानता; और पुनर्जन्मभी जीवका नहीं होता। मनसूरने अन-लहक्क कहा उसको सूलीपर चढाया। अपना आत्मा ब्रह्म है। तो दिन रात कौन करता है। और पानी पत्थर कौन बरसाता है। आत्मा शुभ अशुभ कर्मका फल कौन देता है। और अपनी आत्मा अनादि नहीं है। उसको किसने बनाया और चार महीने वर्षा और चार महीने गरम और चार महीने शरद किसके हुक्मसे होता है। मेरे ज्ञानमें आत्मा परमात्मा एक नहीं है। कदाचित् कोई अज्ञानी एक कहे तो परमात्मा कहने-वाला कौन है। यह सुनकर महात्मा गुरु बोले कि आजतक सब ग्रंथकर्ताका मत ऐसा रहा कि आत्मा ब्रह्म है। मैं उस

प्रमाण तुमको उपदेश किया। अब तुम्हारे ज्ञानमें नहीं आता तो विचार करो। मुझको इसके सिवाय विशेष ज्ञान नहीं है कि मैं तुम्हारा बोध करूं।

इति अभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद नौवें तरंगमें अहंब्रह्म-विचार नाम नौवीं लहरी एवं नौवां तरंग समाप्त ॥ ९ ॥

दशवां तरंग प्रारंभ।

पहली लहरी।

नाम ब्रह्म है।

अथ श्रीनिरंजनाय नमः। मैं आत्मा खंडन हो जानेमें बहुत सोचमान हुआ। ब्रह्मप्राप्तिकी आस निरास हो गई। अब उदास होकर एक पर्वतपर चला गया। जिसको वहांके रहनेवाले कैलास कहते थे। उसपर जाकर क्या चमत्कार देखा कि एक बडका झाड बहुत बडा है। उसके नीचे एक चौतरा श्वेत पाषाणका बना हुआ है। उसपर एक महात्मा सदाशिव शंकर महादेव समान विराजमान हैं। अनेक चेला अधिकारी अपने अपने काममें लगे हैं। धूनी अखंड होमके समान जल रही है। गांजा चरसके धुएंकी धूम हो रही है। भांगकी कुंडी सोंटा खटक रहा है। व्याघ्रांबर मृगशालापर बहुत संत महात्मा बैठे सत्संग कर रहे हैं। मैं उनको सदा-शिव समझा परंतु महादेव वह नहीं थे। उनके ऊपर संपूर्ण कृपा शंकरकी रही। मैं उनका दर्शन पाकर बहुत आनंदी

हुआ और अष्टांग दंडवत् करिके उनके पास गया और सब हाल अपना कहा। तब महात्मा गुरु हँसकर बोले कि बडे आश्चर्यकी बात है कि दत्तात्रयने चौबीस गुरु करके अपना बोध कर लिया, परंतु तुमको पैंतालीस गुरुसे बोध न हुआ सब महात्मा गुरु मूर्ख नहीं थे। जिसने जो सिद्धांत कहा सो सत्य कहा, तुम्हारी मूर्खता अज्ञानता सिद्ध होती है। अब मैं तुमको सच्चा ब्रह्म जो महात्माओंने गुप्त रक्खा है उपदेश करूंगा और सर्व शंका और भ्रमना तुम्हारी नाश कर देऊंगा। पीछे जब रत्तीप्रमाण शंका न रहे और संपूर्ण पंच ज्ञान इंद्रियसे निश्चय हो जावे तब बोध करना। ब्रह्म निर्गुण निराकार निरंजन निरामय निर्भय निर्वैर नाम है। शरीर जगत् है, आत्मा माया है। ब्रह्मांडमें जगत् माया ब्रह्म तीन पदार्थ प्रधान हैं। पिंडमें शरीर आत्मा नाम जो पिंडमें वह ब्रह्मांडमें यह सबका मत है यह पिंड ब्रह्मांडके आकार है। जिसने पिंडका ज्ञान पाया ब्रह्मांडका निश्चय करके पाया। और ब्रह्म शब्दभी नाम कोई पदार्थ ब्रह्मांडमें नामरहित नहीं है। रूपकी नाश हो जाती है। नामकी नहीं होती। ब्रह्मका ज्ञान बहुत दुर्लभ और कठिन है। इस प्रकारका विचार ब्रह्मका आजतक नहीं हुआ। पहिलेके आचार्य ऋषि मुनि पंडितने जो ग्रंथ बनाया दूसरे ग्रंथके आधारसे बनाया। अनुभव करके नहीं बनाया। इस कारण ब्रह्मका निश्चय आजतक प्रगट नहीं हुआ। अब तुमने इस झगडेका अंत किया। इस कारण ब्रह्मकाभी अंत हो गया। नामके ऊपर कोई पदार्थ बडा नहीं है। पंच तत्वसे शरीरकी उत्पत्ति

है और पंचतत्व निराकारकी शक्तिसे जीवकी उत्पत्ति है। और पंच तत्वके मूलसे नामकी उत्पत्ति है। पंच तत्वका मूल शून्य आकार सिद्ध होता है। शरीरको जगत् इस सिद्धांतसे कहना चाहिये कि नाशवान् है। जीवको माया इस कारण कहना चाहिये कि पुनर्जन्म होता है। नामको ब्रह्म इस सिद्धांतसे कहना चाहिये कि शरीर और जीव नाश होने उपरांत वह जैसाका तैसा बना रहता है। जैसे जगत्का नाश होने उपरांत ब्रह्म बना रहता है उसी तरह नामभी बना रहता है। विचारसे जगत् और मायाका धनी ब्रह्म अनुमान होता है। वैसे शरीर और जीवका धनी नाम प्रत्यक्ष दर्शाता है। ज्योतिष आदिक गुप्त विद्या जाननेवाला नामके ऊपरसे शरीर जीवका भूत भविष्य वर्तमान कह देते हैं। पुरश्चरण प्रयोग अनुष्ठान सब नामके ऊपर होता है। विवाह आदिकमें नाम प्रधान है। शरीर और जीवका भेद नहीं देखा जाता। बडे बडे राजा प्रजा बादशाह महाजन शूर वीर ऋषि मुनि महात्मा देवता दैत्य नामकी बडाई चाहते हैं। इसकी शांति जीवमात्रको नहीं है। नामके वास्ते शरीर जीव दोनों नष्ट कर देते हैं। बडा छोटा चारों वर्ण नामको डरता है। दान पुण्य विवाह मरौनी सब नामके वास्ते हैं। बाग बावडी कुंवा तालाव स्थान धर्मशाला देवल सब नामके वास्ते हैं। हाथी घोडा फौज खजाना मुल्क राज परिवार धन सब नामके वास्ते हैं। मेरे ज्ञानमें निद्रा मैथुन आहार तीन प्रकृतिके सिवाय और व्यवहार जो संसारमें है सब नामके वास्ते हैं। नामकी प्रशंसासे शरीर प्रसन्न होता है।

निंदासे मलीन होता है । यावत् व्यवहार जगत्का या शरीरका नामके आधारसे होता है और भजन कीर्तन स्मरणमें सब नाम प्रधान है । मंत्र स्तोत्र गायत्री संध्या पूजा सब नामका आधार है। तुलसीदासकी चौपाईका पद ऐसा है। 'राम न सकें नामगुण गाई' । उसके सिवाय गुरु नानकशाह साहबने सत्यनामको ब्रह्म जाना और उसीको सत्य माना । अनेक आचार्य वेदांतग्रंथवाले कलियुगमें हुए सबने नाम प्रधान किया । और शास्त्रका मत ऐसाभी है कि कलियुगमें सिवाय नामके और अनेक प्रकारकी तपस्या निरर्थक है केवल नाम मुक्तिदाता है और जो कोई तीनों कालमें कुछ पाया नामसे पाया। चोर शरीरसे चोरी करता है ग्रंथमें उसका नाम प्रगट होता है। आठ प्रकारका तंत्र मंत्र यंत्र सब नामपर होता है । विचारसे देखो तौ पदार्थका मूल नाम अनुमान होता है । नाममें दो अक्षर ना और म, जिसका अर्थ मैं नहीं । वही उत्पत्ति नाश संसारका काम है । कभी है कभी नहीं । अनुलोम करनेसे मान होता है, मान नामका है । शरीर जीवका मान नहीं है । यह प्रत्यक्ष ज्ञान है। और बहुत सिद्धांतसे ब्रह्मका स्वरूप नाम सिद्ध होता है आगेके महात्मा और ऋषियोंने इस सिद्धांतको प्रगट नहीं किया। कारण भक्तिमार्ग जगत्से कम हो जावेगा । तथा संपूर्ण जाता रहेगा । निर्गुण निरंजन निराकार शब्द संसारमें नाम है । कदाचित् ऐसी शंका कोई करे कि पदार्थ प्रथम होता है, नाम पीछे होता है यह ज्ञान मूर्खका है । कोई वस्तु नाम बगैर नहीं होता । चौरासी लाख योनिके सिवाय

नई एक कीडीभी उत्पन्न नहीं होती। सर्व नाम आदिको है। नाम मनुष्य योनिमें है, और किसी योनिमें नहीं है। वहभी पंडित लोग नक्षत्र प्रमाण रख देते हैं। शेषजी दो हजार जिह्वासे सदा नाम लेते हैं अंत नहीं पाया। नाम अधीन शरीर प्रत्यक्ष दरशाता है। कोई जानवरका नाम रक्खो तौ वह बुलानेसे आता है अनाम उसको कहते हैं। नाम सबको है। नामके नाम नहीं है। विचार करके देखो, नामकी महिमा ऐसी अगम अपार है कि कोई नहीं कह सकता। नामका जपना भक्तिमार्ग है। नामका अनुभव लेना ज्ञानमार्ग है। भक्तिमार्ग सहज है और सबको सुगम है। नामका अनुभव होना कठिन है। इस अनुभवके वास्ते गुरु ऐसा होना चाहिये कि जो सर्वज्ञ ज्ञानको जानता हो और अनुभव पाया हो। शिष्य भी अधिकारी होना चाहिये। गुरुसेवक हो ऐसा संयोग प्रारब्धयोग जब होवें मनोरथ सिद्ध हो जावें। मैंने हाथ जोडकर कहा कि, आपका ज्ञान ब्रह्म प्राप्तिकी खान है। ऐसा निर्मल शुद्ध विचार नाम ब्रह्मका कोई नहीं जानता। जैसे गुरुकी खोजना आपने उपदेश किया, वैसे तथा उससे हजार गुण ज्यादा आप हैं। और जैसे शिष्यकी खोजना उपदेश हुआ उससे कुछ जादा ...सभी है। यह संयोग प्रारब्धके योगसे बहुत अच्छा मिला है। ...र जो आप विचार करेंगे वह जरूर होगा। पैंतालीस महा... गुरुका उपदेश हो चुका। जो महात्मा ब्रह्मका लक्षण ...ता है वह सुनकर परम आनंद हो जाता है। परन्तु जब ...ार करके शंका की जाती है तब वे मिथ्या हो जाते हैं।

आपने नामको ब्रह्म कहा और बहुत प्रकारका दृष्टांत और बोध दिया, परंतु खंडन होनेके पीछे मिथ्या हो जावेगा। आप लोग बात जानते हैं। बातका भेद नहीं जानते। नाम शब्द स्वतः नहीं है रूप आधीन है। जैसे परमेश्वरका नाम जपो विद्वान् विचार करेंगे। मेरा नाम घरमें और था, सरकारमें और था, अब और है। नाम चिह्न है, जैसे पलटनवालोंका नाम दूसरा होता है, और अक्षर आधीन है। कदाचित् अक्षर न होवे तो नाम या कोई शब्द उच्चारण न होवे। छोटी जातवाले लडका लडकीका नाम अविचारसे रखते हैं। कोई नाम दुष्ट है, कोई सज्जन है, नाम कुछ पदार्थ नहीं है। नामका कर्त्ता पंडित अथवा मा बाप होते हैं। ब्रह्मका कर्त्ता कोई नहीं होता। बडे बडेका नाम डूब जाता है। नाममें बट्टा लगता है। नामकी निंदा होती है। जिस योनिमें नाम नहीं है उसमें ब्रह्मका अनुभव किस प्रकारसे होगा। जो मनुष्य विद्याके अधिकारी हैं उनके सत्संगमें नामकी चर्चा है। नामको ब्रह्म कहना अपराध है। तब महात्मा गुरु बोले कि ऐसा झगडा ब्रह्म ज्ञानका देखनेमें नहीं आया, और सब ग्रन्थ वेदांतके सरितासमान हैं। यह अखिलाब्धसागर महासिंधु है। इसके पार जाना कठिन दुर्गम है। मुझको दृढ ज्ञान हो गया था कि मैं तत्वपदको जानता हूं। वह ज्ञान आज जाता रहा। तुमारे विचारसे नाम ब्रह्म नहीं है और यथार्थमें अक्षर आधीन है, परन्तु एक उपदेश करता हूं, कि यहांसे थोडी दूरपर आगे एक पर्वत है, तुमको रास्तेमें मिलेगा। उसपर एक महात्मा सिद्ध जिनके

पास देवलोकसे देवता आते हैं, वह विराजमान हैं। कदाचित् उनकी कृपा तुम्हारे ऊपर होवेगी तो तुम्हारा सब भ्रम दूर हो जावेगा।

इति अभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद दशवें तरंगमें ब्रह्मविचार नाम पहली लहरी संपूर्ण।

दूसरी लहरी।

प्रत्यक्ष दर्शन हुआ।

अथ श्रीहनुमते नमः। जब नाम ब्रह्मभी खंडन हो गया, तब बडी चिंता हुई कि सारी उमरका परिश्रम मिथ्या हुआ। दुनियामें कोई उद्यम करके पडे रहते। धनपरिवार भोगका सुख प्राप्त होता। ब्रह्मकी खोजनामें बूढे हो गये। अब ब्रह्ममें भ्रमका ज्ञान प्राप्त हुआ। ऐसी ग्लानि करिके चला जाता था कि, उसी पर्वतपर कुछ दूरसे धूम नजर आया मैं वहां गया तो बहुत अच्छा एक बंगला रंगीन पत्थरका बना हुआ है। उसमें पलंग चांदीका बहुत मनोहर बिछा हुआ है। बहुत भक्त लोग सेवामें बैठे हैं। स्वामीजी विष्णुस्वरूप विराजमान हैं। दश पांच चेला अधिकारी अपने २ काममें लगे थे। मैं साष्टांग दंडवत किया। महात्मा गुरुने बडी कृपासे मेरा हाल पूँछा। मैंने सब हाल अपना कहा। तब महात्मा गुरु बोले कि नाम ब्रह्म जरूर है परंतु यह काम जल्दीका नहीं है बहुत काल सत्संग होगा तब तुम्हारी शांति होगी। वह महात्मा गुरु जिनने नामको ब्रह्म

कहा था हमारे गुरुभाई हैं। शंका समाधान करना सिद्धका काम है। पहिले तुम इस पहाडपर एकांतमें एक स्थान अपने रहनेके वास्ते बनाओ और अपना चित्त एकाग्र करके उसमें रहो पीछे जैसा हम उपदेश करेंगे वैसा करना। मैं महात्मा गुरुकी आज्ञानुसार एक फूसका बंगला उसी पहाडपर अच्छे मौकेसे एकांत सत्संग योग्य बनवाया। पचास रुपैया उसमें खर्च हुआ महात्मा गुरुने अपने पाससे दिया। मैं उस स्थानमें आनंदसे भजन करता रहा। महात्मा गुरु नित्य आठ बजे दिनको आवें। बारह बजेतक मुझको कुछ उपदेश करें। पीछे रातको आठ बजे आवें। बारह बजे राततक ज्ञान ध्यान बतावें। छः मास इसी प्रकार नित्य सत्संग रहा। जो महात्मा गुरुने तेरह प्रश्न किये वे सूक्ष्म कहता हूं। पहिला प्रश्न यह किया कि, ब्रह्म निराकार अथवा साकार। जिसको तू जानता है वह क्या पदार्थ है, और तू जो चाहता है वह कौन है। दोनोंका तत्वभेद जैसा तुम्हारे मनमें आवे सो कहो। मैंने हाथ जोडकर कहा कि ब्रह्मका स्वरूप कुछ नहीं है। और मेरे स्वरूपकाभी कुछ पता नहीं है। निश्चय करके दोनों नाम प्रसिद्ध हैं नाम वह सिद्ध होता है। इसका भेद कठिन है। मैं और ब्रह्म दोनों नाम हैं। दूसरा प्रश्न यह किया कि जब तू गर्भमें रहा तथा पैदा हुआ या बालक रहा, उस समय कैसा रहा और अब कैसा है। मैंने कहा कि जब गर्भमें था तब कुछ नहीं था पैदा हुआ तो बच्चा अज्ञान रहा। जब नाम हुआ तो मैं अभिलाखदास हो गया अब मैं नाम हूं ऐसा

सिद्ध होता है। तीसरा प्रश्न यह किया कि जो कोई किसीको पुकारता है तो वह बोलता है। दोनोंमें जो शब्द उच्चारण हुआ उसका भेद कहो मैंने कहा कि रामदासने शामसुंदर-दासको पुकारा उसने हां कहा। यह शब्द उच्चारणका भेद हुआ महात्मा गुरु बोले कि शामसुंदरदास नाम है या स्वरूप है। मैंने कहा नाम है। तब महात्मा गुरु बोले कि नामको हां कहनेकी सामर्थ्य नहीं है। मैंने कहा कि स्वरूप नाम आधीन है। और स्वरूपको नामका ज्ञान है। चौथा प्रश्न यह किया कि, एक पुरुषको तू पहिचानता है, नाम उसका नहीं जानता दूसरे पुरुषका नाम जानता है, स्वरूपकी पहिचान नहीं। कदाचित् दोनों अपनेसे बिछड जावें तो किसको ढूँढ सकता है। मैंने कहा कि जिसका नाम जानता हूं उसको ढूँढ सकता हूं। अनामकी खोजना नहीं हो सकती। पांचवां प्रश्न यह किया कि कोई कर्जा लेनेवाला रुपैया लेवे और कागद लिख देवे उसपर अपनी तसबीर बनावे तथा अपने शरीरका रुधिर उसपर छिडक देवे तो कागद पक्का होवे या नहीं। मैंने कहा जब नाम उसपर लिखा जावेगा तब पक्का होगा। कचेरी सरकारमें नाम प्रधान है। छठवां प्रश्न यह किया कि मानुषयोनि और पशुयोनिमें क्या भेद है। अच्छी तरह विचार करके कहो। मैंने विचारसे देखा तो निद्रा मैथुन आहार हर्ष भय प्रकृति उत्पत्ति जीवन मरण दोनोंको समान हैं। मैथुन सृष्टिसे दोनोंकी उत्पत्ति है। केवल यह भेद है कि जानवरको नाम नहीं है। आदमीको नाम है। और सब कारवाई व्यवहार बराबर है।

दोनोंमें नामका भेद है। महात्मा गुरुसे यह विचार कह दिया कि, पशुयोनि और मानुषयोनिमें नामका भेद है। सातवां प्रश्न यह किया कि जो कर्म शरीर आत्मासे होता है उसका फल मरने उपरांत कौन भोगता है। नेकनामी बदनामी पीछे उस कर्मके कौन पाता है। मैंने कहा कि सब नामको होता है। अग्नि वायु निराकारमें लय हो जाती है। जल पृथ्वी नष्ट होकर मिल जाता है। नाम बना रहता है। नेकनामी बदनामी नरक स्वर्ग नामको होता है। आठवाँ प्रश्न यह किया कि जो यंत्र मंत्र तंत्रसे किसीको वश करता है या शत्रु मित्रपर उच्चाटन मारण करता है तथा देवता दैत्य अथवा किसीके ऊपर करता है तो किस तरह करता है। मैंने कहा कि उनके नामपर करता है। जब नाम वश हो गया तब स्वरूप आप वश हो जाता है। परमेश्वरभी नाम लेनेपर प्रगट होता है। आठ प्रकारका मंत्र यंत्र तंत्र नामपर होता है। नवां प्रश्न यह किया कि चौरासी लाख सृष्टि चेतन जड और ब्रह्मचर्य गृहस्थ वानप्रस्थ संन्यास परमहंस पांचों आश्रमवाले किसका रटन करते हैं। और शैव वैष्णव शाक्त अर्थात् योगी जंगमसे बडा नाथ उदासी कबीरपंथी दादूपंथी सत्तनामी रामसनेही परनामी मानभाउ किसका भजन करते हैं। विचार करके कहो। मैंने कहा कि सब नाम रटन करते हैं और नामका भजन करते हैं। प्रत्यक्ष स्वरूपकी पूजा कोई नहीं करता। दशवां प्रश्न यह किया कि तुम अयोध्यामें रहते हो। काशीमें तुम्हारे सेवक और चेलेने तुम्हारा नाम लेकर कुछ साधन किया वह सिद्ध

हो गया और शरीरसे तुमने उपकार किया, नहीं हुआ । तो कौन बडा हुआ । मैंने कहा कि नाम बडा हुआ । ग्यारहवां प्रश्न यह किया कि ब्रह्म निराकार आकार होकर कोई योनिमें अपनेको दरसावे परंतु ब्रह्म नाम उसका प्रगट न हो तो उसका दर्शन कोई न करे । और नाम प्रगट होनेपर कदाचित् नीच योनिभी होवे सूकर आदिक तो सब कोई पूजा करे सेवा करे । झाड मशान आदिकमें देवका नाम प्रसिद्ध हो जाता है, तो यात्रा मेला लगता है । मैंने कहा कि इस सिद्धांतमेंभी नाम प्रसिद्ध होता है। बारहवां प्रश्न यह किया कि कोई महाजन करोडपती दूसरे शहरमें जावे अपने स्वरूपके विश्वाससे एक रुपैया उधार मांगे कोई न देवे । नामसे हुंडी लिख देवे लाखों रुपैया मिल जावे। कौन बडा हुआ। मैंने कहा कि नाम बडा हुआ। यही दृष्टांत हाकिमपर जानो । तेरहवां प्रश्न यह किया कि नामका भेद और रूप जो तेरे ज्ञानमें आता है वह कहो। मैंने कहा कि नामका रूप अक्षर दरसाता है । और अक्षरका रूप शब्द दरशाता है। शब्दका रूप आकाश अनुभव होता है । आकाशका रूप नाम और कुछ रूप आकार साकार नहीं है । आकाश केवल नाम है । ये तेरह प्रश्न महात्मा गुरुने किये और कहा कि, कुछ काल इसका विचार करो । जो जो शंका तुम्हारे ज्ञानमें आवे निर्भय होकर करो । जो पदार्थ निराकार है तथा शब्द है या नाम है, उसका बोध ज्ञान (बुद्धि) से होगा । प्रत्यक्ष दृष्टिसे नहीं होगा और दृष्टांतभी रूपवान् पदार्थका हो सकता है। निराकारका नहीं । जैसे आकाशके शरीर नहीं है ।

नाम और गुण है। उसी तरह ब्रह्म नाम है विचार करो मैं इन तेरह प्रश्नोंका विचार किया आंखसे देखा तो अणुप्रमाण नाम ब्रह्म होनेसे शंका नहीं रही। यह सिद्धांत ऐसे अचल है कि अज्ञानीकोभी ब्रह्मका ज्ञान हो जावे। लवलेश शंका न रहे। ऐसा सिद्धांत ब्रह्मज्ञानका अनुभवसहित आजतक देखनेमें नहीं आया। अनेक ग्रंथ वेदातके आचार्योंने बनाये, परंतु ऐसी शांति किसीमें प्राप्त नहीं होती। मेरे ज्ञानमें नामके सिवाय और कोई ब्रह्म नहीं है। परंतु एक संदेह नाश नहीं हुआ यह कि नामरूपी ब्रह्म जगत्का कर्ता नहीं हो सकता। तब महात्मा गुरु बोले कि संपूर्ण सृष्टि अनादि है। इसकी आदि अनुमान करना मूर्खका काम है। मनुष्यसृष्टि और पशु समान दोनों जंगलमें रहते थे उनको कुछ ज्ञान अक्षरका नहीं था। निद्रा मैथुन आहार जानते थे। जैसे अबभी बहुत टापुमें मनुष्य पशुसमान पहाडोंमें रहते हैं। बहुत काल पीछे जिसकी संख्या कहनेमें कुछ प्रत्यक्ष प्रमाण नहीं है, आर्यदेशमें संस्कृत विद्या उत्पन्न हुई। तैसा आठ तरंगमें नास्तिक मतवालेने वर्णन किया। उस विद्याके आधारसे ब्रह्म माया और जगत् तीन नाम प्रधान हुए। पीछे चौदह भुवन चौरासी लाख सृष्टिका नाम रक्खा गया। और अनेक ग्रंथ इस विचारमें बनाये गये। जबसे ब्रह्मका नाम प्रगट हुआ तबसे ब्रह्म हुआ। कदाचित् वह कुछ हो, इसी तरह जगत् और मायाका जिस वक्त नाम रक्खा गया, उसी वक्त वहभी उत्पन्न हुआ। अथवा जिस रोज तुम्हारा

नाम रक्खा गया उस रोज तुम्हारी उत्पत्ति हुई। जिस पदार्थका नाम जब रक्खा गया तब वह पदार्थ उत्पन्न हुआ। जबतक नाम नहीं होगा वह कुछ पदार्थ अनुमान नहीं होगा। यह सिद्धांत अशंक है। पुराण आदिकमें जो कथा लिखी है वह बहुत दिन पीछेकी है। उसमें गुप्त अर्थ और है। अबभी कविलोग पुराणी कथाको छंद चौपाईमें कह देते हैं, तो वह काव्य पुराणी दरसाती है। लंडनमें दो हजार बरससे विद्या हुई। अर्बस्थान पारसमें सात हजार बरससे विद्या हुई। हिंदुस्थानमें बहुत पहिले हुई जबसे अक्षर शब्द हुआ तबसे ब्रह्माण्ड हुआ। मैंने हाथ जोडकर कहा कि यह सिद्धांत मेरे ज्ञानमें दृढ हो गया कि जब अक्षर हुआ तबसे शब्द हुआ। और जब शब्द हुआ तब नाम हुआ। जब नाम हुआ तब सर्व पदार्थका अनुभव हुआ। इस ज्ञानसे नामरूपी ब्रह्म जगत्का कर्ता हुआ। परंतु एक संदेह और है कि नामरूपी ब्रह्मका भजन करनेसे क्या अर्थ सिद्ध होगा। अपना कुछ भला बुरा वह ब्रह्म कर सकता है या नहीं। तब महात्मा गुरु बोले कि प्रत्यक्ष देखो। गुरु नानकशाह साहब दादू साहब कबीर साहब शंकर स्वामी रामानन्दस्वामी तुलसीदास पलटूदास ऐसे अनेक महात्मा कलियुगमें नामके आधारसे ब्रह्म समान पूजे जाते हैं। इसके सिवाय और क्या अर्थ सिद्ध होगा। वर्तमानमें गुरु माधवदासजी युगलानंदजी रघुनाथदासजी तिवारी उमापतजी बाबा रामप्रसादजी अयोध्यामें देवता-

समान हो गये। नामरूपी ब्रह्मसे सब अर्थ सिद्ध हो सकता है। मैंने हाथ जोडकर कहा कि मुझको अब कोई शंका नहीं है। सर्व मोह संदेह भ्रम वासना शंका नाश हो गया। निष्काम शांति ज्ञान बोध प्राप्त हो गया। ये सब आपकी कृपा है। मेरेको प्रत्यक्ष ब्रह्मप्राप्तिका आसरा हो गया। तब महात्मा गुरु बोले कि श्रवण मनन अध्यासका बीज सत्संग है। और तीनों मूल हैं। उसमें ज्ञानरूपी झाड तीन शाखासे प्रगट हुआ। ब्रह्मज्ञान आत्मज्ञान मायाज्ञान जिसको अनात्मज्ञानभी कहते हैं। श्रवणमूलसे अनात्मज्ञान हुआ। मननमूलसे आत्मज्ञान झाड हुआ। अध्यासमूलसे ब्रह्मज्ञानका झाड प्रगट हुआ। उस ज्ञानका लक्षण यह है। पहिले अनात्मज्ञानका लक्षण और भेद कहता हूं। जैसे जलमें लहरी या बुदबुदा उत्पन्न और नाश होता है, उस प्रमाण पंचमहाभूतसे चौरासी लाख सृष्टिकी उत्पत्ति नाश होती है। उस सम्पूर्ण सृष्टिमें कोई छोटा बडा अधिक न्यून उत्तम मध्यम भला बुरा नहीं है। सबकी उत्पत्ति और स्थिति और नाश अद्वैत स्वरूप है उसीको तीन गुण तीन काल कहते हैं। पंचमहाभूत अनादि हैं। उनका भेद कोई नहीं कह सकता। मैं कुछ अनुमानसे कहता हूं कि पहिले आकाशरूपी ब्रह्म निर्गुण निराकार निर्विकार निश्चल निरंजन अनादि है। उस निराकारकी इच्छा मूल माया प्रकृति चलायमान होकर वायुरूप हुई वायु आकाशसे प्रकाश हुआ। उसको तेज कहते हैं। ये दोनों स्वरूप सूक्ष्म हैं। स्थूल नहीं,

परंतु ज्ञानसे वायु तेजका अनुभव हो सकता है। आकाशका नहीं। उन दोनोंसे जल पृथिवी हुआ। जो प्रत्यक्ष सृष्टिका मूल है। पृथिवीसे स्वरूप जलसे बीज अग्निसे ज्ञान, वायुसे श्वास उत्पन्न और नाश हुआ करता है। स्थूल सूक्ष्म होना अनादि जगत्‌का स्वभाव है। इसको अनात्मज्ञान कहते हैं। अब आत्मज्ञान लक्षण और भेद कहता हूं कि उन चारों तत्व सूक्ष्म स्थूलके भीतर या बाहिर जो आकाश तीन रूपसे व्यापक है। घटाकाश मठाकाश चिदाकाश वहही आत्मा है, वो अपनी मायाको चार खानसे देखकर चौरासी लाख घटमें अपने अद्वैत रूपको जुदा जुदा जाना और मायासे द्वैतज्ञान दृढ होकर अहंरूपी अहंकार प्रगट हुआ। उस अहंकारसे मैं मैंकी कल्पना उत्पन्न होकर संकल्प विकल्प सुख दुःख भोगने लगा। परंतु आकाशके आधार विना चारों तत्वसे घटकी उत्पत्ति नहीं होसकती। इसको आत्मज्ञान कहते हैं। अब ब्रह्मज्ञानका लक्षण कहता हूं कि उस तीनों आकाशके भीतर बाहिर जो महाआकाश शून्य आकार है जिसका अंत कोई नहीं जानता उसमें अथवा वही निर्गुण निराकार ब्रह्म मूलतत्व अद्वैत अखंड पदार्थ है। वही ब्रह्म है। उसका अनुभव ब्रह्मज्ञानीको होता है। सुषुप्ति अवस्थामें जो सुख भोगता है अथवा पांच ज्ञानइंद्रियमें जिसकी सत्ता है वही ब्रह्म है। उसके रंग रूप नहीं है। यथार्थमें अनुराग है अधिकारी ब्रह्मज्ञानी निराकार नामरूपी ब्रह्मको पहिचानकर निर्गुण मुक्तिको प्राप्त होते हैं। इसको ब्रह्मज्ञान

कहते हैं। इस तीनों ज्ञानके वशसे तू भ्रमनाको छोडकर शांतस्वरूप जीवन्मुक्त रहे। अंतमें निर्गुण मुक्तिको प्राप्त होकर निराकार नामरूपी ब्रह्ममें लय हो जावेगा। मैंने हाथ जोडकर कहा कि अब मेरे रोमरोममें ब्रह्मका ज्ञान व्यापक और प्रवेश हो गया। कुछ शंका संदेह नहीं रही, अब कृपा करके केवल उसके रूपका अनुभव अथवा मरने उपरांत उसके रूपमें लय हो जानेकी विधि संपूर्ण प्रमाणसे इस दासानुदासको उपदेश कीजिये। जिसमें जन्म मरण आवागमनसे रहित होकरके निर्गुण मुक्तिको प्राप्त हो जाऊं। और अद्वैत अखंड पदवीको प्राप्त होकर अभिलाखदाससे अभिलाखशाह हो जाऊं। तब महात्मा गुरु बोले कि जबतक चैतन्य शक्तिका पंचतत्वकी शरीरसे संयोग अर्थात् संबंध है तबतक उसमें लय नहीं हो सकता। शरीर छोडने उपरांत कदाचित् सब संयोग मिल जावे तो हो सकता है। संयोगका विस्तार ऐसा है। कि पहिले शिष्य अधिकारी संबंधी होना चाहिये। अधिकारी उसको कहते हैं कि जो चार साधनमें प्रवृत्त हो। मलविक्षेप अज्ञानको छोडना चाहिये। मल निष्कामसे, विक्षेप उपासनासे, अज्ञान ज्ञानसे नाश होता है। और चार साधनके नाम ये हैं। विवेक वैराग्य समाधि मोक्ष। आत्माको अविनाशी अचल जानना। जगत् नाशवान् जानना, यह लक्षण विवेकका है। ब्रह्मलोकतकके सुखको [illegible] जानना, यह लक्षण वैराग्यका है। समाधि छः [illegible] तितिक्षा। [illegible]

रोकना शम है इंद्रियको रोकना दम है । वेदगुरुवाक्यपर निश्चय करना श्रद्धा है। मनकी भ्रांति जाय वह समाधान है। साधनसे विषय कर्मका त्याग करे, वह उपरम है । आतप शीत क्षुधा वर्षा एक जानकर सहन करे वह तितिक्षा है। भ्रमका नाश और ब्रह्मकी प्राप्ति, उसको मोक्ष कहते हैं । इस चार साधनके मूल तीन हैं, श्रवण मनन अभ्यास। तत्पद त्वंपद असिपद महावाक्य है। कोई तत्वमसि कहता है इसका अर्थ अंतरंग और बहिरंग और जैसाका तैसा। विवेक आदिक अंतरंग है। युग आदिक बहिरंग हैं। अंतरंग समीप बहिरंग दूर, जिसकी बुद्धिमें विपर्यय असंभावना नहीं है, उसको असिपद कहना चाहिये। श्रवण विना विवेक आदिक होवे नहीं। श्रवण सबका मूल है। ज्ञानभी श्रवणसे होता है। श्रवण युगादिक बहिरंग है । उसमें ज्ञान नहीं है । विवेक आदिकमें है। विवेक श्रवणसे होवे है। बहिरंगसे अंतरंग होता है। वेदवाक्य दो प्रकारके अवांतर वाक्य महावाक्य, उसके लक्षण ये हैं कि अवांतर वाक्य प्रत्यक्ष ज्ञान है। उसका अर्थ ब्रह्म है। महावाक्य अप्रत्यक्ष ज्ञान, उसका अर्थ मैं ब्रह्म हूं। प्रत्यक्ष ज्ञान विवेक आदिकसे होता है। अप्रत्यक्ष ज्ञान श्रवण आदिकसे होता है यह लक्षण अधिकारीका है। और संबंधी उसको कहते हैं कि, ग्रंथमें जो जीव और ब्रह्मकी एकता है वह प्रतिपादन है । और करनेवाला प्रतिपादक है। फल प्राप्य है। अधिकारी प्रापक है। जो वस्तु प्राप्त होवे प्राप्य है और जीव ब्रह्मकी एकता विषय है अधि-

कार और विचारमें संबंध कर्ता कर्तव्यका है । अधिकारी कर्ता हुआ। विचार कर्तव्य हुआ। ग्रंथ और ज्ञानमें संबंध जन्य जनकका है। ग्रंथ जनक है। ज्ञान जन्य है । जैसे उत्पत्ति करनेवाला जनक है। जो उत्पन्न होवे सो जन्य है। जन्म मरण आवागमनकी निवृत्ति ब्रह्मकी प्राप्ति प्रयोजन है। इससे ज्ञान आत्मा अप्राप्त हुआ, यह शंका बने नहीं। आत्मा सदा प्राप्त है। जैसे हाथका कंगन खोया हुआ दूसरेके उपदेशसे पाया। रज्जुमें सर्पका भान अधिष्ठानसे नाश हुआ। अज्ञानको ज्ञान होता है । अज्ञानरूपी दुःख तीन प्रकारका है आध्यात्मिक आधिभौतिक आधिदैविक। रोग क्षुधा आध्यात्मिक, दुःख चोर व्याघ्र सर्प आधिभौतिक, यक्ष राक्षस प्रेत ग्रह शीतपात आधिदैविक। इन तीनों दुःखसे निवृत्ति मोक्ष है। निवृत्ति अध्याससे होती है । भ्रांतिकी उत्पत्ति और निवृत्ति दोनों अध्याससे हैं। इस ज्ञानका जाननेवाला शिष्य अधिकारी और संबंधी होता है। ऐसे शिष्यको प्रारब्धके संयोगसे सद्गुरुभी ऐसा मिलना चाहिये कि जो दूसरा व्यास हो। अट्ठाईस ग्रंथका सार जानता हो । योगशास्त्र संपूर्ण अभ्यास किया हो। समाधि आदिकका फल पा चुका हो। निराकार ब्रह्मका भेद जानता हो और पंचीकरण त्रिगुणका ज्ञाता हो। संत महात्माका सत्संग कर चुका हो। चारों धाम सातों पुरी देख चुका हो । चौदह विद्यानिधान हो। मैंने हाथ जोड़कर कहा कि गुरु और शिष्य संयोगसे दोनों अच्छे हैं।

जो आप कृपा करेंगे वह होगा। दासको जबतक प्रत्यक्ष ब्रह्मका अनुभव नहीं होगा तबतक चित्त शांत नहीं होगा। तब महात्मा गुरु बोले कि ब्रह्म परमेश्वर भगवान् नारायण राम सर्वज्ञ अविनाशी निर्गुण निरंजन निराकार अनंत नाम जिसके हैं वह देखने सुनने सूँघने छूने छुवुकने पांचो ज्ञानमें नहीं आता। वह निराकार उपमा देने योग्य नहीं है। शरीरका साक्षी ब्रह्म जो इसका अंश है, और घट घटमें व्यापक है, वही अपना रूप है। उसका संत महात्मा लोक प्रत्यक्ष ध्यान स्वप्न समाधिमें अनुभव करके सदा आनंदमें रहते हैं, वहभी यथार्थमें ब्रह्म है। परंतु वह ब्रह्म जो अपनेमें है जैसे वायु घटाकाश मठाकाश चिदाकाशमें एक है मैं मैंकी कल्पना मिथ्या है। सब अनुभव उसी ब्रह्म निराकारका है। उस रूपमें लय होनेसे आत्मा परमात्मा एक हो जाता है। अंतमें निर्गुण मुक्तिको प्राप्त होता है। मैंने हाथ जोडकर कहा कि मुझको प्रत्यक्ष ब्रह्म अनुभव होनेकी विधि संपूर्ण उपदेश कीजिये। मैं केवल उसके दर्शनका भूखा हूं। तब महात्मा गुरु बोले कि तुमको हठयोग बताना उचित नहीं है। राजयोगकी विधि उपदेश होना चाहिये। दूसरा योग तुम्हारे योग्य नहींहै। ब्रह्मका प्रत्यक्ष अनुभव देखना बहुत कठिन है। जैसा मैं उपदेश करता हूं उस प्रमाणसे कदाचित् चालीसदिन मन कर्म वचनसे साधन करोगे तो वह प्रगटमें दर्शन देवेगा। पहिले इस स्थान कोठेका परदा होना चाहिये। जिसमें हवा धूप गर्द पिस्सू मच्छड दुखदाई

जीव न आवें १। और स्थानको अंजनी गौके गोबरसे तीन चार लीपना चाहिये। पीछे सफेद मिट्टीसे ऊपर नीचे पोतना चाहिये २। और एक धोला कपडा छतमें दीवालमें लगाना चाहिये। जिसमें ध्यानके समय कूडा कचरा ऊपरसे या बाहिर न आवे। मक्खीमच्छड पिस्सू खटमल मकोडा कोई जीव दुख-दाई पास न आवें ३। अच्छे २ पात्र मृत्तिकाके उसमें छोटे छोटे झाड सुगंध शोभावाले सर्व स्थानमें रखना चाहिये। उसमें जल भरा रहना चाहिये ४। ऊदबत्ती लोबान कपूर धूप कस्तूरी आदिक चालीस रोज पूजनके समय जलाना चाहिये ५। घृत का दीपक पांच बत्तीका पूजनके वक्त जलता रहे। एक दीपक तिलके तेलका अष्टप्रहर चालीस रोज अखंड उस स्थानमें जलता रहे ६। मोगरा चमेली चंपा गुलाब जुही केतकी केवडा-का फूल माला गुलदस्ता नित्य नया आना चाहिये ७। एक चौकी चंदनकी आसन प्रमाण बहुत सुंदर बनवाना चाहिये। एक बाघंबर जो संपूर्ण नख शिखसे हो उसपर बिछाना चाहिये। उसके ऊपर पंचरंगी आसनी बहुत मुलाइम ऊनकी बिछाना चाहिये ८। अपने पहरनेके वास्ते एक जोडा धोती दुपट्टा रेशमी पीतवर्ण पूजनके वास्ते मँगाना चाहिये ९। नैवे-द्यके वास्ते कृष्णा गौका दूध एक सेर मिश्री पावसेर चावल छटांक मेवा छटांक उसकी खीर देवनिमित्त निराकार अर्पण करके एक बार तारा देखकर भोजन करना चाहिये १०। पीछे पान इलायची जावित्री सब मसालासंयुक्त दो बीडा पानका

खाना चाहिये ११ । अबीर अरगजा अतर कस्तूरी केशर आदिक शरीर और वस्त्रमें लगाना चाहिये । सब सामान चालीस रोजके वास्ते जमा करना चाहिये १२ । पीछे अच्छा दिन विचार करके पूजा आरंभ करे । नित्य प्रहर रात्र बाकी रहे उठे । झाडा जंगल जावे । दंतमंजन करे । सूक्ष्म गजकरण क्रिया करे । गरम जलमें भागीरथी गंगा जल थोडा छोडे । शुद्ध होकर स्नान करे । पांवमें खडाऊं राखे । स्थानका दरवाजा भीतरसे बंद कर लेवे । कोई नादान आते जाते पुकारे नहीं । वह रेशमी वस्त्र पहर करिके उस चौकीपर सिद्ध आसन बैठे । कंघेसे केश आदिकको सफा करे । अष्टगंधका तिलक लगावे व बाँसकी पत्तीसमान खडा धूपदानी दीपदानी अच्छी तरह जलती रहे । पहिले आसनशुद्धिका मंत्र पढे । पीछे शरीररक्षा पढे । फिर विघ्ननिवारण पढे । चंद्र सूर्यकी नाडी एक करिके सुषुम्ना नाडीको चलावे । पद्मासन लगावे । उन्मनी मुद्रा धारण करे । सद्गुरुका मंत्र जो कानमें अथवा एकांतमें बताया हो वहही गुरु गायत्री है । उसको अजपा जाप करे । श्वासमें ओहं सोहंका व्यवहार रक्खे । गुदा मुखसे श्वास बंद करे । मनकी संकल्प विकल्पको नाश करे । चित्त श्वासमें रक्खे । बुद्धि दृष्टिमें रक्खे । सत्वगुणी अहंकारको अपना रूप जानकर ज्ञानदृष्टिसे देखे । शरीरको ब्रह्मांड जाने । ब्रह्मांडको ब्रह्मलोक जाने । हम अहंकारको नाश करे । शुद्ध चैतन्य जो संकल्प विकल्पसे रहित है उसको अपना रूप जाने । नासिकाग्रमें ध्यान

रक्खे। दृष्टि बंद करे। उलटा हृदयको देखे। गुदास्थानसे नेत्रस्थानतक षट् चक्र हैं। उनमें बावन कमलदल हैं। पंच प्राण पंच वायु अंतःकरणपंचक पच्चीस प्रकृति सबका स्वरूप और गुण दरसावेगा। पंच विषय पंच ज्ञानेंद्रिय पंच कर्मेंद्रियोंको भूल जावे। हृदयको अच्छी तरह ध्यान करे। श्रवणमार्गको रुईसे बंद कर देवे। आंखको पलकसे, नाकको अंगुलीसे, मुहको हाथसे, त्वचाको चित्तसे रोके। श्वास प्रमाणसे खींचकर रोके। जब श्वास ब्रह्मांडमें स्थिर हो जावे तो जिह्वासो तालमाको बंद करे। तुरीया अवस्था ग्रहण करे। अष्टदल चक्र ब्रह्मांडमें है, उसको देखे। पहिला अठवाडा यह ध्यान दुःख देवेगा। शरीरमें अनेक प्रकारकी पीडा प्रगट होगी। प्राण घबरावेगा। दूसरे अठवाडेमें मनोहर भयानक शांत अनुभव बहुत दरसावेगा। उस समय भयमान नहीं होना चाहिये और चित्त चलायमान न होना चाहिये। साधनको क्रम सिवाय न करना चाहिये। तीसरे अठवाडेमें गुदास्थानसे हृदय कंठ स्थानतक सूक्ष्म प्रकाश दरसावेगा। चौथे अठवाडेमें ब्रह्मांडका प्रकाश और हृदयका प्रकाश दोनों एक होकर करोड सूर्यके समान चमत्कार दरसावेगा। अंतशुद्धि और भ्रम नाश हो जाता है। दिव्य रूप दिव्य दृष्टि दिव्य बुद्धि प्राप्त हो जाती है। अपने रूपका भान भूल जाता है। पांचवें अठवाडेमें प्रत्यक्ष साकार रूप जैसा मैं उपदेश कर चुका हूं अनुभव होगा। चालीस दिनमें

खाना चाहिये ११। अबीर अरगजा अतर कस्तूरी केशर आदिक शरीर और वस्त्रमें लगाना चाहिये। सब सामान चालीस रोजके वास्ते जमा करना चाहिये १२। पीछे अच्छा दिन विचार करके पूजा आरंभ करे। नित्य प्रहर रात्र बाकी रहे उठे। झाडा जंगल जावे। दंतमंजन करे। सूक्ष्म गजकरण क्रिया करे। गरम जलमें भागीरथी गंगा जल थोडा छोडे। शुद्ध होकर स्नान करे। पांवमें खडाऊं राखे। स्थानका दरवाजा भीतरसे बंद कर लेवे। कोई नादान आते जाते पुकारे नहीं। वह रेशमी वस्त्र पहर कारिके उस चौकीपर सिद्ध आसन बैठे। कंघेसे केश आदिकको सफा करे। अष्टगंधका तिलक लगावे व बाँसकी पत्तीसमान खडा धूपदानी दीपदानी अच्छी तरह जलती रहे। पहिले आसनशुद्धिका मंत्र पढे। पीछे शरीररक्षा पढे। फिर विघ्ननिवारण पढे। चंद्र सूर्यकी नाडी एक कारिके सुषुम्ना नाडीको चलावे। पद्मासन लगावे। उन्मनी मुद्रा धारण करे। सद्गुरुका मंत्र जो कानमें अथवा एकांतमें बताया हो वहही गुरु गायत्री है। उसको अजपा जाप करे। श्वासमें ओहं सोहंका व्यवहार रक्खे। गुदा मुखसे श्वास बंद करे। मनकी संकल्प विकल्पको नाश करे। चित्त श्वासमें रक्खे। बुद्धि दृष्टिमें रक्खे। सत्वगुणी अहंकारको अपना रूप जानकर ज्ञानदृष्टिसे देखे। शरीरको ब्रह्मांड जाने। ब्रह्मांडको ब्रह्मलोक जाने। हम अहंकारको नाश करे। शुद्ध चैतन्य जो संकल्प विकल्पसे रहित है उसको अपना रूप जाने। नासिकाग्रमें ध्यान

रक्खे। दृष्टि बंद करे। उलटा हृदयको देखे। गुदास्थानसे नेत्रस्थानतक षट् चक्र हैं। उनमें बावन कमलदल हैं। पंच प्राण पंच वायु अंतःकरणपंचक पच्चीस प्रकृति सबका स्वरूप और गुण दरसावेगा। पंच विषय पंच ज्ञानेंद्रिय पंच कर्मेंद्रियोंको भूल जावे। हृदयको अच्छी तरह ध्यान करे। श्रवणमार्गको रूईसे बंद कर देवे। आंखको पलकसे, नाकको अंगुलीसे, मुहको हाथसे, त्वचाको चित्तसे रोके। श्वास प्रमाणसे खींचकर रोके। जब श्वास ब्रह्मांडमें स्थिर हो जावे तो जिह्वसो तालूआको बंद करे। तुरीया अवस्था ग्रहण करे। अष्टदल चक्र ब्रह्मांडमें है, उसको देखे। पहिला अठवाडा यह ध्यान दुःख देवेगा। शरीरमें अनेक प्रकारकी पीडा प्रगट होगी। प्राण घबरावेगा। दूसरे अठवाडेमें मनोहर भयानक शांत अनुभव बहुत दरसावेगा। उस समय भयमान नहीं होना चाहिये और चित्त चलायमान न होना चाहिये। साधनको क्रम सिवाय न करना चाहिये। तीसरे अठवाडेमें गुदास्थानसे हृदय कंठ स्थानतक सूक्ष्म प्रकाश दरसावेगा। चौथे अठवाडेमें ब्रह्मांडका प्रकाश और हृदयका प्रकाश दोनों एक होकर करोड सूर्यके समान चमत्कार दरसावेगा। द्वैतबुद्धि और भ्रम नाश हो जाता है। दिव्य रूप दिव्य दृष्टि दिव्य बुद्धि प्राप्त हो जाती है। अपने रूपका भान भूल जाता है। पांचवें अठवाडेमें प्रत्यक्ष साकार रूप जैसा मैं उपदेश कर चुका हूं अनुभव होगा। चालीस दिनमें

मनोरथकी सिद्धि हो जाती है । नित्य सूर्यके उदयसे अस्ततक यह ध्यान रखना चाहिये । पीछे तारा देखकर भोजन करे । एक प्रहर शरीरको आराम देवे । प्रहर रात्र व्यतीत होने उपरांत संध्या पूजाका ध्यान करे । बारह बजेसे चार बजेतक उसी चौकापर शयन करे । चार बजे फिर वही नित्य कर्म ऊपर लिखे प्रमाण करे । इस प्रकारसे चालीस दिनतक अनुष्ठान करता रहेगा, तो मनोरथ सिद्ध होवेगा । गर्मीका दिन होवे तो पंखा, फराशी, ठंढका दिन होवे तो लोहकी अंगीठी, जिसमें कोइला निर्धूम भरा हुआ हो, सन्मुख रक्खे । जापके वास्ते मूंगाकी माला मोतीकी माला अष्टोत्तरी हाथमें रक्खे । चालीस दिन पीछे कदाचित् अपना मनोरथ सिद्ध हो जावे तो एक भंडारा संत महात्माओंका करना होगा । और यह गुप्त ध्यान जो हमने बताया किसीको प्रगट न करना । कदाचित् कोई शिष्य शुद्ध आचरणका तत्वज्ञानी होवे तो उसको गुप्त उपदेश करना । यह उपदेश संपूण मुक्तिदाता है । जो सत्वगुणी अहंकार शरीरमें परमेश्वरका अंश है वही परमात्मासे मिलकर अपनी भावनाको शांत करता है । अथवा जो चैतन्यशक्ति शरीरमें है वह सर्व शक्तिसे मिलकर अपना निराकार रूप रखकर प्रगट होती है । अनुभव इसके सिवाय और जो महात्मा गुरुने बताया सब समान बहुत द्रव्य खर्च करके मंगाया और अच्छी सायत देखकर साधनका आरंभ कर दिया । उस वक्त चार चेले मेरे साथ थे । पहिले अठवाडेमें ऐसा दुःख मालूम हुआ

उस दुःखको सहन कोई नहीं कर सकता। हजार बिच्छू मारनेके बराबर शरीरमें दुःख हुआ। पीछे दूसरे अठवाडेमें वह दुःख जाता रहा। परंतु भयानक मनोहर चमत्कार हजारों दरशाये मैं गुरुकी कृपासे कुछ भयमान नहीं हुआ। पीछे तीसरे अठवाडेमें वह चमत्कार शांत हुआ और गुदास्थानसे हृदयतक सूक्ष्म चमत्कार चंद्रसमान दरशाया और रोम रोमका ज्ञान हो गया। शरीर मध्ये जो जो भेद गुप्त था सब देखनेमें आया। चौथे अठवाडेमें वह प्रकाश ब्रह्मांडमें पहुँचकर करोडों सूर्यके समान हो गया। अपने शरीरके भीतर सात आकाश सात पाताल संपूर्ण मृत्युलोक सातों समुद्र सूर्य चंद्रमा सब देखनेमें आये। उस प्रकाशको देखकर मैं अपनेको भूल गया। सहज समाधि लग गई। सुषुम्ना नाडी दिनरात चलने लगी। ओहं सोहं श्वासमें स्वरूपमान हो गया। एक आसनपर आठ दिन मुर्देसमान बैठा रहा। निद्रा क्षुधा आहार तृष्णा आलस्यका ज्ञान जाता रहा। पांचवें अठवाडेमें मुझको सर्वव्यापक ब्रह्मका दर्शन हुआ। अथवा आत्मा जीवने परमात्मा ब्रह्मका दर्शन पाया। तथा द्वैतका भ्रम जाता रहा। उस मोहनी स्वरूपकी शोभा देखकर मैं ऐसा मोहित हो गया कि आठ दिनतक आंख नहीं खोला। वे सोलह दिन मेरेको समाधिमें व्यतीत हो गये। श्वास चौथे शून्यमें जाता रहा। सतरहवीं कला ज्योति कला ब्रह्मगुफा ब्रह्मरंध्र सब गुप्त स्थान प्रगट हो गये। चक्रोंमें जो देवता वा ऋषि हैं, मेरेको दंडवत् प्रणाम किया। पांचो मुक्ति, पांचों

आनंद, पांचों अहंकारका सुख तुच्छ दरसाया। चारों अवस्था चारों शरीरका नाश होकर केवल ज्ञानस्वरूप निर्मल अवस्था हो गई। चौदह भुवन, तीनों लोक, चौरासी लाख सृष्टिका ज्ञान नाश होकर सर्वत्र प्रकाश दरशाया। जो सुख इंद्रको है वह सुख उससे हजारगुणा ज्यादह प्राप्त हुआ। अपना स्वरूप आनंदस्वरूप हो गया। जब सोलह दिन मैं बाहर नहीं निकला तब एक चेला मेरा बहुत घबडाकर महात्मा गुरुके पास गया और सब हाल मेरा कहा। तब महात्मा गुरुजी बडी चिन्तामें हुए जलदीसे आकर स्थानका दरवाजा बाहरसे खोला और योगकी युक्तिसे मेरे प्राणको ब्रह्मांडसे शरीरमें उतारा और बहुत धीरजसे मेरेको चैतन्य किया। उस समयमें उस ध्यान छूटनेसे बहुत दुःखी हुआ और क्षुधा तृषाके कारण गिर पडा। शरीरको बैठे रहनेकी सामर्थ्य नहीं रही तब महात्मा गुरुने उठाकर मेरेको गोदमें बैठाया। कुछ दूध शक्कर घी गरम करके पिलाया तब मुझको होश आया और कुछ शांति हुई। महात्मा गुरुको पहिचानकर उनके चरणकमलको मत्था टेक करके विनती किया कि आपकी कृपासे मेरा मनोरथ सिद्ध हो गया। जो पदार्थ मैं सारी उमर चारों दिशामें खोजता रहा वह आपकी कृपासे अब प्राप्त हुआ। अब मेरेको सात स्वर्गका सुख तुच्छ दरसाता है। मैं तत्वपदको प्राप्त हो गया। जो पदार्थ देवता सिद्ध ऋषि मुनि सदा खोजते रहते हैं जलदी प्राप्त नहीं होता। वह पदार्थ मेरेको आपकी कृपासे प्राप्त हो गया।

अब मैं निर्भय निष्काम परमानंदमें मग्न हूं। तब महात्मा गुरु बोले कि तुझको जो स्वरूप देखनेमें आया उस स्वरूपकी शोभा कुछ सूक्ष्म वर्णन करो। मैंने हाथ जोडकर कहा कि कदाचित् चौरासी लाख जन्म लेकर मैं उस आनंद और सुखको कहूं तोभी नहीं पूरा हो सकता। आप अंतर्यामी हैं आपको सब दरशाता है। मुझको जो दरशाया वहभी आपकी कृपासे हुआ। मैं अपने रूपको देखकर मस्त हो गया। मेरा रूप बहुत सुंदर शृंगार आदिकसे संयुक्त मेरे देखनेमें आया। अर्थात् ब्रह्म निराकार परमात्माका प्रत्यक्ष अनुभव आत्माने पाया मैं ज्ञानी हूं। मेरा रूप निश्चय करके ब्रह्म है। यह मेरेको दृढ निश्चय हो गया। कदाचित् जगद्गुरु मेरेको दूसरा उपदेश देवें तोभी मैं नहीं मानूंगा। आत्म प्रतीति गुरु प्रतीति शास्त्रप्रीति तीन प्रकारका निश्चय है। मेरेको संपूर्ण तीनों प्रकारसे निश्चय हो गई जब पांचवें अठवाडेमें करोड सूर्यके समान प्रकाश हो गया और मैं उस प्रकाशमें तदाकार हो गया। उस समय एक पुरुष उत्तम वर्ण श्याम रंग अलसीके फूल समान बडे बडे रतनारे आंख रसीली जादू भरे कुंदुरू समान अरुण पतले पतले ओंठ, अमृत भरा हुआ तोते के ठोड समान लंबी ऊंची नाक, गुलाबके फूल समान गोल गोल कपोल उसपर काला तिल, भँवरसमान बांकी तिरछी भौंह विच्छूके डंक समान बरोणी। जिसके देखनेसे कामका जहर चढ जावे। छोटे छोटे कान, जिसमें जडाऊ बाला मोती

मानकके पठे हुए। शिरपर एक दुपट्टा रेशमी कामदार जरीका बंधा, ललाटपर केशरका तिलक, खडा बांसकी पत्ती समान कमलनाल समान हाथ, लंबे लंबे गोल गोल जिसमें हीरा आदिकका नवरतन जडाऊ भुजदंड, कलाईमें जडाऊ पहुँची, अंगुलीमें लाल मानिक हीराकी मुद्रिका, गलेमें हीरा मानिक नीलमका कंठा, सुवर्णका जनेऊ, चौडी छाती, पतली कमर, गंभीर नाभि, रेशमी पीतांबरकी धोती, कामदार चोलना जरीका, चांदीकी पांवडी, हाथमें सुवर्णकी छडी, मुखमें पानका बीडा, मोतीसमान दाँत, नारंगी समान ऐंडी, नखकी उजियारी दुईजके चन्द्रसमान, कोकिला शब्द, सिंह, ठवन, किशोर अवस्था, बहुत शोभायमान, शांतरूप मोहनी स्वरूप लंबे लंबे काले बाल नाग समान घुंघरवारे, पूर्ण चंद्र समान मस्तक, वृषभ कंध ऐसे और अनेक शोभासे संयुक्त ऐसा मेरा रूप उस प्रकाशमें प्रगट हो गया। उस रूपका दर्शन करके मैं अपनेको भूल गया। अथवा मेरा चैतन्य उस रूपमें समा गया यह पंचमहाभूतका पिंजरा मुर्देके समान श्वासरहित दो अठवाडे बैठा रहा। उसका धनी मैं सत्वगुणी अहंकारसे अपने असली स्वरूप अविनाशी प्रकाशमान मैं बहार करता रहा। स्वर्ग, नरक वैकुंठ, ब्रह्मलोक, शिवलोक, इंद्रलोक सूर्यलोक, चंद्रलोक अनेक लोक मेरेको प्रत्यक्ष दरशाये। मेरी दिव्यदृष्टि चौदह भुवनमें सर्वग हो गई। कदाचित् आप योगकी युक्तिसे मेरेको इस शरीरमें न लाते तो मैं कोटि जन्म नहीं आता। तब महात्मा

गुरु बोले कि अब उस रूपको दृढ करके हृदयमें रक्खो। सर्व पूजा पाठ भजन कीर्तन प्रगटमें जो करते हो छोडो केवल उस रूपका ध्यान करो। निर्भय होकर जहां चाहे वहां रहो। मनमें दया रक्खो। आत्मा सर्वज्ञ एक है। उपकार करना धर्मका मूल है। इसी प्रमाण अनेक सिद्धांतका उपदेश करके बहुत प्रसन्न होकर मेरेको अपनी छातीसे लगाये हाथ पांव माथा चूमा और बहुत भांतिका आशीर्वाद और वरदान देकर पीठ ठोककर देखते देखते अंतर्ध्यान हो गये। मैं पीछे उनके एक भंडारा यथाशक्ति प्रमाण उस जगह किया। अच्छे अच्छे संत महात्मा जो उस पर्वतपर रहते थे सब कृपा करके आये। आठ दिन उत्साह रहा। पांच हजार रुपैया उस भंडारेमें खर्च हुआ। जो कुछ जायदाद अपने पास थी सब खर्च कर डाला। सबकी पूजा करिके बिदा किया। पीछे सब साधन भजन स्मरण जो नित्य कर्म करता रहा सो त्याग दिया। केवल उस मोहनी रूपको हृदयमें दृढ करिके पकड लिया और महात्मा गुरुके रूपकोभी ध्यानमें रक्खा। जिसकी कृपासे सर्व मनोरथ सिद्ध हुए। भविष्यमें मेरेको आसरा है कि शरीर छूटने उपरांत मेरा चैतन्य उस रूपमें लय हो जावेगा। मेरा रूप सर्वसृष्टि व ब्रह्मांडका कर्ता है और मूल है। श्रोता, वक्ता जन ज्ञानके अधिकारी भक्ति प्रेमके संबंधी मेरे अविचार और मूर्खता अवगुणको विचार न करिके इस ग्रंथ अभिलाखसागरमें जो सार चीज पदार्थ

निर्मल उत्तम देखे हंसरूपी ग्रहण करें। जलरूपी असार वर्तावको त्यागन करिके मेरे सर्व अपराधको क्षमा करें और सिद्धांतसे यह ग्रंथ सिद्धांतसागर जानकर सिद्धांत अर्थ ग्रहण करें

इति अभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद दशवें तरंगमें प्रत्यक्षब्रह्मविचार नाम दूसरी लहरी एवं दशवां तरंग समाप्त ॥ १० ॥

अथ ग्यारहवां तरंग प्रारंभ।

प्रत्यक्ष अनुभव वर्णन।

अथ श्रीभागीरथ्यै नमः। अब ग्रंथ श्रीअभिलाखसागर गुरुशिष्यका संवाद, वेदांतका मूल, ज्ञानका सिंधु, दश तरंगमें समाप्त हुआ। उसके पीछे एक तरंग सिद्धांत ब्रह्मज्ञानका केवल शिष्य अभिलाखदास अपने ज्ञान व विचारसे जो प्रत्यक्ष अनुभवमें आया सूक्ष्म वर्णन करता हूं। श्रोता जन ज्ञानाधिकारी बहुत सावधान होकर चित्त एकाग्र करिके श्रवण करें।

(१) जगत् अथवा ब्रह्मांड तथा संसारका आदि अंत मध्य कोई नहीं जानता १। आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथिवी पांचों तत्वका भेद कोई नहीं जानता २। चौरासी लाख सृष्टिका भेद कोई नहीं जानता ३। सूर्य, चंद्र, तारा, बिजली, धनुष्य आदिके अनेक चमत्कारका भेद कोई नहीं जानता ४। तीन प्रकारके काल, छः प्रकारकी ऋतु जो होती हैं उसका भेद

कोई नहीं जानता ५। निद्रा, मैथुन, क्षुधा तीन प्रकारकी प्रकृति जीवमात्रको है। उसका भेद कोई नहीं जानता ६। नाम, जीव, शरीर तथा ब्रह्म, माया जगत् क्या पदार्थ है, कोई नहीं जानता ७। शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध पांच विषयका भेद कोई नहीं जानता ८। काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद पांचों विकारका भेद कोई नहीं जानता ९। पांचों शरीर पांचों अवस्थाका फेर कोई नहीं जानता १०। अंडज, पिंडज, ऊष्मज, स्थावर, मेघ, पांच योनिका भेद कोई नहीं जानता ११। बारह राशि, नव ग्रह, नक्षत्र, योग करण क्या पदार्थ हैं; कोई नहीं जानता १२। सर्व प्रकारके देवता दैत्य जो गुप्त योनि हैं, सच्चे हैं या झूठे हैं कोई नहीं जानता १३। प्रथम बीज है अथवा झाड है कोई नहीं जानता १४ चुंबक पत्थर लोहा खींचता है। पारस पत्थर लोहेको सोना करता है। कारण कोई नहीं जानता १५। भृंगी कीडाको भृंगी करता है उसका भेद कोई नहीं जानता १६। यावत् व्यवहार इस ब्रह्मांडमें जो हो चुका और होता है उसका भेद कोई नहीं जानता। इस भेदका जाननेवाला अबतक कोई नहीं हुआ और आगेभी नहीं होगा। जो काम कभी नहीं हुआ और किसीसे नहीं हुआ वह अबभी नहीं हो सकता। (२) जो अबतक किसीके जाननेमें नहीं आया वह अबभी नहीं आवेगा १। जो अनहोनी बात है वह होवंत नहीं होगी २। जो होवंत है वो अनहोनी नहीं होगी ३। जो प्रमाण है वह अप्र-

माण नहीं होगा ४ । जो अप्रमाण है वह प्रमाण नहीं होगा ५। जो साकार है वह निराकार नहीं होगा ६ जो निराकार है वह साकार नहीं होगा ७। जो भूत वर्तमानमें नहीं है वह भविष्यमें नहीं होगा ८। जो अचल है वह चलायमान नहीं होगा ९। जो विष है वह अमृत नहीं होगा १०। जो गुप्त है वह प्रगट नहीं होगा ११। जो अंधकार है वह प्रकाश नहीं होगा १२। जो निर्गुण है वह सगुण नहीं होगा १३। जो शांत है वह भ्रमित नहीं होगा १४। जो शुद्ध है वह अशुद्ध नहीं होगा १५। जो ज्ञान है वह अज्ञान नहीं होगा १६। जो काम अनादि जगत्का संयोग वियोग आधीन जैसा चला आता है चला जावेगा, यह सिद्धांत अचल है। (३) संयोग वियोग सृष्टिका मूल है। जगत्की उत्पत्ति नाश संयोगसे है १। चौरासी लाख-का जन्म मरण संयोगसे है २। स्त्रीपुरुष होना संयोगसे है ३। ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र होना संयोगसे है ४। राजा प्रजा साधु होना संयोगसे है ५। मूर्ख ज्ञानी पंडित होना संयोगसे है ६। गृहस्थ त्यागी होना संयोगसे है ७। बडा छोटा उत्तम मध्यम होना संयोगसे है ८। धनवान् दरिद्री होना संयोगसे है ९। सत्संगका संग होना संयोगसे है १०। गरमी सरदी बरसात संयोगसे है ११। दिनरात होना संयोगसे है १२। मूर्ख होना ज्ञानी होना संयोगसे है १३। धन परिवार, आरोग्यता बडाई मिलना संयोगसे है १४। हार जीत होना संयोगसे है १५। सर्व प्रकारका दुःख सुख होना संयोगसे है १६। संयोगका

पूर्वरूप अनुमानमें नहीं आता (४) स्त्रीपुरुषका संयोग होता है। वायुके आधारसे रक्त बीज गर्भ योनिमें स्थिर होता है । वायुसे जीव, बीजसे शरीर उत्पन्न होता है। नव मास गर्भमें रहकर पूतला माता पिता समान बन जाता है। स्त्रीका रुधिर जो रजस्वला धर्ममें मास मास जाता है वही बंद होकर पूतला बनता है। नवमासके पीछे वह पूतला पेटसे बाहर निकलता है। माताका बल अधिक हुआ तो पुत्री, पिताका बल अधिक हुआ तो पुत्र, दोनों समान हुए तो नपुंसक होता है। संपूर्ण वायु बीज स्थिर हुआ तो आयु सौ बरसकी होगी। बहुत कम होनेमें बालक मरा हुआ उत्पन्न होता है तथा गर्भ गिर जाता है। वही वायु बीज गर्भस्थानमें दो भागसे स्थिर हुआ तो बच्चा जोडा पैदा होता है। खंडनवायु बीज स्थिर होनेसे बालक हाथ पांवमें खंडित होता है। राजसी दरिद्र मूर्ख ज्ञानी चोर महात्मा रोगी निरोगी होनेका कारण स्त्रीपुरुषका स्वभाव है। माताका लक्ष जिस रूपपर होगा वैसा स्वरूप बालकका होगा। उत्पत्तिके पहिले जीव रहता है ज्ञान नहीं रहता प्रथम बालक माताको पहिंचानता है। पीछे परिवारको पहिंचानता है। तोता मैनाके समान सर्व परिवार शब्द सिखाते हैं। जो धर्म मर्याद परिवारका है वहही व्यवहार उसको सिखाते हैं । जो विद्याका मान उस देशमें होता है वही विद्या पढाते हैं। मुंडन कानछेदन जनेऊ विवाह कुलरीतिप्रमाण माता पिता करते हैं। विवाह पीछे वही पुत्र स्त्रीको माता पितासे विशेष जानेगा और

ससुरारकी प्रीति परिवारसे अधिक करेगा । स्त्रीके कहनेसे माता पिताको छोड देवेगा । मातापिता मर जावेंगे तौ यथाशक्ति क्रिया कर्म करेगा । अनेक उद्यम उत्तम मध्यम करके परिवारकी पालना करेगा । सर्व परिवारके दुःख सुखको अपना दुःख सुख जानेगा । जब पंच महाभूतका पूतला निर्जीव हो जावेगा जैसाका तैसा हो जावेगा । यह सिद्धांत जन्ममरणका है । (५) अपने २ गुणबुद्धिप्रमाण सर्व जीव अपना निर्वाह करता है । कोई वेद पुराण शास्त्र पढकर निर्वाह करता है १ । कोई त्याग वैराग्यमें निर्वाह करता है २ । कोई देवका पुजारी होकर निर्वाह करता है ३ । कोई नीच व्यापार करके निर्वाह करता है ४ । कोई सेवा चाकरीमें निर्वाह करता है ५ । कोई युद्ध संग्राम करके निर्वाह करता है ६ । कोई चोरी आदिक नष्ट कर्म करके निर्वाह करता है ७ । कोई मध्याह्न कालमें चार घरसे भिक्षा करके निर्वाह करता है ८ । कोई रातको टुकडा मांगकर निर्वाह करता है ९ । कोई जंगलमें घासका दाना जमा करके निर्वाह करता है १० । कोई राजा बादशाह महाजन होकर निर्वाह करता है ११ । कोई मांस मदिरा बेंचकर निर्वाह करता है १२ ।कोई संसारी विषयभोगमें निर्वाह करता है १३ । कोई अखंड समाधिमें निर्वाह करता है १४ । कोई इंद्रजाल जादू करके निर्वाह करता है १५ । कोई खेती मजूरी करके निर्वाह करता है १६ । सारा जगत् अनेक प्रकारका उत्तम मध्यम उद्यम करके निर्वाह करता है (६)बहुत जीव ऐसे हैं कि जिनका निर्वाह

आपी आप होता है। उद्यम करना नहीं पडता। जलमें अनेक प्रकारके जीव रहते हैं १। वनस्पतीके मूल झाड पान फूल फलमें बहुत जीव रहते हैं २। शरीरमें अनेक जीव रहते हैं ३। सर्व जीवके मलमूत्रमें जीव रहते हैं ४। सूखे लक्कड पत्थरमें जीव रहते हैं ५। धानमें अनेक जीव रहते हैं ६। आकाश वायुमें अणुप्रमाण जीव रहते हैं ७। गूलरके फलमें जीव रहते हैं ८। मरे हुए शरीरमें जीव रहते हैं ९। मेवा मिठाईमें जीव रहते हैं १०। मुखमें नाकमें कानमें गुदामें जीव रहते हैं ११। अच्छे अच्छे व्यंजनमें जीव रहते हैं १२। मिष्टाके बीचमें जीव रहते हैं १३। वस्त्रमें जीव रहते हैं १४ ग्रंथमें जीव रहते हैं १५। अग्निमें जीव रहते हैं १६। ऐसे जीव अनंत हैं। उनको अपने निर्वाहके कारण उद्यम करना नहीं होता। (७) और बहुत जीव ऐसे हैं कि अपनी क्षुधाशांतिके निमित्त दूसरे जीवको खा जाते हैं। नाहर गौ मारता है १। चीता हिरण मारता है २। बिल्ली मूसा मारती है ३। मोर सांप मारता है ४। भोई मच्छी मारता है ५। कसाई बकरा मारता है ६। बाज कबूतर मारता है ७। बगुला मेंडक मारता है ८। किलकिला गिरगट मारता है ९। चरस कुत्ता मारता है १०। कुत्ता खरगोश मारता है ११। बदुह जातवाले खीरवाले हवषवाले आदमी मारते हैं १२। छपकली मकडी मारती है १३। डाकू मुसाफर मारते हैं १४। शूर लोग सूरमा मारते हैं १५। भेडिया भेड मारता है

१६। ऐसे लाखों जीव हैं। जिनको जीव मारनेमें दया नहीं आती। (८) मनुष्ययोनि जो विद्या और ज्ञान रखते हैं वेभी अपने स्वार्थके वास्ते दूसरे जीवको दुःख देनेमें दया नहीं करते। दुष्ट राजाको प्रजाके दुःख देनेमें दया नहीं आती १। बेईमान महाजनको व्याजपर व्याज लेनेमें दया नहीं आती २। घूस खानेवाले हाकिमको झूंठा इनसाफ करनेमें दया नहीं आती ३। चोरको दूसरेका माल चुरानेमें दया नहीं आती ४। ठगको बटोई लूटनेमें दया नहीं आती ५। खोटेको किसीकी बहू बेटी बिगाडनेमें दया नहीं आती ६। हिंदुस्थानके क्षत्रियोंको लडकी मारनेमें दया नहीं आती ७। पाखंडी साधुको विश्वासी भक्तके ठगनेमें दया नहीं आती ८। दुष्ट किसानको बूढे बैलके जोतनेमें दया नहीं आती ९। कुचाल पुत्रको मातापिताके जुदा करनेमें दया नहीं आती १०। कलियुगके गृहस्थको भूँखे साधु संतपर दया नहीं आती ११। कुपात्रस्त्रीको पुरुष छोडनेमें दया नहीं आती १२। उद्यमी पुरुषको शहद निकालनेमें दया नहीं आती १३। झूंठे दुकानदारको दूना चौगुना पैसा लेनेमें दया नहीं आती १४। किसी किसीको कुत्ता मारनेमें दया नहीं आती १५। दुष्ट जीवको जानवर बधिया करनेमें दया नहीं आती १६। इसी प्रमाण अनेक जीवको दूसरे जीवके दुःख देनेमें दया नहीं आती। कोई अनादि स्वभावसे दया नहीं करता कोई संयोगसे लाचार होकर दया नहीं करता। कोई अपने मतलब बडाईके निमित्त

दिया नहीं करता बडाई इस संसारमें बडी वस्तु है। जिस तरह ज्ञानी मुक्ति चाहते हैं उसी प्रमाण विषयी पुरुष बडाई चाहते हैं। (९) यथार्थमें बडाई वैकुंठ समान है। बडाईके वास्ते कष्ट करके अनेक गुण सीखते हैं १। बडाईके वास्ते मकान बाग बावडी बनाते हैं २। बडाईके वास्ते धर्मशाला देवमंदिर बनाते हैं ३। बडाईके वास्ते विवाह मरोनीमें लाखों रुपैया खर्च करते हैं ४। बडाईके वास्ते पाखंडी साधु अनेक ढोंग करते हैं ५। बडाईके वास्ते सदावर्त अन्न-छत्र बनाते हैं ६। बडाईके वास्ते हाथी घोडा ऊंट रथ सवारी रखते हैं ७। बडाईके वास्ते राजा लोग सिक्का चलाते हैं ८। बडाईके वास्ते धर्मपुत्र लेते हैं ९। बडाईके वास्ते तीर्थमें घाट बनवाते हैं १०। बडाईके वास्ते गया काशी जाते हैं ११। बडाईके वास्ते महाजन करोडपती कौडी कौडी जमा करते हैं १२। बडाईके वास्ते हाथी शेरका शिकार करता है १३। बडाईके वास्ते फौज खजाना मुल्क रखते हैं १४। बडाईके वास्ते पैहलवान कुस्ती मारते हैं १५। बडाईके वास्ते संग्राममें सन्मुख शूर वीर शिर कटवाते हैं १६। सर्व जीव छोटा बडा बडाई चाहता है। यथार्थमें बडाई मिलना बहुत कठिन है। (१०) बडा उसको कहना चाहिये जो यथार्थमें बडा होकर छोटा जाने १। दूसरेका दुःख दूर करे २। यथाशक्ति दाता और दानी हो ३। धनवान् दयावान् हो ४। मिथ्या शब्द न बोले ५। सच्चा व मीठा बोलनेवाला

हो ६ । संत महात्मा गुरुका सेवक हो ७। गौ ब्राह्मणका पूजक हो ८ । परस्त्री परद्रव्यको विष्ठा जाने ९ । काम, क्रोध, मद, लोभ मोह न हो १० । आशा वासना तृष्णा न हो ११ । शील लज्जा आदरभाव हो १२ । मन कर्म वचनसे परोपकारी हो १३ । जगत्के विषयसे त्याग वैराग्य हो १४ । माता पिताकी सेवा करता हो, परिवारका पालनहार हो १५। माया ब्रह्म जगत् तीनोंको जानता हो १६ । ऐसे और अनेक लक्षणमें प्रधान हो तब वह बडाई पावेगा (११) अनेक व्यवहार जो सृष्टिमें हैं कुछ अपने आधीन नहीं हैं । हमरूपी अहंकार तथा मैं रूपी अज्ञानको मिथ्या जाने। चार अंतरिंद्रियें अपने आधीन नहीं १ । पंच ज्ञानइन्द्रियें अपने आधीन नहीं २ । पंच कर्मेंद्रिय अपने आधीन नहीं ३ । पंच प्राणवायु अपने आधीन नहीं ४ । पंच विकार तीन ताप अपने आधीन नहीं ५ । तीनों नाडीका बदलना अपने आधीन नहीं ६ । आंखका खुलना बंद होना अपने आधीन नहीं ७। चार प्रकारकी अवस्था अपने आधीन नहीं ८ । निद्रा मैथुन आहार अपने आधीन नहीं ९ । स्त्री अर्धांगी है अपने आधीन नहीं १० । पुत्र अपना रूप है अपने आधीन नहीं ११ । अनेक प्रकार की बीमारी अपने आधीन नहीं १२ । सर्व प्रकारका हानि लाभ अपने आधान नहीं १३ । ठोकर लगना, झाडपरसे गिर पडना अपने आधीन नहीं १४ । साँपका काटना, विच्छू मारना अपने आधीन नहीं १५। लडका होना, लडकी होना अपने आ-

धीन नहीं १६। कोई व्यवहारका शरीर अपने आधीन नहीं है। जो इस शरीरको अपनी जानता है, वह निपट मूर्ख है। यह भूल जबतक नहीं छूटे तबतक वह दुःख सुखका मूल बना रहेगा इस भ्रमका नाश होने वास्ते अथवा दुःख छूटने वास्ते जो वेद पुराण शास्त्र देखा तो कुछ बोध नहीं हुआ। चार वेद चार प्रकारका है और अठारह पुराणमें अठारह कथा हैं और छः शास्त्रमें छः उपदेश हैं। इसके शिवाय तीन शास्त्र और हैं उनका मत जुदा है। (१२) कोई ग्रंथमें ब्रह्म पुरुष है १। कोई ग्रंथमें ब्रह्म स्त्री है २ कोई ग्रंथमें ब्रह्म नपुंसक है ३। कोई ग्रंथमें कर्म प्रधान है ४ कोई ग्रंथमें निष्कर्म प्रधान है ५। कोई ग्रंथमें आत्मा ब्रह्म है ६। कोई ग्रंथमें आत्मा जीव है ७। कोई ग्रंथमें वैष्णव मत प्रधान है ८। कोई ग्रंथमें शाक्त मत प्रधान है ९। कोई ग्रंथमें जीव मारना दोष है १०। कोई ग्रंथमें बलिदान हवन करना मुक्तिदाता है ११। कोई जैनमार्गी हैं। उनका ग्रंथ जुदा है १२। कोई ग्रंथमें नामकी रटन प्रधान है १३। कोई ग्रंथमें ब्रह्म निरंजन निर्गुण निराकार है १४। कोई ग्रंथमें ब्रह्म चौबीस अवतार होकर अनेक लीला करता है १५। कोई ग्रंथमें जगत् मिथ्या है १६। कोई ग्रंथमें जगत् सत्य है विराट् रूप है १७। ऐसे अनेक उपदेश श्रवण करके महाभ्रम उत्पन्न होता है। शांतिके बदले भ्रांति प्राप्त होती है। (१३) संत महात्मा सिद्ध आचार्य जो संसारमें प्रसिद्ध हैं उनका मत अनेक प्रकारका है कोई शैव है १। कोई शाक्त है २। कोई

रामानंदी हे ३ । कोई नानकशाई है ४ । कोइ कवीरपंथी है ५ । कोई दादूपंथी है ६ । कोई रामसनेही है ७। कोई तुकारामी रामदासी है ८ । कोई मानभावु है ९ । कोई सत्यनामी है १० । कोई नाथ है ११ । कोई परनामी है १२ । कोई विन्द्रावनी है १३ । कोई नंगावत जंगम है१४ । कोई पलटूदासी है १५। कोई अघोरमत है १६ । ऐसे अनेक मत हैं। (१४) और अनेक प्रकारकी तपस्या करते हैं कोई मौन धारण करता है १ । कोई शूलशय्यापर शयन करता है २ । कोई जलशयन लेता है ३ । कोई पंच धूनी तापता है ४ । कोई समाधि लगाता है ५ । कोइ खडा रहता है ६ । कोई हाथ उठाता है ७ । कोइ इन्द्रियमें कडा डालता है ८ । कोई नंगा रहता है ९ । कोई वज्रलंगोट चढाता है १० । कोई दंड कमंडलु धारण करता है ११ । कोई झूला लटकता है १२ । कोई नख जटा वढाता है १३ । कोई अभक्ष्य खाता है १४ । कोई नींब खाता है १५ । कोइ दूध पीकर रहता है १६ । इसी प्रमाण लाखों तपस्या व योग प्रसिद्ध हैं । जितने आचार्य हैं उतने मत हैं । आगेभी अनेक मत प्रगट होंगे । अपने अपने मतमें सब सिद्ध हैं । कोई छोटा नहीं हो सकता है । (१५) सजन कसाई शालिग्रामकी मूर्तिसे मांस तोलता था १ । रोहिदास चमार जूता बनाता था २ । नामदेव दरजी कपडा सीता था ३ । सैना नाऊ हजामत बनाता था ४ । कबीरदास कपडा बुनताथा ५ । गणिका वेश्या नाचना गाना करती थी ६ । अजा-

भील भील डाका मारता था ७। निषाद मच्छी मारताथा ८। धना जाट हल जोतता था ९। पीपा कपडा छापता था १०। कालु भोई मच्छी खाता था ११। कूबरी जूठा खाती थी १२। जटायु धूर खाता था १३। शबरी भीलनी मांसाहारी थी १४। कागभुसुंड अभक्ष्य खाताथा १५। गरुड सर्प खाताथा १६। ऐसे अनेक प्रकारके नीच कर्म करनेवाले परम भक्त और देवता-समान हो गये। उनको सहजमें भगवान् भी प्राप्त हुआ। (१६) वर्तमानमें जो संत महात्मा कलियुगमें हैं उनकी करामात सिद्धि अनेक प्रकारकी प्रसिद्ध है। कोई मोकलको ताबेमें रखता है १। कोई जिन्नातको वश कर लेता है २। कोई सब प्रकारका मेवा विलायतसे क्षणमात्रमें मंगा देता है ३। कोई सेरो मनों मिठाई गुप्तसे मंगवा देता है ४। कोई हाजरातमें जिन्नातके बादशाहको मय फौज कचेरी बुलाता है और उससे गुप्त भेद विचार कर लेता है ५। कोई गडा हुआ धन दिखा देता है ६। कोई आदमीको बीमार कर देता है ७। कोई बावला बना देता है ८। कोई मूठसे मार डालता है ९। कोई अगिया वेतालसे आग लगा देताहै १०। कोई आसनके नीचेसे रुपैया निकालता है ११। कोई दूसरेके घरसे पदार्थ मंगवा लेता है १२। कोई अपने शरीरको तुकडा करिके दिखाता है १३। कोई औरतके पगर लगा देताहै १४। कोई आठ प्रकारका तंत्र जो मोहन वशीकरण आकर्षण स्तंभन विद्वेषण शांति उच्चाटन मारण प्रसिद्ध कर सकताहै १५। कोई लोप हो जाताहै १६।

कोई ज्योति खडी करता है१७।कोई सोना चांदी बनाता है१८। कोई गुटिका बनाता है १९। कोई शेर हो जाता है २०। कोई जादूसे दूसरेको तोता बैल बकरा बनाता है २१। कोई परीको वश करता है २२। कोई यक्षिणी साधन करता है २३। कोई आरातका मंत्र जानता है २४। कोई नजरबंद खेल जानता है २५। कोई भूत प्रेतकी बजार भराता है२६। कोई बांझको लडका देता है २७। कोई नित्य रुपैया दो रुपैया गुतसे पाता है २८। कोई अन्नपूर्णाको बुलाता है २९। कोई देवका दर्शन करा देता है ३०। कोई पानी बरसाता है ३१। कोई रातको पत्थर बरसाता है ३२। ऐसे नाना प्रकारके करामात सिद्धि-वाले महात्मा कलियुगमें प्रगट हैं, देशांतरमें उनका नाम प्रसिद्ध है। जबसे तुकाराम सदेह वैकुंठको गये उनके सिवाय लाखों दुनियादार गृहस्थ कालबेलिया संयोगी हिंदु मुसलमान साधुको रूप बनाकर अच्छे दिगंबर खाकी होकर संसारको लाखों सिद्धि करामात दिखाकर लूटते हैं। और इंद्रजाल आदिक ग्रंथ पढकर सर्व प्रकारका यंत्र मंत्र तंत्र जान लेते हैं। रुपैया पैदा करनेके उपरांत स्त्री लेकर भाग जाते हैं। सर्व प्रकारका खोटा कर्म करते हैं। इस वक्त हिंदुस्थानमें हजारों पाखंडी साधु बंदीखानेमें चक्की चलाते हैं। उनके संगसे ज्ञान नहीं होगा और कुछभी बोध नहीं हो सकता। सर्व भेष ऊपर लिखे प्रमाण गृहस्थ हो गया। भेष बानेका कुछ माहात्म्य नहीं रह गया। (१७) गृहस्थाश्रम धर्मशास्त्र

कोई ज्योति खडी करता है १७।कोई सोना चांदी बनाता है १८। कोई गुटिका बनाता है १९। कोई शेर हो जाता है २०। कोई जादूसे दूसरेको तोता बैल बकरा बनाता है २१। कोई परीको वश करता है २२। कोई यक्षिणी साधन करता है २३। कोई आरातीका मंत्र जानता है २४। कोई नजरबंद खेल जानता है २५। कोई भूत प्रेतकी बजार भराता है २६। कोई वांझको लडका देता है २७। कोई नित्य रुपैया दो रुपैया गुप्तसे पाता है २८। कोई अन्नपूर्णाको बुलाता है २९। कोई देवका दर्शन करा देता है ३०। कोई पानी बरसाता है ३१। कोई रातको पत्थर बरसाता है ३२। ऐसे नाना प्रकारके करामात सिद्धिवाले महात्मा कलियुगमें प्रगट हैं, देशांतरमें उनका नाम प्रसिद्ध है। जबसे तुकाराम सदेह वैकुंठको गये उनके सिवाय लाखों दुनियादार गृहस्थ कालबेलिया संयोगी हिंदु मुसलमान साधुको रूप बनाकर अच्छे दिगंबर खाकी होकर संसारको लाखों सिद्धि करामात दिखाकर लूटते हैं। और इंद्रजाल आदिक ग्रंथ पढकर सर्व प्रकारका यंत्र मंत्र तंत्र जान लेते हैं। रुपैया पैदा करनेके उपरांत स्त्री लेकर भाग जाते हैं। सर्व प्रकारका खोटा कर्म करते हैं। इस वक्त हिंदुस्थानमें हजारों पाखंडी साधु बंदीखानेमें चक्की चलाते हैं। उनके संगसे ज्ञान नहीं होगा और कुछभी बोध नहीं हो सकता। सर्व भेष ऊपर लिखे प्रमाण गृहस्थ हो गया। भेष बानेका कुछ माहात्म्य नहीं रह गया। (१७) गृहस्थाश्रम धर्मशास्त्र

त्रिकाल गायत्री पढते हैं १३। पुत्र माता पिताका आदर नहीं करता १४। चेला गुरुको नहीं मानता १५। स्त्री पुरुषको नोकर समान जानती है १६। जो व्यवहार संसारी गृहस्थोंका धर्मशास्त्र प्रमाण रहा वह सब जाता रहा। (१८) पशुयोनि जो अनादि चाल चलती थी बदल गई। गौ ऐसी पूजनीय अभक्ष्य खाती है। बकरीसमान दूध देती है (१) कुत्ता बारह मास भोग करता है २। काग पक्षी सर्व रात बोलता है ३। चकवी चकोर रातको जुदा नहीं होते और आग नहीं खाते ४। घूघू दिनको बोलता दीखता है ५। मोर पक्षी विषय करता है ६। मछली विना पानीके पहाडमें रहती है ७। कोला जानवर दिनको बोलता दीखता है ८। खंजन पक्षी वर्षा ऋतुमें दरसाती है ९। कोयलका अंडा काग सेवन नहीं करता १०। हाथी शहरमें बच्चा देता है ११। कूकडा सुबहके वक्त नहीं बोलता १२। बैलका सांड भैंसपर चढता है १३। पपैया नदी कुएका पानी पीता है १४। सर्पके मणि नहीं होती १५। हाथीके गजमुक्ता नहीं होता १६। ऐसे सब पशु पक्षी कलियुगमें अनादि चाल छोडकर कुचाल चलते हैं। (१९) और जडयोनि वनस्पति आदिकका भी स्वभाव कुछ बदल गया। सारा व्यवहार उलटा पलटा हो गया। जिस बीडमें लाख पूला घास होता था, अब पचास हजार होता है १। जिस झाडमें दश हजार फल फूल लगते थे अब पांच हजार लगते हैं २। जिस खेतमें बीस मन

धान होता था अब दश मन होता है ३। जिस कुएका पानी मीठा होता था अब खारा होता है ४। वर्षा आगे पीछे होकर समयपर नहीं होती ५। जिस पृथिवीका महसूल सौ रुपैया था अब हजार रुपैया हो गया ६। बहुत नदी नाला जो हमेशा भरे रहते थे तथा बहते थे अब सूखकर बंद हो गये ७। सोना चांदी आदिक धातु कम निकलती हैं लोहा बहुत निकलता है ८। समुद्रमें मोती बडा मोलवाला कम निकलता है ९। झन्नापन्नाकी पृथिवीमें हीरा बडा भारी नहीं निकलता १०। जडी बूटी औषधीमें वह गुण पिछला नहीं रहा ११। फल फूल खानेवाले झाड जंगली जो हरसाल फलते थे अब तीन सालमें कुछ नामको फलते हैं १२। भूचाल तूफान आंधी बुंडल पहिलेसे अब बहुत आता है १३। मरीकी बीमारी जिसको हैजा ऊबा कहते हैं हरसाल आती है १४। नदी पूरसे हरसाल हजारों गांव बह जाते हैं १५। टीडी हरसाल खेत खा जाती है १६। ऐसे अनेक प्रकारकी रीति जड योनिकी पहिलेसे अब बदल गई। (२०) प्रत्यक्ष देखो। भविष्यमें यह निश्चय है कि हिंदुस्थानका संपूर्ण धर्म नष्ट हो जावे। छःसौ बरस इस द्वीपमें मुसलमानका राज्य रहा १। सौ बरससे अंग्रेजी सरकारका राज्य है २। सात सौ बरससे हिंदूका धर्म विना राजा नष्ट होता है जाता है ३। पहिले लाखों आदमी मुसलमान हो गये अब क्रिस्तान होते जाते हैं ४। पाद्रि लोग गाँव गाँव बजारमें खडे होकर वेद शास्त्र

बेईमान हो जाता है और कदाचित् तीन बरस महाजन न मांगे तो उसको कानून बताते हैं कि मियाद जाती रही। कचहरीमें गंगा गौ कर्म इमान कर लेते हैं ७। आगे दो आदमी झगडा करते थे, हाकिम उनका झगडा मिटाता था, दोनोंको दंड बक्षीस करता था, अब वह झगडा तहसीलदार मिटाता है तो डिपुटी कमीशनर पलटाता है। वह फैसला कमिशनर झूठ कर देता है। कमीशनरका किया रेसिडेंट उलट देता है। उसका किया हायकोर्टमें रद्द होता है। उसका किया विलायतमें झूंठा होता है। कोई हाकिमको दंड नहीं होता। सिद्धांतमें यह व्यवहार दूकानदारी है ८। आगे किसीकी बहू बेटी कुचाल चलती थी तो घरवाले मार पीट करके सुचाल कर लेते थे। राजा कुछ नहीं बोलता था, अब स्त्रीको मारो तो फौजदारीमें सजा मिले। जिसके साथ राजी हो जावे उसकी है ९। आगे कोई साधु पाखंडी कमाईके वास्ते स्वरूप बनाताथा तो हम लोग तथा अखाडेवाले उसका इमतहान लेते थे, अगर पूरा आता था तो छोड देते थे, नहीं तो सब जादाद उसकी जप्त कर लेते थे और गधेपर सवार करके निकाल देते थे। अब जोचाहे सिद्ध महात्माका स्वरूप बनाकर चोरी व्यभिचार करें। हजारों करते हैं। सिद्ध महात्मा बदनाम होते हैं १०। आगे हिंदुस्थानमें ऐसे बलवान् राजा होते थे कि दैत्योंसे युद्ध करते थे, और हजारों सिपाहियोंको अकेले मार[illegible] [illegible]खानदानमें ऐसे राजा

देवता मूर्तिकी निंदा करते हैं ५। कुछ कालसे हैद्राबादमें नेचर मत प्रगट हुआ है। बडे बडे आदमी उस मतमें चले गये ६। मुंबईमें ब्रह्मसमाज मत प्रगट हुआ है। हजारों आदमी उस मतके अधिकारी हो गये और होते जाते हैं ७। अच्छे अच्छे विद्वान् ब्राह्मण क्षत्रिय और मुसलमान अंग्रेजोंके साथ बैठकर भोजन करते हैं ८। अच्छे अच्छे शहरमें सब गृहस्थ चारों वर्ण नलका पानी पीते हैं ९। जो लोग सोला पहिरते थे अब चमडेका वस्त्र पहिरते हैं १०। सुवर्ण रूपा ताम्र आदिकके बर्तनमें पूजन भोजन जलपान करते थे। अब कलई गिलट कोपरबरासमें सर्व कार्य होता है ११। इस जंबूद्वीपमें अथवा चारों धामके भीतर गौ मारना नहीं होता था अब अच्छी अच्छी पुरी व धाममें नित्य गौ मारी जाती हैं १२। अस्पतालमें दारू मिली हुई दवा अथवा माँस मिली हुई चारों वर्ण एक पात्रमें पीते हैं १३। गौका रुधिर बच्चेको माता गोदकर उसके नसमें लगाते हैं। उसका अंश इसके शरीरमें लय हो जाता है। सारा घर इस हिसाबसे भ्रष्ट हुआ १४। रेल या जहाज लक्कडके पाटसमान है। उसपर जो कुछ भोजन करे सर्व जातका छूना सिद्ध हो गया १५। वेद पुराण शास्त्र पंडितलोग शूद्र मुसलमानके निकट नहीं बोलते थे अब वहही वेद अंग्रेज मुसलमान सब पढते हैं १६। आगेके महात्मा कविलोग कलियुगका गुण जैसा कह गये हैं १६। उसके प्रमाण जादा हो रहा है। (२१) आगे एक

पुरुष आठ स्त्री रखता था, अब एकका समाधान नहीं होता वही स्त्री दूसरेके पास जाती है। कोई पुरुष साथ ले जाता है बुलाकर लाता है १। बारह बरसकी लडकी पहिले वस्त्र नहीं पहिरती थी अब उसके लडका होता है २। आगे कोई मर्द सृष्टिविरुद्ध काम नहीं करता था अब गांव गांवमें चौथाई आदमी सृष्टिविरुद्ध काम करते हैं। स्त्रीसे ज्यादह उनका मान है ३। आगे कोई अज्ञानी अधर्मी परस्त्रीसे गमन करता था अब मा बहिन बहू बेटीसे अच्छे अच्छे नामवाले खोटा काम करते हैं ४। वैश्य महाजन जैनवाले जीवरक्षा निमित्त सरकारमें लाखों रुपैया पाचोसनका देकर दुकान दारू मांस भडभुंजा आदिककी बंद कराते थे, और रातको रसोई नहीं खाते थे, मुँह बांधते थे, अब वे कपासका रेचा चलाते हैं लाखों जीव क्षणमात्रमें जलकर मर जाते हैं। चरबी आदिक गौकी मोल लेते हैं ५। सट्टाका काम पूरा जुवा है। चिठ्ठी डालना, घुडदौड करना, वर्षाकी निश्चय करना ये सब जुवा है। वे हाकिम अमीर महाजन व्यापारी सब करते हैं ६। आगे कोई कर्ज उधार जो लेता था कागज वगैरह कुछ नहीं लिखाता था वायदेपर दे आता था वह मर जाता था तौ उसका बेटा हाथ बांधकर देता था। अब जो कर्ज लेता है स्टांपपर कागज लिखता है। रजिष्टरी कराता है। जमानत देता है। पीछे अदा करने समय ये विचार सब झूंठ करके

देवता मूर्तिकी निंदा करते हैं ५। कुछ कालसे हैद्राबादमें नेचर मत प्रगट हुआ है। बडे बडे आदमी उस मतमें चले गये ६। मुंबईमें ब्रह्मसमाज मत प्रगट हुआ है। हजारों आदमी उस मतके अधिकारी हो गये और होते जाते हैं ७। अच्छे अच्छे विद्वान् ब्राह्मण क्षत्रिय और मुसलमान अंग्रेजोंके साथ बैठकर भोजन करते हैं ८। अच्छे अच्छे शहरमें सब गृहस्थ चारों वर्ण नलका पानी पीते हैं ९। जो लोग सोला पहिरते थे अब चमडेका वस्त्र पहिरते हैं १०। सुवर्ण रूपा ताम्र आदिकके वर्तनमें पूजन भोजन जलपान करते थे। अब कलई-गिलट कोपरबरासमें सर्व कार्य होता है ११। इस जंबूद्वीपमें अथवा चारों धामके भीतर गौ मारना नहीं होता था अब अच्छी अच्छी पुरी व धाममें नित्य गौ मारी जाती हैं १२। अस्पतालमें दारू मिली हुई दवा अथवा माँस मिली हुई चारों वर्ण एक पात्रमें पीते हैं १३। गौका रुधिर बच्चेको माता गोदकर उसके नसमें लगाते हैं। उसका अंश इसके शरीरमें लय हो जाता है। सारा घर इस हिसाबसे भ्रष्ट हुआ १४। रेल या जहाज लक्कडके पाटसमान है। उसपर जो कुछ भोजन करे सर्व जातका छूना सिद्ध हो गया १५। वेद पुराण शास्त्र पंडितलोग शूद्र मुसलमानके निकट नहीं बोलते थे अब वहही वेद अंग्रेज मुसलमान सब पढते हैं १६। आगेके महात्मा कविलोग कलियुगका गुण जैसा कह गये हैं १६। उसके प्रमाण जादा हो रहा है। (२१) आगे एक

लोग हैं कि जब दोनों तरफसे दो आदमी बगलमें हाथ देते हैं तब खडे होते हैं ११। राजा बलि, राजा कर्ण, राजा भोज, राजा नृग, राजा विक्रम, राजा नल, राजा रघु, राजा परीक्षित, राजा हरिश्चंद्र ऐसे दानी हो गये कि नित्य एक भार सोना देते थे। जहां संकल्प की गौ खडी होती थी वहां तालाब हो जाता था। करोड गौ नित्य दान देते थे। अब उसी गद्दीपर जो राजा हैं नौकरोंसे व्याज लेते हैं। साधु ब्राह्मणसे कर लेते हैं। उसपरभी लाखों रुपैयोंके कर्जदार हैं १२। आगे कोई झूँठी सौगंध खाता था तथा गंगा उठाता था उसको तुरंत दंड होता था। अब जिलेकी कचहरीमें सौ पचास आदमी झूँठी गंगा उठानेके वास्ते सदा बैठे रहते हैं। उनका यही उद्यम हो गया। वकील बालिष्टर जाल फरेबकी रोटी खाते हैं १३। आगे पिताके जीते हुए पुत्र नहीं मरता था और एक पुत्र सबके होता था अब पितासे पहिले पुत्र मरता है दोको औलाद है तो चारोंको नहीं है। सब जगत् औलादका दुखी है। जिसके है भी तो शत्रुसमान है १४। आगे जो धान, घी तेल एक रुपैयेको मिलता था वह अब पांच रुपैयोंको नहीं मिलता, कारण दूसरे द्वीपको चला जाता है १५। आगे जो गांजा भांग दारू अफीम एक रुपैयेका मिलता था अब दश रुपयोंपर नहीं मिलता। इस प्रकार अनेक व्यवहार जगत्का पहिलेके प्रतिकूल हो गया। आगे नित्य सर्व व्यवहार परमार्थका स्वार्थ हो जावेगा। धर्म दान पुण्य डूब जावेगा। लाखोंमें एक सज्जन

बेईमान हो जाता है और कदाचित् तीन बरस महाजन न मांगे तो उसको कानून बताते हैं कि मियाद जाती रही। कचहरीमें गंगा गौ कर्म इमान कर लेते हैं ७। आगे दो आदमी झगडा करते थे, हाकिम उनका झगडा मिटाता था, दोनोंको दंड बक्षीस करता था, अब वह झगडा तहसीलदार मिटाता है तो डिपुटी कमीशनर पलटाता है। वह फैसला कमिशनर झूठ कर देता है। कमीशनरका किया रेसिडेंट उलट देता है। उसका किया हायकोर्टमें रद्द होता है। उसका किया विलायतमें झूंठा होता है। कोई हाकिमको दंड नहीं होता। सिद्धांतमें यह व्यवहार दूकानदारी है ८। आगे किसीकी बहू बेटी कुचाल चलती थी तो घरवाले मार पीट करके सुचाल कर लेते थे। राजा कुछ नहीं बोलता था, अब स्त्रीको मारो तो फौजदारीमें सजा मिले। जिसके साथ राजी हो जावे उसकी है ९। आगे कोई साधु पाखंडी कमाईके वास्ते स्वरूप बनाताथा तो हम लोग तथा अखाडेवाले उसका इमतहान लेते थे, अगर पूरा आता था तो छोड देते थे, नहीं तो सब जादाद उसकी जप्त कर लेते थे और गधेपर सवार करके निकाल देते थे। अब जोचाहे सिद्ध महात्माका स्वरूप बनाकर चोरी व्यभिचार करें। हजारों करते हैं। सिद्ध महात्मा बदनाम होते हैं १०। आगे हिंदुस्थानमें ऐसे बलवान् राजा होते थे कि दैत्योंसे युद्ध करते थे, और हजारों सिपाहियोंको अकेले मारकर हटा देते थे, अब उसी खानदानमें ऐसे राजा

पुरुष होगा । सर्व मनुष्य परसंतापी होंगे । उसका विस्तार सारी उमर लिखनेमें पूरा नहीं हो सकता । इस कारण सूक्ष्म वर्णन किया गया । विद्वान् ज्ञानी जान लेवेंगे । ऐसे जगत्को और युगको अपना नमस्कार है । और चौरासी लाख सृष्टिको अपनी वंदना है । निराकारसेभी वंदना है कि ऐसे युगमें मेरा जन्म इंद्रपदवीपरभी न देवे और जलदी मेरी निर्मल आत्मा शुद्ध स्वरूपको इस जगत्के विषयसे निर्मोह करके अपने निराकार प्रकाशमें मिला लेवे । मेरेको इस संसारमें एक क्षण एक कल्पके समान व्यतीत होता है । श्रोता वक्ता ग्रंथके अधिकारी संबंधी मेरे संपूर्ण अपराधको मूर्ख अज्ञान जानकर अपनी कृपासे क्षमा करके कुछ दोष न देवें । जैसा मेरी दृष्टि और बुद्धि और ज्ञानमें आया था सूक्ष्म व्यवहार सर्व संसारका जो प्रत्यक्ष दरशाया वर्णन किया १६ ।

इति अभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद वर्तमानज्ञान-
विचार नाम ग्यारहवां तरंग संपूर्ण ॥ ११ ॥

श्री स्वामीजी महाराज बाबा माधवदासजी उदासी अयोध्यावासीके शिष्य अभिलाखदासकृत अभिलाखसागर ग्रंथ समाप्त ।

पुस्तक मिलनेका ठिकाना—गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास,
"लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेस, कल्याण—मुंबई.